चतुर्दश सूत्र

डा. योगानन्दझा

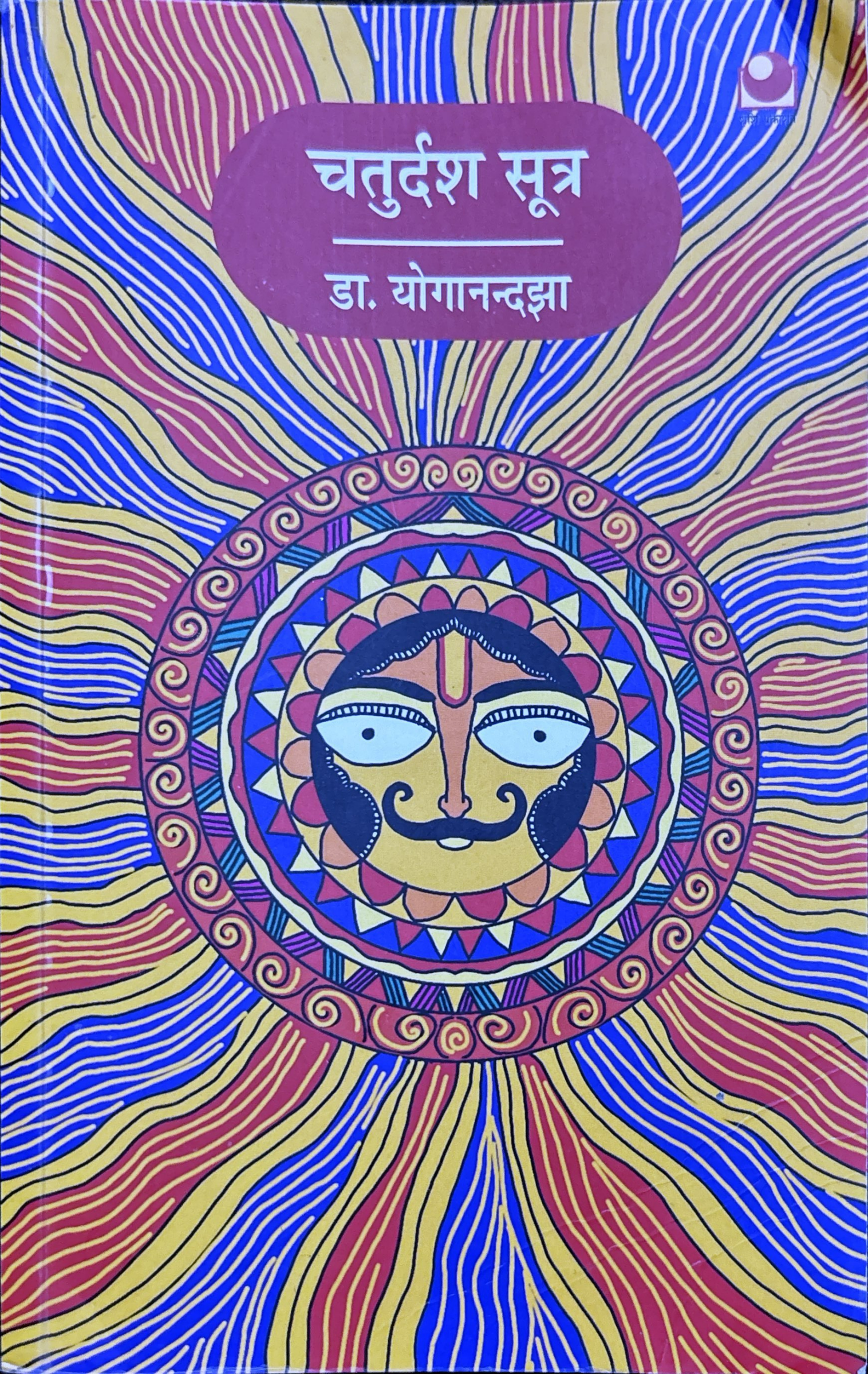

चतुर्दश सूत्र

चतुर्दश सूत्र

(साहित्यिक, आलोचनात्मक आ भाषाविज्ञानसँ सम्बद्ध आलेख-संग्रह)

डा. योगानन्दझा

शशि प्रकाशन

ISBN 978-93-92691-34-8

चतुर्दश सूत्र

© लेखक : डा. योगानन्दझा

पहिल संस्करण (पेपरबैक) : 2024

मूल्य : 400.00 टाका

प्रकाशक :

शशि प्रकाशन

गाँव-कालिकापुर, पोस्ट-लक्ष्मीनियाँ, वाया-बलुआ बाजार

जिला-सुपौल-854339 (बिहार)

फ़ोन : 9015323779 / 9818443451

ई-मेल : shashi.prakashan@gmail.com

वेबसाइट : www.shashiprakashan.com

पुस्तक प्राप्ति स्थान :

श्री धीरजकुमारझा

आत्मज डा. योगानन्दझा

कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा-846001 (बिहार)

फ़ोन : 7069004045 / 9880069290

आवरण चित्र : **अनुप्रिया**

टाइपसेटिंग : बुलबुल मिश्रा

मुद्रक : ई. बी. प्रिंट एण्ड पैक, सेक्टर-48, नोएडा-201301 (उ.प्र.)

CHATURDASH SOOTRA (An anthology of literary Essays) by Dr. Yoganand Jha, Published by Shashi Prakashan

Village-Kalikapur, Post-Lakshminia, Via-Balua Bazar, District-Supaul-854339 (Bihar)

Price : ₹ 400.00

समर्पण

डा. रामदेव झा

(03.05.1936–18.03.2021)

कविता–कथा–नाट्य–आलोचन विविध विधामे दक्ष।
महामनीषी मैथिलीक प्रिय प्रेरक श्रेष्ठ समक्ष॥

प्रस्तावना

साहित्यक क्षेत्रमे कोनो कृतिक विवेचन, विश्लेषण ओ मूल्यांकन आलोचना कहल जाइत अछि। आलोचनाक मूल उद्देश्य कोनो कृतिकेँ समस्त दृष्टिकोणसँ आस्वादित कऽ पाठककेँ ओहि आस्वादकेँ प्राप्त करयबामे सहायता प्रदान करब थिक। ई पाठकीय रुचिकेँ परिष्कृत-परिमार्जित करैत अछि आ साहित्यिक गतिविधिकेँ विनियमित-निर्धारित करैत अछि। कृतिक रहस्यसँ पाठककेँ नीक जकाँ अवगत करायब समालोचकक कर्तव्य होइत छनि।

कोनो रचनाकार अपन कृतिक माध्यमे जीवनक व्याख्या प्रस्तुत करैत छथि। निष्पक्ष आ विद्वान आलोचक हमरा लोकनिकेँ ओहि व्याख्याकेँ आत्मसात् करयबामे सहायक सिद्ध होइत छथि। सत् साहित्यक निर्माणकेँ प्रोत्साहन ओ असत् साहित्यक निवारण आलोचकक प्रमुख लक्ष्य रहैत छनि। बहुधा देखल जाइत अछि जे कतोक आलोचक कोनो विशिष्ट वाद किंवा अहम्मन्यतासँ ग्रस्त भऽ अपन विचार-विशेषकेँ थोपबाक हेतु किंवा रचनाकारक छिद्रान्वेषणकेँ लक्ष्यमे राखि आलोचना करैत छथि। एहन आलोचना साहित्यक हेतु मार्गदर्शक तँ नहिञे होइत अछि, सत् साहित्यक हेतु घातक प्रमाणित होइत अछि, ठीक तहिना जेना 'अहो रूपः अहो ध्वनिः' कृतिकारमे अहम्मन्यताक सर्जन कऽ ओकरा दूरि कऽ दैत छैक, पथभ्रष्ट बना दैत छैक। तेँ निष्पक्ष आलोचकक दृष्टि सर्वथा संतुलित, मर्यादित ओ नियंत्रित होयबाक अपेक्षा रखैत अछि। आलोचककेँ नहि केवल बहुज्ञ, आलोच्य विषयक गहन अध्येताटा अपितु उदार हृदयोक होयबाक चाहियनि। विवेकी आलोचक पाठक आ लेखकक बीच सेतुक काज करैत छथि। एक दिस जँ ओ सहृदय व्याख्याता ओ निर्णायक होइत छथि तँ दोसर दिस ओ पाठकक विश्वासपात्र ओ प्रतिनिधि बुझल जाइत

छथि। शास्त्रीय ओ लौकिक ज्ञान, प्रतिभा, व्युत्पत्ति ओ अभ्याससँ सम्पन्ने आलोचक आलोच्य कृतिक प्रति न्याय कऽ सकैत छथि। एहने आलोचना साहित्यक मार्गदर्शक सिद्ध भऽ सकैत अछि, सृजनात्मक साहित्यक समकक्ष राखल जा सकैत अछि।

आलोचनाक परिधिमे कृति विशेषक समुचित अध्ययनक संगहि ओकर रचना-प्रक्रिया, स्रष्टाक व्यक्तित्व, तत्कालीन प्रवृत्ति, समाजशास्त्र, भाषाशास्त्र, सौंदर्यशास्त्र, मनोविज्ञान, नृविज्ञान आदिक दृष्टिजे ओकर उपयोगिता आदिक विवेचन-विश्लेषण ओ मूल्यांकन अबैत अछि। ताहि हेतु आलोचक लोकनि विविध प्रविधि ओ पद्धतिक उपयोग करैत रहल छथि। वस्तुत: आलोचना आब अत्यन्त व्यापक ओ समुन्नत रूपमे अपन स्थान बना लेने अछि आ समकालीन परिवेश ओ परिस्थिति, प्रचलित आदर्श, उद्देश्य आदिक विवेचन करैत विषय, भाषा-शैली, बिम्ब ओ प्रतीक-योजना तथा समाजशास्त्रीय विविध उपादान सभक परिप्रेक्ष्यमे कृतिक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक तथा नैतिक गतिविधिक प्रकाशमे वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि। एकर उपादेयता दिनानुदिन बढ़िते चलि गेलैक अछि।

आलोचनाक एहि व्यापक प्रभामंडलक अछैत प्रस्तुत ग्रन्थमे जाहि चौदह गोट आलेखकेँ सूत्र रूपमे अनुगुम्फित कयल गेल अछि, से सभ कखनो कृति, कखनो कृतिकार तँ कखनो कृति विशेषकेँ परिप्रेक्ष्य विशेषक आलोकमे अंश समीक्षा प्रस्तुत कऽ मूल्यांकनक प्रयास दिस अग्रसर अछि। स्वभावत: आलेख सभमे विषयानुसार विविध रचना-प्रक्रियाक अवलम्बन करैत विविध शिल्प-शैलीक प्रयोग भेल अछि। ई एकटा सुखद संयोग अछि जे कतोक आलेख कोनो मान्य संस्थाक मांग किंवा संस्थागत आवश्यकताक पूर्त्यर्थ आग्रहपर निर्मित होइत रहल, काल प्रवाहक संग पत्र-पत्रिकामे विकीर्ण रूपसँ प्रकाशितो होइत रहल। एहन विकीर्ण प्रकाशनकेँ पढ़ि अनेक पाठक प्रमुदित भऽ अपन प्रतिक्रिया प्रदान कऽ प्रोत्साहित करैत रहलाह। हिनका लोकनिक प्रतिक्रिया हमर लेखन-कर्मकेँ परिमार्जित करैत रहल। तेँ हम ओहि समस्त संस्थाक कृपाक प्रति अभिभूत छी जे आग्रह पूर्वक हमरा आलेख लिखबाक हेतु बाध्य कयलनि आ तकरा प्रकाशन-पथक आलोक प्रदान कऽ लोकजगतमे बिलहैत रहलाह।

विकीर्ण आलेख सभक संग्रह कऽ ओकरा पुस्तकाकार प्रकाशित करब

एकटा श्रम-शक्तिसाध्य कार्य थिक। श्रम तँ स्वयंसाध्य छैक, कयल जा सकैत छैक मुदा छापाखाना तँ बिनु ऊर्जाक संबलक पाण्डुलिपि दिस तकबो पर्यन्त नहि करत। तथापि मैथिली लेखक लोकनि तँ एहि व्ययसाध्यो कार्य आ अलाभकर व्यवसायकेँ अङेजनहि छथि। से मातृवाणीक प्रति अपन असीम, अखण्ड अनुराग ओ प्रतिबद्धताक कारणहिँ। हमरा मातृवाणीक प्रति ओ अनुराग जाग्रत करयबाक श्रेय छनि माननीया डा. योगमाया झाकेँ जे **मैथिली साहित्यमे गंगा** विषयक एकमात्र शोधग्रन्थक प्रणयन कऽ तकर प्रकाशनक उपरान्त दिनांक 23 दिसम्बर, 2020केँ एहि असार संसारकेँ छोड़ि सकल कलुष विनाशिनी गंगाक शरणापन्न भऽ गेलीह। हिनक कहब छलनि जे 'जखन हम सब सकल गृह-कार्य सम्पन्नहु करैत मातृभाषोक अर्चना कइये लेत छी तँ अहाँ किएक ने वृत्तिपरक कर्त्तव्यक निर्वाह करैत प्रगतिकामी सफलताकेँ उत्कर्षपरक बना सकैत छी।' हिनक यैह प्रोत्साहन वाक्य हमरा उच्च शिक्षा दिस नहि केवल अभिमुख अपितु अभिभूतो कयने रहल जकर प्रसादात् मैथिलीक रचनाकार संवर्गमे सन्निहित होयबाक अवसर भेटल, राष्ट्रिय-अन्तःराष्ट्रिय स्तर पर परिचिति प्राप्त भेल। एतेक धरि जे रसे-रस एहन पुण्योदयोक अवसर आयल जखन राजकीय खर्चसँ सकल जगतक नाथ जगन्नाथक पुरी तीर्थक परिभ्रमणक सुअवसर साहित्य अकादेमीक यात्रा-अनुदानक माध्यमे भेटल।

आधुनिक मैथिलीक महान कवि, साहित्य-प्रणेता ओ आन्दोलनी व्यक्तित्वक धनी कविरत्न प. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'जीक ज्येष्ठ सुपुत्री ओ पुण्यश्लोक डा. रामदेवझाक जीवन-सहचरी डा. योगमायाझाकेँ हुनक हमरा प्रति असीम स्नेहक प्रतिदान रचना-कर्ममे हुनक नामक चर्चा बिनु अपूर्णे रहत। हुनक अनुस्मरणपूर्वक हम हुनका आत्माक अतल-तलसँ कृतज्ञता ज्ञापित करैत छियनि। नैहर आ सासुर दुनू ठामक साहित्यिक परिवेशसँ ओत-प्रोत श्रीमती झा गृहकार्यमे अस्त-व्यस्त रहितो मैथिली लेखन-चिन्तन हेतु समय निकालिये लैत छलीह। वयसक प्रथमे चरणसँ मिथिला मिहिरक 'नेना भुटकाक चौपाड़ि' आ 'स्त्रीगण समाज' स्तम्भमे रचना प्रदान करैत रहनिहार ई मनस्विनी अनेकानेक लोकगीत, लोककथा आदिक प्रणयन-प्रकाशन करबैत रहैत छलीह आ वैदेही मैथिलीक अपर स्वरूपे छलीह। हिनका द्वारा प्रणीत

सोहर छन्दमे निबद्ध सीता अवतरण कथाकाव्य एहि विधाक अनुपम अवदानक रूपमे प्रसिद्ध अछि। हिनका प्रति विनम्र श्रद्धांजलि।

हमर रचनाकर्ममे प्रामाणिक ओ दुर्लभ आधार सामग्रीक संगहि अहर्निश शंका-समाधानक हेतु तत्पर रहनिहार मनीषी प्राध्यापक ओ वरेण्य कवि प्रो. श्रीभीमनाथझाक प्रति प्रणति निवेदन करैत छियनि जनिक स्नेह हमरा सहजहिँ उपलब्ध रहल अछि।

आलेख सभक संचयन, पोथीक नामकरण संस्कारक संगहि प्रकाशनक सुगम, स्वस्थ ओ सस्त राजमार्गपर चलबाक हेतु सचेष्टतापूर्वक इंगित करौनिहार बन्धु, मैथिली साहित्यक गहन अध्येता, सृजनधर्मी ओ बहुआयामी लेखक, निविष्ट पत्रकार तथा इतिहास विषयक मर्मज्ञ विद्वान डा. श्रीशंकरदेवझाक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करब अपन धर्म बुझैत हम निरन्तर हिनक सर्वाङ्गीण उत्कर्षक हेतु जगदम्बा जानकीसँ प्रार्थना करैत रहैत छियनि। आनो जे केओ प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपसँ आलेख-प्रणयनसँ लऽ कऽ पोथी प्रकाशन धरि सहायक भेल छथि, सब प्रणम्य छथि, वन्दनीय-अभिनन्दनीय छथि।

तथापि कृतज्ञताज्ञापनक ई प्रकल्प ताधरि पूर्ण नहिञे भऽ सकत जाधरि हमर मैथिली पठन-पाठनक संगहि लेखनक शब्द-शब्दमे अनुगुञ्जित ओहि गोलोकवासी शिखर पुरुषक नाम ओ कर्त्तृत्वक किंचितो चर्चा नहि आओत। ओ मैथिली-मनीषी छलाह स्वनामधन्य डा. रामदेवझा जे साहित्यिक जगतमे **सव्यसाची** उपनामे प्रख्यात भेलाह। ई पोथी हुनके स्मृतिकेँ समर्पित छनि।

हमर गाम बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्धमे शारदीय नवरात्राक अवसर पर गामेक पात्र-पात्रा लोकनिक यत्नसँ नाटक खेलयबाक हेतु पंचकोशीमे प्रसिद्ध छल। दूर-दूरसँ जनता आबि ओहि नाटक सभक दृश्यावलीक संग साधारणीकरण जन्य आनन्द प्राप्त करैत छलाह। नाट्य संस्थाक नाम **भारती कला परिषद्, कबिलपुर** छलैक। सामान्यत: प्रतिवर्ष तीन गोट नाटकक मंचन कयल जाइत रहलैक जाहिमे दू राति हिन्दीक धार्मिक ओ ऐतिहासिक तथा तेसर राति मैथिलीक सामाजिक नाटकक मंचन भेल करैक। एहि क्रममे हिन्दीक ईश्वर भक्ति, श्रवण कुमार, जयद्रथ वध, सती सुलोचना, सुल्ताना डाकू तथा मैथिलीक एक राति, अयाची मिश्र, उगना, विद्यापति, घटकैती, सभागाछीक बड़द, सुखायल डाढ़ि नव पल्लव, पसिझैत पाथर आदि नाम मोन पड़ैत अछि। नाटक

सभक पूर्वाभ्याससँ लऽ कऽ प्रदर्शन धरिक साफल्य हेतु तत्कालीन मैथिली प्रोफेसर डा. रामदेवझाक सक्रियता एकल कोटिक रहैत छलनि। तथापि गामक लोक हिनका केवल एक नीक प्राध्यापकेक रूपमे जनैत छल, जखन कि मैथिलीक बहुआयामी रचनाकारक रूपमे मैथिली जगतमे ई सिद्ध-प्रसिद्ध भऽ गेल छलाह। इस्वी सन् 1991मे हिनक नाट्य-संग्रह **पसिझैत पाथर**केँ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीक मूल पुरस्कारसँ समलंकृत कयल गेलनि, तखन जा कऽ गामक किछु प्रबुद्ध लोककेँ हिनक गुणवत्ता ओ राष्ट्रीय स्तरपर ख्यातिक सुगनुनी बुझबामे अयलनि। किछुए दिनक बाद साहित्य अकादेमी हिनका राजिन्दरसिंह बेदीक उर्दू उपन्यास **एक चादर मैली सी**क मैथिली अनुवाद **सगाइ**पर अनुवाद पुरस्कारक घोषणा कयलक। विभिन्न मीडियाक माध्यमे जखन हिनक नाम ओ कृति तरंगित होइत रहल, तँ गामक दिससँ हिनका महामंगला काली भगवती स्थान अवस्थित नाट्यमंच द्वारा शारदीय नवरात्राक निशापूजाक रातिमे सम्मानित करबाक योजना बनल, जाहिमे सौभाग्यसँ हिनक अभिनन्दन-पत्र लिखबाक अवसर हमरे प्रदान कयल गेल। हमरासँ जे अभिनन्दन पत्र लिखा सकल से एहि स्वरूपक अछि—

कविता-कथा-नाट्य-आलोचन विविध विधामे दक्ष।
महामनीषी मैथिलीक छथि प्रेरक, श्रेष्ठ समक्ष।।
श्रीसम्पन्न प्रसन्न सदा ई, गुण-गरिमा हिमवान।
राखि ज्ञान केर दीप प्रज्ज्वलित भाषा केर सम्मान।।
महिमा जनिक जानि सकइत छथि कला ज्ञान-विज्ञानी।
देवतुल्य संस्कृति संरक्षक लेखनीक छथि प्राणी।।
झाड़ि झोल आनल पुरना कृति जोड़ि नेपालक नाता।
के जनैछ नहि जनिक सृष्टिसँ पुलकित धरती माता।।
साञ्जलि अर्पित कैल राष्ट्रकेँ रचि पाथर पसिझैत।
दय नव-नव कृति रहथु सदा ई हृदय सभक जुड़बैत।।
रहय कीर्ति अक्षय भारत भरि बढ़ओ मैथिलिक मान।
महामंगला आशिष सँ हो अमर मनुक सन्तान।।
अभिनन्दन-वन्दन स्वीकारथि अछि नत स्वजन समस्त।
वरद पुत्र मिथिलाक! मनस्वी!! पथ हो अहँक प्रशस्त।।

एहि मैथिली मनीषीक चरण-तलमे बैसि हम मैथिली साहित्यक विभिन्न अवयव सभसँ परिचिति प्राप्त कयल, हिनके सविशेष कृपा ओ अविचल प्रयत्न हमरा नरगौनाक मैथिली विभाग दरशौलक, हिनके कैञ्चाक जोरपर एम.ए. (मैथिली)मे हमर नामांकन भऽ सकल आ हिनके जोड़ल पोथी हमरा मैथिलीक एम.ए. आ पी-एच.डी.क औपचारिक उपाधि प्रदान करबा सकल। मैथिलीमे हमर लेखन-कर्म हिनके अवदान थिक, प्रकाशित प्रत्येक पोथी, प्रणीत प्रत्येक रचनावली हिनके वरदान थिक। मुदा मैथिलीक एहि अमर रचनाकारक देहावसान दिनांक 18.03.2021 केँ भऽ गेने आब के प्रमाणपुरस्सर हमर कतोक पृच्छाकेँ शमित करा सकताह, से एकटा अबूझ यक्ष-प्रश्न बनि गेल अछि! अवश्ये, हुनक चेतन, अमल, सहज-सुखराशी, ईश्वर अंश आत्मा। हुनके ई पोथी साश्रु श्रद्धापुष्प सहित समर्पित अछि। आनो जतेक पोथी हमरा द्वारा प्रणीत भेल अछि, सभ हुनके कृपा प्रसादात्, तेँ प्रसादे जकाँ मैथिली क्षेत्रमे वितरित-विपणित करैत अयलहुँ अछि।

जँ, ई प्रसादस्वरूप आलेख सभ मैथिलीक गतिमान आलोचना विधाकेँ सम्पुष्ट करबाक दिशामे कनेको सार्थक सिद्ध भऽ सकल तँ हम अपन श्रम-साधनाकेँ कृतार्थ बुझब।

अन्ततः हम मैथिलीक अनुरागी सुधीजनकेँ आमन्त्रित करैत छियनि जे एहि पोथीक अभ्यन्तर प्रवेश कऽ हमर रचना-शिल्पक सुषमा-सौन्दर्य राशिक आनन्द प्राप्त करथि आ हमर मैथिली गतिविधिकेँ अनुप्राणित करैत एकरा अक्षुण्ण रखबामे गत्वरता प्रदान करैत रहथि।

कोनो प्रकारक त्रुटिक हेतु क्षमा-याचनेटा अवलम्ब। महात्मा तुलसीक शब्दमे—

जौं बालक कह तोतरि बाता।
सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता।।

—योगानन्दझा

जानकी नवमी,
10 मई, 2022

भगवतीस्थान मार्ग, कबिलपुर,
लहेरियासराय, दरभंगा-846001 (बिहार)
मोबाइल : 9334493330

अनुक्रम

प्रस्तावना 7

काव्य विवेचन

गंगा वन्दनाक परम्परा आ मधुपजी 17
हरिमोहनझाक कथाकाव्य 27
साधक कवि : उपेन्द्रठाकुर 'मोहन' 33
स्नेहलताक मिथिला-मैथिली प्रेम 47
गीतकार प्रदीपक 'स्वयंप्रभा' 54
जयमन्तमिश्रक 'कविता कुसुमाञ्जलि' 63

गद्य विश्लेषण

कथाकार नगेन्द्र कुमरक 'श्यामली' 79
मायानन्दमिश्रक निबन्ध साहित्य 88
विदितजीक 'ग्राम-गणराज्य'मे समाज-दर्शन 100

अवदान-मूल्यांकन

आचार्य 'सुमन'क दैनिक 'स्वदेश' 133
मैथिलीक भाषातात्त्विक अध्ययन ओ सुभद्रझा 144
मैथिली साहित्यक विकासमे जयकान्तमिश्रक योगदान 151
सजीवनी समालोचना : रामदेवझा 163
मैथिली लोकगाथा-अनुसन्धान ओ मणिपद्म 203

काव्य विवेचन

- गंगा वन्दनाक परम्परा आ मधुपजी
- हरिमोहनझाक कथाकाव्य
- साधक कवि : उपेन्द्रठाकुर 'मोहन'
- स्नेहलताक मिथिला-मैथिली प्रेम
- गीतकार प्रदीपक 'स्वयंप्रभा'
- जयमन्तमिश्रक कविता 'कुसुमाञ्जलि'

गंगा वन्दनाक परम्परा आ मधुपजी

भागीरथी, सुरसरि, विष्णुपदी, जाह्नवी, मन्दाकिनी, गौमती, त्रिपगथा भीष्मसू आदि विभिन्न अभिधानसँ युक्त गंगा वस्तुतः भारतक मानचित्र पर हिमालयसँ उद्भूत आ बंगालक खाड़ीमे समुद्रमे समागत एक गोट नदी मात्र थिक। भारतीय भूगोलक ई विशिष्ट प्राकृतिक अवदान एकटा विशाल भूखंडक प्राकृतिक सिंचन-प्रक्रिया एवं विभिन्न सहायक नदी सभक जलसंवाहिका थिक। मुदा भावतः गंगा भारतक अभिज्ञान मुद्रा (मोहर) थिक। प्रचलितो अछि–'हम उस देश के वासी हैं, जिस देश में गंगा बहती है।' हरिद्वार, काशी, गंगासागर आदि विभिन्न तीर्थस्थलक आधारभूमि ई नदी भारतीय संस्कृतिक विशिष्ट प्रतिमान सभमे प्रमुख अछि। एकरा संग सामान्य भारतीय जन-समुदायकेँ भावात्मक सम्बन्ध रहलनि अछि। यद्यपि भारतीय भावनामे–

गंगा सिन्धुश्च कावेरी नर्मदा च सरस्वती।
रेवा महानदी गोदा ब्रह्मपुत्रः पुनातु माम्।।

पूबसँ पश्चिम आ उत्तरसँ दक्षिण धरिक समस्त प्रमुख नदीकेँ पुण्यदायिका घोषित कऽ सरिताक माध्यमे भारतभूमिक भावनात्मक समन्वयक स्थापना भेल अछि। तथापि एहि समन्वयक स्थापना आ विकासमे गंगा प्रथमे स्थान पर छथि। पुण्यदायिका एवं समस्त पापापहारिणीक पारम्परिक मान्यताक कारणेँ जीवनमे तँ गंगाजलक दरस, परस, मज्जन ओ पान द्वारा लोक शुचिता प्राप्त करितहिँ छथि, गंगाक तटवाससँ कृतार्थ होइतहिँ छथि, मृत्यूपरान्तो अवशिष्ट तत्त्वकेँ गंगाक कछेरहिमे संस्कार द्वारा मोक्षाभिलाषी रहैत छथि। मृतकक चिताक किछु हाड़ोटाकेँ गंगामे

समाहित कऽ देने हुनक पारलौकिक सद्गतिकेँ निश्चयात्मकता प्रदान करबाक सांस्कृतिक आचार-व्यवहार रहल अछि।

मिथिलाक तँ गंगा दक्षिणी सीमा थिकी जे 'गंगा हिमवतोर्मध्ये' 'गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिस', 'हलधर अवनी अमरसिन्धु जलधौत चरणतल,' 'गंगा तरंग चुम्बित चरणा' आदिमे अनुकीर्तित अछि। सिमरिया, चमथा, काशी, प्रयाग, हरिद्वार आदिक घाट पर कातिक मास भरि गंगाक तटसेवन; समस्त देव-पितर कर्ममे गंगाजलक प्रयोजनीयता; पूर्णिमा, संक्रान्ति पर्वादिक अवसर पर गंगास्नानक परम्परा; परातीक 'जय गंगा गंगा कहु भोरे जौँ सुख चाहत भाई' अथवा 'प्रात दर्शन दिअ हे गंगा मैया' आदिमे गंगाक प्रति मैथिल मानसक श्रद्धाभाव अभिव्यंजित अछि। स्पष्टतः प्राकृतिक अवदानस्वरूपा गंगा भारतीय ओ मैथिल मानसक श्रद्धाभावनाक विशिष्ट केन्द्र छथि।

प्रकृति पूजनक परम्परा भारतीय संस्कृतिक प्रमुख विशिष्टता रहल अछि। हमरा जनैत एहि परम्पराक सूत्रपात मानवक आदिमे संस्कृतिक देन थिक। मेघक गर्जन, विद्युल्लताक छटा, इजोरिया, पूर्णिमाक चान, छिलमिला देमऽवला रौद, मनोरम वसन्त, विकराल बाढ़ि, अरुणोदयक लाली, सघन अन्धकार एवं एहने विविध नैसर्गिक उपादान सभक सुखकर एवं दुःखदायी अनुभूति मानव-हृदयकेँ आदिकालेसँ झकझोरैत रहलैक अछि एवं ई सुखसँ परितृप्त वा दुःखसँ अभिभूत करयबाक क्षमताक कारणेँ समस्त कारकक प्रति भावनाक अभिव्यक्ति करैत रहल अछि। प्राकृतिक अवदान सभक कल्याण ओ विनाशक क्षमताकेँ परखि कल्याणकारिणीक तोष ओ विनाशिकाक स्तवन-वन्दन द्वारा परितुष्ट करबाक भावुकता विविध प्राकृतिक उपादानक प्रति भावनिवेदनक रूपमे स्फुट होइत रहल अछि। उषा, वरुण, इन्द्र, सूर्य आदि विविध वैदिक देवताक परिकल्पना, पीपर-बड़ आदि वृक्षक अभ्यर्चना आदिक क्रमिक विस्तारमे सरिताक पूजन-अनुष्ठान आरंभ भेल होएत, से सहजहि उह्य थिक। एकरे परिणामस्वरूप पौराणिक ओ महाकाव्य साहित्यमे गंगा सन कल्याणप्रदा एवं कोशी सन विनाशिका नदीक उत्पत्ति, मानवीकरण ओ

विविध मानवलीलाक वर्णन दृष्टिगोचर होइछ। हिनका लोकनिक स्वरूप ओ शक्तिक प्रति भावना ओ भक्तिक उद्रेक प्राचीने कालसँ भारतीय वाङ्मयक उपजीव्य रहल अछि। गंगा, कोशी आदिक प्रति भक्तिपूर्ण साहित्यिक अभिव्यक्ति लौकिक सरिता-भक्तिसँ नीर-क्षीर संयोजनपूर्वक गंगाक प्रति भक्ति ओ भावनाक उत्स रहल अछि।

क्रमशः मानवक सृष्टि, स्थिति ओ विनाशक कारणभूता प्रकृति ओ पुरुषक, ब्रह्म ओ महामायाक परिकल्पनामे प्रकृतिमे पराशक्तिक निरूपण भेल तथा ओकर उदात्त स्वरूपमे नारीक सिद्धावस्थाक मातृत्व आरोपित भेल। विविध प्राकृतिक उपादान सभमे प्रकृतिस्वरूपा महामायाक लीलाविलासक निरूपण क्रमशः एहू उपादान सभमे पराशक्ति तथा ओकर मातृत्व आख्यानक कारण भेल। गंगा, कोशी, कमला, जीवछ आदि विभिन्न नदीमे मातृस्वरूपक परिकल्पना एही उदात्त भावना-विन्यासक परिणाम थिक जे भारतीय वाङ्मय तथा लोकसाहित्यमे हिनका लोकनिक मानवीकरणपूर्वक विविध कथोपकथाक सर्जनक हेतु कहल जा सकैछ।

ओना तँ नदीमात्रक पूजन-वन्दनक परम्परा भारतीय संस्कृतिक धरोहर थिक तथापि गंगाक प्रति जाहि उदात्त भावनाक परिष्कार देखि पड़ैछ, तकर आन नदीक सम्बन्धमे अल्पता अछि। हिनका पुण्यतोया कहल गेलनि अछि, समस्त पाप-तापहारिणी बुझल गेलनि अछि, लौकिक सिद्धि ओ पारलौकिक गतिक कारणभूताक रूपमे सहज रूपेँ स्वीकारल गेलनि अछि। भारतीय संस्कृतिक परिचायिका गंगा पाप मात्रक प्रक्षालिका, सकल कलुषसँ शुद्धिकारिका, समस्त भारतीय राष्ट्रक एकताक मानबिन्दु; जातिभेद, वर्णभेद, छूआछूत आदि सामाजिक दोषक प्रभंजिका थिकीह।

गंगाक संग मिथिला-मैथिलक भावना-विन्यास ओ प्रतिबद्धताक एकटा उल्लेखनीय दृष्टान्त मिथिलेश रमेश्वरसिंहक राजत्वकाल (1860-1928)मे भेल एक गोट घटना द्वारा संपुष्ट होइछ। हिनक राजत्वकालमे तत्कालीन ब्रिटिश सरकारक परियोजनाक अनुसार हरिद्वारेमे गंगाकेँ बान्हि पंजाब दिश पटौनीक हेतु धारा मोड़बाक निश्चय भेल छल। एहि तरहेँ युग-युगसँ मिथिलाक दक्षिणी सीमा भागीरथीक प्रवाहकेँ

अवरुद्ध करबाक कुचक्र चलल छल आ मिथिलाक इतिहास, भूगोल ओ सांस्कृतिक परम्पराक एहि विशिष्ट वस्तुकेँ छिनबाक प्रयत्न भेल छल। मुदा, तत्कालीन महाराजाधिराज ब्रिटिश सरकारक एहि परियोजनाक विरुद्ध शंखनाद कयल आ सम्पूर्ण भारतक स्तरपर जनक्रांतिक आह्वान कऽ भागीरथीक प्रवाहकेँ यथावत् अक्षुण्ण रखबामे समर्थ भेलाह। एहि कारणेँ हुनक प्रशस्तिमे हुनका अपर भगीरथक संज्ञासँ संबोधित कयल जाइछ। (**द्रष्टव्य, मिथिला मिहिर, दरभंगा, 8 मई** 1915)। एहि घटनाक उल्लेख कविवर सीतारामझाक एक गोट मुक्तकमे एहि रूपक अछि (**द्रष्टव्य, मैथिली साहित्यमे गंगा, डा. योगमायाझा, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा, 2017, पृ.-184**)

गंगा पथ रुद्ध सुनि, क्रुद्ध मिथिलेश उठि
कैल प्रण जँ न दुष्ट गौरव ढहाबी हम।
बुद्ध जैन आदिक अशुद्ध मत खण्डन कऽ
शुद्ध धर्म मार्ग जँ न देशमे गहाबी हम।।
बीर बनि चंगा ठानि कालहुसँ दंगा
जँ न निर्मल तरंगा नीर देशमे बहाबी हम।।
धारि पाग अंगा तौँ न आबी दरभंगा
जौँ न लाबी पुनि गंगा तौँ न भूपति कहाबी हम।।

एहि तथ्यकेँ मधुपजी 'परिचय शतक' पोथी (**प्रकाशक : चिनगीमंच, बेलबागंज, लहेरिया सराय, 1988**)मे एहि शब्देँ अभिव्यक्त कयने छथि–

रुद्ध पथ भेलीह गंगा
सुनि पहिरि झट पाग अंगा
बान्ह जे कटबौल भूपति
आर्य संस्कृतिसँ विमलमति
ताहि मिथिलेश्वरक कृति
रामेश्वरक उद्गार छी हम।
एक टूटल तार छी हम।।

स्पष्ट अछि जे आर्य संस्कृतिक विशिष्ट प्रतीक गंगाक प्रति मिथिला सर्वदा संवेदनशील रहल अछि।

सम्पूर्ण भारतीय साहित्य-जगतमे गंगाक माहात्म्य-कथनक निरन्तरता रहल अछि। आदिकवि वाल्मीकि द्वारा प्रस्फुटित हिनक वन्दनाक परम्परामे संस्कृत वाङ्मयक वेदव्यास, कालिदास, शंकराचार्य, पंडितराज जगन्नाथ आदि प्रमुख छथि। गंगासँ सम्बद्ध अन्य संस्कृत काव्य सभ अछि—राजगोपाला चक्रवर्त्तिनक (1882-1924) गंगातरंग, लक्ष्मीनारायण कविक गंगालहरीशतक, काशीनाथ शास्त्री (1857-1918), धीरजदेव, कविकर्णपूर, देवेश्वर, हरिभास्कर, गंगाधर, सत्यग्रहानन्दतीर्थ आदिक गंगास्तव, जीवगोस्वामीक जाह्नव्याष्टक आदि। ई सभ मुक्तक काव्य थिक। गंगाक चरित्रकेँ आधार बनाय नाट्यरचनाक परम्पराक सूत्र सेहो संस्कृत वाङ्मयमे भेटैत अछि। एहि दृष्टिएँ शारदातनयक भावप्रकाशनम् लक्षण ग्रन्थमे उद्धृत गंगातरंगिका ओ गंगाभागीरथम् नाटक उल्लेख्य अछि। प्रसिद्ध संस्कृत कवि नीलकंठ आठ सर्गमे गंगावतरण शीर्षक महाकाव्यक रचना कयने छथि। शंकर दीक्षितक गंगावतारचम्पू (1770-1981), अच्युत शर्मनक भागीरथी चम्पू (1814), गोपाल पंडितक गंगाविलासचम्पू तथा दत्तात्रेय शास्त्रीक (1863-1918) गंगागुणादर्शचम्पू सेहो गंगा विषयक उल्लेखनीय काव्य-ग्रन्थ सभ अछि। गंगागुणादर्शचम्पूमे हाहा आ हूहू नामक दूइ गोट गन्धर्वक कथोपकथनक माध्यमे गंगाक नीक ओ अधलाह चरितक व्याख्यान कऽ अन्ततः गंगाक महानता प्रतिपादित कयल गेलनि अछि। **(द्रष्टव्य, हिस्ट्री आफ क्लासिकल संस्कृत लिटरेचर-एम. कृष्णमाचारियर, मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली, 1974)।**

आधुनिक भारतीय भाषाक हिन्दीक क्षेत्रमे पद्माकर, जगन्नाथदास रत्नाकर, भारतेन्दु हरिश्चन्द आदि तथा मैथिली क्षेत्रमे नृपति देव सिंह, विद्यापति, महेश ठाकुर, चन्दाझा, चिरंजीव, कविदास, आदिनाथ, तेजनाथ, कान्हरदास, लक्ष्मीनाथ गोसाँइ, लछुमनदास, राजलक्ष्मी देवी, चम्पिका देवी, तेजनाथझा, ईशनाथझा, मेधेश्वरीदेवी, नन्दिनीदेवी, ललितेश्वरीदेवी, दामोदर लालदास, सीतारामझा, भोलालालदास,

गुणवन्तलालदास, ईशनाथझा, सुरेन्द्रझा'सुमन', कृष्णनन्दनसिंह, प. काशीकान्त मिश्र 'मधुप' आदिक गंगा-वन्दना उल्लेखनीय अछि।

गंगा वन्दनाक भारतीय परम्परामे दुइ गोट आयाम दृष्टिगोचर होइछ– आख्यानपरक आ आत्मनिवेदनपरक। आदिकविक रामायण ग्रन्थमे गंगाक आख्यानपरक चित्रांकन भेल अछि। एहिमे हिमालयक ज्येष्ठ पुत्री एवं उमाक बहिन गंगाक रुद्रक तेजकेँ धारण कऽ कार्त्तिकेयक जन्ममे सहायिका होयबाक कथा आयल अछि। संगहि, एहिमे गंगाक स्वर्गलोकसँ पृथ्वीपर अवतरणक वर्णन सेहो आएल अछि जाहिमे भगीरथक तपस्यासँ प्रसन्न गंगाक शिवक जटा होइत पृथ्वी पर आबि सगरपुत्र लोकनिक उद्धार करबाक कथा अछि।

स्वर्गसँ अवतरित भऽ पृथ्वीपर आबि सगरपुत्रक उद्धारक हेतु रसातलमे प्रवेश करबाक कारणेँ गंगाकेँ त्रिपथगा, भगीरथक द्वारा पृथ्वी पर आनलि जयबाक कारणेँ भागीरथी तथा मार्गमे जह्नु ऋषि द्वारा शोषित ओ पुनः प्रकट कयल जयबाक कारणेँ जाह्नवी अभिधान होयबाक कथा सेहो एहिमे वर्णित अछि। महाभारतमे गंगाकेँ वसुलोकनिक शापोद्धारक निमित्त शान्तनुक पत्नी ओ भीष्मक जननीक रूपमे वर्णन भेलनि अछि। पौराणिक साहित्यमे सेहो गंगाक संबंधमे यैह दुइ गोट मौलिक आख्यान रहल अछि (**द्रष्टव्य, पुराणों में गंगा–पंडित रामप्रताप त्रिपाठी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 12 सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद**)। संगहि इहो कहल गेल अछि जे वामन रूपधारी विष्णु द्वारा दानवराज बलिकेँ पराभूत कयलाक उपरान्त ब्रह्मा हुनक पैरक नहकेँ पखारि लेलनि जे गंगाक रूपमे अवतरित भेलि तथा ब्रह्मा हिनका अपन कमण्डलुमे स्थान देल जे पछाति शिवक जटाजूटक शोभा भेलीह।

यैह कथोपकथा सभ परवर्त्ती उपाख्यानपरक गंगा काव्यमे अनुस्यूत होइत रहल अछि। ऋषि गौतम द्वारा अवतरित करयबाक कारणे गंगाक एक नाम गौतमी सेहो अछि (**द्रष्टव्य, ब्रह्मपुराण, गौतमी उपाख्यान**)।

गंगावन्दनाक आत्मनिवेदनमूलक काव्यमे गंगाक पापहारिताक आख्यान होइत रहल अछि जकर मूलमे भक्ति भावनाक उद्रेकक

प्रधानता दृष्टिगोचर होइछ। एहि प्रकारक काव्यमे गंगाक मातृत्व ओ मोक्षदायिका स्वरूपक पर्याप्त अनुगायन होइत रहल अछि। कवि लोकनि गंगाक कल्पनाकलित समुद्धारिकाक स्वरूपकेँ प्रस्फुटित करबाक हेतु अपन प्रतिभाक उद्‌गारक स्फुरणमे दत्तचित रहल छथि।

मैथिली साहित्यमे गंगाक उपाख्यान काव्यक अभाव अछि। लालदासक रामायणटामे आधारस्त्रोतक आग्रहेँ गंगा उपाख्यान वर्णित भेल अछि। तथापि आत्मनिवेदनमूलक गंगावन्दनाक परम्परा मैथिली साहित्यमे विद्यापतिएसँ उपलब्ध होइछ। आत्मनिवेदन मूलक होइतो एहि साहित्यमे पौराणिक उपाख्यानक प्रचुर अनुगुम्फन देखि पड़ैछ। विद्यापतिक 'ब्रह्म कमण्डलु वास सुवासिनि सागर नागर गृहवाले', 'त्रिनयन मौलि जटाचय चुम्बित भूति भुषित सित नीरे', 'हरिपद कमल गलित मधुसोदर', 'छोट-मोट भगीरथ छितनी कपारे' आदिमे ई प्रवृत्ति सहजहिँ अभिव्यंजित होइछ। एहिना चन्दाझाक 'शम्भु माथा राखल हे', कान्हरदासक 'तेज प्रताप कहाँ धरि बरनब शंकर शीश चढ़ाइ', कविदासक 'ब्रह्मकमण्डलु जटाशंकरी विष्णुक चरण परे, सेवा कऽ भगीरथ आनल पतित अनेक तरे; आदिनाथक 'विष्णुपदसँ जनन शम्भु सिर जटाजूट थिक वासे। सिन्धुक कामिनि मन्दाकिनि पुनि भागीरथि पुरु आसे।। जह्नुसुता हरिनारि भोगवति सतत धरिअ तुअ ध्याने।', भोलालालदासक 'अथक भगीरथ जतन बनाओल बादमे मंगना। गंगोत्री गोमुख अयली पुनि हरिद्वारे रमना।। आदिमे पौराणिक उपाख्यानक पुट सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ। आत्मनिवेदनपरक गंगा वन्दनामे भावुक भक्त हृदयक दीनता-विवशता, कालुष्य, शरणागति आदि उद्‌गारक वर्णन होइत रहल अछि। विद्यापतिक 'बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे' सँ आरम्भ कऽ महेश ठाकुरक 'कत कत पाप कयल हम रोसे। अधम उधारिनि तोहरे भरोसे।।'; चन्दाझाक 'ने करिय सुरसरि जन पर रोष हे।'; कान्हरदासक 'रामनाम गंगा कलि केवल, दास ने और उपाइ।।; तेजनाथक 'हम सन पतित अनेक जगतमे ताहि शरण नहि आन।; ईशनाथझाक 'तोहर अमृत जल पीबि अमृतहुक किछु नहि रहल पिआस।'; कृष्णनन्दन सिंहक 'जावत कलिमल धोव न। तावत हैत

सुबोध न।।' 'दिव्यदृष्टि सँ देखू। गंगागरिमा लेखू।।' आदिमे यैह भावना सभ स्फुट होइत रहल अछि।

आधुनिक मैथिली साहित्यमे श्रीमंत्रेश्वरझाक कविता 'वाह रे गंगे!' **(खाधि-बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना-4, 1974 पृ.-23-24)**मे गंगाक प्रति आस्थाहीनताक चित्रण भेल अछि। कविक एक मात्र उद्देश्य भर्त्तृहरिक नीतिशतकक दशम श्लोकक कथ्यक समर्थन अछि 'गंगा-यमुना पुण्यधारा' **(तत्रैव, पृ.-2)** कहि आर्यावर्तक उत्कर्ष-वर्णन कएनिहार आस्थावादी कविक ई आयास गंगाक प्रति लोकमान्यताक सर्वथा विरुद्ध अछि।

उपाख्यानपरक ओ आत्माभिव्यक्तिमूलक गंगा-काव्यक अतिरिक्त गंगाक स्वरूपमे पराशक्तिस्वरूपा भगवतीक परिकल्पना गीतामे भगवान श्रीकृष्णक विराटरूप दर्शनक क्रममे 'स्रोतसामस्मि जाह्नवी'क उपकथन बुझना जाइछ। एही क्रममे विद्यापति द्वारा भगवती वन्दनाक पदमे 'गंगा कहिअए पानी', चिरंजीवक पदमे 'राजेश्वरि सिद्धेश्वरि सीता गंगा गंडकि रावै'क अनुगायनकेँ सेहो राखल जा सकैछ।

तथापि गंगावन्दनाक आधुनिक मैथिली साहित्य परम्परामे जाहि त्रिमूर्त्तिकेँ सर्वाधिक सफलता भेटि सकल छनि से सभ थिकथि—कविवर सीतारामझा, आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' एवं कविचूड़ामणि काशीकान्तमिश्र 'मधुप'। कविवर लालदासक गंगामाहात्म्य अनुपलब्ध, अनधीत रहबाक कारणेँ अनालोचिते रहल अछि। गुणवन्त लालदासक गंगालहरी पण्डितराज जगन्नाथक गंगालहरीक भावानुवाद कहल गेल अछि जाहिमे गंगाक माहात्म्यकथन ओ भक्तक आत्मनिवेदनक वर्णन भेल अछि। 'गंगास्तुतिपरक दीर्घमुक्तकमे हिनक अनुवादग्रन्थ प्राचीनतम ओ उत्कृष्ट छनि। (द्रष्टव्य, **मैथिली साहित्यमे गंगा - डा. योगमायाझा**, 2017, पृ-136-139)

अम्बचरित महाकाव्यक छठम सर्गमे गंगाक उत्पत्तिक प्रसंगक वर्णनमे कविवर सीतारामझा गंगा वन्दनाक भारतीय परम्परामे पंडितराज जगन्नाथक 'विलीनो वैवस्वत नगर कोलाहलभरो'क अनुगमन कएल अछि। सुमनजीक गंगातरंगिणी प्राचीन परम्परा ओ आधुनिक विचारधाराक बीच समन्वयात्मक दृष्टिक समेकित अनुगुम्फन अछि। काव्य सौन्दर्य,

कल्पनाक सौष्ठव, वर्णनक सजीवता, बिम्बक नव्यता, कथ्यक भव्यता, अलंकारिताक सहज उत्कर्ष, गाम्भीर्यक वृत्ति, अल्प शब्द द्वारा अधिकाधिक तथ्यक अभिव्यक्ति, ध्वनि, रस, गतिक सुष्ठुतम विन्यासक कारणे तथा प्राचीन परम्पराकेँ अक्षुण्ण रखैत नवीन ओ युगानुरूप परिवेशक सृष्टि-सामर्थ्यक कारणेँ हिनक गंगा तरंगिणी आधुनिक मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि प्रमाणित होइछ।

'तरल तरंगा, गंगाजीसँ जटिल जटा अछि जनिक सनाथ' आदि पद द्वारा 'भोलानाथक समस्यापूर्त्ति कएनिहार 'मधुप' छात्रावस्थहिमे काशीक परिवेशक सहज गंगातटसेवनक क्रममे 'तोर गति अम्ब कहल नहि जाय। भालक पंक अंक देखिते यम झट लऽ लंक पड़ाय।।' 'जननि हे तुअ पद तेजल न जाय। भावि वियोग-वेदन अबिते सुधि दृग-घट-जल छिलकाय।।' आदि गंगागीतामृत गीतकाव्य संग्रहक प्रणयन करऽ लागल छलाह। तथापि गंगाक प्रति हिनक भक्ति भावनाक उद्गार, पारम्परिक संस्कार एवं रसग्राहिता हिनक 'गंगातरंगावली'मे परिपक्व दृष्टिगोचर होइछ।

हिनक गंगातरंगावलीमे बाबन गोट अष्टपदी मुक्तक द्वारा गंगाक पौराणिक सन्दर्भमे उपाख्यानपरक ओ आत्मनिवेदनपरक माहात्म्यकथन भेल अछि। समस्त मुक्तक रचनाकेँ अनुप्रास ओ यमकक झंकृति तथा रूपक ओ अतिशयोक्तिक अलंकृतिक व्यामोह जन्य शब्दजाल एवं तत्समविन्यास तेना भऽ कऽ गछारने छैक जे अनेक ठाम सहजता बाधित होइछ। भक्तिभाव प्रधान एहि रचनामे अभिसारिका, मुग्धा, बाला आदि नायिकाक वर्णनस्वरूप शृंगारक अनुष्ठान, नायिकाक विरह शृंगारक वर्णन तथा हास्य, वीर, करुण, भयानक, रौद्र, अद्भुत, शान्त ओ वत्सल रसक अभिव्यंजनाक आलम्बन एकमात्र प्राकृतिक अवदान गंगाकेँ बनाय कवि अपन रससिद्धता प्रमाणित कयने छथि। षड्ऋतुक संग गंगाक साङ्गरूपकत्वक वर्णन द्वारा कवि रसरचनापरक सिद्धहस्तता, कविचातुर्यपूर्ण उद्भावना ओ प्रौढ़ कल्पनाक उत्कर्षक परिचय देलनि अछि। कविकल्पनाक उत्कर्षक अन्य बिन्दु सभ अछि–तस्कर (**पद सं. 6**), कृषक (**पद सं. 26**) आदिक संग गंगाक सांगरूपकत्वक आख्यान, नेनाक रूपमे गंगाक

वर्णन (**पद सं. 49**), शिवक पारिवारिक प्यास शमनक हेतु गंगाक उपयोगक वर्णन (**पद सं. 45**), संगममे सरस्वतीक लोप होयबाक स्थितिक विवेचन (**पद सं. 2 एवं 16**), संगमकेँ तीर्थराजक उपाधि देबाक कथनक वर्णन (**पद सं. 17**), गंगाक कारणे कमलाक उत्कर्षक वर्णन (**पद सं. 3** तथा 'जकरे छिटकाक कने कणसँ कमला-कमला जगदीशक), सागरक गृहणीक रूपमे गंगाक वर्णन (**पद सं. 28**) आदि।

एही तरहेँ मधुपक गंगातरंगावलीमे प्रौढ़ एवं शास्त्रीय कल्पना, परम्परागत बिम्ब ओ अभिव्यंजनाक प्राचीन रुचिपरक निवेश अत्यन्त उत्कृष्ट अछि।

साम्प्रतिक स्थितिमे तटवर्ती विविध नगरीय सभ्यताक विकासक कारणेँ गंगाक प्रदूषण निरन्तर बढ़ैत जा रहल अछि। सैह स्थिति आधुनिक राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक ओ सांस्कृतिक जगतमे होइत प्रदूषणक अछि जे समस्त भारतीय जन-जीवनकेँ अस्त-व्यस्त कयने जा रहल अछि। गंगाक शुचितामे बाधाक संगहि वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक ओ राष्ट्रीय जीवनक शुचिता ओ संस्कार बाधित भऽ रहल अछि। पुल ओ बान्हसँ गंगाक स्वचच्छन्द प्रवाह अवरुद्ध होइत जा रहल अछि आ विभिन्न सामाजिक असंतोषक कारणेँ भारतीय जीवनधारामे कुंठा ओ संत्रासक स्थिति परिव्याप्त भेल जा रहल अछि। की नूतन कविदृष्टिमे गंगाक माध्यमे एहि समस्त आयामकेँ समेटि गंगावन्दनाक युगीन परिवेशपरक रचनाक चिन्तन प्रक्रिया वांछित नहि अछि?

●●●

हरिमोहनझाक कथाकाव्य

प्रो. हरिमोहनझा मैथिली साहित्यक अनन्य विभूति छलाह। हिनक दुइ गोट उपन्यास क्रमशः कन्यादान आ द्विरागमन, दुइ गोट एकांकी नाटक क्रमशः अयाची मिश्र ओ मण्डन मिश्र, तीन गोट प्रहसन, दुइ गोट गप्प साहित्य क्रमशः खट्टरककाक तरंग ओ भोल बाबाक गप्प तथा विभिन्न नामे कथा संग्रह सभ प्रकाशित भेलनि यथा चर्चरी, रंगशाला, प्रणम्य देवता, एकादशी, बीछल कथा आदि। अपन एहि कृति सभक संगे ई मैथिलीक हास्यसम्राटक रूपमे प्रख्यात भेलाह। शब्दपर हिनका तेहन नियंत्रण रहनि जे गंभीरसँ गंभीर तथ्यकेँ ई ताहि तरहेँ प्रस्तुत करैत छलाह जाहिसँ पाठक किंवा श्रोताकेँ हँसैत-हँसैत पेटमे बगहा लागि जाइत छलैक, मुदा जखन ओहि तथ्यपर विमर्श करैत छल तँ हिनक तीक्षण व्यंग्यवाणसँ आहत बुझना जाइत छल। हिनक एही प्रवृत्तिक कारणेँ मैथिलीकेँ विशाल पाठकवर्ग तैयार भेलैक। तखन एतबा तँ अवश्य जे ई मिथिलाक समाजक अनेक परम्परा, मान्यता ओ अन्धविश्वास पर चोट कऽ ओहि दिशामे सुधारक अपेक्षा कयलनि, साहित्यक द्वारा सामाजिक आन्दोलनक सूत्रपात कयलनि। हिनका 'जीवन यात्रा' संस्मरणपर साहित्य अकादेमी सम्मानसँ सम्मानित कयल गेल छलनि। मैथिली गद्यक चारुता हरिमोहनझाक कलम पाबि चरमोत्कर्षकेँ पओलक।

प्रो. झा गद्यकार छलाह मुदा अपन गद्यरचनामे आवश्यक भेने कखनो-कखनो पद्यो समाहित कऽ देल करथि। तहिना कखनो-कखनो गोटपगड़ा कवितो लिखि लैत छलाह जकर संख्या सयक लगभगसँ बेसी

नहि अछि तथा 'हरिमोहनझा रचनावली खण्ड-4'मे संकलित अछि। एहि कविता सभकेँ देखला उत्तर ई प्रतीत होइत अछि जे जहिना ई निस्सन गद्यकार छलाह, कवियो तेहने मांजल, मुदा अपन ऊर्जाक अधिकांश गद्येकेँ समर्पित कयलनि। व्यंग्य ओ विद्रूपेक चित्रण हिनक कवितोक मूलमे रहैत छलनि।

हरिमोहनझाक समस्त कविता-संसारमे सात गोट कथाकाव्य अछि। एहिमे पहिल अछि **ढालाझा**। तत्कालीन मिथिलामे पाँजि-पाटि अपन उत्कर्ष पर छलैक। जे लोकनि पंजीबद्ध छलाह से जँ दरिद्रो रहैत छलाह तँ जयवारमे अनेकानेक विवाह कऽ लैत छलाह, पत्नी सभकेँ नैहरमे छोड़ि दैत छलाह आ सालमे दू बेर सासुरसँ भऽ आबथि जतऽ हुनक पर्याप्त सम्मान तँ होयबे करनि संगहि बेस वर-विदाइ सेहो भेटनि जाहिसँ पंजीबद्ध कनिञा जे घर पर रहथिन, हुनको आ ओहि घरक बाल-बच्चोक बुतात चलनि। पंजीबद्ध वर करब जयवार लोकनि ततेक श्रेष्ठ काज बुझथि जे ओहि कोटिक मूर्ख, बूढ़ ओ अपंगो वरक नखरा सहबाक लेल, गारि सुनबाक लेल निरन्तर तत्पर रहथि। पंजी प्रथा समाजक कुष्ट बनल छल आ गामे-गामे सधवा मुदा तथाकथित परित्यक्ताक सङोर भेटिते छल। एकटा वृद्ध पंजीबद्धक मुइने अनेकानेक मैथिल नारी वैधव्यकेँ प्राप्त कऽ लेल करथि। तेँ विधवो लोकनिक संख्या बेस भेल करय। ढाला झा कथाकाव्यमे एहने एक गोट पंजीबद्ध बूढ़ वरक जयवार सासुरमे स्वागत ओ नखरा एवं दुहू पक्षक करुण स्थितिक कथाकेँ पद्यक माध्यमे प्रस्तुत कयल गेल अछि।

कथासार एना अछि जे मैलकिट्ट पुरान ओ फाटल पाग माथ पर धयने, गोबनौर सनक अङपोछा कान्ह पर धारण कयने, चंडिल माथमे त्रिपुण्डपर सिनुरक ठोप कयने, रुद्राक्षक पैघ माला टीकमे बन्हने नरहा पाँजिक लुट्टीझाक प्रपौत्र हाथमे फराठी लऽ कऽ अपन सासुर जा जूमैत छथि। एहि ठाम हिनक चारिम विवाह छलनि। बूढ़ ततेक भऽ गेल छलाह जे केवल तीनेटा दाँत शेष रहि गेल छलनि। हिनक बगय डेराओन छलनि मुदा जीह कैंची जकाँ चलैत, निरन्तर विषाह अपशब्द सभ उगिलैत। एहि

तरहेँ हिनक विकृतिक चित्रण कऽ कवि एहन चंठ, गरीब ओ झूठ कुलाभिमानसँ ग्रस्त पंजीबद्ध वर पर व्यंग्य उपस्थित कयलनि अछि।

मुदा जखन एहनो वर जनिक नाम ढालाझा छनि सासुर जा जुमैत छथि तँ कन्यादानी बेटीक पिता जे बेटीक भरोसे अपन कुलकेँ उच्चस्थ करबाक मानसिकतासँ ग्रस्त भऽ चतुर्थ वरसँ बेटीक विवाह करयबाक अनर्थ कऽ चुकल छथि, बेटीक गर्दनि एक तरहेँ मोकि चुकल छथि, सर्वथा अनमेल (आयुक आधारपर) विवाह कराय अपराध कऽ चुकल छथि आ एकटा विकृत सामाजिक मान्यताक पोषण करबामे दत्तचित्त छथि, लगले खबास द्वारा जमाइक पैर धोअबैत छथि जे खोरनाठ सन कारी, ठेलासँ युक्त ओ बेमायक फाटल दड़ारिसँ विकृत छनि। तत:पर ढालाझा तमाकुलक थूक दलानेपर पच्च दऽ फेकि ससुरकेँ तलब करैत छथि। मुदा ससुरक अभावमे सार जखन हिनक परिचर्याक हेतु तत्पर होइत छनि तँ ओ लगले भाङ दऽ हुनका सौंफ आ मरीच दऽ कऽ पिसबा अनबाक हेतु कहैत छथिन जाहिसँ ओ बाह्य भूमि दिस जा सकथि। सार जखन भाङ लऽ कऽ अबैत छथिन तँ अपन असभ्य स्थिति पर बिना कोनो लाज कयने ढालाझा अपन सभ्य अंग्रेजिया सारकेँ एहि लेल दुत्कारि दैत छथिन जे ओ घड़ी पहिरने छथि, मोँछ कटौने छथि आ चश्मा सेहो धारण कयने छथि। बहिनोइक दुत्कार सार सहबाक लेल विवश छथि।

तत:पर रातिमे जखन सँचार लगैत छैक आ अनेक प्रकारक व्यंजनादिक संग भोजन परसल जाइत छैत तँ ढालाझा ई देखि अपमानित गमैत छथि जे हुनका घृतक पात्र नहि देल गेल छनि अपितु दालियेक बट्टामे घृत दऽ देल गेल छनि। ढालाझाकेँ ई अपमान असह्य बुझना जाइत छनि आ ओ भरलो बाटी दालि आ घृत तथा भातक थारी पलटि दैत छथि। घरबैया सभ गोटेकेँ ई देखि बघजर लागि जाइत छनि। ढालाझा भोजन परसँ उठि जाइत छथि। हुनक नेहोरा-मिनती शुरू भऽ जाइत छनि। बहुत काल धरि खोशामद कयलाक बाद ओ पुन: भोजनक आसनपर बैसैत छथि आ अहगरसँ भोजन कऽ लैत छथि। मुँहमे दाँत

नहि रहबाक कारणेँ पान खायल होइत नहि छनि तथापि पान थुरबा कऽ खाइत छथि। ई सभ भेलाक बाद ओ ससुरकेँ बजबैत छथिं आ भोजनादिक बेस बड़ाइ कऽ ससुरसँ ततेक विदाइक याचना करैत छथिन जाहिसँ हुनक भरना लागल चारि कट्ठा ब्रह्मोत्तर छूटि सकनि। मुदा अभाववश जेँ लऽ कऽ ससुर ओतेक टाका देबऽमे असमर्थ होइत छथिन, ढालाझा अग्निश्च-वायुश्च भेल ससुरक पुरखा पर्यन्तकेँ गरियबैत एहि सासुरसँ दोसर सासुर कऽ विदा भऽ जाइत छथि।

एहि कथाकाव्यक माध्यमे हरिमोहनझा मिथिलामे प्रचलित पंजी प्रथाक अधम स्वरूपक चित्रण कऽ एहि प्रथाक प्रति जुगुप्सा उत्पन्न करयबाक चेष्टा कयलनि अछि जाहिमे कन्यागत अर्थ, धर्म, प्रतिष्ठा-मर्यादा सभटा हेरा लैत छथि तथापि एकर कुत्सित स्वरूपसँ घृणा नहि कऽ पबैत छथि। सुधारवादी मानसिकतासँ लिखल ई कथाकाव्य पाठक ओ श्रोताक हृदय पर एहि प्रथाक विरुद्ध चेतना जाग्रत करैत अछि।

हिनक दोसर कथाकाव्य थिक **टी-पार्टी**। एहिमे शिक्षित समाजमे संक्रमित होइत विदेशी फैशनक विद्रूपकेँ चित्रित कयल गेल अछि। तेसर कथाकाव्य '**बुचकुन बाबा**'मे महिला समाजमे होइत विकासक चित्र उरेहल गेल अछि। लेखक बाबा ओ पोताक सम्वादक माध्यमे परम्परासँ बद्ध नारीजीवन ओ पुरुषक समानान्तर ठाढ़ नारीजीवनक स्थिति आ विन्यासकेँ चित्रित कऽ अन्ततः ई निष्कर्ष देबऽ चाहलनि अछि जे–

हम कहलियैन्ह–'बाबा, युग आब बदलि गेलै,
स्त्रीकेँ दबा कऽ आब राखि सकबै नहि।
शास्त्र ओ पुराणक आब अंकुश भऽ गेल भोथ,
कतबो डँटबैक तऽ मरौत आब काढ़त नहि।
बेटी ओ पुतहु आब कुर्सी पर बैसबे करति
टीकट ओ कटेबे करति, टीक आब कटबे करत।
पाग और पाँजि आब बचाबक उपाय नहि
हम्मर विचार जे हफीम घोरि पिबिये जाइ।

चारिम कथाकाव्य **निरसन मामा**मे खाद्याखाद्य ओ छूताछूतक

परिपाटी पर व्यंग्य कयल गेल अछि। कथानायक निरसन मामा राजगीरसँ घुरैत काल अपन भागिनक डेरापर पटना पहुँचैत छथि। भागिन अपन भनसीया द्वारा हुनक भोजन बनबाबय चाहैत छथि मुदा निरसन मामा मेसक विजातीय भनसीया द्वारा बनाओल भोजन ग्रहण करब कुलक नाक कटायब बुझैत छथि, जखन कि हुनका ने तऽ अपन मोटरी कुर्सी पर रखबामे, स्वयं टेबुल पर पलथा मारि कऽ बैसबामे, बीचे दलान पर तमाकुलक थूक फेकबामे असौकर्य होइत छनि आ ने अपना पत्नीकेँ बिनु पनहीक तप्पत अलकतराक सड़कपर ठाढ़ करयबामे। हुनका इहो नहि सोहाइत छनि जे हुनक भागिन बाबरी रखने छथिन, मोंछ छटौने छथिन, मेसमे प्याज आ लहसुन देल भोजन करैत छथिन। अन्ततः भागिन हुनका अपन बासहिपर मामी द्वारा ठाँव-पीढ़ी कयल जगहपर स्वयं पाक बना लेबाक विचार दैत छथिन। मामी पाक बनबऽ लगैत छथि। एही अवधिमे भागिन एन.सी.सी. पार्टीमे जाइत छथि आ ओतऽ छूरी-काँटाक सहायतासँ लड़की सभक संग चॉप-कटलेट खाइत छथि। लड़की सभ सेहो जुत्ता पहिरनहि खा रहल छलीह। पार्टीमे निरसन मामा विजातीय कन्या सभक संग भागिनकेँ खाद्याखाद्य खाइत देखि तमसा जाइत छथि आ कयल भानस छोड़ि घर कऽ विदा भऽ जाइत छथि। जाति-कुजातिक विवेचन, खाद्याखाद्य प्रति संपृक्त आ नारी सशक्तिकरणक विरोधी प्रकृतिवला मामाक चरित्रकेँ उजागर कऽ कवि मिथिलाक कुत्सित परम्परा पर व्यंग्य करैत छथि तथा उर्द्धवगामी समाजक निर्माणक संकेत दैत छथि।

मैथिललोकनिक पाखण्डपर प्रहारपरक कथाकाव्य थिक **सलगमक खण्ड**। एहिमे कथा अछि जे एक बेर कोनो भोजमे बहुत विन्यासपूर्वक लोक सभकेँ भोजन परसल जा रहल छलनि जाहिमे अनेक प्रकारक मधुरक संग-संग दही-चीनी, रसगुल्ला आदि सेहो परसा रहल छल। तखने एक गोटाक पात पर तरकारीमे सलगम पड़ल भेटलनि। लगले ओ गर्द मचा देलनि आ सभ केओ सलगमकेँ अखाद्य मानि भोजनपरसँ उठि गेलाह। एकटा पंडित तँ बिना कोनो सन्दर्भक सबकेँ बुझा देलथिन जे

सलगम वस्तुतः मुइल यवनक अगिला जन्म थिक तेँ समस्त दार्शनिक लोकनि कहने छथि जे एकर भोजन कयनिहारकेँ पीपरक खोधरिमे गोइठाक आगि पजारि भस्मीभूत भेनहि प्रायश्चित्त भऽ सकैत छनि। मिथ्या पाखण्डपरक ई कथन सुनि सब क्यो गंगाकात कऽ पड़यलाह आ बालु-गोबर गीड़ि प्रायश्चित्त कयलनि। कवि एहि कथाकाव्यक माध्यमे मिथिलाक लोकजगतमे पसरल मूर्खता ओ अन्धविश्वासकेँ उजागर कयलनि अछि।

घूटरकका हरिमोहनझा रचित अन्य कथाकाव्य थिक। एहिमे एकटा बालक द्वारा बी.एल. पास कन्यासँ बिनु दहेजक विवाह कयला उत्तर ओकर पिताक प्रतिक्रियाक वर्णन अछि। बालकक पिता पहिने तँ बी.ए., बी.एल.केँ विवाहपूर्व बिआयल कन्या बुझैत छथिन्ह मुदा जखन बादमे बुझैत छथिन्ह जे कन्या ओकील होयतीह तँ पुतोहुक हाकिम-हुक्कामसँ लऽ कऽ अपन मोकील सब लग जयबाक ओ बजबाक क्रियाक कारणे हुनका वंश-मर्यादा भंग बुझना जाइत छनि आ ओ मृत्युकेँ वरण करबाक हेतु तैयार भऽ जाइत छथि। नारी-शिक्षाक प्रति लोकजीवनक विडम्बनापूर्ण चित्रांकनक कारणे ई कथाकाव्य नारी-विमर्श ओ नारी-सशक्तिकरण पर बहुत किछु कहि जाइत अछि।

एहिना **बुचकुन बाबाक स्वप्न**मे परिवार नियोजनक आवश्यकताकेँ कथाक माध्यमे प्रस्तुत कयल गेल अछि। समग्रतामे हिनक कथाकाव्य सभ हिनक आने विधाक रचना जकाँ सामाजिक जगतमे व्याप्त अन्ध-मान्यता सभ पर व्यंग्यपूर्वक पाठक ओ श्रोताक हृदयमे जुगुप्सा जगाय स्वस्थ ओ सबल समाजक निर्माणक हेतु मार्ग सुझबैत अछि।

●●●

साधक कवि : उपेन्द्रठाकुर 'मोहन'

छन्दोबद्ध कवितामे निष्णात ओ पारम्परिक मूल्यबोधक प्रति प्रतिबद्ध उपेन्द्रठाकुर 'मोहन' आधुनिक मैथिलीक विशिष्ट कविक रूपमे परगिणित छथि। हिनक जन्मस्थली छलनि दरभंगा नगरक उत्तर-पश्चिम भागमे बागमतीक कछेरपर बसल गाम चतरिया। संस्कृतमे साहित्याचार्यक औपचारिक शिक्षा प्राप्त कयलाक बाद मोहनजी आजीविकाक हेतु विभिन्न प्रान्तमे बौआइत रहलाह आ अन्तमे द न्यूज पेपर एण्ड पब्लिकेशन लि., पटनामे आर्यावर्त दैनिकक प्रूफ संशोधकक वृत्ति पओलनि तथा ओही संस्थानमे विभिन्न पदपर कार्यरत रहैत अन्ततः **मिथिला मिहिर**क सम्पादन विभागसँ सेवानिवृत्त भेलाह।

मोहनजीक कविता सभक तीन गोट संग्रह उपलब्ध अछि क्रमशः **फुलडाली, बाजि उठल मुरली** ओ **इतिश्री** जकरा सभक प्रकाशन क्रमशः 1942, 1977 ओ 1982मे भेल। फुलडाली हिनक प्रारंभिक रचना सभक संग्रह थिकनि जाहिमे प्रत्येक गेयधर्मी प्रकृतिक अछि आ सामान्यतः ई गीत सभ सिनेमाक गीतक तर्जपर निर्मित अछि। एहि पोथीक कॉभर पृष्ठ पर आप्तवाक्य अछि–

विलासो वीरभावश्च समं यत्रावतिष्ठते।
उन्मदिष्णुः क्रान्तिकृच्च तारुण्यं वयसो रसः।।

भाव ई जे युवावस्थामे लोकजीवनमे दुइयेटा रस उपर्युपरि अवस्थित रहैत छैक क्रमशः शृंगार आ वीर। एहिमे प्रथम तँ उन्माद उत्पन्न करैत छैक आ दोसर क्रान्तिक सूत्रधार होइत छैक। हिनक एहि दू प्रकृतिक गीत एहि संग्रहमे दू खण्डमे अन्तर्भुक्त अछि। प्रथम खण्डक नाम राखल गेल

छैक **शृंगारकुसुम** आ दोसर खण्डक **क्रान्तिकुसुम**। शृंगारकुसुम खण्डमे 15 तथा क्रान्तिकुसुम खण्डमे 14, कुल 29 गोट गीत फुलडालीमे संगृहीत भेटैत अछि। 'बाजि उठल मुरली' कविक प्रगल्भ रचना थिकनि। एहि पोथीपर हिनका 1978 इसवीक साहित्य अकादेमी सम्मानसँ अलंकृत कयल गेल छलनि। एहिमे विभिन्न भावसमन्वित 101टा गीत-कविता संकलित भेल अछि। एकर भूमिकाक रूपमे 'कवि आ कविता : दशा आ दिशा' शीर्षक उपनिबद्ध अछि जाहिमे कवि तत्कालीन काव्य-प्रक्रियापर शास्त्रीय रीतियें विमर्श प्रस्तुत कयने छथि। तेसर कविता संग्रह 'इतिश्री' कविक मृत्यूपरान्त प्रकाशित भेल। एहिमे अस्सी गोट कविता संगृहीत छनि। तदतिरिक्त एहिमे हिनक किछु संस्कृत रचनाकेँ सेहो परिशिष्ट रूपमे समाहित कऽ लेल गेल अछि। दोसर परिशिष्टक रूपमे 'किछु मूल्यवान स्मृति आ प्रसंग'सँ लेखकक जीवनगाथाक किछु अस्पृष्ट अंश तथा गीति साहित्यक सम्बन्धमे हिनक मन्तव्य उद्घाटित भेल अछि।

पूर्वहि कहल जा चुकल अछि जे मोहनजीक प्रारंभिक रचना सभ गेयधर्मी छलनि। मुदा जँ समष्टिमे देखल जाय तँ समग्रतोमे ई गेयधर्मी पदावलीयेक दिस उन्मुख रहलाह। स्वभावत: अपन समस्त रचनामे ई नहि मात्रावृत्त तँ वर्णवृत्तक प्रति अवश्य सावधान रहलाह। अवश्ये युगप्रवृत्तिक प्रवाहमे एकाधटा छन्दमुक्त कविता सेहो रचलनि। गीत-नादक प्रति हिनक एहि उक्तिसँ गेयधर्मी पदावलीक प्रति हिनक ममत्वक दिग्दर्शन होइत अछि–'गीत-नाद जेँ कि साधनाक मधुर मार्ग थिक, आनन्दक संग ज्योति जगयबा लेल लोक एकरा अपनौने रहल अछि, तेँ ई लोकजीवनक अत्याज्य अंगे भऽ गेल अछि। आङन-दलान-खेत-खरिहान-गाछी-पोखरि सर्वत्र एकरा प्रति प्रीति देखल जाइत अछि। कोनो मांगलिक काज होअय–मूड़न-उपनयन, विवाह-द्विरागमन होअय, गीत-नाद भेनहि, कुलदेवता आ कि इष्टदेवताक गीतक संग अनेक-अनेक देव-देवीक गीत होइत छनि, गामक मठ-मन्दिरमे आ ग्रामदेवताक निकट गीत, सिमरियाघाट आदि तीर्थमे गीत, कोबरमे गीत, कनियाँ-वरक संग बीच आङनमे गीत, बाटमे गीत। एहि तरहेँ गीत-नाद लोकजीवनकेँ गछारि

कऽ छपने अछि, ऊँच-नीच आ दुखिया-सुखिया सभकेँ। नाद ब्रह्मक एहन प्रियता आ व्यापकता, जे द्विरागमन-विदागरीमे कनियाँ कनितो अछि तँ राग-भासमे।' **(इतिश्री, मैथिली अकादमी, पटना, 1982, पृ.-160-161)।**

फुलडालीक शृंगारकुसुम खण्डमे जे गीत सभ अछि ताहिमे मिलन आ वियोगक विविध भाव-भंगिमाक चित्रण भेल अछि। एकटा गीतमे नायिकाक पति परदेश जा रहल छथिन। नायिका विविध हाव-भाव ओ अवस्थाक वर्णन द्वारा हुनका रोकि राखय चाहैत छथिन। सरस शृंगारक ई गीत अत्यन्त मनभावन अछि–

की छोड़ि जा रहल छी, प्रियतम! फुलैल यौवन।
अछि अङ्ग-अङ्गमे रस, विरहक जोगैल यौवन।।
साजन, अहीं लै नव-नव शृंगार नित सजाबी।
उद्गार भरल मन अछि उन्माद भरल यौवन।।

तहिना एकटा गीतमे विरहिणीक कष्टक वर्णन करैत कहल गेल अछि–

सखी, परदेश छथि प्रीतम, विकल अछि मन मदन-दुःख सँ।
अहुरिया काटि कै रहि जाइ छी, हुनका बिना दुःख सँ।।
लगै अछि राति बाघिन सन पहाड़क सन पहर बीतै।
बुझाइछ सुन्न वन सन घर जरै अछि तन मदन-दुःख सँ।।

'क्रान्तिकुसुम' खण्डमे समाजसापेक्ष विषयपर लिखल गीतक संग्रह कयल गेल अछि जाहिमे तत्कालीन सामाजिक समस्या सभकेँ केन्द्रमे राखि ओकर यथार्थ स्वरूप ओ परिणामक चित्रण कऽ व्यंजनावृत्तिक माध्यमे ओकरा सभक प्रति जुगुप्सा उत्पन्न कराय लोकशिक्षण करबाक प्रयास कयल गेल अछि। उदाहरणक हेतु सम्पत्तिवान बाल वरसँ समर्थि कन्याक विवाहजन्य कन्याक करुण स्थितिक चित्रणसँ सम्बद्ध ई गीत द्रष्टव्य–

कहू ककरा अपन, दुख सखि बितय जे।
सगर निशि नोरसँ आँचर तितय जे।।
अबोधक संग जे हमरा बियाहल।
समर्थक प्यासकेँ की ओ न जानल।।

जगै अनुराग, मनमे आँच लागय।
उचित आहुति बिना तन के जराबय।।
तखन मन होय गर हाँसू लगाबी।
घटक घर आगि ओलतीमे लगाबी।।
पिताजी मास-मिलकति मात्र देखलनि।
वरक ओ सोन-माठा मात्र देखलनि।।

एहिना एहि खण्डमे काटर प्रथा, निरक्षरता, उपनयन-विवाह आदि संस्कारक अवसर पर प्रचलित आडम्बर, भार-दोरमे अपव्यय, भोज-भात, वृद्ध-विवाह, विधवा समस्या, बेमेल विवाह, पारिवारिक वैमनस्य, लोकजीवनमे पसरल आलस्य आदिपर तँ कशाघात कयले गेल अछि संगहि कृषक ओ मजदूरक दैन्य एवं जमीन्दारलोकनिक अत्याचारी प्रवृत्तिक प्रति असंतोष सेहो व्यक्त कयल गेल अछि। अवश्ये कवि मिथिलाक सामाजिक-आर्थिक अधोगतिक प्रति संवेदनशील छलाह तथा तत्कालीन परिवेशमे भने प्रगतिवादी विचारधाराक अनुकूल वर्ग-संघर्ष ओ श्रमिक वर्गक विजयकामनाकेँ प्रतिष्ठापित नहि कयलनि, भारतीय मानवतावादक संपोषण अवश्य कयलनि आ तकर माध्यम बनौलनि गीतकाव्यकेँ जे लगले सुप्रचलित भऽ जाइछ।

गेयधर्मी पदावलीक रचनाक प्रति कविक आसक्ति हिनक आनो संग्रह सभमे स्फुट भेलनि अछि यथा बाजि उठल मुरलीमे रुदन, वियोग-योग आदि तँ पूर्णतः गेयधर्मी अछिये, आनो कतोक कवितामे गेयता अन्तर्भुक्त अछि।

विषयक दृष्टिजे देखला उत्तर मोहनजीक काव्य-संसारकेँ निम्नलिखित कोटि सभमे विभाजित कयल जा सकैत अछि–

(क) भक्तिपक्षीय (ख) मातृभाषा प्रेममूलक
(ग) समाजसापेक्ष (घ) उपदेशमूलक
(ङ) दार्शनिक चिन्तन प्रधान (च) अन्य

भक्तिपक्षीय

इष्टदेवताक प्रति श्रद्धा ओ विश्वासकेँ भक्ति कहल जाइत

छैक। भक्ति-भावसम्पन्न हृदयक अनुरागक अभिव्यक्ति भक्तिपक्षीय रचनाक उत्स होइत अछि। एहन रचनामे भक्त अपन इष्टक नाम, रूप, गुण, धाम ओ अलौकिक लीलाक वर्णन; श्रवण, कीर्त्तन द्वारा लौकिक ओ पारलौकिक सिद्धिक कामना करैत छथि तथा अपन दीनता, विवशता आदिक वर्णन द्वारा ओहिसँ त्राण हेतु भगवान-भगवतीक प्रार्थना करैत छथि। भारतीय साहित्यमे आदिकालेसँ एहि कोटिक रचनाक प्राचुर्य रहल अछि। मोहनजी सेहो एहि कोटिक प्रचुर रचना कयने छथि। हिनक रचनाक मुख्य उपजीव्य श्रीकृष्ण रहलथिन अछि मुदा तकरा संगहि ई विन्ध्यवासिनी, काली, लक्ष्मी, गणेश, दुर्गा, गोसाउनि, शिव, राम, ब्रह्मा, महावीर, गंगा आदिक वन्दनासँ सम्बद्ध पदक रचना कयने छथि। श्रीकृष्णसँ सम्बद्ध पद सभमे गोपिकाभावेँ श्रीकृष्णक लीला-विलासक वर्णन भेल अछि तँ अन्यान्य देवी-देवताक स्तुति-वन्दनाक क्रममे हिनका सभक प्रति भक्त हृदयक उद्‌गार, शरणागति भाव, क्षमायाचना, ध्यान आदिक वर्णन भेल अछि। उदाहरणार्थ गोपिकाभावें रासविहारी श्रीकृष्णक मुरलीक तानपर आकर्षणक वर्णन करैत कहल गेल अछि–

रिक्त घटक पूर्ति पर्व
अर्थहीन आब गर्व
अभिसारक रुचि अखर्ब
शारदा रजनीक नोत बाँटि रहल मुरली।
सखि हे, संकेत समय बाजि उठल मुरली।।

(बाजि उठल मुरली, पृ.-1)

हिनक अनेक कवितामे श्रीकृष्णक विविध लीला यथा यमुनातट लीला, कदम्बक गाछतरक लीला, गोचारण लीला, माखनचोरी लीला, कालिय नागदमन लीला, चीरहरण लीला, रासलीला आदिक संकेत भेटैत अछि, मुदा सर्वत्र ब्रह्मरूप श्रीकृष्णक भक्तिसँ भवबाधासँ पार होयबाक भक्तक कामना सैह स्फुट भेल अछि यथा–

बिना योग-तप कयनहि प्रेमक रससँ आत्मा शुद्धे।
एकतान मन हुनक ध्यानमे चित्तक वृत्ति निरुद्धे।।

ब्रह्मानन्द विरस सन मानी रसगर परमानन्दे।
देह भाव लऽ हुनकेमे लय उसरि जाय दुख-दंदे।।
होइ समर्पित बनि अनन्य मन भव-बाधा टरि जाय।
देही रहितो आत्मदीपने मोहन त्राण उपाय।।

(इतिश्री, पृ.-104)

कहल जा सकैछ जे हिनक कृष्णसँ सम्बन्धित पद सभ 'श्रवणं कीर्तनं विष्णोः'क अनुगमन करैत अछि।

कालीक स्तुति सभमे हुनक महिमागानक प्रधानता अछि आ हुनक शरणागतिये लक्ष्य। एहि कोटिक पद सभमे भक्त कविक ई उद्गार बेर-बेर प्रकट भेल अछि जे शरणागत भक्तक समस्त योगक्षेमक वहन भगवती काली करबे करतीह, यथा–

माँ, तमोमयी रहितो की छी ज्योतिर्मय नहि।
मर्म बुझय मोहन ई तेँ बैसल अछि पद गहि।।

(तत्रैव, पृ.-123)

एही तरहेँ अन्यान्यो देवी-देवतासँ सम्बद्ध पदमे ध्यान, स्तवन, लीला ओ शरणागतिक पारम्परिक रीतियेँ वर्णन भेल अछि जे कविकेँ भक्तक मर्यादा प्रदान कयने छनि।

समाजसापेक्ष

कवि-मनीषी जाहि सामाजिक परिवेशमे रहैत छथि तकर सुख-दुःख, भाव-अनुभाव आदिकेँ अपन काव्यमे अवश्ये स्थान दैत छथि। तेँ हुनका युगद्रष्टाक अभिधान प्रदान कयल गेलनि अछि। मुदा ओ युगस्रष्टो होइत छथि, तेँ मोहनजीक शब्दमे 'ओकरा (कविकेँ) चाहियैक जे की भऽ रहलैक अछि से थोड़े, की होयबाक चाही, से बेसी चित्रित करय (बाजि उठल मुरली, पृ.-14)'। एही सरणिपर चलैत मोहनजी तत्कालीन समाजक बहुतोक विकृत परम्परा सभक वर्णन अनेक कविता-गीतमे कयने छथि। ताहि समयमे काटर प्रथा छल जकर कारणे धनक लोभमे कन्याक पिता अपन अल्पो वयसक कन्याक विवाह प्रौढ़ पुरुषक संग करा दैत छलाह।

एहि अनमेल विवाहक कारणे वरक जे दुर्गति होइत छलनि तकर वर्णनसँ सम्बद्ध गीतमे वरक ई उक्ति द्रष्टव्य–

कहू की यार, कनियाँमे ठका गेलहुँ, टका गनिकेँ।
घटक से चण्ठ, कठपुतरी देया देलक, अपन बनिकेँ।।

(फुलडाली, पृ.-8)

मिथिलामे एक गोट कहबी अछि–विवाहसँ विधि भारी। से जखन कोनो वरक विवाह होइछ तँ वरक परिछनक क्रममे नाक दाबि कऽ प्राणायाम परीक्षा, ठक-बक चिन्हबाक विधि, केराक पातक हेतु उपयुक्त शब्द पुछबाक विधि, घाटिक हेतु बेसन कहयबाक विधि तथा टोप-टहंकारक संग गीत गयबाक विधि होइते अछि। मुदा प्राणायामसँ अपरिचित वरक हेतु नाक दबबाक विधि, निरक्षर वरक हेतु शब्द-परीक्षा ओ सरस गीतसँ हुनका लोकनिक स्वागत सर्वथा अकार्यक सावित होइत छैक। तेँ एहि विधि सभक निरर्थकतापर कशाघात करैत कवि कहैत छथि–

नहि होय वर-परीक्षा, उद्देश्य धन टके टा।
दीपक इजोतमे ई परिछन-क्रिया कये की?
ऐ विधिकरी तजू विधि, किछु सार एहिमे नहि।
चरवाहा होथि वर तँ रस-गीत गाबिये की?

(फुलडाली, पृ.-1)

मिथ्याडम्बर मिथिलाक समाजक अन्य कुरीति अछि। विवाह-उपनयन ओ श्राद्ध-वर्षीमे लोक देखाबक हेतु भोज-भण्डारा तँ कऽ लैत छथि अपन औकातसँ बढ़ि कऽ, मुदा तकर दुष्परिणाम ई होइत छनि जे घरबारिकक चास-वास पर्यन्त बिकि जाइत छनि आ भोजन-वस्त्रोक कष्ट भऽ जाइत छनि। उपनीत बालककेँ उच्च शिक्षा दिअयबाक भने कोनो जोगाड़ नहि हो, मुदा उपनयनक अवसरपर भोज-भात अनिवार्य बुझल जाइत छैक जे मिथिलाक गरीबी आ अशिक्षाक कारण बनल रहलैक अछि। तेँ कवि एहन मिथ्याडम्बरसँ बचबाक लोकशिक्षण प्रदान करैत कहने छथि–

खसी और दही केर सबतरि उदेस।

बरुआ पढ़त कोना की, न तकर लेस।।
सुनू बन्धु, परतिष्ठे प्राण न गमाउ।
टाङ पसारू तते, जते वस्त्र पाउ।।
(तत्रैव, पृ.-10)

एही तरहेँ कवि अनमेल विवाह जन्य वैधव्यक संभारसँ पीड़ित मिथिलाक विधवाक वस्तुस्थितिसँ परिचित करयबाक हेतु सेहो गीत लिखलनि, गरीबक प्रति धनिकलोकनिक अत्याचार-अनाचार, महाजनक बेइमानी, एकल परिवारक प्रति व्यामोह, जमीन्दारक अत्याचार, बोनिहारक दैन्य आदिकेँ सेहो चित्रित कऽ एक गोट सभ्य, सुशिक्षित ओ परदुःखकातर समाजक परिकल्पना कयलनि अछि। कवि मिथिलामे भाङक व्यसनसँ ग्रस्त लोकजीवनक यथार्थ चित्रित कऽ एहि व्याधिसँ मुक्तिक हेतु एकटा कवितामे व्यंग्यपूर्वक कहने छथि–

वेदान्ती अनका लग, अपना लय छी, हम बनल वज्र सोंटा।
बरु जगत दृष्टियें डूबि जाइ, आबाद रहय भाङक लोटा।।
(बाजि उठल मुरली, पृ.-20)

दार्शनिक चिन्तनप्रधान

मोहनजी संस्कृत साहित्यक विद्वान छलाह। ओ भारतीय दर्शनक गूढ़ तत्वान्वेषी छलाह जकर छाप हुनक अधिकांश कवितामे सर्वथा स्फुट भेलनि अछि। भक्ति दर्शनक प्रति हुनक रुचिक परिचय तँ हुनक भक्तिपक्षीय कविता सभमे प्रकटे अछि। तदितिरिक्तो भारतीय दर्शनक अनेक तत्वकेँ हुनक कविता सभमे ताकल जा सकैछ।

भारतीय दर्शनमे आधिभौतिक सुख-सम्पत्ति आदिकेँ क्षयमान कहि आत्मचिन्तन ओ नैतिकताक रक्षा करैत जीवनयापनकेँ पारलौकिक समृद्धिक हेतु कहल गेल अछि। तेँ एतय अर्थ, धर्म, काम आ मोक्ष चारू पुरुषार्थमे धर्महिकेँ प्राथमिकता छैक जकर बलपर अर्थप्राप्ति, अर्थसँ कामसाधना ओ धर्मरक्षापूर्वक मोक्ष प्राप्तिपर बल देल गेलैक अछि। एही

दार्शनिक तत्त्वकेँ अभिव्यक्त करैत कवि 'लक्ष्मीक स्वागत' कवितामे कहलनि अछि–

उन्नतिक नव अर्थ–भौतिक साधनक विस्तार।
राखि नैतिकता कोना हो प्राप्त से सुखसार।।
आत्मरति, भावनाजीवी रही रचनालीन।
तोँ जननि लक्ष्मी, करब स्वागत कोना हम हीन।।

(बाजि उठल मुरली, पृ.-34)

भारतीय दर्शनक सर्वाधिक प्रशस्त ग्रन्थ गीता कहैत अछि–'दुःखेषु अनुद्विग्नमनाः, सुखेषु विगतस्पृहः'। अर्थात् लोककेँ सुख आ दुःख दुनू घड़ीमे समभावमे रहबाक चाही। ने सुख भेटलापर उपलाइ, ने दुःख भेटलापर कातर होइ। गीताक एहि तथ्यकेँ कवि एहि शब्देँ व्यक्त कयने छथि–

शुद्ध सत्व सरस्वती छथि जनिक नित्य उपास्य।
तम मलिन तोँ, तेँ रहथि से कवि तोहर उपहास्य।।
सम रही सुख-दुःखमे तोँ रहह कृश वा पीन।
तोँ जननि लक्ष्मी करब स्वागत कोना हम हीन।।

(तत्रैव, पृ.-35)

एतावता कवि शुद्ध सात्त्विक जीवनक पक्षधर छथि आ तमोगुणसँ दूर रहबाक शिक्षा दैत छथि जे भारतीय दर्शनक अनुकूल अछि।

भारतीय दर्शनमे 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्' कहल गेल अछि आ निष्काम कर्मयोग ओ उपासनाकेँ मोक्षक साधक कहल गेल अछि। कवि दीपक माध्यमे निष्काम कर्मयोग ओ परोपकारक भावनाक प्रति सचेष्ट होयबाक शिक्षा दैत कहने छथि–

मान-दान थिक लौकिक ई थिक दिव्य-साधना।
ज्योतिर्मय दीपक रे, करिते चल उपासना।।
विमल ललित आलोकेँ भासित कर तोँ अग-जग।
आत्मारामक जीवन स्वीकृत कर रे सुविहग।।

(तत्रैव, पृ.-44)

भारतीय दर्शनमे 'ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या' कहि कऽ सांसारिक विषय-वस्तुक अवहेलना कयल गेल अछि आ ब्रह्मानन्दक प्राप्तियेमे जीवनक सार्थकता बुझल गेल अछि। कवि एहू दार्शनिक तत्त्वकेँ एकटा कवितामे अभिव्यक्त करैत कहलनि अछि–

जे बीति गेल, से नहि घूरत, जे बीतत नहि परिवर्त्तनीय
संस्कारक उद्दीपन चाही, आत्मप्रकाश थिक अर्जनीय।।
जे-जेहन भेलहुँ, जे-जेहन भेल, सभ छल सपना, जे भेल गेल।
नकली खेलक ई हारि जीत? असली सम्हरय तँ सही खेल।।

(तत्रैव, पृ.-52)

तहिना शरीरक नश्वरता ओ आत्माक अमरताक संदेश एहि पाँतीमे स्फुट अछि–

जे जनमत से मरते, नश्वर देह, अमर ई आत्मा।

(तत्रैव, पृ.-54)

भारतीय दर्शनमे कमे दिनक आयुकेँ **(तत्रैव, पृ.-44)** श्रेय कहल गेलैक अछि जँ ओहीमे नीक काज सभ कऽ लेल जाय मुदा जँ आयु पैघ हो मुदा ओहिमे नीक काज सम्पन्न नहि हो, तँ ओ बेकार थिक। कहलो गेलैक अछि जे 'मुहूर्त्तं ज्वलितो श्रेयो न च धूमायितं चिरम्'। एहि दार्शनिक तत्वहुकेँ कवि एहि पंक्तिमे आत्मसात् कऽ लेने छथि–

क्षण भरि पजरब नीक, धुआँइत चिर कालक की जिनगी?

(तत्रैव, पृ.-54)

भारतीय मनीषा सभ दिनसँ प्राणी मात्रक कल्याणकामी रहल अछि। एहि ठामक दर्शन 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चिद् दुःखभाग् भवेत्' पर विश्वास करैत अछि। एकरा कवि यथावत् अपन एक गोट कवितामे अनुगायने कऽ देलनि अछि–

सभ सुखी होअओ निरोग अशेष जनता।
सभ कुशल देखओ जरओ सभ दुःख-जड़ता।।

(तत्रैव, पृ.-63)

एही तरहेँ मोहनजीक कविता सभमे दर्शनक तत्त्व सभ छिड़िआयल

अछि जे हिनक कथ्यकेँ गंभीर बनयबामे सहायक भेल अछि। ई धर्मनिरपेक्षताक पक्षपाती छथि आ समस्त प्रकारक धार्मिक अनुष्ठान पर विश्वास रखैत छथि। संगहि 'कृण्वन्तः विश्वमार्यं' अर्थात् सकल मानवकेँ सभ्य-सुसंस्कृत मानव-बनायब धर्म बुझैत छथि।

मातृभाषा प्रेममूलक

मोहनजीक अनेक कवितामे हिनक मिथिला-मैथिल-मैथिलीक प्रति प्रेमक अनुगायन भेल अछि। हिनका समय धरि मैथिली भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे समाविष्ट नहि भऽ सकल छलीह आ तकरा लेल आन्दोलन चलि रहल छलैक। तेँ अपन एक गोट कवितामे ई मैथिलीक अधिकार-प्राप्तिक हेतु संघर्षक आह्वान करैत कहने छथि–

मैथिलीक अधिकार प्राप्ति सभ लै होयत वरदान।
अमर रहत इतिहास मध्य से, जकर ज्वलित वरदान।।

(तत्रैव, पृ.-55)

एहिना अनेक पदमे मैथिलीक हेतु हिनक प्रतिबद्धताक निदर्शन भेटैत अछि यथा–

दर्शन - साहित्यक गरिमा की ?
शान्ति-संस्कृतिक ई महिमा की ?
माय मैथिली दीन बन्दिनी बिलखै छथुन मलान।

(तत्रैव, पृ.-64)

भाषा संस्कृतिकेँ जे क्यो प्राणोपम मानय।
देश समाजक हित-क्षतिकेँ जे निज कऽ जानय।।
अपन देश-कोसक मनुक्ख से, से यश पाओत।
मैथिलीक अधिकार युद्धकेँ जे सुढ़िआओत।।

(तत्रैव, पृ.-80)

जखन मैथिली सूपक भाँटा भेल संकटापन्न।
की राष्ट्रीयता? देशभक्ति की, के गौरव-सम्पन्न।।

(तत्रैव, पृ.-82)

उपदेशमूलक

मोहनजीक कविता सभमे अनेक ठाम उपदेशमूलक पाँती सभ सेहो देखि पड़ैछ जे लोकशिक्षणक दृष्टिजे अनुस्यूत भेल अछि। एहि प्रकारक प्रयोग द्वारा ओ काव्यक व्यवहारविदे आ कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे हेतुक समर्थन कयने छथि। उदाहरणक हेतु 'नियम मानह' कविताकेँ देखल जा सकैछ। ई सम्पूर्णतामे उपदेशपरके थिक। किछु पाँती द्रष्टव्य–

व्यवस्था बन्धन जते, से संतुलन थिक
मूर्ति-भंजक जनु बनह, हित-हानि जानह!
नीचतासँ दस्यु होइछ, असुर होइछ
उच्चतासँ शिष्ट होइछ, देव होइछ
अमर्यादित धाप दऽ जँ दौड़ि बढ़बह
क्षणिक हित, पुनि अन्त दुर्गति, ठेसि खसबह

(तत्रैव, पृ.-63)

एहिना हिनक विभिन्न कविता सभमे उपदेशपरक उक्ति यत्र-तत्र सन्हिआयल अछि मुदा सर्वाधिक समेकित रूपमे ई 'कर्मधर्म' शीर्षक कवितामे लगभग दू सय चतुष्पदीमे व्यक्त भेल अछि जे हिनक अमूल्य अवदान थिक। द्रष्टव्य एक गोट चतुष्पदी–

शासक ईश्वर अंश अर्थ जे न्याय करओ ओ।
दोषीकेँ सैंतओ, निर्दोषक त्राण करओ ओ।।
बहुतो दुख-सुख जगक शासकक त्रुटियें-दोषें।
मानव कृत दुःस्थितिपर जनगण लड़ते रोगें।।

(इतिश्री, पृ.-91)

अन्य

मोहनजीक बहुआयामी भावधारामे विषयक वैविध्य एकटा सहज ओ प्रकृत लक्षण कहल जा सकैत अछि। ई कोनो वाद किंवा साहित्यक राजनीतिसँ कहियो आबद्ध नहि रहलाह। तेँ जे किछु लिखलनि से स्वान्तःसुखाय, प्रचारक तेहन भूखो नहि रहनि, ने अवसरे। तेँ जखन कखनो

हिनक संवेदनशील हृदयमे जे स्फुरण भऽ गेलनि, सैह अक्षर बनि कऽ प्रकट भऽ गेलनि। तेँ 'मित्र औ, युग दिस ताकि पढ़ू। विद्या रूप सोन औंठीमे हीरा धनक गढ़ू' किंवा 'तास-सतरंज छोड़ू, भाङ केर गंज छोड़ू, देखू निज काज-धाज आब तिरहुतिया' लिखि जँ ई उपदेशपरक रचना कयलनि, तँ प्रेम, संयोग-वियोगक संगहि ओकर कतोक उद्दीपन यथा वसन्त, वासन्ती पुर्णिमा, होरि, घनश्याम, पावस, शरद, तिमिर, उदय, दीप, प्रभात, अपराध, सरिता, समीर, मंजरी आदिपर सेहो कविता लिखलनि। कवि युगक धाहकेँ सेहो भोगैत रहलाह आ ताहूपर अपन कलम उठौलनि, तत्कालीन समयक राजनीति, समाजनीतिमे होइत परिवर्तनोकेँ अपन वर्ण्यविषय बनौलनि यथा स्वातंत्र्योत्तर कालक वर्णनमे कवि कहलनि–

राजा ईश्वर अंश बिलायल, सामंती धाह पतरायल।
सोनक चकमक जड़-मन्हुआयल, प्रारब्धक मारल उधिआयल।।

(तत्रैव, पृ.-53)

तहिना 'गजब हाल' कवितामे कहैत छथि–

पित्तड़ि सोने केँ ललकारय
जोर-शोरसँ ई गर फाड़य
गुण-वर्णन-भाषा सभ मोड़े
भरि बजार क्यो ठठते थोड़े
फँसि जयतै बहुतो मुल्लह,
पाटल सगरो नकल माल छै।
एहि दुनियाँ के गजब हाल छै।

(इतिश्री, पृ.-51)

एकटा कवितामे कवि युवककेँ ललकारैत हुनकालोकनिकेँ राष्ट्रोद्धारक हेतु सन्नद्ध करबाक युक्ति करैत देखि पड़ैत छथि–

देशक अभिलाषा हमहिँ केन्द्र,
करबाक पड़ल अछि कते काज।
साहित्य विपद्गत हन्त आइ,
पतनोन्मुख अछि दुर्गत समाज।

रे जन्मभूमि जननीक नोर,
पोछत के हमरा बिना वीर?

(बाजि उठल मुरली, पृ.-59)

युवकपर कवि पूर्ण भरोसक अभिव्यक्ति करैत छथि आ नव्यताक समर्थनमे नवगछुलीक प्रतीक बनाय कहैत छथि–

जयति नवगछुली समृद्धिनिधान शीतल।
बढ़ि हरओ जन-ताप, फलसँ भरओ हीतल।।
गुणक सौरभ, दिग्दिगन्त विकीर्ण होअओ।
पाबि मधु-ऋतु लोक-जड़ता शीर्ण होअओ।।
पुरनका खसते उठओ नवका जयध्वज।
देखा दे अओ अपन रूप विराट।

एतावता मोहनजी नहि केवल भक्त, प्रकृति-पर्यवेक्षक, उपदेशकर्ता किंवा दार्शनिक कविटा छलाह अपितु हुनक बहुआयामी संवेदनामे प्राणीमात्रक हेतु, लोकजगत ओ समाजक कल्याणक हेतु समस्त प्रेरक तत्वक आवाजाही छलनि आ ओहि समस्त तत्वक अवगाहन कऽ ई लोकमंगलक साधना करैत रहैत छलाह।

●●●

स्नेहलताक मिथिला-मैथिली प्रेम

बौद्ध नास्तिक दर्शनक उच्छेदक मिथिलाक प्रसिद्ध दार्शनिकलोकनिमे अग्रगण्य उदयनाचार्यक जन्मभूमिक गौरवप्राप्त समस्तीपुर जिला आधुनिको कालमे पोद्दार रामावतार 'अरुण', प. भुवनेश्वरझा 'भुवनेश', प. सुरेन्द्रझा 'सुमन', आरसीप्रसादसिंह आदि मिथिला-मैथिलीक साहित्यमनीषी लोकनिक जन्मभूमि ओ कर्मभूमिक रूपमे प्रख्यात रहल अछि। साहित्यमनीषी लोकनिक एही परम्परामे कपिलदेव ठाकुर 'स्नेहलता'क नाम सेहो परिगणनीय अछि जे अपन लोकप्रिय रचनाकारिता कारणेँ मिथिलाक लोकजगतक कंठहार बनल छथि। भक्त-कीर्त्तनकार तथा संस्कार-व्यवहारपरक गीतक गाइनि लोकनिक पोथा ओ स्मृतिमे जीवैत हिनक विपुल संख्यक गीत छिड़िआइत-छिड़िआइत क्रमिक विलोपनक स्थिति प्राप्त कयने जा रहल अछि। तथापि अपन रचनावलीक माध्यमे रामभक्ति साहित्यक विशिष्ट संपोषक 'स्नेहलता' सखी सम्प्रदायक प्रतिनिधि कविक रूपमे राष्ट्रीय स्तर धरि जानल-मानल जाइत छथि।

शाश्वत साहित्यक निर्माणमे मानव मनक चिरन्तन ओ सार्वकालिक भावना मुख्य उपजीव्य रहैत अछि। 'स्नेहलता' शाश्वत साहित्यक निर्माता छलाह। ई जाहि सार्वकालिक भावनाकेँ अपन काव्य-साहित्यक उपजीव्य बनौलनि से छल भक्ति जे ईश्वरक प्रति जीवक एकदिसाहु अनुरक्तिक चरम अवस्था थिक। स्वभावत: हिनक वर्ण्यविषय भक्तिभावसँ ओतप्रोत अछि। वैदेही विवाहक विधि-विधानक साङ्गोपाङ्ग वर्णन, शिव विषयक नचारी ओ महेशवाणी, विभिन्न देवी-देवताक प्रति विनयक पद, फगुआ ओ झूलाक लीलागान तथा विभिन्न विषय-कीर्त्तनमे स्नेहलता भक्तिक उत्कर्षकहिकेँ अपन रचनाक लक्ष्य बनौने देखि पड़ैत छथि। ईश्वरक

लीलागान दिस अभिमुख हिनक पदावलीमे संसारक प्रति विरक्तिसँ भरल चेतावनी संकीर्त्तन सभमे सेहो भक्तिएक अनुष्ठान दृष्टिगोचर होइछ। वैदेही विवाह संकीर्त्तन, विनय पदावली, स्नेह शतक, स्नेह वाटिका, झूला संकीर्त्तन, महेशवाणी संग्रह, चेतावनी संकीर्त्तन; भक्त चन्द्रहास ओ अढ़ैयाक विषय-कीर्त्तन तथा सीतावतरण (खण्डकाव्य)क रचयिता 'स्नेहलता' मैथिली सन्तसाहित्यक ओहि रचनाधाराक प्रतिनिधित्व करैत छथि जे मोदलता द्वारा प्रतिष्ठित भऽ श्रीनिधि, रामेश्वर, रामप्रिया, रसिकअली, हरेकृष्णलाल दास 'मुख्तार', नेमलता, कदमलता, रूपलता, करील, आनन्दलता, प्रेमनिधि, रसमोदनिधि, सियाअली, रसकान्तिलता आदि कवि परम्पराकेँ जन्म देलक, जनिकालोकनिक राम भक्ति साहित्य बीसम शताब्दीक दोसर ओ तेसर चरणकेँ महमहौने रहल तथा एखनहुँ रमाकान्तशरणशास्त्री, नारायणदास 'भक्तमाली', प्रताप, प्रदीप आदिक लोकप्रिय रचनाक नियामक रहल अछि।

भक्त कवि 'स्नेहलता' अपन परिकरक बीच अत्यन्त संवेदनशील आशुकविक रूपमे मान्य छलाह। हिनक आशुकवित्व मिथकीय रूप धारण कऽ लेने छल। जे केओ हिनका लग जाइत छलथिन आ जाही परिवेशपरक रचना बना देबऽ कहैत छलथिन तेहने रचना बना कऽ ई प्रदान कऽ दैत छलथिन। यद्यपि एहन रचना सभक अधिकांश भाग की तँ विलुप्त भऽ गेल अथवा हिनक भक्तलोकनिक पोथा वा कंठमे विद्यमान अछि जकर संकलन अत्यन्त सुदुष्कर अछि तथापि जे किछु पद प्राप्त भेल अछि तकर आधार पर कहल जा सकैत अछि जे 'स्नेहलता' बहुआयामी व्यक्तित्वक कवि छलाह। भक्तिपरक रचनावलीक अतिरिक्त हिनक जाहि विषय सभपर रचनावली दृष्टिगोचर भेल अछि से सभ थिक कृषक जीवन, राजनीतिक व्यंग्य, सन् 1986क बाढ़ि, चरखा आन्दोलन, सर्वशिक्षा अभियान आदि।

मैथिली साहित्यक ई नरपुंगव मिथिला-मैथिलीक प्रति सर्वथा प्रतिबद्ध छलाह। मिथिलाक सांस्कृतिक वैशिष्ट्यक अनुगायन कऽ ओकर सन्ततिक रूपमे आत्मगौरवक प्रकाशन मैथिलीक कवि-समुदायक एक गोट विशिष्ट उपजीव्य रहलनि अछि। स्नेहलता बल्लीपुर (समस्तीपुर)क

अपन कर्मक्षेत्रमे प. भुवनेश्वरझा 'भुवनेश' (स्वनामधन्य आचार्य प. सुरेन्द्रझा 'सुमन'जीक पिता)क सहज सान्निध्यमे छलाह। वैद्यकमे निपुण 'भुवनेश'सँ हिनका आरोग्यशास्त्रसँ सम्बद्ध प्रभूत ज्ञान उपलब्ध भेल छलनि जे हिनक जीविकाक साधन रहल छलनि। एही गुरुक सान्निध्यमे हिनका संकीर्त्तन रचनाक प्रेरणा सेहो भेटल होयतनि जे सहजहिँ उह्य थिक, कारण 'भुवनेश'जी वैद्यराजक संगहिँ अपना कालक प्रख्यात संकीर्त्तनकार ओ भक्ति पदावलीक रचनाकार छलाह। हिनक ई मिथिला गौरव गीत तँ एखनहुँ मिथिलाक लोकजीवनक कंठहार बनल अछि–

परम प्रिय पावन तिरहुत देस।
जँह जनमलि विदेहतनया श्रीसीता मंजुल वेष।।
हुनकेसँ पावन रघुनन्दन रघुकुल कमल दिनेस।
याज्ञवल्क्य गौतम कणाद मुनि कौसिक कपिल द्विजेस।।
अष्टावक्र व्याससुत शुकमुनि परम शान्त शुचि वेष।
आबि विदेहराज सौं पाओल ज्ञान तत्त्व अनिवेस।।
महामहिम बोधायन उदयन वाचस्पति गंगेश।
शंकर मण्डन गोकुल द्विज जँह शिवसिंह सरिस नरेश।।
मंजुल चंचरीक विद्यापति गुञ्जत काव्य हमेश।

'स्नेहलता'क एक गोट पदमे मिथिलाक माहात्म्यक अत्यन्त सुष्ठु वर्णन भेल अछि। एहि पदमे कहल गेल अछि जे मिथिलाक माहात्म्य अकथ्य ओ अवर्णनीय अछि। ब्रह्मा, विष्णु, महेश, देवगण, मुनि, किन्नर आदि एकर प्रशंसा करैत अघाइत नहि छथि। एतहि जगतजननी जानकीक जन्म भेल छल जनिक पातिव्रत्यक यश तीनू भुवनमे आलोकित अछि। अवधपति रामचन्द्र ओ लछुमन एही धरती पर विश्वामित्रक संग पैरे आबि वैदेही विवाहक यज्ञानुष्ठानमे भाग लेने छलाह। एतऽ सनातन धर्मक ध्वज निरन्तर फहराइत रहल अछि। ई प्रदेश षट्ऋतुसँ सम्पन्न अछि। ई अनेक प्रकारक खाद्य फलक उत्पादक तँ अछिये संगहि रिद्धि-सिद्धि आदि अनेक पारलौकिक फलक दाताक रूपमे सेहो जानल जाइत अछि। एहि ठाम योग, तन्त्र, विज्ञान, सांख्य, मीमांसा, न्याय आदि शास्त्र ओ दर्शनक दिग्विजयी विद्वानलोकनि अवतरित भेल छथि जनिका लोकनिक

कारणे ई प्रदेश दिन-राति चतुर्दिकमे मान-प्रतिष्ठा पबैत रहल अछि। एहि ठाम धरती शस्य-सम्पन्ना छथि तथा एहि ठामक भाषा (मैथिली) अत्यन्त सुकोमल अछि। स्वभावतः धरतीपर एहन कोनो देश नहि जे मिथिलाक परम सुख देखि ईर्ष्या नहि करैत हो। अन्तमे कवि रामकथा प्रसंगकेँ पुनः मोन पाड़ैत कहने छथि जे एहि ठाम रामजानकीक वैवाहिक छविक अवलोकनक क्रममे सूर्य छओ मास धरि स्थिर भऽ गेल छलाह। ई धरती, धरती नहि पुष्पवाटिका थिक जतऽ स्नेहक लत्ती लतरैत अछि अर्थात् जतऽ पारस्परिक प्रेम, स्नेह ओ सद्भावक गंगा निरन्तर प्रवहमान छथि। पद एहि प्रकारेँ अछि–

धन्य अनन्य हमर थिक मिथिला, अकथ महातम कहल ने जाय।
विधि हरिहर सुन नर मुनि किन्नर, जकर प्रशंसा करथि अघाय।।
जतय आबि जगजननि जानकी, जनम लेल त्रिभुवन यश छाय।
जतय लषन ओ रामचन्द्रजी, पैदल अयला कष्ट उठाय।।
जतय सनातन धर्मपताका, नभ मण्डलमे नित फहराय।
रिद्धि-सिद्धि ऋतु षट् सुखदायक, बसथि जतय नव-नव फलदाय।।
द्विग्विजयी विद्वान प्रपूरित, योग तन्त्र विज्ञान सदाय।
निशि दिन पाबथि मान-प्रतिष्ठा, दर्शन, सांख्य, मीमांसा, न्याय।।
शशि सम्पन्न सुकोमल धरणी, मृदु भाषा भाषी समुदाय।
कोन एहेन थिक देस अवनिपर, जे न परम सुख देखि सिहाय।।
जतय सूर्य षट् मास गमाओल, प्रेम विवश सुधि बुधि बिसराय।
'स्नेहलता' कत अनत लतरती, मिथिला सन फुलवारी पाय।।

एकटा अन्य पदमे मिथिला-महिमाक वर्णन एहि स्वरूपक अछि–

भूमंडल के अमर गोदमे, मुसुकाहट सुन्दर मिथिला के।
ममता भरल सरस रजकणमे, मचलाहट सुन्दर मिथिला के।।
योग-भोगमे सगुन उपासन, वेद नीतिमय राज सिंहासन।
ज्ञान दिवाकर हमर जनकजी, सनक जगतमे आन भेला के।।
हरियर-हरियर जतय कुञ्ज-वन, हरियर हरियर सुफल खेतगण।
बसथि वसन्त जतय निशिवासर, करथि प्रदर्शन पूर्ण कलाके।।
कुसुमित कानन सरिता निर्झर सतत वेदध्वनि गुंजन मधुकर।
क्षमा, दया, दम, दान, मानमय, कलकल-कलकल धुनि कमला के।।

वर-कनिञा सिंगार मनोहर, रूप विअहुती सभक धरोहर।
'स्नेहलता' लतराय चरण पर, जनकलली श्रीरामलला के।।

'स्नेहलता' मिथिलाक शस्यश्यामला धरती, कुसुमित कानन, सरिता, निर्झर, कमलाक कलकल ध्वनि, लोकजगतमे क्षमा, दया, दान आदि गुणक प्रति तँ अभिभूत छथिहे, संगहि सर्वाधिक अभिभूत एहि हेतुएँ छथि जे यैह एहन धरती थिक जतऽ राम ओ सीताक दुल्लह ओ दुलहीक स्वरूप साकार भेल छल। एकटा अन्य पदमे कवि जनकपुरकेँ तीनू भुवनक मनभावन धाम, मिथिलाक रजकणकेँ चानन सन पवित्र आ जनककेँ ज्ञानी शिरोमणि कहि मिथिलाक अभ्यर्थना कयने छथि–

भूमंडल केर सरस गोदमे मचलथि मिथिला पावन।
मध्य विराजथि धाम जनकपुर तीन भुवन मनभावन।।
जतय सुधा सानल वसुधा केर रजकण माथक चन्दन।
धरणि सुता जगजननि जानकी जनिक करथि जगवन्दन।।
वेद प्राणप्रिय ज्ञान दिवाकर जतय जनक विज्ञानी।
ततय रहथि विधि हरि हर निशि दिन उमा रमा ब्रह्माणी।।
सियाराम सिंगार बिअहुती नित मंगलमय झाँकी।
'स्नेहलता' मिथिलावासी संग पिबथि छटा छवि छाँकी।।

'स्नेहलता' अपन पदावलीमे अनेक ठाम मिथिलाक चर्चा कयने छथि। हुनका ई अटूट विश्वास छलनि जे मिथिलाक धरतीपर जन्म लेनिहार कोनो व्यक्ति खाहे ओ केहनो अधम प्रकृतिक किएक ने होथि, अवश्ये मोक्ष प्राप्त कऽ लैत छथि। कारण स्पष्ट अछि जे ई पुण्यभूमि जानकीक जन्मभूमि थिक, तेँ एहि ठामक निवासीकेँ मोक्षक हेतु कोनो साधना करबाक प्रयोजन नहि रहैत छैक। कविक शब्दमे :–

धरम करम हम किछुओ ने कयलहुँ हे महरानी सीया।
सब दिन सोहायल सुख विलास, हे महरानी सीया।।
मिथिला नगरिया बिच हमरो जनमुआँ हे महरानी सीया।
एकरे भरोसा ओ विसवास, हे महरानी सीया।।

एकटा अन्य पदमे कवि मिथिलाक दीन दशाकेँ सर्वथा उद्घाटित कऽ कऽ राखि देने छथि। मुदा विदेहक नगरीमे बसनिहारक दीनताक प्रति निःस्पृह उद्गार एहि शब्देँ अभिव्यक्त भेल अछि–

साग-पात खोंटि खोंटि दिवस गमेबइ हे हम मिथिले मे बसबइ।
हमरा ने चाही सुख विश्राम हे हम मिथिले मे बसबइ।।

अवश्ये कविक मानस पटल पर मिथिलाक जनजीवनमे व्याप्त दैन्यक स्पष्ट चित्र छनि। कवि जनैत छथि जे एहि ठामक बहुतोक लोककेँ करमीक साग पर जीवन गुजर करबाक बाध्यता रहैत छैक तथापि केओ एहि धामकेँ त्यागबाक उत्कंठा नहि रखैत अछि। मिथिला आर्थिक रूपेँ दीन रहितो आध्यात्मिक चेतनासँ सम्पन्न लोकक नगरी थिक आ तेँ कवि अपन जन्मभूमिक प्रति विशिष्ट आप्तिसँ संपृक्त छथि। एतऽ हुनका इहलौकिक आ पारलौकिक सिद्धि पयबाक अडिग विश्वास छनि। एकटा पदमे कवि मिथिलाक महिमाक वर्णन करैत कहने छथि–

परम पुनीत एहो मिथिला के धरती
चाहे उपजाउ होय चाहे होय परती
मिथिला नगरिया के चिकनी डगरिया, सुन्दर लागे ना।
मोरा मिथिला नगरिया सुन्दर लागे ना।।
मिथिला नगर थिक सुयश केर नगरी
प्रेम सँ भरल भूमि ममता के डगरी
मिथिला के आगू जन बनल भिखरिया सुन्दर लागे ना।
मोरा मिथिला नगरिया सुन्दर लागे ना।।

मुदा संवेदनशील कविहृदयमे मिथिलाक दैन्यक प्रति आक्रोशो छनि आ अपन सांस्कृतिक आचार-विचारक प्रति लोकजीवनमे हीनभावना तथा दोसराक देखाउँससँ उत्पन्न अपसंस्कृतिक प्रति सेहो ओ सजग कविदृष्टिक परिचय देलनि अछि, यथा–

मिथिला के सुधि कने लिअऽ श्री किशोरीजी बहुत दिन भेल।
आबो पलक उघारू हे बिसरि किअ देल।।
नीचक विभव देखि इन्द्र ललचैला हे नयन सुख लेल।
आब ओहे थिक मिथिला अलभ नोन तेल।।
अपन अचार शुचि ककरो ने भावय बूझि पड़य झमेल।
सिखि अनकर चालि भेल हंस बकलेल।।
जप तप संयम विवेक बुधि विद्या, सिय सभ चलि गेल।
कहे 'लतिका सनेह' देखू नैहरा के खेल।।

स्वदेशक प्रति गौरव-गरिमासँ आप्लावित स्नेहलता अपन मातृवाणीक प्रति कतेक प्रतिबद्ध छलाह तकर सर्वाधिक विशिष्ट साक्ष्य ई थिक जे हिनक रचनावलीक मुख्य उपजीव्य छल तुलसीकृत रामायण, विन्दुजीक रचनावली तथा रामभक्ति साहित्यमे मधुरोपासना सम्बन्धी हिन्दी संत साहित्य मुदा ओहि समस्त साहित्यकेँ पचा कऽ ई मातृवाणीक शृंगार करैत रहलाह। हिनक भावप्रवणता एहि पदमे अत्यन्त स्फुट भेल अछि–

मैथिली मधुर भाषा बड़ मीठ बोलिया
मिथिलाक गीत जेना कुहुके कोयलिया
दुलहा बनल ब्रह्म जनक दुआरिया, सुन्दर लागे ना।
मोरा मिथिला नगरिया, सुन्दर लागे ना।।

एतावता ई कहल जा सकैछ जे 'स्नेहलता' मिथिला-मैथिलीक प्रतिबद्ध रचनाकार छलाह जनिक रचनावलीसँ मैथिलीक रामभक्ति साहित्यक मधुरोपासना सम्बन्धी काव्यधारा अपन पृथक् ओ स्वतंत्र अस्तित्वक संग मिथिलाक लोकजीवन ओ साहित्यकेँ सम्पुष्ट कयने रहल अछि।

●●●

गीतकार प्रदीपक 'स्वयंप्रभा'

रामकथा भारतीय सामाजिक व्यवस्था ओ सांस्कृतिक गरिमाक नियामक गाथारत्न थिक जे अदौसँ भारतीय मानसकेँ आकृष्ट करैत रहल अछि। आदिकवि द्वारा प्रणीत एहि गाथाक काव्यात्मक स्वरूप युग-युगान्तरसँ भारतीय भाषा-साहित्यक विशिष्ट उपजीव्यक रूपमे गृहीत रहल अछि। भारतीय वाङ्मयक विभिन्न पुराण, उपपुराण, साम्प्रदायिक ग्रंथ, ललित काव्यग्रंथमे अविछिन्न रूपेँ वर्णित ई गाथा क्रमशः पाली, प्राकृत, अपभ्रंश ओ विभिन्न आधुनिक भारतीय आर्यभाषाक रामकाव्यक उत्स रहल अछि आ विभिन्न कालखण्डमे तत्कालीन सामाजिक परिस्थितिक अनुरूप परिवर्त्तित-परिवर्द्धित होइत रहल अछि। रामकाव्यक प्रति कवि लोकनिक आग्रह जयदेवक एहि उक्तिमे अत्यन्त स्फुट रूपेँ अभिव्यक्ति भेल अछि–

स्वसूक्तानां पात्रं रघुकुलतिलकमेकं कलयतां।
कवीनां को दोषः स तु गुणगणानामऽवगुणः।।

मैथिली साहित्यमे रामकथाधाराक स्फुट अभिव्यक्ति आधुनिक शताब्दीक प्रारंभिक चरणमे चन्दाझाक रामायण-रचनासँ प्रारम्भ होइत अछि। यद्यपि वर्णरत्नाकरकार रामायणक काण्डविभाजनक उल्लेख कयने छथि, विद्यापतिक दृश्यकूट पदमे सीताक जीवनगाथाक गुप्त अभिलेख भेटैत अछि; गोविन्ददास, लक्ष्मीपति, साहेबरामदास, सूरदास, शम्भुदास आदिक कतोक पद रामकथाधारासँ सम्बद्ध भेटैत अछि; करण कान्हारामक गौरीस्वयंवरमे रामक उल्लेख भेल अछि, नेपालीय नाट्य परम्परामे दुइ गोट रामायण नाटक भेटल अछि तथा असमक मैथिली नाटपरम्परामे सीताराम विवाहक प्रसंग लऽ **रामविजय नाटक** रचना भेल अछि, तथापि

ई सहजहि बोद्धव्य अछि जे उन्नैसम शताब्दी धरि मैथिली साहित्यमे रामकाव्यक अभावे रहल।

तथापि मिथिलाक लोकजीवनमे रामकथा निरन्तर विकसित होइत रहल। रामकथाक चरितनायिकाक क्रीड़ास्थल, पाषाणी अहल्याक पुण्यस्थल, ताड़कासुरक नृत्यस्थल ओ वाल्मीकिक साधनास्थल होयबाक कारणे मिथिला रामकथाधाराक महत्त्वपूर्ण ओ मान्य ऐतिहासिक स्थलक रूपमे भारतीय संस्कृतिक केन्द्र रहल अछि। सरबन सन पूत, कौशल्या सन सासु, दशरथ सन ससुर ओ लछुमन सन देओर पयबाक आकांक्षा एहि ठामक लोकजीवन ओ लोकसाहित्यमे निरन्तर अभिव्यक्त होइत रहल अछि। रामजन्म सोहर, सीता सम्मर, समदाओन आदि विशिष्ट सांस्कृतिक गीतमे रामकथाक रिक्थ यत्र-तत्र अभिव्यक्त होइत रहल अछि।

ओना रामकाव्यक शृंखलाबद्ध ओ समेकित प्रणयनक दिस मैथिली रचनाकार लोकनिक उन्मुखता चन्दाझाक रामायणक पश्चाते देखि पड़ैछ। चन्दाझा अध्यात्म रामायणकेँ अपन मिथिला भाषा रामायणक आधार बनौलनि तथा वैष्णव भक्तितत्त्वक प्रतिपादन एवं मिथिलाक वैशिष्ट्यक उद्घाटनमे मौलिकताक परिचय देलनि। लालदास सेहो मिथिला भाषामे रामायणक रचना कएल। हिनक रामकथाक स्रोत छल वाल्मीकीय रामायण ओ अद्भुत रामायण। शाक्त तत्त्वक प्रतिष्ठा पर आधारित हिनक रामायणमे मैथिल संस्कृतिक उपस्थापन तथा वर्णन महाकाव्यात्मक चारुताक संग अत्यन्त उद्भासित भऽ सकल अछि।

रामकाव्यक एही परम्परामे प्रस्फुटित मैथिली काननक एकटा विशिष्ट पुष्प थिक 'स्वयंप्रभा' कथाकाव्य। एहि कथाकाव्यक रचयिता छलाह आधुनिक मैथिलीक एक गोट विशिष्ट हस्ताक्षर, साधक ओ सन्त कवि स्वनामधन्य प्रभुनारायणझा 'प्रदीप' मैथिली पुत्र। 'जगदम्ब अहीं अवलम्ब हमर' तथा 'मिथिलाक धिया सिया जगतजननि भेलि, धरणी बनलि सुरधाम हे' सदृश भक्ति गीतक ई अमर गायक लोककविक रूपमे जहिना कंठहार बनल रहलाह, अपन शाक्त गीतक माध्यमे कश्मीरसँ कन्याकुमारी ओ असमसँ गुजरात धरिक शाक्त पीठ सभक परिसर ओ भगवतीक मन्दिर सबकेँ गुञ्जायमान करैत रहलाह, तहिना मैथिलीक हेतु आन्दोलनी व्यक्तित्वक एकान्त मार्गदर्शक सेहो बनल रहलाह। हिनक

क्रान्ति गीत 'पहिरि लाल साड़ी उपाड़य खेसारी, बदन गोर छै, भूखसँ भेल कारी' मिथिलामे दलित आन्दोलनक सूत्रधार बनल रहल अछि तँ शिष्ट साहित्यिक बहुआयामी अवदान सभ मैथिली लेखकक ओहि मानसिकताकेँ प्रगल्भतापूर्वक इंगित करैत अछि जकर वशीभूत भऽ ओ सभ मैथिलीकेँ समस्त प्रचलित विधामे रचना द्वारा समृद्ध करबाक हेतु दत्तचित्त रहैत छथि। मनसा-वाचा-कर्मणा एकरस प्रदीपजी जीवन ओ साहित्यकेँ एकाकार करैत समाज-सुधारक प्रवृत्तिसँ दहेज प्रथाक नियामक विरोधमे ठाढ़ होयबाक आदर्श प्रस्तुत कयलनि, ततबे नहि, राजकीय सेवामे रहितो मिथिला-मैथिलीक अधिकार रक्षा ओ विकास-प्रकाशक हेतु सरकारोसँ टकराइत रहलाह। **टुन्नी दाइक सोहाग, नागेश्वर भक्तिमाला, अष्टदल, जगदम्ब अहीं अवलम्ब** आदिक माध्यमे लोकिप्रय साहित्यक ई निर्माता **सोहाग** सन गीतिमय नाटकक प्रणयन कयलनि तँ **दुर्गाचरित नाटक** द्वारा गीत-नाट्य रचनाकेँ सेहो सम्बर्द्धित कयलनि, **श्रीराघवलीला महाकथा**क द्वारा मैथिलीमे प्रवचन साहित्यकेँ प्रोत्साहित कयलनि तँ पौराणिक-आध्यात्मिक कथा-संग्रहक प्रणयन द्वारा मैथिलीक पाठकीयता बढ़यबाक व्यग्रताक शमन हेतु सेहो चिन्तनशील रहलाह, **नामपट** उपन्यासक रचनामे तल्लीन भेलाह तँ **श्रीमद्भगवद्गीता** ओ **चैतन्य चरितामृत**क अनुवाद प्रस्तुत कऽ एहू विधाक समृद्धिक हेतु यत्न करैत रहलाह। ततबे नहि, ई दुइ गोट महाकाव्य क्रमशः **श्रीनटवरलीला** ओ **श्रीसीतावतरण**क प्रणयन सेहो कयलनि जाहिमे अपरक माध्यमे मिथिला ओ तेलुगू प्रदेशक पारस्परिक समन्वयक परिवेश-निर्माण लक्षित अछि। हिनक समस्त रचनावली ओ क्रिया लोकमंगलक कामनासँ ओत-प्रोत रहल।

रचनाकार 'स्वयंप्रभा'केँ कथाकाव्य कहलनि अछि। कथाकाव्यक वृहत्तर परिसर मध्य महाकाव्य, खण्डकाव्य आदि कथात्मक काव्य सेहो आबि जाइछ। मुदा वस्तुतः ई शब्द पद्यकथाक अर्थमे रूढ़ प्रयोग थिक। पद्यकाव्यक ई विधा मानव जीवनक कोनो छोट सन घटनाक पद्यमेशृंखलाबद्ध वर्णन होइत अछि। एहिमे निश्चित ओ अल्प पात्र, सीमित घटना तथा तीक्ष्ण उद्देश्य निहित रहैत छैक। लघुकथाकेँ पद्यबद्ध करबाक प्रवृत्तिसँ व्युत्पन्न काव्यक ई विधा काव्यगत सौंदर्य, वर्णन विस्तार, सूक्ष्म चरित्रचित्रण वा कल्पनाक चमत्कारसँ सम्पन्न नहि रहैछ तथापि एहिमे कथा कहबाक क्रममे

सहज काव्यात्मक चारुता उत्पन्न भऽ जा सकैत छैक।

मध्यकाल धरि मैथिली साहित्यमे पद्यकथाक कोनो स्पष्ट स्वरूप नहि देखि पड़ैछ। मनबोधक कृष्णजन्मक शैली यद्यपि पद्यकथेक अछि मुदा अपन कथाविस्तारक कारणेँ एकरा पद्यकथाक श्रेणीमे राखब समीचीन नहि बुझना जाइछ। तथापि पौराणिक आख्यानकेँ पद्यमे प्रस्तुत करबाक प्रवृत्तिसँ पद्यकथाक परम्पराक सूत्र एहूकालमे ताकल जा सकैछ। सीता-सम्मर, गौरी-सम्मर, रुक्मिणी-सम्मर, उषा सम्मर, हरिताली व्रत कथा, चौठचन्द्र व्रत कथा, सोमवारी व्रत कथा आदिक पद्यात्मक स्वरूप मैथिली पद्यकथाक प्रारंभिक सोपान सभ अछि। लोकजगतमे व्याप्त विभिन्न ग्रामदेवता, कुलदेवता ओ जातीय देवताक गाथागीत सेहो मैथिली पद्यकथाक आरंभिक स्वरूप मानल जा सकैछ।

आधुनिक कालमे मिथिलाक जनजीवनक विविध समस्याकेँ उद्घाटित करबाक हेतु पद्यकथाक निर्माण दिस रचनाकारलोकनिक ध्यान आकृष्ट भेलनि। आधुनिक कालक अधिकांश शीर्षस्थ मनीषीलोकनि काव्यक एहि विधाक प्रणयनमे रुचि लेलनि। पद्यकथाक रचनाकारलोकनिमे किछु विशिष्ट नाम सभ अछि–तंत्रनाथझा, उपेन्द्रनाथझा 'व्यास', वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री', प्रो. हरिमोहनझा, आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन', काशीकान्तमिश्र 'मधुप', कविरत्न चन्द्रनाथमिश्र 'अमर', कुशेश्वरकुमर, दुर्गानाथझा 'श्रीश', जगदीशनारायण 'दीपक', कुलानन्दनन्दन आदि। तन्त्रनाथझाक 'मुसरी झा' पद्यकथा मिथिलाक सामाजिक जीवनमे व्याप्त रूढ़ि ओ अन्धविश्वास पर आधारित हास्यव्यंग्यपरक रचना थिक। व्यासजीक 'शारदा विजय' पद्यकथामे मण्डन ओ शंकराचार्यक शास्त्रार्थक कथाक माध्यमे नारी परिकल्पनाक आधुनिक दृष्टि तथा मिथिलाक आत्मगौरवक स्फुट चित्रांकन भेल अछि। यात्रीजीक **बूढ़वर** ओ **विलाप** पद्यकथा अनमेल विवाह ओ बालविवाह पर आधारित सामाजिक समस्यामूलक रचना अछि। हास्य रसक अवतार प्रो. हरिमोहनझाक सामाजिक विद्रूपक यथार्थपरक चित्रणसँ सम्बद्ध 'ढाला झा' तथा आधुनिकताक प्रति अन्धानुकरणक प्रवृत्तिक व्यंग्यात्मक चित्रणसँ सम्बद्ध 'टी पार्टी' पद्यकथा अत्यन्त प्रसिद्ध अछि। आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' ओ कुशेश्वरकुमरक पद्यकथा सभ विभिन्न श्रुति साहित्यक सूक्तिकथाक पद्यात्मक स्वरूप अछि। दुर्गानाथझा 'श्रीश' अपन पद्यकथा संग्रह 'महामत्स्य

ओ मनु'मे विभिन्न शिक्षाप्रद पौराणिक कथाकेँ पद्यबद्ध कयलनि अछि। जगदीशनारायण' दीपक'क 'कालक स्वप्न' पद्यकथामे कल्पनाक चारु प्रयोग द्वारा आधुनिक परिप्रेक्ष्यमे गाँधीवाद, राष्ट्रीयता ओ धनधान्यक समृद्धिक हेतु भारतीय नागरिकक कर्त्तव्यबोधकताक आह्वान निहित अछि। कुलानन्द' नन्दन'क पद्यकथा 'कोशीकातक जीवन'मे स्वतंत्र भारतमे कोशीक विभीषिकासँ संत्रस्त मिथिलाक समस्याक यथार्थपरक चित्रण भेल अछि। हास्यव्यंग्यक प्रसिद्ध कवि प. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'क विभिन्न पद्यकथामे हास्य ओ व्यंग्यक पुट दऽ विभिन्न सामाजिक विद्रूपताक परिष्कारक आग्रह देखि पड़ैछ। हिनक गंभीर रचना मध्य 'राष्ट्रनिर्माता' पद्यकथा अत्यन्त प्रसिद्ध अछि। एहिमे लालफीताशाहीक कारणेँ निम्न-मध्यवर्गक शिक्षक समुदायक कारुणिक परिस्थितिक यथार्थमूलक चित्रण भेल अछि। हिनक दोसर प्रसिद्ध पद्यकथा अछि–'चाही आइ एहन रघुनन्दन'। एहिमे तिलक दहेजक सामाजिक समस्याक समाधानमूलक वर्णन भेल अछि जे एहि समस्याक प्रति कविक युग-जीवनजन्य संवेदनशीलता ओ प्रगतिशीलताक परिचायक अछि। कविचूड़ामणि 'मधुप' मैथिली पद्यकथाक क्षेत्रमे आयामक वैविध्य प्रस्तुत कयल। हिनक पद्यकथा सभमे जातिवाद, वर्गवाद, सर्वहाराक शोषण, दहेज प्रथा, लालफीताशाही, अत्याचार-अनाचार, पारिवारिक कलह, लेखकक शोषण, रुढ़िपरकता आदिकेँ विषय बनाय विभिन्न सामाजिक समस्याक यथार्थपरक चित्रण भेल अछि। कतोक पद्यकथामे ई समाधानक दिस उन्मुख भेलाह अछि जे हिनक प्रगतिवादी चेतनाक अनुसूचक अछि, मुदा जतेक सफल ई समस्याक चित्रणमे भेलाह अछि, ततेक समाधानक स्वाभाविकताक वर्णनमे नहि।

एहि तरहेँ देखैत छी जे मैथिली साहित्यक ई विधा पौराणिक परिवेशसँ आधुनिकता दिस, यथार्थपरकतासँ प्रगतिशीलता दिस, समस्यामूलकतासँ समाधानसापेक्षता दिस क्रमशः उन्मुख होइत रहल अछि।

विवेच्य पद्यकथाक पोथी डिमाइ आकृतिमे बाबन पृष्ठमे सामा-चकेबा प्रकाशन समिति, बम्बइ द्वारा प्रकाशित तथा मुरलीधर प्रेस, मुसल्लहपुर, पटनामे मुद्रित भेल अछि। छपाइ, सफाइ ओ आवरणक दृष्टिजे अत्यन्त आकर्षक एहि पोथीमे पद्यकथाक मूल अंश मात्र एक्कैस पृष्ठमे अनुगुम्फित अछि। एकर आधार स्रोत आध्यात्म रामायण अछि।

आध्यात्म रामायणक किष्किन्धाकाण्डक छठम सर्गमे स्वयंप्रभाक कथा एहि स्वरूपक अछि–सुग्रीवक आज्ञासँ वानरलोकनि जानकीक खोजमे चारू दिस पठाओल गेलाह। दक्षिण दिशामे अधिक प्रयत्नक आवश्यकताकेँ बूझि युवराज अंगद, जाम्बन्त, हनुमान, नल, सुषेण, शरभ, मैन्द ओ द्विविद आदिकेँ पठाओल गेलनि तथा हिनकालोकनिकेँ मासाभ्यन्तरे अपन काज पूर्णकऽ घुरबाक आदेश देल गेलनि अथवा प्राणान्तक दण्ड भोगबाक हेतु तैयार रहऽ कहल गेलनि। हनुमानजीकेँ रामचन्द्रजी परिचयक हेतु सीताकेँ देबाक निमित्त अपन अउँठी सेहो देलथिन। ई वानर-भालु सभ सर्वत्र सीताक खोज करैत विन्ध्याचलक गहन वनमे पहुँचलाह। ओतऽ हिनका लोकनिकेँ खूब पियास लागि गेलनि। तखने हिनका लोकनिकेँ लतादिकसँ झाँपल एकटा विशाल खोह देखि पड़लनि। ओहि खोहसँ वानरलोकनि भीजल पाँखिवला क्रौंच, हंस आदि पक्षीकेँ निकलैत देखलनि आ जलाभिलाषासँ हनुमानजीकेँ आगू कऽ हत्थाबाँही कयने ओहिमे प्रवेश कयल। बहुत दूर धरि अन्हारेमे गेलाक बाद ओ सभ जलसँ भरल अनेक सरोवर, कल्पतरुक सदृश मधुमाछीक छत्ता लागल अनेक वृक्ष तथा वस्त्रालंकार ओ भक्ष्य पदार्थसँ युक्त अनेक निर्जन भवन देखलनि। ओही ठाम एकटा दिव्य भवनमे ओ सभ एकटा तेजोद्दीप्त रमणीकेँ एसगरे स्वर्ण सिंहासनपर चीरवस्त्र धारण कयने योगासीन देखलथिन। वानर लोकनि डेरा कऽ हुनका प्रणाम कयलथिन। एहिपर ओ युवती हिनका लोकनिक परिचय पुछलथिन। हनुमान द्वारा परिचय प्राप्त कऽ तथा ओहि स्थानपर वानरलोकनिक अयबाक उद्देश्य जानि ओ हुनका लोकनिकेँ आश्वस्त कऽ फलमूलादि ओ जलसँ तृप्त होयबाक आदेश देलथिन। पश्चात् ओ हनुमानजीकेँ अपन परिचय दैत कहलथिन जे पूर्वकालमे हेमा नामक विश्वकर्माक पुत्री अपन नृत्यसँ महादेवजीकेँ प्रसन्न कयने रहथि। महादेव प्रसन्न भऽ हुनका ओ दिव्य नगर आवासक हेतु देने छलथिन। हम ओही हेमाक सखी स्वयंप्रभा थिकहुँ। हमर पिता दिव्य नामक गन्धर्व छथि। मोक्षक इच्छासँ हम विष्णु भगवानक उपासनामे लागलि रहैत छी। हमर सखी ब्रह्मलोक जाइत काल कहने छलीह जे त्रेतामे साक्षात् अव्यय नारायण दशरथक ओतऽ जन्म लऽ पृथ्वीक भार उतारबाक हेतु वनमे विचरण करताह। हुनक पत्नीकेँ तकैत किछु वानर अहाँक गुफामे आओत।

वानर लोकनिक सत्कार कऽ अहाँ रामचन्द्र लग जा हुनक वन्दना कऽ विष्णुधाम प्राप्त कऽ लेब। तेँ आब हम शीघ्र रामक दर्शनक हेतु जाय चाहैत छी। अहूँ सभ अपन आँखि बन्द कऽ लिअऽ। एहिसँ तत्क्षणे गुफाक बाहर चल जायब। वानरलोकनि तहिना कयलनि आ पहिले जकाँ वनमे चल गेलाह। एम्हर योगिनी स्वयंप्रभा गुफाकेँ छोड़ि तत्काले रघुनाथजीक लग अयलीह आ सुग्रीव ओ लक्ष्मणक संग हुनक दर्शन, प्रदक्षिणा ओ प्रणाम कऽ स्तुति कयलनि। रामचन्द्रजीक पुछलापर ओ अपन अभिलाषाक रूपमे सगुन भक्तिक वरदान मङलथिन। भगवान द्वारा वरदान प्राप्त कऽ हुनके आदेशसँ ओ बदरिकाश्रम जाय भगवद् स्मरणपूर्वक पाञ्चभौतिक शरीरकेँ त्यागि परलोक प्राप्त कयलनि।

किञ्चित परिवर्त्तनक संग स्वयंप्रभाक यैह कथा वाल्मीकीय रामायणमे किष्किन्धाकाण्ड, 50-52म सर्गमे सेहो वर्णित अछि। तुलसी तथा चन्दाझाक रामायणमे सेहो एहि कथाकेँ परिगृहीत कयल गेल अछि।

प्रदीपक पद्यकथामे कथाकाव्यक परम्पराक अविकल अनुसरण करैत प्रारंभमे नमस्क्रियाक प्रयोग भेल अछि। नमस्क्रियामे पहिने परब्रह्मक वन्दना भेल अछि। एहि वन्दनामे कवि भारतीय वाङ्मयक 'पंगुं लंघयते गिरिम्' तथा तुलसीक रामचरितमानसक 'गरुड़ सुमेरु रेणु सम ताही'केँ कलात्मक रूपेँ ग्रहण कऽ नव भावाभिव्यक्तिक स्रोत बना देलनि अछि–

पर्वतकेँ जे राइ बनाबथि, पंगू चढ़थि उत्तंग।
चक्रे जकाँ चलैत सदच्छन नियम न कखनहुँ भंग।।

प्रदीप मिथिला-वन्दनामे नदी सभक माध्यमे मिथिलाक अभिज्ञान स्थिर कयलनि अछि–

गंगा गंडक आओर कोशिका कमला सहित बलान।
वागमती धेमुरा करेह जीवछ तट जनिक दलान।।

तथापि कवि मिथिलाक अधोगतिपूर्ण दशाक वर्णनमे सेहो सकुचएलाह अछि नहि–

बन्धु बन्धुमे द्वन्द्व जतए हो, अवस कुफल परिणाम।
वर्गवाद केर प्रबल पसाही, जरइछ सगरो गाम।।

मूल कथाक वर्णनमे कवि सामान्यत: आध्यात्म रामायणक अनुसरण कयलनि अछि। एक ठाम अवश्य रामचरितमानसक प्रभाव बुझना जाइछ।

लंकिनी-हनुमान संवादमे तुलसीदास लंकिनीसँ कहओने छथि–

तात मोर अति पुण्य बहूता।
देखेउ नयन राम कर दूता

एही तथ्यकेँ प्रदीप 'स्वयंप्रभा' पद्यकथामे स्वयंप्रभा-हनुमान संवादमे एहि रूपेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि–

जनम जनम केर संचित अविकल, पुण्य एखन अछि जागल।
श्रीसीतारामक सेवक सेवामे किछु क्षण लागल।।

तथापि अवसर पबैत देरी कवि अपन मौलिक प्रतिभाक चमत्कार देखा काव्यकेँ नूतन परिवेश देलनि अछि। उदाहरण हेतु हनुमानक ई उक्ति द्रष्टव्य अछि–

अंजनीक हम लाल लोक हनुमान कहइ छथि।
भगिनमान मिथिलावासी अनुमान करइ छथि।।
कारण, हम दौहित्र ऋषि गौतम केर मानी।
सतानन्द केर माय अहल्या हमरे नानी।।

एहिना तपस्विनी स्वयंप्रभा द्वारा रामसँ वरदान मङबाक प्रसंगमे हुनक एहि उक्तिमे कविक प्रौढ़, वर्गविहीन, राष्ट्रवादी भावनाक स्फुट अभिव्यक्ति भेल अछि–

हमर तपक किछु अंश सुबुद्धि सुजनकेँ भेटय।
वर्गवाद ई प्रबल पसाही दुर्गुण मेटय।।
भारतीय सद्भाव स्नेह जनजनमे जागय।
क्षुद्र स्वार्थ, दुर्बुद्धि दरिद्रा सभटा भागय।।

कविक मौलिकता अपन चरम बिन्दुपर तखन देखि पड़ैछ, जखन आधार स्रोतसँ पृथक् कल्पना जगतमे स्वयंप्रभाकेँ विशिष्ट आदेश देल जाइत अछि। ओकरा मिथिलाक नारीजगतक अवहेलनापूर्ण स्थितिसँ अवगत करा दहेज प्रथा एवं दहेज हत्याक दानवसँ भिड़बाक हेतु उत्प्रेरित कयल जाइत अछि। एहि ठाम कवि प्रगतिशीलता पक्षधर तथा रूढ़ि, अंधविश्वास, सामाजिक असंतोष तथा शोषणक विरूद्ध क्रांतिकारी आह्वानक उद्बोधक देखि पड़ैत छथि। पौराणिक परिवेशक माध्यमे प्रगतिवादी विचारक प्रक्षेपणक ई प्रक्रिया हिनक प्रौढ़ ओ सूक्ष्म कल्पनाशक्तिक परिचायक थिक। कवि रामक माध्यमे कहैत छथि–

कलियुगमे बेटीक अनादर होएत भारी।
बेटा बेचत बाप करत उत्पात अनारी।।
वऽर बनत ढहलेल अनेर दहेजक कारण।
बिनु अपराध कुलीन वधूकेँ देत प्रतारण।।
तहिठाँ जाय अहाँ निश्चय निज प्रभा पसारब।
लोभाकृष्ट दानवी माया अहाँ उसारब।।

भाषा-शैलीक दृष्टिजे प्रदीपक एहि पद्यकथाक भाषा अत्यन्त सहज, बोधगम्य अथ च प्रसादगुणसम्पन्न अछि। सायास आलंकारिता ओ उक्ति-विच्छितिक प्रयत्न कतहु दृष्टिगोचर नहि होइछ। एक दिस जँ कवि कतिपय तत्सम शब्दकेँ यथावत् ग्रहण करबामे संकुचित नहि भेलाह अछि, यथा–पवनात्मज, अन्वेषी, खग, सर, सुधा, शिरोधार्य, प्रतारण, अपर, सुरुचि, षट, वारि, प्रज्ञा, नियंत्रण, प्रवीण इत्यादि तँ दोसर दिस तद्भव, देशज ओ विदेशजो शब्दक निधोख ओ सहज प्रयोग कयलनि अछि, यथा–डगरिया, जनाना, भगिनमान, मौसी, बरोबर, खजाना, ढहलेल, सरोकार, लाथ, पाहुन, खोह इत्यादि।

रसक दृष्टिजे मैथिलीपुत्र एहि पद्यकथामे सर्वत्र भक्तिभावेक सम्पुष्टिमे लागल देखि पड़ैत छथि मुदा हिनक भक्ति उपदेशात्मक वा चेतावनीपरक नहि, अपितु लोक शिक्षाप्रणालीसँ अनुप्राणित अनुस्यूत भेल अछि। एहि पद्यकथामे कवि विविध मात्रिक छन्दक प्रयोग कयने छथि तथा पारम्परिक रूपेँ अन्त्यानुप्रासक निर्वाह सर्वत्र कयलनि अछि। छन्दमे कतोक ठाम उत्कट व्यक्तिक्रम दृष्टिगोचर होइछ। प्रारम्भमे छन्दक जे प्रवाह ओ मर्यादा अछि से बादमे जेना निर्वाह नहि भऽ सकल।

समष्टिमे एहि पद्यकथापर विचार कयला उत्तर ई स्पष्ट अछि जे गीतकार प्रदीप-स्वनामधन्य मैथिलीपुत्र, एहिमे वस्तु तँ पौराणिके लेलनि अछि आ रामकाव्यक परम्पराकेँ अग्रसारित करबाक उद्देश्ये प्रेरित भेलाह अछि मुदा हिनक उद्देश्य अछि दहेज प्रथाक कुत्सित रीति पर प्रहार। कवि रामकाव्यधारामे नवोन्मेषकेँ गति देलनि अछि। पारम्परिक वस्तु ओ आधुनिक समस्याक ई अनुगुम्फन मैथिली पद्यकथाविधाकेँ एकटा नूतन ओ नियामक परिवेश प्रदान कयलक अछि।

जयमन्तमिश्रक 'कविता कुसुमाञ्जलि'

संस्कृत वाङ्मय समस्त भारतीय आर्यभाषा-साहित्य विशिष्ट उत्स रहल अछि। मिथिला तँ सहजहिँ संस्कृत विद्याक केन्द्र रहल अछि। एहि ठाम जनसामान्यक भाषा-मातृभाषा मैथिली, संस्कृत पण्डित लोकनिक हेतु आत्माभिव्यक्तिक विशिष्ट साधन रहलनि अछि। कविशेखराचार्य ज्योतिरीश्वर, विद्यापतिक समवर्ती ओ परवर्त्ती कवि नाटककारलोकनिक परम्परामे जे भक्ति ओ शृंगारसाहित्यक प्रणयन होइत रहल, तकर प्रणेता संस्कृतेक पण्डिलोकनि छलाह। मध्यकालीन मैथिली साहित्यक कालपुरुष विद्यापतियो आत्मानुरंजन ओ स्वरसंधानक हेतु भने मैथिली भाषाकेँ माध्यम बनौलनि, तथापि हिनक विशद् वाङ्मय हिनका निष्णात संस्कृत पण्डितेक रूपमे प्रतिष्ठित करैत छनि। आधुनिक मैथिली साहित्यहुक युगस्रष्टा चन्दाझा तथा एहि साहित्यकेँ श्रीसम्पन्न करबाक श्रेयप्राप्त बहुलांश कवि-मनीषीलोकनि संस्कृत विद्वानेक परम्पराक अग्रिम शृंखला सभ होइत गेलाह, यथा विद्यावाचस्पति मधुसूदनझा, कविवर जीवनझा, म.म. मुरलीधरझा, सीतारामझा, राजपंडित बलदेवमिश्र, ज्यौतिषाचार्य बलदेवमिश्र, लालदास, मुंशी रघुनन्दनदास, डा. उमेशमिश्र, आनन्दझा 'न्यायाचार्य', कविशेखर बदरीनाथझा, काशीकान्तमिश्र 'मधुप', चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' ओ मिथिला-मैथिल-मैथिलीक विभूति आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन' आदि।

मिथिलाक संस्कृत पण्डितलोकनिक मैथिलीओ रचनाक विषय, शिल्प, बिम्बविधान ओ शब्दावली पर्यन्त कमोबेस रूपमे लक्षणानुसरिताकेँ गहिया कऽ धयने रहल अछि। स्वभावत: हिनकालोकनिक रचनापर पुरातनपंथित्वक आरोप लगाओल जाइत रहलनि अछि। हिनका लोकनिकेँ जनसामान्यक प्रयोगसँ दूरक मैथिलीकेँ प्रश्रय दैत एहि जनभाषाकेँ

सर्वदेशीय, सर्ववर्गीय होमऽ देबामे बाधक मानल जाइत रहलनि अछि। मुदा जँ वस्तुस्थितिकेँ विश्लेषित कऽ देखल जाय, तँ रचनाकारक एही वर्ग द्वारा मैथिलीक अधिकांश कालजयी रचनाक प्रणयन होइत रहल अछि।

डा. जयमन्तमिश्र मिथिलाक संस्कृत पण्डितलोकनिक ओही परम्पराक प्रतिनिधि लोकनिमे एक छलाह, जाहिमे संस्कृतक प्रति भक्ति स्वभाषा संपोषणक अनुरक्तिसँ ओत-प्रोत रहल। कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालयक कुलपतित्वक विशद् संभारक संवहन धरि अलंकृत हिनक कर्त्तव्य क्षेत्रकेँ संस्कृत ग्रन्थावलीक अवलोकन-संरक्षण-अनुसंधान-प्रकाशनक दायित्व निर्वहण सीमांकित कयने रहलनि। हिनका द्वारा सम्पादित 'पुष्पचिन्तामणि' एहि क्षेत्रमे हिनक गरिमाक दृष्टान्त थिक। सप्तचिन्तामणिकार म.म. वाचस्पतिमिश्रक कृत्यप्रदीप, श्राद्धचिन्तामणि ओ आचारचिन्तामणि ग्रन्थक सम्पादन, विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थावली मध्य विभागसार, शैवसर्वस्वसार, शैवसर्वस्वसार प्रमाणभूत पुराण संग्रह ओ दानवाक्यावलीक प्रकाशन तथा श्रीदत्तकृत समयप्रदीप एवं गोविन्दठक्कुरकृत पूजाप्रदीपक संरक्षण द्वारा डा. मिश्र एक दिस जँ अपन प्रगाढ़ पांडित्यक निदर्शन प्रस्तुत कयलनि तँ दोसर दिस मैथिलीक प्रति हिनक स्वाभिमान हिनका द्वारा मिथिलाक संस्कृत विद्वान लोकनिक कृतिकेँ पुनरुज्जीवित करैत रहबाक प्रवृत्तिसँ सुस्पष्ट अछि। संस्कृतमे प्रकीर्ण रचनावलीक संगहि विभक्त्यर्थ प्रकाशिका एवं साहित्यशास्त्रीय ग्रन्थक प्रणयन कऽ डा. मिश्र संस्कृतक विशिष्ट विद्वानक रूपमे ख्यात रहलाह। हिनक ख्याति देववाणीमे ओजस्वी भाषणकर्त्ताक रूपमे सेहो छलनि आ महाकाव्यक रचयिताक रूपमे सेहो।

संस्कृतक अतिरिक्त राष्ट्रभाषा हिन्दी, मातृभाषा मैथिली एवं अन्य भाषा अंग्रेजी ओ नेपालीमे सेहो डा. मिश्रकेँ निपुणता प्राप्त छलनि। ई तथ्य विभिन्न पत्र-पत्रिका ओ पुस्तकादिमे ग्रथित हिनक रचनावलीसँ स्फुट होइत अछि। 'कल्याण' हिनक आस्थाक अभिव्यक्ति ओ राष्ट्रभाषानुरागक प्रवृत्तिकेँ द्योतित करैत रहल।

बहुभाषाविद् होइतहुँ डा. मिश्र निष्ठावान मैथिल छलाह। मातृभाषानुरक्त हिनक कविहृदय आप्लावित भऽ हिनका मैथिलीओक माध्यमे अभिव्यक्तिक हेतु विवश करैत रहलनि। 'मैथिली अभिलेख गीतिमाला'क संकलन

ओ विवेचन, 'मैथिली नाटकपर संस्कृतक प्रभाव'क आकलन हिनक अनुसन्धित्सु प्रवृत्तिकेँ मैथिलीक माध्यमे प्रस्तुत कयलक, तँ विभिन्न पत्र-पत्रिका ओ पुस्तक सभमे प्रकाशित हिनक निबन्ध-बन्ध सब मैथिली भाषा-साहित्यक ज्ञानसीमाक संवर्द्धनमे सहायक भेल। विवेच्य कृति 'कविताकुसुमाञ्जलि' रचनाकारक 47गोट मैथिली कविताक संकलन थिक जाहिमे हुनक कविहृदयक रूपरेखा प्रकट भेलनि अछि।

ई संकलन मैथिलीमे संस्कृत साहित्य ओ शास्त्रक विश्रुत विद्वानक आधुनिक परिवेशसापेक्ष रचनाक संग्रह थिक, तेँ एहिमे पारम्परिक शैली ओ आधुनिक विचारधाराक सम्प्रेषणक मणिकाञ्चन संयोग दृष्टिगोचर होइत अछि। रचनाकार आचार्य छलाह, संस्कृत साहित्य, शास्त्र, पिङ्गलक मर्मज्ञ छलाह। स्वभावतः हिनक रचनामे पग-पगपर कविहृदयक धड़कनपर शास्त्रीयताक श्वास-प्रश्वासक अनुशासन मुखर अछि।

डा. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' जयमन्तबाबूकेँ नवीन रीतिक गीतकाव्यकार कहने छथि। हिनका मतेँ जयमन्तजीक शब्दचयन ललित ओ कल्पना कोमल किन्तु वर्णन रीति आलंकारिक ओ चमत्कारपूर्ण होइत छलनि। हिनका ओ संस्कृतनिष्ठ कविता करबाक हेतु प्रसिद्ध कहने छलाह। हिनक अभिमतक आधार छल रचनाकारक कविता 'कविते' आ 'नभ आङनमे मेघ खेलाइछ' (इतिहास)। इहो दुनू कविता एहि संकलनमे संगृहीत अछि।

रचनाकारक एकाधटा रचनापर आधारित ई अभिमत विवेच्य काव्यसंग्रहक अंशमात्रक हेतु सत्य कहल जा सकैछ, मुदा कवि-व्यक्तित्वकेँ सम्पूर्णतामे अभिव्यक्ति नहि प्रदान करैछ। वस्तुतः विवेच्य संग्रहक आधारपर कहल जा सकैछ जे जयमन्तबाबूक गेयधर्मिता, कोमल कल्पना ओ भक्तिपरके कविता धरि सीमांकित छनि। जखन कखनो ओ वैचारिक स्फोटक माध्यम अपन अभिव्यक्तिकेँ बनौलनि, तँ गेयधर्मिता शिथिल भ' गेलनि। कविक संस्कृतनिष्ठा अलंकार ओ चमत्कारक सर्जनमे सहायक रूपमे परिगृहीत भेल मुदा विशुद्ध वैचारिकताक उल्लासक क्षणमे तद्भव, देशज ओ विदेशजहु शब्दक सुष्ठु प्रयोग हिनक कवितामे नव्यता प्रदान कयलक, यथा डिल्लीवाल, कनझप्पा, फराठी, सलगा, फुचफुच्ची, कित्ता, मोकदमा, डैर, स्टेट, लाठी-चार्ज, प्लेटफार्म आदि शब्दक प्रयोग।

कवि प्राचीन रीति-नीतिक प्रति आस्थावान छलाह। 'कविता

कालजयी हो' मे हिनक काव्यरूढ़ि सम्बन्धी मान्यता सुस्पष्ट अभिव्यक्ति पओलक अछि।

चरण छन्द गति सुललित यति अति मृदु शब्दार्थ शरीर।
मधुर प्रसन्न ओजयुत रसमय शान्त हृदय गंभीर।
वृत्ति रीति सँ बद्ध मनोहर सुगठित गात्र ललाम।
आमोत्कर्ष करएमे साधन अलंकार केर धाम।
सद्यः प्रीतिक संग जकर हो चतुर्वर्ग सन साध्य।
शक्ति निपुणताभ्यास बलेँ ओ कविता थिक आराध्य।

स्वभावतः 'कविता कुसुमाञ्जलि'मे सर्वत्र शास्त्रीयताक अनुपालनक आग्रह भेटैत अछि। शास्त्रीयतासँ रहित कविताक प्रति कविक आक्रोशो 'हम की नहि कविता करैत छी'मे स्फुट भेलनि अछि। एहि कवितामे आधुनिक कविताक नामपर प्रचलित तथाकथित विशृंखल कवि-कर्मपर व्यंग्य कयल गेल अछि।

कविकर्मकौशलक अद्भुत दृष्टान्त सब अनेक स्थलमे अत्यन्त मनोमुग्धकारी देखि पड़ैत अछि, यथा–

शारदागम भेल शारद शशधरक छवि लेल।
शरदुदाशय शारदाञ्चित शुभ्र शारद भेल।
शारदी नवरात्र पूजा शारदा सब ठाम।
ई महोत्सव पूजनोत्सव सब नगर सब गाम।

मुदा संगहि एहनो स्थल सब भेटैत अछि जतऽ कवि, कविसँ बेसी प्रज्ञावान पंडितक रूपमे प्रस्तुत भेलाह आ कविता, कविता नहि अपितु ज्ञानकोश बनि गेल, यथा–

गंगा यमुना व्यास सुषोमा गोदा सरस्वती।
वेणी कृष्णा तापी रेवा तुङ्गा दृषद्वती।
कोशी नारायणी गोमती सरयू सतलुज धार।
चन्द्रा भीम वितस्ता विश्वा महानदी शतधार।
ब्रह्मपुत्र दामोदर शिप्रा शोण सिन्धु संचार।
मन्दाकिनी त्रिसामा कमला कावेरी जलधार।

आदिकालसँ मानवहृदयक विगलित करुणाकेँ कविताक कारण मानल जाइत रहल अछि। आदिकविक 'शोकः श्लोकत्वमागतः'मे यैह

तथ्य प्रतिध्वनित भेल अछि। जयमन्त बाबूक 'कविते' कवितामे ई तथ्य यथावत् स्वीकृत कऽ लेल गेल अछि।

जे छल आदिकविक कविता केर प्रथम प्रकाशित बीज।
जइ सँ सुन्दर सरस काव्य सरिता बहैछ जग बीच।

मुदा हिनक कविताक सीमा एही परम्परित मान्यता धरि बाधित नहि छनि। आधुनिक युगजीवनमे अर्थसंघर्ष व्याप्त अछि। वर्त्तमान मान्यताक अनुसार एकरे परितः मानवजीवनक समस्त क्रियाकलाप आघूर्णित अछि। स्वभावतः ई संघर्षो काव्यजगतकेँ पूर्णतः प्रभावित कयलक अछि। तेँ जयमन्त बाबू कविताक उत्स एहू संघर्षकेँ कहलनि अछि–

एक बात कहि देल तखन जे पुरुष अर्थ केर दास।
तखनहिँ सँ अछि अर्थमूलमे सकल अनर्थक वास।।

एहि प्रकारेँ कविक मान्यता 'प्रतिपदा'मे आचार्य सुमन द्वारा 'कविताक आह्वान' शीर्षक कवितामे प्रतिपादित पारम्परिक मान्यतासँ आगू बढ़ि यात्रीजीक 'कविक स्वप्न' शीर्षक कवितामे प्रतिपादित मान्यता धरि चलि जाइत अछि आ हिनक काव्यविषयकेँ युगसापेक्ष आ प्रासंगिक बना दैत अछि।

शिल्प, शैली ओ विषयक, दृष्टिजे, 'कविता कुसुमाञ्जलि'क कविता सभ बहुआयामी अछि। एहिमे 'माधव! चरण शरण हम तोर' सदृश पारम्परिक रीति-नीतिपरक गेयधर्मी भक्तिकाव्यो समाहित अछि तँ 'देवी! मिथिले! धन्य हम लए जन्म एहि सुधाम' सदृश देशानुराग ओ आत्मश्लाघासँ ओतप्रोत वस्तुनिष्ठ कविता सेहो; भारतीय राष्ट्रक प्रति समर्पित नागरिक जीवनक भावभूमिक उद्गारो भेटैत अछि तँ आधुनिक राजनीतिक-साहित्यिक जगतमे परिव्याप्त विद्रूपता पर आक्षेपपरक कटूक्ति-व्यंग्यक प्रहारो। एकर अतिरिक्त पूर्व पुरुषक स्मरण-तर्पणक निष्ठा, कान्तासम्मित उपदेश योजना, वर्त्तमान परिवेशक प्रति संवेदनशीलता ओ चित्रात्मक प्रकृति-वर्णनसँ सम्बद्ध कविता सभक समाहार थिक 'कविता कुसुमाञ्जलि'। ई एहन कविकेँ अभिव्यक्त करैत अछि जे परम्पराकेँ ग्रहण करितो युगप्रवृत्तिक परिवर्त्तन ओ तकर अनुभावन द्वारा आधुनिकता बोधहुँसँ सम्पन्न छलाह।

कविक राष्ट्रवादी भावना 'भारत देश महान' कवितामे अत्यन्त

स्फुट भेलनि अछि। क्षेत्रीयता, भाषावाद, सम्प्रदायवादसँ ग्रस्त भारतीय राष्ट्रक प्रति हिनक मनोभावना विशुद्ध राष्ट्रीय चरित्र सम्पन्न कविक भावावेगकेँ उद्घाटित करैत अछि–

पथ विभिन्न गन्तव्य एक सरिता सागर सम मान्य।
विविध वेष भाषा संस्कृत विधि रीति गीत लय तान।
एकरूपता एकतानता सबमे अछि सम्मान।
अछि नहि भूमण्डलपर दोसर एहन देश सब जान।
ईश लैत अवतार जतय छथि भारत देश महान।

हिनक यैह भावावेग 'जननी ओ जन्मभूमि थिक स्वर्गहुसँ पैघ' कवितामे सेहो अभिव्यक्ति पओलक अछि। ई कविता आदिकविक 'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते। जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी'केँ काव्यात्मक स्वरूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

कविक गेयधर्मी भक्तिकाव्य मध्य पाँच गोट विनय पद प्रमुख अछि। ई विनय पद सब विद्यापतिक परम्पराक अनुसरणपरक अछि। तेँ एकरा सभकेँ आधुनिक कविक प्राचीन गीत कहल जा सकैछ। मैथिलीमे विद्यापतिक सरणीक स्रोत सदानीरा अछि, तकरे ई गीत सब प्रमाणित करैत अछि। एहि प्रकारक एक गोट गीतमे मध्यकालीन हिन्दी साहित्यक भ्रमर गीतक प्रभाव देखि पड़ैछ–

उधो! बहुत सुनल उपदेश।
अधर-सुधा-रस-पान-मत्त-जन-मानस योग कलेश।
प्रेम, प्रणय, अनुराग संग वैराग्यक रहय न लेश।

'शारदे' तथा 'कृष्ण स्वयं भगवान' कविक अन्य भक्तिपरक कविता थिकनि। 'शारदे'मे सरस्वतीक वन्दना कयल गेल अछि तथा 'कृष्ण स्वयं भगवान'मे संस्कृतक अष्टक परम्परामे रचित कृष्णकाव्यक अनुरूप श्रीकृष्णक बहुविध लीला विस्तार ओ परम ऐश्वर्यक अनुगायन भेल अछि। श्रीमद्वल्लभाचार्यक मधुराष्टकसँ कवि कोना प्रभावित छथि तकरा देखबाक हेतु वल्लभाचार्यक ई पाँती द्रष्टव्य अछि–

अधरं मधुरं वदनं मधुरं नयनं मधुरं हसितं मधुरं।
हृदयं मधुरं गमनं मधुरं मधुराधिपतेऽरखिलं मधुरं।।

कवि एहि भावकेँ एहि शब्देँ अभिव्यक्त कयने छथि–

अधर-दशन-मुखमधुर, नयन, अवलोकन
मधुर हृदय, मधु हास्य वचन मधु नर्त्तन
चरण, भ्रमण अति मधुर गमन मधुमय अछि
अशन, वसन, मधुराधिपतिक मधुमय अछि

एही तरहेँ कविक अधिकांश गेयधर्मी कविता सभ रागाश्रित ओ परम्परित स्वरूपक अछि। आनो कविता सभमे छन्द, यति आदिक निर्वाहमे सर्वथा सतर्क दृष्टि देखि पड़ैछ। मात्रिक छन्दक अतिरिक्त संस्कृत परम्पराक वार्णिक छन्दोक प्रयोगमे कवि सिद्धहस्त देखि पड़ैत छथि–

वरक पिता दए समय देथि नहि भेट
घुरि आयल कत बेर थाह नहि लाग
बेटी-मायक बात सूनि पुनि गेल
फेरि पुरनके बात, केहन सन्ताप?

'कविता कुसुमाञ्जलि'मे गृहीत छओ गोट कविता षड्ऋतुपरक अछि। एहि छओ कवितामे क्रमशः ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर ओ वसन्तक प्रकृतिक चित्रण भेल अछि। कवि चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'जीक 'ऋतुप्रिया' ग्रन्थसँ प्रभावित भेल प्रतीत होइत छथि। प्राकृतिक सौन्दर्यक प्रति अभिभूत कविहृदयक संवेदना मानवीय वेदनाक प्रति, युगजीवनक यथार्थक प्रति सेहो उन्मुख अछि। स्वभावतः एहि प्रकारक कवितोमे एक दिस जँ मिथिलाक सौन्दर्य ओ पाबनि-तिहारक वर्णन द्वारा अपन सांस्कृतिक विशिष्टताक प्रतिमान सभकेँ उजागर करैत कहल गेल अछि–

परिणीता लय मधुश्रावणी नागपञ्चमी पूजन।
जनहित सबतरि अहिँक राजमे रक्षासूत्रक बन्धन।।

तँ दोसर दिस मानवीय संवेदनाक सशक्त अभिव्यंजनाक प्रस्तुति करैत कहल गेल अछि–

की शिशिर उचित ई अँहक काज।
कहु ककर अनुग्रह पाबि करी
दुखियापर केवल अपन राज।

'कविता कुसुमाञ्जलि'क बहुलांश कविता सभ युगक संवेदना एवं यथार्थक अभिव्यक्तिक दृष्टिजे अत्यन्त सशक्त अछि। आकारगत रूपविन्यासमे एहू कविता सभमे शास्त्रीयताक तिरस्कार नहि कयल गेल

अछि, मुदा वस्तुक दृष्टिजे ई कविता सभ तथाकथित नवतावादी लोकनिक हेतु मार्गदर्शक सिद्ध होयत। एहि प्रकारक कविता सभमे आधुनिक परिवेशक प्रति कविक संवेदना अनेक स्थलमे उन्मुक्त अभिव्यक्ति पओलक अछि, यथा–

हम कतय नित जा रहल छी।
त्यागि उन्नति पथ विपथ केवल सतत अपना रहल छी।
जे कदाच न व्यक्ति और समाजसँ दुर्गुण हटाबथि।
निज परक रेखा मेटा कऽ विश्वकेँ परिवार मानथि।
स्वार्थ वश अनुदार भऽ हम दारकेँ अपना रहल छी।

सम्पूर्ण विश्वमे विज्ञानक विकाससँ जे नव आलोक पसरल अछि ताहिसँ प्रत्येक क्षेत्र प्रभावित भेल अछि। सामाजिक-राजनीतिक-साहित्यिक-सांस्कृतिक जीवन ओ चिन्तन पद्धतिमे परिवर्त्तन भेल अछि। एहि नवीन चिन्तनधाराक अभिव्यंजना काव्यमे आधुनिकतावादक रूपमे आयल अछि। कविक भावधाराक नव्यता हिनक विविध कविता सभमे अनायास उत्कृष्ट अभिव्यंजनाक उद्वाहक दृष्टिगोचर होइछ यथा–

–दूरदर्शनक बलेँ भेल अछि निकट दर्शनो दूर।
–भ्रान्ति व्याप्त सर्वत्र तन्त्र विफल भेल अछि।
एक तन्त्र आतंक हन्त अन्तक समान अछि।
–वारिवाह विमानमे ई प्रकृति मूलक युद्ध।
व्योम यानक विजय थिक विज्ञानमूलक शुद्ध।

आधुनिक विचार-सरणीमे अतीत एवं भविष्य नहि अपितु वर्त्तमाने सर्वाधिक महत्त्वपरक अछि। अतीत उपयुक्त अछि आ भविष्य कालापेक्षी एवं अज्ञात। एहू विचार-सरणीक अनुसार कवि कतेक आधुनिक सिद्ध छथि, से हिनक एहि पाँतीसँ सहजहिँ बोद्धव्य अछि–

विगत काल्हि थिक स्वप्न अनागत काल्हि कल्पना मात्र।
आजुक काल सफल कऽ ली तौँ बनी प्रतिष्ठा पात्र।

वर्ग संघर्ष आधुनिक युगक देन थिक। एकर चित्रण 'दुब्बर-मोट' शीर्षक कवितामे भेल अछि। कवि वर्गसंघर्षक उपादान सभक चित्रण कऽ अपन संवेदनाक आधुनिकता प्रकट करैत कहने छथि–

अथवा बाइली पाबि मधुर फल खाय भेल अछि बहुतो मोट।
जकरा नहि अवसर ओ अछि दीन-हीन आ अतिशय छोट।

वर्त्तमान युगमे जे नित्य-निरन्तर परिवर्त्तन भऽ रहल अछि, कवि ओहि दिस अत्यन्त सूक्ष्म दृष्टिसँ सम्पन्न छथि। 'कालचक्र' कवितामे युगपरिवर्त्तनकेँ लक्षित करैत कहल गेल अछि–

धर्म-सनातन-मर्यादा सब जाए रहल अछि।
क्षमा, धैर्य, सन्तोष संग सुख-शान्ति गेल अछि।

एहिना 'ज्ञानक सिर विज्ञान नचै अछि' कवितामे आधुनिक मानवतावादपरक व्यवस्थाकेँ ईंगित करैत कहल गेल अछि–

विधि निषेध थिक कथा पुरानक, आइ कतहु नहि भेद।
दूध पानि समतूल भेल अछि नहि कनियोटा भेद।

जयमन्तबाबूक कविक ई विशेषता रहलनि जे सूक्ष्म विचारक सम्प्रेषणमे ई अपन काव्यकेँ व्यंजनावृत्तिसँ सम्पुटित कऽ देने छथि। एहि प्रकारक हिनक कवितामे युग प्रवृत्तिक परिवर्त्तन ओ तकर अनुभावनमे परिवर्त्तित परिवेशक दृष्टिकोण, मान्यता एवं आस्थामे विक्षेपजन्य आधुनिकताक दर्शन होइत अछि। अनेक स्थलमे यथार्थक विकृति उद्घाटित भऽ अस्तित्व-युद्धक मनोवैज्ञानिक संकेत द्वारा विलक्षण नव्यताक प्रतिपादन करैछ। स्वभावतः एहि प्रकारक कविता सामाजिक-राजनीतिक-सांस्कृतिक ओ व्यक्तिगत जीवनमे उपस्थित दोषक बिन्दु सभपर मर्मान्तक प्रहार करैत बुझना जाइछ आ सामाजिक दोष परिहारक मार्गदर्शक बनि जाइछ।

कविक राजनीतिक व्यंग्यक प्रखरता 'निर्वाचनमे प्रगति भेल अछि' कविताक एहि पाँती सभमे देखल जा सकैछ–

नवम जखन आएल निर्वाचन भेल बूथ पर लूटि।
मतदाता असहाय हाय दुर्बलकेँ दै छल कूटि।
जूटि सकल नहि देश बीच एको दल शासन खिन्न।
एक मञ्च पर रहि सकैछ दर्दुर कत काल अभिन्न।
बढ़ल वाद आतंक निरंकुश काटए देशक अंग।
अपहर्त्ता सम्मान पाबि छल बल करैत बहुरंग।

आधुनिक जीवन-जगतमे व्याप्त कालुष्य पर 'आश्चर्य' कवितामे कटु व्यंग्य कयल गेल अछि। एकर एकटा अंश द्रष्टव्य अछि–

शिक्षक कक्षा आबि पढ़ाबथि नित्य
शिक्षार्थी विद्याक हेतु जौँ क्लास

करथि, निरीक्षक देखि सही प्रतिवेद
अधिकारी जौँ करथि न्याय आश्चर्य

एहि प्रकारेँ कविक व्यंग्य सामाजिक दोष परिहारक उपादानक रूपमे व्यवहृत भेल अछि।

स्व. दीनानाथ पाठक 'बन्धु' अपन 'चाणक्य' महाकाव्यमे नेताक आदर्शवादी चित्र प्रस्तुत करैत कहलनि अछि–

कालकूट घट पीबि सुधारस जगमे बाँटि सकैछ।
देवलोकसँ मर्त्यलोक धरि नेता से कहबैछ।

मुदा जयमन्तबाबू नेताक यथार्थकेँ उद्घाटित करैत कहने छथि–

जखन एहि सत्तापर अग्रिम भोट मात्रपर ध्यान।
भोटक काल रहै अछि सत्ता प्राप्ति करक विज्ञान।

एहिना ई जाति पर आधारित राजनीतिक कूट करैत कहने छथि–

जाति-भित्ति पर राजनीति केर महल ठाढ़ सब जान।
जाति विरोधी भाषणमे सब दल देखबै अछि शान।

स्वभावतः जयमन्तबाबू व्यंग्य रचनाकारक श्रेणीमे वरेण्य मानल जा सकैत छथि। तथापि आधुनिक जीवन-जगत ओ परिवेश-सापेक्ष रचना करितहुँ ई परम्पराक अवहेलनाकेँ श्रेयष्कर नहि मानलनि आ एकरा अत्याधुनिक वस्तुक माध्यमे सिद्ध करबामे सफल भेलाह, यथा–

परम्परासँ मुक्त भेल जन 'एड्स'क सेज धरैछ।
वा मृगतृष्णा नीर पान लय जँह तँह दौड़ करैछ।
भरतभूमि पर भोग हेतु तँ चाही भारत-मुद्रा।
निज 'शेयर' संतोष करक थिक त्यागू 'हर्षद'-तन्द्रा।

यैह परम्परावादिता हिनका अपन महापुरुष ओ पूर्वजक प्रति पूर्ण निष्ठावान बनौने छलनि। 'परिवर्त्तन' तथा 'कविकोकिल शतशत प्रणाम' कवितामे हिनक ई दृष्टि अत्यन्त स्पष्ट भऽ प्रकट अछि। 'राम कृपा बल सब किछु संभव जानथि ई मतिमान', 'शिवक भक्त अँह, अँहक भक्त शिव, ई जग के नहि जान'; गंगा दौड़ि आबि पहिनहिँसँ कयलनि भक्ति निखार' आदि पदमे एकरे अनुगायन देखि पड़ैछ।

एतावता कवि कतेक आधुनिक आ कतेक पुरानपंथी से बेकछायल नहि जा सकैछ आ ई सत्ये कहल गेल अछि जे ई पारम्परिक शैलीमे आधुनिक विचारधाराक सम्मिश्रित संयोग प्रस्तुत कयने छथि।

'कविता कुसुमाञ्जलि'मे कविक संवेदनाक विशिष्ट स्थल सभ थिक हिनक लघुकथाकाव्य सभ–'नरवानर', 'कुकुरक न्याय' तथा 'गामक बाबू'। एहि कथाकाव्य सबमे आधुनिक जीवनक उपभुक्त यथार्थक विज्ञापन कविक एकान्त मनक तीव्र अनुभूतिक सान्द्र अभिव्यक्ति थिक। शब्दार्थ द्वारा प्रतिपादित ई अभिव्यक्ति सभ व्यापक सामाजिक प्रयोजनक परिसर ग्रहण कऽ लेलक अछि। आधुनिक मानवक संवेदनाशून्यताकेँ 'नर-वानर' परिभाषित कयलक अछि तँ 'कुकुरक न्याय' मानव चरित्रक अधःपतनक संकेत दऽ देलक अछि। 'गामक बाबू'मे आधुनिक सामाजिक परिवेशक विपन्नताकेँ रूपायित कयल गेल अछि।

कवितामे व्यापक सामाजिक परिवेशक परिसर प्रस्तुत करब जयमन्त बाबूक कविक वैशिष्ट्य रहलनि। हिनक यैह वैशिष्ट्य हिनक विभिन्न कवितामे निहित सूक्तियोजनामे समुद्घाटित भेल अछि। अखिल विश्वजनीन सत्य वचन सभसँ समलंकृत हिनक भाषा ओ अभिव्यंजना-पद्धति हिनक कवित्वक उत्कर्षकेँ गुणित करैत गेल अछि। एहि प्रकारक किछु सूक्ति सब अछि–

–नियति चक्र ककरो नहि छोड़य नृप हो अथवा रंक
–विपदि धैर्य थिक करक बात ई चकवी कहय पुकारि
–सिकताकण गणनामे हो नहि ककर परिश्रम व्यर्थ
–बिनु विदलित हृदयेँ की होइछ बीज वृक्ष साकार
–थिक निज व्यथे–न कथमपि होइछ कखनहुँ पर उपकार
–किन्तु रहलैक सदा ककर भाग्य एक सम
–राज्यक अधिकार पाबि ककरा नहि होय गर्व
–संघक शक्ति अजेय मेय नहि नहि थिक हेय कदापि
–जगच्चक्र संतुलित चलै अछि
–मूल स्रोत सम्पर्क हीन नहि आगु बहै अछि धार
–पटरी छोड़ि चलय यदि गाड़ी हो निश्चय आघात
–अपनहिँ हाथेँ अपन पैरमे करी कुठाराघात?
–घर फूटय गमार लूटए ई बात सत्य
–जखन लोहा गरम हो आघात तखनहि करब समुचित
–कर्म कर्त्तव्य थिक अहोरात्र निरलस भए

–जननी, जन्मभूमि थिक स्वर्गहुसँ पैघ
–अपन दुःख सुख तुल्य जखन हो आनक।
मानवताक निकष ओकरे थिक मानक।।
–वसुधा एक कुटुम्ब भावना जखनहि।
दूषित राग द्वेष निस्तारो तखनहि।
–देह गेहसँ नेह शोककारक हो।
सच्चिन्मय जगदीश नेह तारक हो।

समष्टिमे 'कविता कुसुमाञ्जलि' आधुनिक मैथिली साहित्यकेँ आचार्य जयमन्त मिश्रक भव्य प्रतिदान थिक। हिनक संस्कृतनिष्ठा हिनक प्रसादगुणसम्पन्नताकेँ कतहु बाधित नहि कयलक। हिनक पारम्परिक रूपयोजना वैचारिक आधुनिकताकेँ कतहु खिन्न नहि कयलक। ने तँ हिनक सूक्तियोजना नीतिवचनक शुष्कतासँ परिवेष्टित अछि आ ने व्यंग्य योजनामे कतहु मर्यादाहिक अतिक्रमण भेल अछि।

एहि पोथीक आत्मनिवेदनमे आचार्य जयमन्तमिश्र अपनाकेँ ओहि कोटिक कवि मध्य परिगणित कयने छथि जनिक सरस्वतीक गति कर्कश तर्कक गहन ग्रन्थिक भेदन ओ सुकुमार साहित्यक सर्जनमे समान नहि छलनि। ई कथ्य वस्तुतः डा. मिश्रक विनयातिरेक छनि जाहिमे तुलसीक 'कवित विवेक एक नहि मोरे। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे'क अनुलेखन अछि। सत्य ई थिक जे हिनक कवि रूपक कनक हिनके शास्त्रकारक 'निर्घषणच्छेदनतापताडन'सँ परीक्षित भऽ 'कविता कुसुमाञ्जलि'क कुन्दन प्रस्तुत कयलक।

अन्तमे श्रद्धेय आचार्य सुमनजीक शब्दमे–

कविता कुसुमाञ्जलिक लय अर्घ्य अनघ रसवंत।
मैथिली पद पद्म पूजि पूजित छथि श्रीजयमंत।।

ताहि जयमन्तमिश्रकेँ मैथिलीक एहि एकल पोथीपर साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली इसवी सन् 1995क मूल पुरस्कारसँ समलंकृत कयने छलनि। ओना ई भारतीय संस्कृत साहित्यक सम्वर्द्धनमे श्लाकापुरुष जकाँ जीवन्त छथि, खासकऽ अपन **श्रीकृष्णचन्द्रचरित महाकाव्य** ओ **महामानवचम्पूः**क प्रणेताक रूपमे, रससिद्ध कविक रूपमे। हिनक यशः कायाकेँ जरामरणक भय नहि रहलनि।

गद्य-विश्लेषण

- कथाकार नगेन्द्र कुमरक 'श्यामली'
- मायानन्द मिश्रक निबन्ध साहित्य
- विदितजीक 'ग्राम-गणराज्य'मे समाज-दर्शन

कथाकार नगेन्द्र कुमरक 'श्यामली'

मैथिलीमे कथाविधाक सूत्रपात पूर्व शताब्दीक दोसर दशकक बाद स्पष्टतया स्फुट भऽ गेल छल। एहि समय धरि आख्यान-आख्यायिका ओ उपाख्यान रचना द्वारा 'कथायां सरसं वस्तु गद्यैरेव विनिर्मितम्'क सीमाबद्धता क्रमशः समाप्त भेल जा रहल छलैक आ मैथिली कथा समाजसापेक्षता दिस उन्मुख होमऽ लागल छल। औत्सुक्यपूर्ण कथावस्तु ओ वर्णनात्मक शैलीक माध्यमे नीति, व्यवहार विषयक लोकशिक्षण तथा लोकरंजन मात्र जे कथाक उद्देश्य छल से समाज-सुधारक स्पष्ट उद्देश्य लऽ कऽ प्रकट होमऽ लागल। मैथिलीमे पत्रकारिताक उदय एहि विधाक विकास हेतु पर्याप्त अवसर प्रदान कयलकैक। कालीकुमारदास, कुमारगंगानन्दसिंह, हरिनन्दनठाकुर 'सरोज', जयनारायणमल्लिक, लक्ष्मीपतिसिंह, कुलानन्दनन्दन आदिक कथामे समाज सुधारक प्रति प्रतिबद्धताक दर्शन होइत अछि। क्रमशः मैथिली कथा क्षेत्रमे नव-नव शिल्पक प्रयोगक संगहि आदर्शवादी दृष्टिकोणक स्थानपर यथार्थवादी दृष्टिकोणकेँ प्रश्रय भेटैत गेल आ ओ युग-जीवनक प्रतिनिधित्वक संगहि नव्यता ओ भव्यता दिस अग्रेषित होइत रहल। काञ्चीनाथझा 'किरण', भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', सुरेन्द्रझा 'सुमन' आदिक कथामे यथार्थोन्मुखता ओ शिल्पगत वैशिष्ट्यक निदर्शन भेटैत अछि।

तथापि मैथिली कथा साहित्यक विकास-यात्रामे मार्गदर्शक प्रयास ओ लोकप्रियताक सर्जनक दृष्टिजे जाहि एकाकी कथाकारक उदय एहि विधामे क्रान्तिकारी परिवर्तन अनलक से थिकाह प्रो. हरिमोहनझा। ई ने केवल कथाक विकास यात्राकेँ सबलता प्रदान कयलनि आ पाठकीयतामे समृद्धि अनलनि अपितु करुणा ओ शृंगारक पथपर बहुधा अगराइत मैथिली कथाधारामे व्यंग्यक पुट दऽ रुढ़िवादिता ओ धर्मान्धतापर प्रहार करैत

मिथिलाक वर्गीय समाजकेँ आत्मनिरीक्षणक हेतु विवश कयलनि। हिनक 'प्रणम्यदेवता', 'रंगशाला' आदि संग्रहक माध्यमे जे कथा सभ समक्ष आयल से ने केवल लोकजीवनक भाषामे अछि अपितु मिथिलाक लोकजीवनक सत्य पर आधारित अछि, कटु सत्यक वाचक रहितो आह्लादक अछि। आक्षेपपरक हास्य ओ मनोरंजनप्रधान कृतिक रूपमे ई सभ आइयो मैथिली पाठककेँ आकृष्ट करबामे सक्षम अछि। चमत्कारपूर्ण शैलीक माध्यमे सामाजिक रुढ़िपर कशाघात करबामे अनुपम हरिमोहन झा मैथिली लेखनक माध्यमे सामाजिक परिवर्तन ओ लोकरंजनक ध्वजवाहक सिद्ध छथि।

मैथिली साहित्येतिहासकार डा. दुर्गानाथझा 'श्रीश' मैथिली गल्प साहित्यक विवेचन करैत कहने छथि जे 'श्रीनगेन्द्रकुमर, प्रो. हरिमोहनझाक अनुसरण करैत ओही शैलीमे लिखैत छथि। हिनक 'ससरफानी' ओ 'फलेना जामुन' कथासंग्रह प्रकाशित अछि (मैथिली साहित्यक इतिहास 1991, पृ.-380)।

मैथिली अकादमी, पटनाक कथासंग्रह (1977)मे नगेन्द्र कुमरक कथाकार स्वरूपक परिचय दैत कहल गेल अछि जे "ओना पहिने सँ लिखैत छलाह मुदा कथाकारक रूपमे ठाढ़ भेलाह 'ससरफानी'क प्रकाशनसँ। श्रीहरिमोहनझाक अनुसरण करैत हास्य-व्यंग्यक माध्यमे सामाजिक कुरीति पर चोट करबामे कुशल छथि मुदा हिनक अलग पहिचान जे बनबैत छनि से छनि हिनक पशुजीवनकेँ लऽ कऽ लिखल गेल कथा सब। राजा एहि तरहक कथाक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। डिम्पी, अन्हरा आदि आन नीक कथा छनि।"

एतावता ई सिद्ध होइत अछि जे मैथिली कथाधाराक विकासमे नगेन्द्रकुमर सेहो एकटा उल्लेखनीय नाम छथि, भने ई हरिमोहनझा जकाँ मार्गदर्शक नहि भेलाह मुदा हुनक अनुसरणकर्ताक रूपमे एहि विधाक संपोषण तँ कयलनि आ ख्यातिलब्ध भेलाह।

साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित जयकान्तमिश्र कृत **मैथिली साहित्यक इतिहास**मे (पृ.-231) कथाकारक रूपमे नगेन्द्रकुमरक परिचय दैत कहल गेल अछि जे "श्रीनगेन्द्रकुमरक प्रारंभिक गल्प सभ मिथिलाक वास्तविक जीवनसँ पूर्णतः दूर छल। 'ससरफानी'मे आबि ई एहि दोषसँ

पूर्णतः मुक्त भऽ गेल छथि, जाहिमे सभ कथा वास्तविक मैथिल जीवनक सन्दर्भसँ पूर्णतः आबद्ध अछि। हिनक कतोक कथा अनायासे लगैत अछि जेना 'प्रणम्य देवता'क कथासँ प्रभावित हो यथा कुमरमक भोज। यद्यपि हिनक कतोक गल्प बड़ उत्कृष्ट उतरल अछि तथापि ई मौलिक गल्पकार नहि कहाए सकैत छथि।''

मुदा डा. मिश्रक उपरिलिखित टिप्पणी सर्वथा पक्षपातपूर्ण जकाँ बुझना जाइत अछि। वस्तुतः नगेन्द्रकुमर प्रो. हरिमोहनझासँ लगभग पाँच वर्षक छोट छलाह। दुनू गोटेक मूल निवास स्थान कुमर वाजितपुर, वैशाली सैह छलनि आ कर्मक्षेत्र सेहो दुनू गोटेक पटने। स्वभावतः सहभावक सहजता तँ छले होयतन्हि आ लोकप्रिय कथाकार हरिमोहनझा जे मिथिलाक लोकजीवन धरिकेँ अपन कथाक माध्यमे छापि लेने छलाह, बैरिस्टर नगेन्द्र कुमरहुक प्रतिभासम्पन्न मनकेँ आन्दोलित-हिन्दोलित कयनहि होयताह, जकर प्रतिफल कतोक अनुसरणोपरक कथाक रूपमे भेल होयत। तेँ हिनका मौलिक गल्पकार नहि मानब सर्वथा समीचीन नहि कहल जा सकैत अछि।

एतऽ ई ध्यातव्य अछि जे नगेन्द्रकुमर बहुआयामी आ प्रतिभासम्पन्न रचनाकार छलाह। हिनक चारि गोट तँ कथासंग्रह प्रकाशित होयबाक सूचना अछि यथा ससरफानी (1947), दृष्टिकोण (1954), शिकार (1955) तथा फलेना जामुन (1955)। तदतिरिक्त मिथिला डिरेक्टरी प्रथम खंड, पूर्णिया (1946) तथा पथचारी (हिन्दी यात्रा वृतान्त) सेहो प्रकाशित छनि। संभवतः यैह पथचारी कदाचित् श्यामली नामे मैथिलीमे छपल होइन्ह जे हिनक शिक्षावधिमे इंग्लैण्डमे रहबाक क्रममे ओहि ठामसँ आयरलैण्ड परिभ्रमण वृत्तान्तक पूर्णतः साहित्यिक दस्तावेज थिक। एकर प्रकाशन मैथिली अकादमी, पटना द्वारा 1981 मे कयल गेल छल।

चारि गोट कथा संग्रहक रचयिता नगेन्द्रकुमरक कुल अड़तीस गोट कथाक सूची डा. मेघन प्रसाद कृत 'मैथिली कथा कोश'मे उल्लिखित अछि यथा अन्हरा, आतिथ्य सत्कार, कटिहारसँ सोनपुर, कांचन, कालेजक विद्यार्थी, कुमरमक भोज, डिम्पी, तबारक मियाँक कथा, तेजू भाषा, त्रिमुर्ती, दृष्टिकोण, धीरू बाबू, धोखा, नवीन युवक, पड़ौआ, पण्डितजी, पूर्णियासँ धमदाहा, पेइंग गेस्ट, प्रकृति आ मानव, प्रोफेसर, फलेना जामुन, मास्टर

साहेब, राजा, रेक्शावाला, शापमोचन, शिकार, सरैसाक धुरखेल, ससरफानी, साझी घर, सोनक सिकड़ी, स्त्री कर्तव्य, हेरफेर आ होलिका दाह।

कथासंग्रहक संख्या आ उपरिलिखित सूची दुनू ई स्पष्ट करैत अछि जे नगेन्द्रकुमर सर्वथा मौलिक आ निष्पन्न रचनाकार-कथाकार छलाह। यद्यपि हिनक कथासंग्रह अथवा पत्र-पत्रिकामे विकीर्ण अधिकांश कथाकेँ देखि सकबाक सौविध्य हमरा प्राप्त नहि भऽ सकल अछि मुदा हिनक 'राजा' कथा जे पशु जीवनपर आधारित अछि, हमरा पढ़ल अछि। ई कथा मैथिली अकादमीक कथासंग्रहमे संगृहीत छैक। एहिमे एकटा घोड़ाक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कयल गेल अछि जे पराजयक लांछनाक आगू मृत्युकेँ वरण करब श्रेयष्कर बुझैत अछि आ अपन स्वामीक प्रति भक्ति आ निष्ठापर कोनो आँच नहि आबऽ दैत अछि। दोसर दिस ओकर बेइमान सइस ओकरा संग छल कऽ कऽ ओकरापर भ्रष्टताक आरोपेटा नहि लगयबामे सफल होइत छैक, अपितु ओकर मालिक सेहो ओकरा भ्रष्ट मानि लेबाक मानसिकता पोसि ओकर हत्या कऽ देबऽ चाहैत छैक। पशु-जीवनक प्रति मानवीय स्वार्थ-संकोच ओ क्रूरता तथा लोकजीवनमे व्याप्त प्रपंचकेँ एहि कथाक माध्यमे जगजियार कयल गेल अछि। पशु कथाक दृष्टिजेँ तँ ई सर्वथा मौलिक अछिये अन्यान्यो मैथिली कथाक तुलनामे भाव, भाषा, शिल्पादिक स्तरपर उत्कृष्टता प्राप्त अछि।

डा. देवकान्तझा 'ए हिस्ट्री ऑफ मॉडर्न मैथिली लिटरेचर (पोस्ट इन्डिपेण्डेन्स पिरियड), जकर प्रकाशन साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2004मे भेल अछि, मे नगेन्द्रकुमरक अनेक कथापर टिप्पणी कयलनि अछि जकर उल्लेख करब एतऽ असंगत नहि बुझना जा रहल अछि। ओ कहने छथि जे–Nagendra Kumar's sasarphani (1947) marks his debut as a short story writer of new social awakening. On the theme of the incompatibility of marriage, he hits out at the hypocrisy and inertia of conventional society. It epitomises the murder of our innocent daughters at the cruel hands of orthodox hypocritical society. Impregnated with pathos and a crusading zeal for reform, the sensitive writer

moves our heart. His telling art widens the range of his creativity by personifying the animal world with human sensitivity. Anhara is a moving story of a faithful blind dog against the cruelties of man. Raja and Dimpi are another highlights. Phalena Jamun, Dristikona and Shikar add new feathers to his cap. Dristikona is mockery of inherent maithili traits of jealousy and backbiting. With his deep insight into the human mind, the author succecds in his satirical sketches with sense of humour. Sasarphani is his master piece on the awakening of woman. (p/257-258)

डा. देवकान्तझाक उपर्युक्त अभिमतसँ ई स्पष्ट होइत अछि जे नगेन्द्रकुमर अपना समयमे नहि केवल एक गोट निविष्ट कथाकारक भूमिकामे मैथिलीक सेवा कयलनि अपितु पशु कथा ओ शिकार कथाकेँ मैथिलीमे दिशा-दृष्टि सेहो प्रदान कयलनि। एहि तथ्यकेँ श्रीकान्तठाकुर एहि शब्देँ व्यक्त कयने छथि–'लेखक नगेन्द्रकुमर मैथिली जगतमे चिरकालसँ विदित-विख्यात छथि। विशेषत: हिनक ख्याति मूर्धन्य कथाकारक रूपमे अछि (श्यामली, मैथिली अकादमी, पटना, 1981, प्रकाशकीय, पृ.-1)'।

श्यामली नगेन्द्रकुमरक यात्रा-वृत्तान्तपरक पोथी थिक। उच्च शिक्षाक क्रममे कुमर लंदन प्रवासमे रहल छलाह। ताही क्रममे एक गोट साधारण पथचारीक रूपमे आयरलैण्ड भ्रमण करबाक अवसर भेटल छलनि। ओही यात्रा सभक कतिपय संस्मरण एहि यात्रा साहित्यमे अनुस्यूत भेल अछि। बत्तीस गोट अध्यायमे विभाजित ई यात्रा-वृतान्त वस्तुत: मैथिलीमे यात्रा-साहित्यक एक गोट मानदण्डक रूपमे स्थापित अछि जाहिमे नहि केवल आयरलैंडक भौगोलिक, ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक ओ सांस्कृतिक पक्षक परिचय भेटैत अछि अपितु भारत ओ मिथिलाक संग ओकर कतिपय पक्षक प्रभावक-परिसर ओ साम्य-वैषम्यक एक गोट रूपरेखा सेहो भेटैत अछि। एहिमे नहि केवल यात्रानुक्रमटाक विवृति देखि पड़ैत अछि अपितु प्रत्येक घटनाक प्रति लेखकक आत्मीय अनुभूतिक सेहो निदर्शन भेटैत अछि। विवरणात्मक शैलीमे रचित एहि

यात्रा-वृत्तान्तमे कथातत्वक रोचकता एकरा लोकशिक्षणपरक तँ बनौनिहि अछि, लोकरंजकताक निर्वाह करबामे सेहो सफल भेल अछि।

लेखक एहि पोथीक नामकरण 'श्यामली' कयलनि तकर पाछू तर्क देने छथि जे ओ ई नाम दिग्दिगन्तमे पसरल हरित दूर्वासँ आच्छादित आयरलैण्डक शस्यश्यामला भूमिसँ प्रभावित भऽ रखलनि।

यात्राक क्रमहुँमे लेखक अपन भाषा-साहित्यक प्रति कतेक चिन्तनशील छथि तकर उदाहरण हिनका द्वारा 'पश्चिम-उत्तर सीमान्तक एक स्कूल' शीर्षक वृत्तान्तमे अत्यन्त स्फुट भेल अछि। एहि ठाम लेखककेँ पता लगैत छनि जे आयरलैण्डक मातृभाषा गेलिक छैक जाहिपर अङरेजीक प्रभुत्व छैक। मुदा तथापि आयरिश लोकनि अपन भाषाक प्रति प्रेम रखैत छथि आ एहि भाषामे प्रचुर साहित्यक रचनामे लागल रहैत छथि। लेखकक कहब छनि जे अङरेजीक तुलनामे गेलिक पोथीक अत्यन्त सीमित मार्केट रहितो कतेको साहित्यकार स्वान्तःसुखाय गेलिके लिखैत छथि। एहिसँ गेलिक साहित्यक समृद्धि स्वतः होइत रहैत छैक। कविता, उपन्यास, लघुकथा, नाटक सभ विधामे एकर विकास भऽ रहल छैक (पृ.-203)। लेखककेँ पता लगैत छनि जे गत पन्द्रह शताब्दीसँ गेलिक साहित्यक जे परम्परा जीवित रहल अछि से हुनका लोकनिक लेल गर्वक विषय छनि। गेलिक भाषाक बजनिहार लोकनिक संख्यामे दिनानुदिन ह्रास भेलो सन्ताँ गेलिक साहित्यक वर्तमान आयाम, जीवनी-शक्ति ओ विविधता वास्तवमे एक अद्भुत गप्प अछि (पृ. -204)।

गेलिकक एहि परिस्थितिकेँ देखला सन्ताँ लेखक स्वभाषा मैथिलीक प्रति विचार कऽ पबैत छथि जे एहि सन्दर्भमे वर्तमान मैथिली साहित्योमे गेलिके जकाँ परिस्थिति अछि। मैथिली साहित्यक सभ विधामे विकास भऽ रहल अछि किन्तु पाठक लोकनिक संख्यामे बड़ कम वृद्धि देखैत छी। अधिकाधिक व्यक्ति जनिक मातृभाषा मैथिली छनि, हिन्दी अथवा अङरेजी बजैत छथि (पृ.-204)। लेखकक चिन्ता एहि शब्देँ अभिव्यक्त होइत छनि जे 'की कालान्तरमे मैथिली साहित्य भूतकालक एक स्मृति मात्रेटा रहि जायत?' ई लेखकीय चिन्ता मातृभाषानुरागी लोकनिक हेतु शिक्षणपरक अछि।

वृत्तान्तक 'दुइ गोट आयरिश महिला नेता' शीर्षक अध्यायमे वार्त्ता शैलीमे लेखक ओ हुनक सहयात्री पैट्रीशियाक बीच जे उतराचौरी भेल अछि से भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनक इतिहासमे दुइ गोट आयरिश महिला क्रमशः भगिनी निवेदिता ओ एनी बेसेन्टक योगदानक विवरण प्रस्तुत करैत अछि। एहिसँ भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलनक कतोक अस्पृष्ट पृष्ठ विज्ञापित होइत अछि जे सर्वथा ज्ञानवर्धक अछि। ओ दुनू महिला भारतक सांस्कृतिक जागरण, शिक्षाक विस्तार ओ मुक्तिसंग्राममे कीर्तिमान उपस्थित कयने छलीह।

'घासक टालमे एक राति' शीर्षक अध्यायमे लेखक ई विज्ञापित कयलनि अछि जे भारतमे काज कयनिहार आयरिश पदाधिकारी लोकनि भारतीय स्वाधीनताक इच्छुक रहैत छलाह। आयरलैंड ताहि समय ब्रिटिश उपनिवेश छल मुदा ब्रिटिश पार्लियामेन्टमे ओकर प्रतिनिधित्व रहैत छलैक। आयरिशलोकनि आइ.सी.एस. कऽ कऽ भारत अबैत छलाह मुदा हुनका लोकनिक संग प्रोन्नतिमे भेदभाव कयल जाइत छलनि। एहि सम्बन्धमे लेखक दरभंगाक जिला मजिस्ट्रेटक एक गोट संस्मरण उपस्थित करैत छथि जाहिमे उक्त मजिस्ट्रेटकेँ जिला स्कूलक हेडमास्टरक प्रति कुपित देखाओल गेलनि अछि जे स्वतंत्रता संग्रामक जुलूसमे गेल विद्यार्थी पर बेंत बरिसबैत अछि तथा जॉर्ज पंचमक स्वागत-समारोहमे आडम्बरपूर्ण प्रदर्शनमे निमग्न रहैत अछि।

आयरिश जातिक साहसिकताक अनेक प्रमाणकेँ विज्ञापित करैत लेखक जॉर्ज टॉमसक उल्लेख कयलनि अछि जे अपन देशसँ आबि भारतमे सेनापतिक काज कयने छलाह। एहि क्रममे ओ जिम कोरबेटक स्मरण करबैत छथि जे विश्वविख्यात शिकारी, शिकारी साहित्यक लेखक आ वन सम्पदाक संरक्षक छलाह। लेखकक कहब छनि जे ई जाति सुदूर प्रदेश अमेरिकामे जा कऽ बसल तथापि छिन्नमूल नहि भेल आ आयरलैंडसँ अपन सम्पर्क बनौने रहल। धनकुबेर जॉन केनेडी, लेखन व्यवसायी ओ नोबेल पुरस्कारसँ पुरस्कृत जॉर्ज बनार्ड शॉ आदिक चर्चा कऽ लेखक एहि देशवासी लोकनिक गौरव-गाथाक गान कयलनि अछि।

आयरलैण्डमे इसाइ धर्मक दुनू सम्प्रदाय कैथोलिक आ प्रोटेस्टैंटक बीच तनाव बनल रहैत छैक। तकर कारण ई छैक जे कैथोलिक लोकनि

तलाकक विरोधी छथि आ प्रोटेस्टैंटक लोकनि स्वेच्छया विवाह-विच्छेद कऽ सकैत छथि। धर्म ओ धर्मान्धताक बीच चलैत एहि शाश्वत संघर्षपर खेद व्यक्त करैत लेखकक मन्तव्य छनि जे 'वैज्ञानिक युगक विकासक संग-संग शिक्षित समाजमे धर्मान्धता विलुप्त भऽ रहल अछि। आयरलैण्डोमे वर्तमान पीढ़ी धर्मक दृष्टिजे परस्पर सहिष्णु भऽ गेल छथि। किन्तु यावत् धरि देशक विभाजन रहत तावत् धरि किछु ने किछु धार्मिक तनाव तऽ रहबे करत।

'आयरिश ग्राम्य जीवनक एक झाँकी' शीर्षक अध्यायमे आयरिश घोड़ाक शक्ति, शौर्य ओ वेगक उत्कृष्टताक संगहि आयरिश लोकनिक घोड़दौड़ प्रेम, रेसक घोड़ा उत्पन्न करबाक तथा ओकर भोजन एवं प्रशिक्षण कलामे प्रवीणताक विवरण देल गेल अछि। एहि अध्यायमे आयरिशलोकनिक जीवनमे लोकगीत ओ नृत्यक महत्ताकेँ विज्ञापित कयल गेल अछि। एहि अध्यायमे लेखक मधुबनीक एस.डी.ओ. जॉर्ज ग्रियर्सनक चर्च कयने छथि जे आयरिश भाषाविद् छलाह आ आइ. सी.एस. कऽ कऽ भारत आयल छलाह। हिनका द्वारा कयल गेल कार्य 'बिहार पीजैन्ट लाइफ', 'भारतीय भाषा सर्वेक्षण' आदिक स्मरण करैत लेखक मैथिली साहित्य ओ संस्कृतिक प्रति हिनक लगाओक वर्णन कयलनि अछि।

'आकाशक नीचाँ एक राति' शीर्षकमे लेखक धार्मिक स्थलक निरूपणक क्रममे कहने छथि जे 'धर्मक दृष्टिजे भारत ओ आयरलैण्डमे बड़ सादृश्य देखैत छी। आयरलैण्डमे छोटो-छीन गाममे गिर्जा पाओल जाइत अछि। जेना भारतमे मन्दिर, मस्जिद, गुरुद्वारा समस्त देशमे, गाम-गाममे पसरल अछि, तहिना आयरलैण्डमे गिर्जा। एतुक्का एक गोट विशेषता ई जे दक्षिण भारतक मन्दिर जकाँ एहि देशक गिर्जा धर्मस्थानो थिक, वास्तुकलाक नमूनो। आगू लेखक कहलनि जे जे लोकनि विदेशमे कायमी रूपेँ बसियो जाइत छथि, ओहो सभ प्रायः अपन मातृभूमिकेँ नहि बिसरैत छथि। अपन देशमे धार्मिक किंवा सामाजिक काजक हेतु अपन योग्यताक अनुसार टाका पठबैत छथि। एहि देशमे धर्मक आकर्षण बड़ प्रबल। अतः प्राचीनेकालसँ गाम-गाममे गिर्जाघरक निर्माण होइत आयल अछि। गिर्जाघर सभकेँ प्रचुर देवोत्तर सम्पति रहैत छैक। ई सब

देश-विदेशमे धर्म प्रचारार्थ प्रशिक्षित लोककेँ पठबैत रहैत अछि। गिर्जाक व्यवस्थाक हेतु विभिन्न प्रकारक चाकर सभ रहैछ तथा एकरा सभक द्वारा शिक्षा ओ स्वास्थ्य सम्बन्धी कार्यकेँ सेहो सम्पन्न कराओल जाइत छैक। कब्रगाह सभपर विभिन्न प्रकारक शोकगीत लिखबाक परम्परा छैक।

'तोँ की निश्चय कयलह?' अध्यायमे आयरलैण्डमे अवस्थित रोमानी समुदायक संस्कृतिक परिचय देल गेल अछि जे यायावर प्रकृतिक होइत अछि। 'मायापुरीक रानी' शीर्षकमे जिप्सी समुदायक स्त्रीप्रधानक जातिक परिचय भेटैत अछि। इहो यायावर प्रकृतिक होइत अछि।

'आब छुट्टी लेबाक चाही' शीर्षकमे आयरलैण्डक कृषिप्रधान देश होयबाक तथा सरकार द्वारा कृषक वर्गक उन्नतिक हेतु चलि रहल प्रयास सभक दृष्टान्त प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि अध्यायमे एहि ठामक नारीक सशक्तिकरणक दृष्टान्त प्रस्तुत करैत लेखक आयरलैण्डक एकटा गामाञ्जलमे एकाकी नारीक सान्निध्यक वर्णन करैत लिखलनि अछि जे एहन आकस्मिक भावेँ एक अविवाहिता नवयौवनाक एतेक समीप आयब एक अप्रत्याशित घटना कहल जायत। अपना देशमे एहि तरहक सान्निध्यक कल्पना की स्वप्नोमे कयल जा सकैछ? आयरिश कन्या सभक मानसिक शक्ति बड़ प्रबल देखल जाइछ। ओकरा अनभुआर लोकोसँ प्राय: कोनो भय नहि होइत छैक। जौफरीक एके कथामे एकाकी ग्लोरी हमरा पेइंग गेस्टक रूपमे राखि लेलक अछि। (पृ.-116)।

'इएह थिक हमर समस्या' शीर्षकमे लेखक जनौलनि अछि जे आयरलैण्ड खाद्य पदार्थक उत्पादन तँ प्रचुर मात्रामे करैत अछि मुदा औद्योगिक वस्तुक उत्पादनमे पछुआयल अछि। स्वभावत: एतऽ मध्यवित्तीय जीवनक भोजन-साजन, मनोरंजन, शिक्षा, स्वास्थ्य आदिक स्तर ऊँच अछि। औद्योगिक उत्पादनक हेतु विदेशपर निर्भर रहबाक कारण विकासक गति प्रभावित छैक।

'हम एहि युवतीसँ प्रेम करैत छी' शीर्षक अध्यायमे आयरलैण्डमे चोरी, छीना-छोड़ीक भय नहि छैक, तकरा सोदाहरण प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहि अध्यायमे टिप्सक हेतु छोड़ल पाइकेँ व्यावसायिकतासँ जोड़ि कऽ देखाओल गेल अछि। विवाहमे धर्मक बन्धनकेँ सेहो प्रतिपादित कयल गेल अछि।

'तोहर स्वर सुनैत रहब' शीर्षक अध्यायमे ई सविशेष चर्चा कयल गेल अछि जे विश्वकवि रवीन्द्रनाथक नाम नोबेल पुरस्कारक हेतु प्रस्तावित करबाक श्रेय आयरिश कवि विलियम बटली इट्सकेँ भेटलनि। रवीन्द्रनाथकेँ 1913मे नोबेल पुरस्कार भेटलनि आ इट्सकेँ 1923मे। इट्स भारतीय संस्कृतिक विदेशी प्रतिनिधिक रूपमे गणनीय भेलाह तँ रवीन्द्र भारतीय संस्कृतिक चारणक रूपमे। एतावता सांस्कृतिक धरातलपर भारत आ आयरलैण्डक बीच अत्यन्त प्रगाढ़ सम्बन्ध रहलैक अछि। आयरिश उपन्यास कला एवं थियेटर सेहो उत्कृष्ट प्रकृतिक रहल अछि।

एहि प्रकारेँ विभिन्न अध्यायमे रोचक आख्यानक रूपमे आयरलैण्डक विभिन्न पहलूक विशद् विवेचन कयल गेल अछि जाहिसँ ई यात्रा-वृत्तान्त आयरलैण्ड यात्राक आनन्दसँ पाठकलोकनिकेँ ओतप्रोत करबामे समर्थ होइत अछि आ ओहि देशक विषयमे ज्ञानवर्धन तँ होइतहिँ छैक।

लेखकक भाषा प्राञ्जल गद्य अछि तेँ साधारणो पाठक एकर आनन्द लऽ सकैत छथि। वर्णनक चारुताक ई दृष्टान्त द्रष्टव्य अछि जाहिमे नायिका वर्णन आस्वाद्य अछि–

ओ एहि होटलक मलिकाइन छथि। अवस्था पचीस-छब्बीस, अत्यन्त भव्य मूर्ति। यथा नाम तथा गुण। शरीर इंच-इंच नापल, हेलेन ऑफ ट्रायल, आधुनिक प्रतिमूर्ति कहबामे हम कनेको कुण्ठित नहि होयब।' (पृ.-103)

एहिना कथोपकथनक संक्षिप्तता एहि वार्तामे द्रष्टव्य अछि–

–कतेक दिनसँ तोरा दुनू गोटेमे प्रेम छहु?

–तीन सालसँ।

–तोहर प्रेमिकाक अवस्था?

–इएह बीस-एक्कैस।

–ओ कोन काज करैत अछि?

–स्कूलमे पढ़ओनी करैत अछि।

–आ ओकर माय-बाप?

–ओहो दुहू गोटे स्कूलमे शिक्षक अछि। (पृ.-104)

अवश्ये कतोक ठाम वर्णन लेखकीय बहुश्रुतिसँ भारयुक्त भऽ गेल अछि आ लेखक वाचक बनल देखि पड़ैत छथि। तथापि एहनो ठाम ई वृत्तान्त ज्ञानवर्धकताक संगहि काव्यानन्दमे डुबओने रखैत अछि।

एहि प्रकारेँ समग्रतामे विचार कयला उत्तर नगेन्द्रकुमरकेँ आधुनिक मैथिली साहित्यक निविष्ट रचनाकार खास कऽ कथाकार ओ यात्रा-वृत्तान्तक रचयिताक रूपमे भारतीय साहित्यक निर्माताक अग्रिम पंक्तिमे राखल जा सकैत छनि तथा हिनक श्यामलीकेँ मैथिली यात्रा-वृत्तांतक एक गोट आदर्श उदाहरण मानल जा सकैछ।

मायानन्दमिश्रक निबन्ध साहित्य

बीसम शताब्दीक उत्तरार्द्ध मैथिली साहित्यक बहुआयामी विस्तारक दृष्टिजे स्वर्णकाल कहल जा सकैछ। एहि कालक बहुविधारचनाकारक अग्रिम पंक्तिमे प्रो. मायानन्द मिश्र गण्य थिकाह। अपन बहुआयामी प्रतिभाक द्वारा ई मैथिलीमे गीत लिखलनि–गीतल लिखलनि, कविता आ नवकविता लिखलनि, कथा आ उपन्यास विधाकेँ अधुनातन स्तरधरि सम्पुष्ट कयलनि आ परिवेश उपस्थित भेलापर ई मौलिक रचनाधर्मी साहित्यकार निबन्ध–संस्मरणादिक माध्यमे सेहो अपन भाषा साहित्यकेँ संबलित करैत रहलाह। यद्यपि हिनक निबन्ध विधा हिनक आन–आन विधाक रचनाक तुलनामे हिनक गौण साहित्यिक अवदान बुझना जाइत अछि आ पत्र–पत्रिकामे विकीर्ण रहबाक कारणेँ ओकरा सभक समेकित मूल्यांकनो संभव नहि भऽ सकल अछि, तथापि हिनक किछु निबन्ध अवश्ये मैथिली साहित्यक एहि विधाकेँ सम्पुष्ट करबामे अन्यतम प्रयास कहल जा सकैछ।

अपन मधुर स्वर–संधान द्वारा मैथिलीक गेयधर्मी रचनासँ जन–जनकेँ आकर्षित करबाक कला मायाबाबूमे छात्रावस्थहिमे पूर्ण विकास पाबि गेल छलनि जकर चर्चा करैत सहपाठी प्रो. रमाकान्तमिश्र लिखने छथिन जे 'चन्द्रधारी मिथिला कालेजक मैदान मध्य कोनो साहित्यिक आयोजन छल, धोती, कुर्त्ता आ अमरजीक स्टाइलमे पातर दोपटा ओढ़ने, त्रिपुण्ड्र पर लाल ठोप कयने एकटा गोर–नार युवक विद्यापतिक गोसाउनिक गीत 'जय जय भैरवि' बड़ मधुर आ हृदयग्राही स्वरमे गाबि रहल छलाह। साइकिल लेने अपन संगीक संग ससरि रहल छलहुँ दौलतक केबिन दिस मुदा मायाक संगीतक मायाजालमे फँसि स्थिर भऽ गेल रही। परिचय भेल रहय–मैथिलीक नव लेखक छथि, एकटा पोथी 'भाङक लोटा' लिखने छथि, कविता सेहो

करैत छथि (आरम्भ-4, अगस्त-अक्टूबर, 83, पृ.-1-2)। सैह मायाबाबू परवर्त्ती कालमे पटना रेडियो, चेतना समिति, विद्यापति सेवा संस्थान, संकल्प लोक आ आनो विद्यापति पर्व समारोह मंचक माध्यमे मैथिली-उद्घोषकक प्रतिष्ठा बनि गेल छलाह, जकर अनुभूति आठम दशकक उत्तरार्द्ध धरि एहि पंक्तिक लेखककेँ सेहो भऽ गेल छलनि।'

मायाबाबूक एहि मंजुल मूर्तिकेँ शब्द विग्रहमे परिणत करैत डा. भीमनाथझाक कथन छनि–

मैथिलीक आङनमे साहित्यक रथपर चढ़ि
के ई राजकुमार उतरि अयला नहुनहु बढ़ि?
भव्य रूप मृदु हास्य, मधुर स्वर, मंजुल भाषा
अयला मायानन्द पुरल जननिक अभिलाषा।

द्रष्टव्य अर्पण–सं. उमाकान्त, विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा, 1993, पृ.-53 एवं परवर्त्तीकालमे भावाञ्जलि–डा. भीमनाथझामे संकलित।

से मायाबाबू **भाङक लोटासँ** परिचिति पाबि **आगि मोम आ पाथर** द्वारा अपन कथा यात्राकेँ स्तरीयता प्रदान करैत **चन्द्रबिन्दु**मे रससिद्ध कथाकार साबित भेलाह, दिशान्तर आ अवान्तरक द्वारा मैथिली कवितामे नव्यताक उन्नयन कयलनि तथा अपन उपन्यास **बिहाड़ि पात पाथर, खोंता आ चिड़ै** तथा **मंत्रपुत्र** द्वारा मैथिलीक एहि विधाकेँ वैवाहिक यंत्रणासँ उबारि मुक्ताकाशक दर्शन करौलनि। फलत: **'मंत्रपुत्र'**पर वर्ष 1988मे साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत भेलाह। हिनका द्वारा लिखित **प्रथमं शैलपुत्री च**, **स्त्रीधन** आ **सूर्यास्त** उपन्यास मैथिलीक उपन्यास विधाक सम्पोषणमे हिनक विशिष्ट अवदान सभ थिकनि मुदा एहि तीनूमे खाली **प्रथमं शैलपुत्री च** केर पाण्डुलिपिटा हम पूर्व शताब्दीक नवम दशकमे हिनका संकल्प लोक, लहेरियासरायक कार्यक्रममे कँखियौने देखने छलियनि आ जिज्ञासा कयला उत्तर उन्मुक्त भावें कहने छलाह जे 'बेटीवला सौराठ सभामे अपन कन्याक लेल जेना वर तकैए तहिना हम विद्यापति पर्व समारोह सभमे एकर (पाण्डुलिपि दिस इसारा कऽ) प्रकाशक जोहैत फिरैत छी।' हम मैथिली प्रकाशनक दयनीयतापर विचार करैत हुनक बात सुनि क्षुब्ध रहि गेल रही। पछाति सुनल जे ओ पोथी हिन्दीमे अनूदित भऽ राजकमल प्रकाशन, पटना/दिल्ली द्वारा प्रकाशित

भऽ गेल मुदा मैथिलीक पाण्डुलिपि रखले रहि गेलनि। संभवतः मायाबाबू मैथिली प्रकाशनक एहि दयनीयताक बोधसँ ग्रस्त भऽ सम्पूर्णतया मिथिला क्षेत्रीय चित्र-चरित्रसँ युक्त **माटिक लोक सोनाक नाओ**केँ सेहो **माटी के लोग सोने की नैया**मे रूपान्तरित कऽ प्रकाशित करौने छलाह।

मैथिलीमे कथा आ उपन्यासक विधाक ई महारथी मैथिलीक आधुनिक कथाधाराक कोशिकन्हाक कथाकारलोकनिमे ललित, राजकमल आ मायानन्दक त्रिकोणक रूपमे वृहत्त्रयीक एकाइ प्रख्यात भेल छलाह जे मिथक आब टूटि चुकल अछि आ मायाबाबूक कथाकार मध्यवर्गीय मनोभूमिक उत्कृष्ट चित्रण कयनिहारक रूपमे मैथिलीक बेछप कथाकार भऽ गेल छथिन। आलोचक कुलानन्द मिश्रक शब्दमे–'आधुनिक मैथिली कथामे तीनटा नाम सादर, सस्नेह एवं सभय लेल जाइछ। ई तीनू नाम थिक–सर्वश्री ललित, राजकमल आ मायानन्द मिश्रक। एहि तीनू नामसँ क्यो कथाकारक त्रिभुज बनौलनि अछि आ क्यो त्रिपुण्ड्र मुदा हमरा विचारेँ मैथिली एहि तीनू नामसँ ने कोनो त्रिभुज बनैत अछि आ ने त्रिपुण्ड्र। त्रिभुजक तीनू रेखा छोट-पैघ भऽ सकैत अछि, मुदा ओ कतौ एक ठाम मिलैत अछि। त्रिपुण्ड्रक रेखा कतौ एक ठाम मिलैत नहि अछि, मुदा ओ एकजातीय होइछ। मुदा ललित, राजकमल आ मायानन्दमिश्र (हम नम्रतापूर्वक निवेदन करय चाहैत छी जे) अपन कथा यात्राक आरंभसँ अंत धरि तत्त्वतः कतौ ने एक ठाम ठाढ़ भेटैत छथि आ ने कतौ एकतान होइत छथि। धरती मध्यवर्गेक उपलब्ध रहलनि अछि एहि तीनू कथाकारकेँ, मुदा, हिनका लोकनिक कथायात्राक पड़ाओसँ लऽ कऽ गंतव्य धरि हमरा भिन्न लगैछ (सन्निपात 5–सं. कुलानन्दमिश्र, सितम्बर, 1986 पृ.-30 पर कुलानन्दमिश्रक समीक्षा 'मध्यवर्गीय मनोजगतक मधुर कथाकार'सँ उद्धृत), सर्वथा समीचीन अछि। उपन्यासकार मायाबाबू मैथिलीक आधुनिक उपन्यास-कलाक आधिकारिक रचनाकारक रूपमे समादृत छथि। हिनक काव्यभाषा समकालीन परिवेशक अनुरूप बिम्ब, भाषा, शैली तथा अभिव्यंजनाक सम्पोषक होइतो शब्दार्थ सम्बन्धकेँ छोड़ि देबऽवला तथाकथित नवतामूलक नहि अछि।

प्रो. मिश्र छठम-सातक दशकमे **अभिव्यंजना** नामक एक गोट द्विमासिक पत्रक सम्पादन द्वारा मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाक रचनाकेँ नियामक मोड़ देबाक प्रयास कयने छलाह जे ओहि पत्रिकाक

भऽ गेल मुदा मैथिलीक पाण्डुलिपि रखले रहि गेलनि। संभवतः मायाबाबू मैथिली प्रकाशनक एहि दयनीयताक बोधसँ ग्रस्त भऽ सम्पूर्णतया मिथिला क्षेत्रीय चित्र-चरित्रसँ युक्त **माटिक लोक सोनाक नाओ**केँ सेहो **माटी के लोग सोने की नैया**मे रूपान्तरित कऽ प्रकाशित करौने छलाह।

मैथिलीमे कथा आ उपन्यासक विधाक ई महारथी मैथिलीक आधुनिक कथाधाराक कोशिकन्हाक कथाकारलोकनिमे ललित, राजकमल आ मायानन्दक त्रिकोणक रूपमे वृहत्त्रयीक एकाइ प्रख्यात भेल छलाह जे मिथक आब टूटि चुकल अछि आ मायाबाबूक कथाकार मध्यवर्गीय मनोभूमिक उत्कृष्ट चित्रण कयनिहारक रूपमे मैथिलीक बेछप कथाकार भऽ गेल छथिन। आलोचक कुलानन्द मिश्रक शब्दमे–'आधुनिक मैथिली कथामे तीनटा नाम सादर, सस्नेह एवं सभय लेल जाइछ। ई तीनू नाम थिक–सर्वश्री ललित, राजकमल आ मायानन्द मिश्रक। एहि तीनू नामसँ क्यो कथाकारक त्रिभुज बनौलनि अछि आ क्यो त्रिपुण्ड्र मुदा हमरा विचारेँ मैथिली एहि तीनू नामसँ ने कोनो त्रिभुज बनैत अछि आ ने त्रिपुण्ड्र। त्रिभुजक तीनू रेखा छोट-पैघ भऽ सकैत अछि, मुदा ओ कतौ एक ठाम मिलैत अछि। त्रिपुण्ड्रक रेखा कतौ एक ठाम मिलैत नहि अछि, मुदा ओ एकजातीय होइछ। मुदा ललित, राजकमल आ मायानन्दमिश्र (हम नम्रतापूर्वक निवेदन करय चाहैत छी जे) अपन कथा यात्राक आरंभसँ अंत धरि तत्त्वतः कतौ ने एक ठाम ठाढ़ भेटैत छथि आ ने कतौ एकतान होइत छथि। धरती मध्यवर्गेक उपलब्ध रहलनि अछि एहि तीनू कथाकारकेँ, मुदा, हिनका लोकनिक कथायात्राक पड़ाओसँ लऽ कऽ गंतव्य धरि हमरा भिन्न लगैछ (सन्निपात 5–सं. कुलानन्दमिश्र, सितम्बर, 1986 पृ.-30 पर कुलानन्दमिश्रक समीक्षा 'मध्यवर्गीय मनोजगतक मधुर कथाकार'सँ उद्धृत), सर्वथा समीचीन अछि। उपन्यासकार मायाबाबू मैथिलीक आधुनिक उपन्यास-कलाक आधिकारिक रचनाकारक रूपमे समादृत छथि। हिनक काव्यभाषा समकालीन परिवेशक अनुरूप बिम्ब, भाषा, शैली तथा अभिव्यंजनाक सम्पोषक होइतो शब्दार्थ सम्बन्धकेँ छोड़ि देबऽवला तथाकथित नवतामूलक नहि अछि।

प्रो. मिश्र छठम-सातक दशकमे **अभिव्यंजना** नामक एक गोट द्विमासिक पत्रक सम्पादन द्वारा मैथिली साहित्यक विभिन्न विधाक रचनाकेँ नियामक मोड़ देबाक प्रयास कयने छलाह जे ओहि पत्रिकाक

पहिल सम्पादकीयक निम्न पाँती सभसँ तथा ओहिमे गृहीत रचनावलीसँ स्पष्ट होइत अछि। कहल गेल अछि जे–'आइ समकालीन मैथिली साहित्यमे नव दृष्टि, नव वस्तु-विन्यास, नव भावभूमि, नव भाषा-व्यवस्था, नव प्रतीक योजना, नव उपमेय -उपमान, नव स्वर, नव मानवमूल्य तथा नव अभिव्यक्ति प्रणालीक प्रयोजन छै–अभिव्यंजना एही प्रयोजन लै आगू बढ़ल अछि। आइ तरुण साहित्यकार सब नव दिशासँ संकेतक अभावमे भटकि रहल छथि–हमरा विश्वास अछि, अभिव्यंजना हुनका बाट देखौतनि।'

आइ युगक कुंठा, व्यस्तता, विवशता आ संघर्ष साहित्यकारक सहानुभूति मङैत, अपन अभिव्यक्ति चाहैछ–अभिव्यंजना निर्विवाद रूपेँ से दऽ सकत आ साहित्यसँ गतिरोधकेँ तीरि कऽ हटा देत।' (मैथिली पत्रकारिताक इतिहास-पं चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', मैथिली अकादमी, पटना, 1981, पृ.-336)।

वस्तुतः मायाबाबूक युग मैथिली कवितामे नव-नव स्थापनाक युग छल। अपन-अपन कविता–रचनाकेँ स्थापित करयबाक हेतु रचनाकारलोकनि विविध प्रकारक वादक नियोजनमे अपस्याँत छलाह। हिन्दी-अंग्रेजीक देखाउँसपर मैथिली कवितामे मनोविश्लेषणवाद, सहजतावाद, प्रतीकवाद, अभिव्यंजनावाद आदि विभिन्न प्रकारक वादक प्रति लेखकलोकनि उन्मुख भेल छलाह। मुदा मैथिली कविताक प्रकृति कोनो वादविशेषमे ओझरायल तँ रहऽवला छल नहि, तेँ ई वाद सभ क्रमशः मन्द पड़ैत गेल। तथापि मैथिली काव्यक क्षेत्रमे नवदृष्टिबोध, रचनाप्रणाली ओ विन्यासक ई वाद सभ कारक बनल आ रजनी-सजनी धरि सीमांकित, संस्कृत-संस्कृतिसँ गछारल मैथिली कविता अवश्ये उन्मुक्त पथवाहिनी भऽ गेलीह।

अस्तु, मायाबाबूक निबन्ध रचनाक सर्वाधिक प्रशस्त कोटि साहित्यिक आलोचनासँ सम्बद्ध रहलनि। एहि कोटिक निबन्ध सभमे ओ मैथिली कथा, कविता ओ आलोचना विधा सभक वस्तुस्थितिपर दृष्टिनिक्षेप करैत ओकरामे नवीन ओ युगानुरूप परिवर्त्तनक आग्रही देखि पड़ैत छथि। अवश्ये, अपन आग्रहकेँ ई तर्कपूर्ण ढंगसँ प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि प्रकारक निबन्ध सभमे हिनक विद्वत्तापूर्ण चिन्तनपद्धतिक अभिज्ञान होइत अछि।

मायाबाबूक निबन्ध रचनाक अन्य कोटिक सभ थिक–संस्मरणपरक, आन्दोलनपरक, पोथीक भूमिकालेखनपरक ओ शुभाशंसापरक। एहि आलेखक प्रणयनक क्रममे हिनक यावन्तो निबन्धादि भेटल अछि तकर सूची सन्दर्भ सहित एहि स्वरूपक अछि।

1. साहित्यिक आलोचनात्मक निबन्ध

(क) मैथिली साहित्य 1960, मिथिला दर्शन, फरवरी 1961, पृ.-2-10

(ख) मैथिली गल्पक परिस्थिति ओ परिणाम–मिथिला दर्शन विशेषांक, 1960, पृ.-52-64, 110-114

(ग) आधुनिक मैथिली काव्यक वाद-परम्परा–मिथिला दर्शन, जुलाई, 1961, पृ.-9-14

(घ) आधुनिक मैथिली काव्य : प्रेरक शक्ति आ प्रवृत्ति–संकलन, मैथिली अकादमी, पटना, 1977, पृ.-168-173

(ङ) आलोचना दायित्वक बोध–साहित्यिक समालोचना : दशा दिशा–सं. डा. बासुकीनाथझा, चेतना समिति, पटना, 1987 पृ.-26-32

(च) मैथिली कथाक भूमि संधान–वैदेही विशेषांक, 1989,पृ.-16-21

(छ) विद्यापतिक लोकचेतनाक राष्ट्रीय आयाम–मैथिली चेतना पत्रिका, चेतना समिति, पटना, अंक-2, नवम्बर 1994, पृ.-44-48

(ज) साहित्यमे सामाजिक चेतनाक सिद्धान्त–वैदेही, रचना संग्रह, पंचम भाग, 1994, पृ.-49-54

(झ) विद्यापति श्रृंगारिक ओ भक्ति रचना–स्मारिका, चेतना समिति, पटना, 2002

(ञ) कथाक कथ्य–मैथिली अकादमी पत्रिका, पटना, वर्ष 9 अंक-1, जनवरी-फरवरी 1989, पृ.-28-29

(ट) मैथिलीमे गीतकाव्यकेर परम्परा–दृष्टि, सं. विभूति आनन्द, अप्रैल 89, पृ.-12-14

(ठ) लोरिक गाथाक ऐतिहासिकता–भारती मंडन, सं. केदार कानन, किसुन कुटीर, सुपौल, अंक 4, पृ.-11-16

(ड) मैथिली नवीन काव्यान्दोलन–श्रीकेदान कानन लग मूल पाण्डुलिपि

(ढ) आधुनिक मैथिली काव्यक भूमिका–तथैव

2. संस्मरणात्मक निबन्ध

(क) किसुनजीक साहित्यक सन्दर्भ–स्मृति संध्या, सं मोहन भारद्वाज, मैथिली अकादमी पत्रिका, पटना, 1980, पृ.-106-114

(ख) कालपथ–ललित श्रद्धांजलि अंक, मिथिला मिहिर (29 मई सँ 4 जून 1983), तथापि चन्द्रबिन्दु-मायानन्दमिश्र, मैथिली अकादमी पत्रिका, पटना, 1983क भूमिका

(ग) इतिहासपुरुष अमर शहीद ललित बाबू–कोशी कुसुम (मैथिली द्वैमासिक), सहरसा, सं. श्रीमती अम्बिका मिश्र, अंक 1, जनवरी-फरवरी 1984, पृ.-33-36

(घ) अन्हारमे इजोत तकैत यात्रीजी–भारती मंडन–सं. केदार कानन, सुपौल, अंक 6, पृ.-37-39

3. आन्दोलनात्मक निबन्ध

(क) पुस्तकालय आन्दोलन : मैथिली आन्दोलन, संकल्प स्मारिका, संकल्पलोक, लहेरियासराय, 1985, पृ.-17-20

(ख) हमर मंच यात्रा–भारती मंडन, अंक 8, पृ.-15-33

(ग) मैथिली संघर्ष अभियान : प्रसार भारती, तत्रैव, अंक 9, पृ. 16-58

4. भूमिका

(क) मृगतृष्णा (कथा संकलन)–ले. कृष्णकान्त, जानकी विकास परिषद्, धनबाद, 2002

(ख) मैथिली रामकाव्यक परम्परा–डा. वीणा ठाकुर, पनिचोभ, दरभंगा, 2001

5. शुभाशंसा

(क) मन आङनमे ठाढ़–भीमनाथझा, किसुन संकल्प लोक, सुपौल, 2002, कॉभर पृ.-2-3

मायाबाबूक निबन्ध सभक ई सूची आंशिक अछि। कारण ई जे हिनक रचनाधर्मिताक दीर्घ अवधिक पत्र-पत्रिका सभक समेकित अवलोकन एहि दृष्टिजे नहि कयल जा सकल अछि। ई सूची स्पष्ट करैत अछि जे प्रो. मिश्र समय-समय पर साहित्यिक, संस्मरणात्मक ओ आन्दोलनपरक निबन्ध सभक प्रणयन करैत रहलाह, पोथीक भूमिका लिखि नवतुरिया वर्गकेँ प्रोत्साहित करैत रहलथिन आ संगतुरियाकेँ अनुशंसा द्वारा प्रेरित-प्रभावित करैत रहलथिन। हिनक द्वारा प्रणीत **दिशान्तर**क आमुख, **अवान्तर**क भूमिका तथा विभिन्न पोथीमे देल गेल भूमिका ओ **अभिव्यंजना**क सम्पादकीय सभ सेहो हिनक निबन्ध साहित्यक विशिष्ट अंश अछि। प्रो. मिश्र **मैथिली साहित्य इतिहास लेखन** विषयपर पी. एच.डी. शोध प्रबन्ध प्रस्तुत कयने छथि जकर प्रकाशन **मैथिली साहित्यक इतिहास** नामे 'किसुन संकल्प लोक' द्वारा ग्रन्थाकार भऽ चुकल अछि आ छात्र लोकनिक हेतु इतिहास लेखनक मार्गदर्शक मानल जाइत अछि।

साहित्यिक आलोचनात्मक निबन्ध

प्रो. मिश्रक साहित्यिक आलोचनात्मक निबन्ध मध्य **मैथिली साहित्य 1960** एहि वर्षमे प्रकाशित विभिन्न विधाक पोथी सभक विवेचनात्मक ओ सूचनात्मक आलेख थिक जकर ऐतिहासिक महत्त्व छैक। एहि आलेखमे लेखक ई प्रतिपादित कयने छथि जे साठिक डेग कथासाहित्यक डेग छल जे सर्वथा समीचीन बुझना जाइत अछि। **मैथिली गल्प : परिस्थिति ओ परिणाम**मे 1920 इ.सँ लऽ कऽ 1960 इ. धरिक मैथिली गल्पक वैज्ञानिक दृष्टिजे विवेचन कयल गेल अछि आ ओकरा प्रभाव युग, प्रगति युग आ प्रयोग युगक तीन कोटिमे विभाजित कऽ तदवधि धरि प्रकाशित गल्प सभक परिवेश, तत्त्व, आयाम, उपलब्धि ओ अभाव-अभियोग सभक विशद् विवेचन करैत अन्ततः ई निष्कर्ष निकालल गेल अछि जे प्रयोग युगक गल्प जे समकालीन गल्प छल मैथिली साहित्यमे जनवादी परम्पराक शिलान्यास कयलक। लेखक एकरा शुभ भविष्यक संकेतक मानलनि अछि जे हुनक तीव्र ओ स्फीत दृष्टिक परिचायक कहल जा सकैछ आ से परवर्ती मैथिली गल्पक विकास धारापर दृष्टिपात कयने सर्वथा समीचीन आ दूरदर्शितापूर्ण कहल जा

सकैछ। ई निबन्ध विवरण, व्याख्या ओ सूचना तीनूसँ संबलित आ सुसंघटित निबन्ध थिक। **आधुनिक मैथिली काव्यक वाद परम्परामे** तत्कालीन मैथिली आलोचनामे हिन्दीक अनुसरणमे मैथिलीमे उगल वाद परम्पराक अन्धानुकरणसँ उपजल विसंगति सभक विवेचन करैत अन्ततः मैथिली काव्यमे अपन स्वतंत्र प्रवृत्तिक आधारपर मर्यादावाद, सांस्कृतिकवाद, प्रकृतिवाद आ अभिव्यंजनावादक चारि कोटिक अवधारणाक निरूपण कयल गेल अछि जकरा प्रो. मिश्रक मैथिलीक हेतु मौलिक शास्त्रीय दृष्टिकोणक प्रति आग्रह कहल जा सकैछ।

आधुनिक मैथिली काव्य : प्रेरक शक्ति तथा प्रवृत्ति अतःपूर्व आलेखक विस्तारीकरण थिक जाहिमे मैथिलीकाव्यक विकासधाराकेँ भक्तियुग, संक्रमणकाल (भुवन-किरण युग) तथा प्रगतियुगमे विभाजित कऽ सकबाक प्रवृत्तिक आलेखन भेल अछि। मुदा हमरा जनैत ई दुनू निबन्ध मिश्रजीक विशिष्ट शैलीटाक दिग्दर्शन करबैत अछि आ कथ्य सभ अवगुंठित सन बुझना जाइत छनि। **आलोचनाक दायित्व बोध** मैथिलीक आलोचना विधामे पसरल अराजकता ओ अनैतिकताक प्रति लेखकक आक्रोशक द्योतन करैत अछि। लेखक कहने छथि जे 'समकालीन मैथिली आलोचना साहित्य शिल्पमे सामर्थ्य तथा विवेचनामे सूक्ष्मताक जे विकास भऽ गेल हो किन्तु आलोचना विधा गरिमा ओ महिमासँ सामान्यतः च्युत भऽ गेल अछि। विद्वत्ताक मार्मिकता तथा निष्पक्षताकेँ गौण राखि कऽ आलोचना साहित्य अपन नैतिक दायित्वक निर्वाह नहि कऽ सकैत अछि, से निर्विवाद अछि (**साहित्यिक समालोचना : दशा दिशा**, पृ.-29)। एहि आलेखमे आलोचनाक सैद्धान्तिक ओ व्यावहारिक पक्षक विशद् विवेचन करैत निर्णयात्मक, व्याख्यात्मक, प्रभावात्मक, तुलनात्मक ओ ऐतिहासिक आलोचना पद्धति सभक परिचय दैत नीक आलोचकक गुणादिक शास्त्रीय पक्ष प्रस्तुत कयल गेल अछि तथा मैथिलीमे आलोचनाक विकृतिपर व्यंग्यात्मक प्रहार कयल गेल अछि। लेखक खौंझायल सन मानसिकतासँ कहने छथि जे 'मैथिलीमे किछु आलोचक पूर्वक रचना पढ़ितहि नञि छथि तेँ स्वकथनकेँ पूर्णतः मौलिक मानि लैत छथि अथवा कोटेशनक महत्त्व बुझितहि नञि छथि। ई कृतघ्नताक संगहि अल्पज्ञतो थिक। अथवा ई चौर्य कार्य थिक जे निन्दनीय थिक। एकर अतिरिक्त किछु आलोचक किछु कथनकेँ नञि

बूझि पबैत छथि अथवा तोड़ि-मोड़ि उपस्थित कऽ कै प्रस्तुत करैत अपन पूर्वाग्रह व्यक्त करैत छथि जे साहित्यिक भ्रष्टाचार थिक तथा योग्यतापर प्रश्नचिह्न लगबैत अछि (तत्रैव, पृ.-31-32)।' आलेख विद्वत्तापूर्ण आ शिक्षणदृष्टि सम्पन्न कहल जा सकैछ। **कथाक कथ्य**मे अल्प शब्दावलीक माध्यमे कथाकेँ कल्पना ओ यथार्थक मणिकाञ्चन संयोगसँ व्युत्पन्न सावित कयल गेल अछि। एहि निबन्धमे लेखक गगरीमे समुद्र भरबा सन भाषिक प्रयोग कयने छथि जे हुनक भाषाधिकारक परिचायक बुझना जाइछ। **मैथिली कथाक भूमि संधान** कथासाहित्यक विराट् विश्वफलक आ क्षेत्रीयताक बीच संतुलनसँ सम्बन्धित व्याख्यान थिक। एहिमे लेखक ई स्थापित कयलनि अछि जे क्षेत्रीय सांस्कृतिक गौरवकेँ प्रमुखतासँ मंडित करैत जखन क्षेत्रीय भाषासाहित्यक साहित्यकारलोकनि राष्ट्रमोन आ विश्वमोनकेँ अपन कथामे अभिव्यक्त करताह तखने ओ विराट फलकसँ युक्त सम्पूर्ण मानवीय संवेदनाक स्पर्श कऽ सकत आ श्रेष्ठ होयत। हुनक लक्ष्य निबन्धक एहि निष्कर्षसँ स्पष्ट भऽ जाइत अछि–'कहबाक प्रयोजन नहि जे मैथिलीक कथासाहित्य मिथिलाक माटि-पानि, घर-आङन तथा सामाजिक स्वरूपक चेतनाक कथा होयत जाहिमे राष्ट्रमोन आ विश्वमोनक अदृश्य झंकृत रहत। एहने कथा स्वीकृत होयत, श्रेष्ठ कहाओत ओ कालजयी होयत। मैथिलीक समकालीन कथाकारकेँ अपन सृजनक उत्तदायित्वक प्रति सतर्क आ विवेकशील होअऽ पड़तनि, तखने कथामे मानवीय सभ्यताक व्यापकता, निजी संस्कृतिक सूक्ष्मता तथा संवेदनाक मार्मिकता आओत, श्रेष्ठ साहित्यक यैह रहस्य थिक (वैदेही विशेषांक, 1989, पृ.-21)।' जे सर्वथा समीचीन अछि। **साहित्यमे सामाजिक चेतनाक सिद्धान्त**मे शाश्वत मूल्यबोध ओ समकालीन सामाजिक चेतनाक संतुलन समन्वित अभिव्यक्तिकेँ श्रेष्ठ साहित्यक कारक तत्त्वक रूपमे स्वीकार करैत लेखकक अवधारणा छनि जे 'वस्तुत: शाश्वत मूल्यबोध ओ समकालीन युगचेतनाक संतुलित समन्वयन श्रेष्ठ साहित्यक चरमो थिक आ परमो थिक।' समीचीन उपस्थापन थिक। निबन्धकारक विद्यापति विषयक दुइ गोट उपलब्ध निबन्ध क्रमश: **विद्यापति लोकचेतनाक राष्ट्रीय आयाम** तथा **विद्यापतिक शृंगारिक ओ भक्ति रचना** वैचारिकता ओ प्रतिपादन शैलीक मौलिकताक दृष्टिजे हृदयग्राही अछि। विद्यापति विषयक विभिन्न निबन्धमे निरन्तर हुनक पदावलीक

विविध पक्षपर विद्वानलोकनि विचार करैत रहलाह अछि आ सभकेँ विद्यापतियेक शब्दमे 'तिल तिल नूतन' वस्तु-भाव-सौन्दर्यबोध होइत रहलनि अछि। मिश्रजीक इहो दुनू निबन्ध तेहने भावापन्न अछि आ संभवतः पर्वसमारोहकेँ दृष्टि-पथपर राखि लिखल गेल अछि। **मैथिलीमे गीतकाव्यकेर परम्परा** लेखकक गवेषणापूर्ण शोध निबन्ध थिक जाहिमे गीतकाव्यक ऐतिहासिक विवेचन-विश्लेषण भेल अछि। 'लोरिक गाथाक ऐतिहासिकता' विषयक निबन्ध अन्वेषण-अनुसन्धानपूर्ण शोध निबन्ध थिक जाहिमे लोरिक गाथाकेँ इतिहासक सन्दर्भमे परखल गेल अछि। **मैथिलीक नवीन काव्यान्दोलन** तथा **आधुनिक मैथिली काव्यक भूमिका** शीर्षक निबन्धद्वयक पाण्डुलिपि हमरा **भारती मंडन**क प्रसिद्ध सम्पादक श्री केदारकाननक सौजन्यसँ देखबाक अवसर भेटल। ई दुनू निबन्ध शास्त्रीय अनुसन्धानक दृष्टिजे महत्त्वपूर्ण होइतो, सारगर्भित रहितो, प्रकाशनक सौभाग्यसँ वंचिते अछि।

संस्मरणात्मक निबन्ध

मायाबाबूक चारि गोट संस्मरणात्मक निबन्ध भेटल अछि जाहिमे **किसुनजीक साहित्यक संदर्भ**मे स्वनामधन्य मैथिली कवि-कथाकार-एकांकीकार-नैबन्धिक-सम्पादक रामकृष्ण झा 'किसुन'क व्यक्तित्व ओ कृतित्वक आकलन कयल गेल अछि। मिश्रजी एहि निबन्धमे वस्तुनिष्ठतासँ बेसी आत्मनिष्ठताक परिचय देलनि अछि, तथापि ई निबन्ध किसुनजी विहंगमदृष्ट्या परिचय देबामे सक्षम अछि। **कालपथ** प्रसिद्ध मैथिली कथाकार-उपन्यासकार ललितक प्रति श्रद्धांजलिक हेतु रचित निबन्ध थिक जे मिथिला मिहिरक ललित श्रद्धांजलि अंक (29 मई सँ 4 जून 1983)मे पूर्वहि प्रकाशित भेल छल आ बादमे ई निबन्ध मायाबाबूक कथासंग्रह **चन्द्रबिन्दु**क भूमिकाक रूपमे किञ्चित परिमार्जनक संग प्रकाशित अछि। ई वृहत्काय संस्मरणात्मक निबन्ध मायाबाबूक ओ ललितक आत्मीयता, ललित-राजकमल-मायानन्दक त्रिपुण्ड्रक मिथकक स्थापना एवं भाषाक लालित्यक दृष्टिजे अन्यतम अछि आ मायाबाबूक गत्यात्मक भाषाक अनुपम उदाहरण थिक। **इतिहास पुरुष अमर शहीद ललित बाबू** मिथिलाक एक गोट राजनीतिक पुरुष-पुंगवक स्तवन मात्र थिक। एहि

निबन्धमे रचनाकारक भाषाक प्राञ्जलता, लालित्य ओ गतिमयता काव्यानन्दक सृष्टि करैत बुझना जाइत अछि यथा–'ललित बाबू, मिथिलाक इतिहासक एहेन राजपथक एकटा विलक्षण मोड़ थिकाह।' 'मिथिलाक इतिहासक राजपथपर विभिन्न कालखण्डमे एहन-एहन मोड़ सब उपस्थित होइत आयल अछि।' मोड़ उपस्थित कयलनि सर्वप्रथम जनक ओ याज्ञवल्क्य जे देलनि समाजकेँ भौतिक जीवनक आवश्यकता कृषि आ आध्यात्मिक जीवनक लेल ब्रह्मदर्शन। योग आ भोग।' 'मोड़ उपस्थित कयलनि नान्यदेव ओ चंडेश्वर जे देलनि शासन-यंत्र तथा विधान-तंत्र।' मोड़ उपस्थित कयलनि शिवसिंह ओ विद्यापति जे देलनि स्वाधीनता चेतना आ सौन्दर्य भावना।' 'मोड़ उपस्थित कयलनि महाराज रमेश्वर सिंह ओ कवीश्वर चन्द्र जे प्रतीक भेलाह व्यापक व्यवस्थाक।' (कोसी कुसुम अंक 1, पृ.-33-34)। **अन्हारमे इजोत तकैत यात्रीजी** मायाबाबू ओ यात्रीजीक बीच यात्रीजीक महाप्रयाणसँ पूर्व धरिक भेटघाँटक अत्यन्त संक्षिप्त ओ औपचारिक संस्मरण प्रस्तुत करैत अछि।

आन्दोलनात्मक निबन्ध

मायाबाबू मिथिला-मैथिल-मैथिलीक आन्दोलनसँ निरन्तर जुड़ल रहलाह आ एहि हेतु मैथिली मंचसभक माध्यमे सार्थक आन्दोलन करैत रहलाह। हिनक आन्दोलनी व्यक्तित्व राजनीति प्रेरित नहि साहित्य-उत्प्रेरित रहलनि अछि आ ई शब्द-ब्रह्मक अनुष्ठान द्वारा लोकजगतकेँ मैथिलीक हित-साहित्यक लेल प्रेरणा दैत रहलाह। यद्यपि शब्द-ब्रह्मक हिनक ई प्रयोग बहुधा उद्घोषणाक चमत्कारहिक द्वारा होइत रहल तथापि हिनक तीन गोट एहन आलेख देखि पड़ैत अछि जाहिमे अक्षर ब्रह्मोक साधना भेल अछि। पहिल आलेख **पुस्तकालय आन्दोलन : मैथिली आन्दोलन**मे विद्यापति पर्व समारोह मनौनिहार संस्था सभकेँ पुस्तक कीनि कऽ अपन संस्थामे पुस्तकालयक निर्माण करयबाक संदेश दैत छैक तथा मैथिली प्रकाशनक अगुआइ करबाक निदेश दैत छैक। एहि आलेखमे तर्कसम्मत ढंगसँ समारोहक अपव्ययकेँ एकटा सार्थक दिशामे लऽ जयबाक तथा एहि तरहेँ मैथिली भाषा-साहित्यक प्रचार-प्रसारमे गति अनबाक दिशाबोध देल गेल छैक। अन्य दुइ गोट निबन्ध **हमर मंच यात्रा** आ **मैथिली**

संघर्ष अभियान-प्रसार : प्रचारमे पहिलमे संस्मरणात्मक शैलीमे लेखक अपन उद्घोषकक नोकरीसँ लऽ कऽ प्रोफेसरी प्राप्त करबा धरिक अवधिमे पटनामे बिताओल समयक वृत्तान्त आत्मालापक शैलीमे विन्यस्त कयलनि अछि। दोसर निबन्धमे सेहो ओही शैलीमे लेखक अपन प्रोफेसरीसँ लऽ कऽ परवर्त्ती काल धरिक मैथिली आन्दोलनमे अपना द्वारा कयल गेल प्रयास ओ सहभागिताकेँ आत्मालापक द्वारा प्रस्तुत कयलनि अछि।

भूमिका ओ शुभाशंसा

मायाबाबू सहरसावासी कथाकार कृष्णकान्तक पोथी **मृगतृष्णा**मे दुइ शब्द शीर्षकसँ भूमिका लिखि देने छथिन। हिनक ई भूमिका अत्यन्त सारगर्भित अछि आ लेखक ओ ओकर कथासभक संक्षिप्त परिचयक संगहि मैथिलीमे समीक्षाक प्रति मौलिक चिन्तनक सिद्धान्त प्रदान करैत अछि। हिनक दोसर भूमिका **दू शब्द** शीर्षकसँ डा. वीणा ठाकुरकृत पोथी **मैथिली रामकाव्यक परम्परा**मे भेटल अछि। भूमिका छोट मुदा रामकाव्यक प्रति सतर्क चिन्तनसँ युक्त अछि। वरिष्ठ लेखक डा. भीमनाथ झाक **मन आङनमे ठाढ़** पोथीमे मायाबाबूक शुभाशंसा छपल अछि जाहिमे औपचारिकताक निर्वाहटा लेखकक ध्येय बुझना जाइत छनि।

एतावता कहल जा सकैछ जे आलोचना-अनुसन्धान, साहित्यमे नव मूल्यक स्थापना आ तत्त्वबोधादिक दृष्टिजे मायाबाबूक भाषा-निबन्ध सभ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि आ समवेत रूपमे हिनका मैथिलीक श्रेष्ठ नैबन्धिक सावित करैत छनि। हिनक निबन्ध साहित्य संकलनीय-मननीय आ विवेचनीय अछि जकर समग्रतामे ग्रन्थाकार प्रकाशन अत्यन्त उपयोगी होयत। तखने हिनक निबन्ध सभक वास्तविक मूल्यांकन कयल जा सकत।

●●●

विदितजीक 'ग्राम-गणराज्य'मे समाज-दर्शन

ग्राम-गणराज्य डा. विद्यानाथ झा 'विदित'क पन्द्रहम उपन्यास थिकनि। एकर प्रकाशन जनवरी, 2013मे भेल छल। रागानुरागपर आधारित हिनक पहिल उपन्यास **ओ** प्रसिद्ध साप्ताहिक **मिथिला मिहिर**मे 1968 ई.मे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित भेल छल। तकर पश्चात् एकटा दीर्घ कालावधि धरि हिनक उपन्यासक प्रकाशन स्थगित रहल। मुदा वर्त्तमान शताब्दीक पहिले दशकसँ ई जखन एहि विधा दिस पुनराभिमुख भेलाह तँ अल्पावधियेमे दर्जनाधिक उपन्यासक प्रकाशन कराय मैथिलीक एहि विधाकेँ सम्पुष्ट करबामे मार्गनिर्देशक सिद्ध भेलाह। **सा ते भवतु सुप्रीता** हनक बाल उपन्यास थिकनि। तदतिरिक्त **मानव कल्प**, **महोदय मन्वन्तर**, **बहुरिया**, **प्रारब्ध**, **विप्लवी बेसरा**, **कोसिलिया**, **करपुरिया**, **अनामिकाक चिट्ठी**, **मात्र तीन घंटाक समय**, **विधिकरी**, **परिक्रमा**, **ककरो कहबै नहि** आदि उपन्यासक लेखन द्वारा जखन ई एहि क्षेत्रमे निरन्तरताक संग धाप पर धाप दैत गेलाह, तँ संख्या बलेटा नहि अपितु विषय-वैविध्य एवं प्रयोगात्मकताक दृष्टिजे आधुनिक मैथिली उपन्यासक सम्राटे सिद्ध भऽ गेलाह। **ग्राम-गणराज्य**क बादो हुनक **खण्ड-खण्ड श्रीखण्ड** आ **संवेदनाक टेमी** शीर्षक उपन्यास प्रकाशित भेलनि। वरेण्य विद्वान, कवि ओ समालोचकक रूपमे आधुनिक मैथिलीक एकटा शीर्ष-स्तम्भक रूपमे तँ ई विदित छथिहे।

ग्राम-गणराज्य उपन्यासक केन्द्र बिन्दु अछि मिथिलाक ग्रामीण समाजक यथार्थपरक चित्रण। एहि दृष्टिजे एकरा यथार्थवादी उपन्यासक कोटिमे राखल जा सकैत अछि। वस्तुतः यथार्थवादी अवधारणाक अनुसार यथार्थ ओ थिक जकर अनुभव मानव अपन बोधेन्द्रिय द्वारा कऽ सकैत

अछि। मानव जीवन ओ तकर परितः पसरल संसार, लोकक बीच नाना प्रकारक सामाजिक सम्बन्ध, मानवक अनुभूति, संघर्ष आ अन्तर्द्वंद्व अर्थात् ओ सभ किछु जकरा मनुष्य अपन जीवनमे अपन बोधेन्द्रिय, मन आ बुद्धि द्वारा अनुभव करैत अछि, भोगैत अछि, यथार्थक सीमामे अबैत अछि। वस्तुतः यथार्थवादी उपन्यासकार पात्रक चरित्रकेँ पाठकक समक्ष ओकरा यथावत् अर्थात् नग्न रूपमे राखि दैत छथि। एहन उपन्यासकारकेँ एहि तथ्यसँ सेहो कोनो सम्बन्ध नहि रहैत छनि जे पात्रक सच्चरित्रता किंवा दुश्चरित्रताक मानव जीवनपर की प्रभाव पड़ैत छैक। ओ मानवक समस्त दुर्बलता, पारस्परिक विषमता ओ क्रूरताकेँ नग्न रूपमे विवृत करैत छथि जकरा पढ़लासँ हमरा लोकनिकेँ मानव चरित्रपर पसरल विश्वासक आच्छाद नष्ट भऽ जाइत अछि आ संसारक एकटा घृणित स्वरूप सेहो हमरा लोकनिक समक्ष अबैत अछि जाहिसँ हमरा लोकनिकेँ अपन चारू कात अधलाहे-अधलाह बुझना जाइत अछि। मुदा एहन साहित्य हमरा लोकनिक आँखिकेँ सेहो खोलि दैत अछि। एहन साहित्य नकारात्मक, विकृतिकारक होइत छैक। परन्तु साहित्यमे समाजक दर्पण बनबाक योग्यता हएबाक कारणेँ ओहिमे समाज अपन विकृत चित्र सेहो देखि सकैत अछि। ओना विशुद्ध विकृतिक महिमामंडनक कारणेँ एहन साहित्यकेँ लोकमंगलकारी नहि कहल जा सकैत अछि।

मुदा दोसर दिस एकर ठीक विपरीत आदर्शवादी अवधारणा अछि। एहि अवधारणामे कृत्रिमता ओ कल्पनाक आधारपर रचनाकार हमरा लोकनिकेँ एहन चरित्र सभसँ परिचित करबैत छथि जे निर्मल होइत अछि; स्वार्थ, वासना तथा विभिन्न विकारसँ रहित होइत अछि। एहि प्रकारक चरित्रक अवगाहनसँ हमरा लोकनिक मन सेहो निर्मल होइत अछि आ हमरा लोकनि एक गोट मनोरम उद्यानमे भ्रमण करबाक फलभागी होइत छी। एकटा सम्पन्न मानव बनबाक इच्छाकेँ एहन साहित्य उद्दीप्त करैत अछि जे लोकमंगलकारी होइत अछि। एहि कोटिक साहित्यक तुलना दीपसँ कयल जा सकैछ जे समाजमे परसल अज्ञानरूपी अन्धकारकेँ नष्ट करबामे सफल होइत अछि। ई मानवक बौद्धिक, आध्यात्मिक ओ नैतिक उन्नयनक पथ प्रशस्त करैत रहबाक हेतु त्याग, बलिदान, संयम आदि भावनाकेँ प्रश्रय दैत अछि।

ग्राम-गणराज्यक अधिकांश स्थल यथार्थवादी होइतहुँ अनेक प्रसंग कल्पना प्रसूत मनोरम उद्यानक सृजन करबामे सफल अछि, खास कऽ जखन उपन्यासकार मिथिलाक ऐतिहासिक पक्षक उद्घाटनमे दत्तचित्त होइत छथि तथा युगक धाहसँ प्रभावित मिथिलाक शुभ्र पक्षक उद्घाटनमे तल्लीन होइत छथि। तेँ हिनक ई उपन्यास सर्वथा यथार्थवादी नहि रहि कऽ एकटा आदर्शोन्मुख यथार्थवादी उपन्यास बनि गेल अछि, ई कहब कोनो अत्युक्ति नहि।

उपन्यासकार यथार्थवादी अवधारणासँ कतेक सम्पृक्त छथि से उपन्यासक आरम्भसँ पूर्व हिनक कथ्य **इदं न मम**मे सेहो स्फुट भेल अछि। उपन्यासकार मिथिलाक लोकजीवनमे नगरीय प्रभावजन्य विकृतिक वर्णन करैत कहैत छथि जे 'शहरक जीह ततेक नमरि गेल अछि जे ओ नहूँ-नहूँ गामक शुद्धताकेँ सेहो बुझू किस्त दर किस्त चाटि रहल अछि। शहरक हवा-पानिसँ प्रभावित भऽ आब तँ गामोमे ओहने बसात बहय लागल अछि। वैह छल-प्रपंच, वैह सेहन्ता, वैह ऋण-पैंच, वैह मारि-काट, वैह पेंच-पाँच, वैह चाँकी-चहट, वैह घुरछी-फिरछी, वैह स्वार्थ आ वैह नग्न निर्लज्जता। प्रश्न ई अछि जे यदि भारतमाता ग्रामवासिनी छथि तँ हुनकर चिन्ता के करतनि? सभटा संविधान, विधान, प्रावधान रहितहुँ सभ गाम अपने मनमौजी वा मर्जीसँ चलैत अछि! ग्राम्य व्यवस्थाकेँ अनुशासित रखबाक जे प्राचीन परम्परागत पद्धति रहय ताहि बन्धनसँ समस्त ग्रामीण आइ स्वतंत्र भऽ गेल अछि। दैशिक स्वतंत्रताक आमिष-निरामिष स्वादसँ ग्रामीणगणक मोन आ मस्तिष्कक स्वाद तेना ने प्रभावित आ विकृत भऽ चुकल अछि जे प्रत्येक गामे आइ 'जहिना चलै छी तहिना चलब' वला रस्ता अपनओने जा रहल अछि। पहिलुका जमानामे जहिया एक टके चाउर भेटैत छल, एक टाकामे सोलह सेर झबही लोटासँ नापि कऽ दूध भेटैत छल, मास्टरो सभक दरमाहा एक टाका दू आनासँ शुरू होइत छलनि, अपन हर-बड़द नहिञो रहैत लोक अपन हित-मित्रक सहायतासँ अपनो खेतमे चास-समार-कदबा कऽ लैत छल, तहिया ग्राम-गणराज्यमे जे अपनत्व छल तकरा स्वतंत्रताक बादक 'सपनत्व' खतम कऽ देलक। ततबे नहि, तकरा बदलामे ग्रामीण सौहार्द्द आ परोपकारक गाछहुमे छल-प्रपंच आ स्वार्थक फल-फूल लुधुकि गेल।' (पृ.-2)

मुदा एहि प्रकारक यथार्थपरक विकृतिक वर्णन कऽ उपन्यासकार निराशावादक प्रचारक नहि छथि अपितु ग्राम-गणराज्यक विकृत तन्तु सभकेँ जगजियार कऽ क्रान्तिक माध्यमे ओकरा सभक निराकरणक बाट दिस सेहो इंगित करैत छथि। 'उत्कर्ष' आ 'संभावना'क संकल्पमे हमरा लोकनिकेँ ओही क्रान्तिक ज्वालाक दर्शन होइत अछि जे कल्पित होइतहुँ आदर्शवादी अवधारणासँ सम्पृक्त अछि आ एहन ठाम उपन्यासकार एकटा मार्गद्रष्टाक रूपमे प्रकट भऽ आदर्श ग्राम-गणराज्यक स्थापनाक प्रति प्रतिबद्ध देखि पड़ैत छथि। उत्कर्ष आ संभावना मिथिलाक पारम्परिक विवाह-पद्धतिक अवहेलना करैत छथि। प्रचलित विवाह पद्धतिमे कन्या-वरक गुण आ रागानुरागक कोनो महत्ता नहि छैक मुदा जातिक प्रधानता छैक जकर कारणे दाम्पत्य जीवनमे विभिन्न प्रकारक विघटनक पर्याप्त सम्भावना रहैत छैक। दोसर दिस ई पद्धति दहेज ओ आडम्बरकेँ सेहो प्रश्रय देने रहल अछि जे समाजक हेतु विघटनकारी रहलैक अछि। दुनू एहि पद्धतिक विरोध कऽ प्रेमविवाह कऽ लैत छथि। संभावना एकटा प्रतिष्ठित कालेजक अर्थशास्त्र प्रतिष्ठाक छात्रा थिकीह आ उत्कर्ष स्नातकोत्तर मैथिलीक अन्तिम वर्षक छात्र। ई लोकनि जाति, सम्पत्ति आ अहंकारक सभटा अवरोधकेँ समाप्त कऽ अपन रुचिक वैवाहिक जीवन दिस उन्मुख होइत छथि। संभावना 'गामक भूखक समस्याक समाधानमे महिलालोकनिक योगदान' तथा उत्कर्ष 'मिथिला आ मैथिलीक दुर्दशाक कारण एवं ओकर निदान: एक समीक्षा' विषयपर शोध कऽ एक दिस जँ लोकजीवनक आर्थिक समस्याक समाधानक मार्ग तकबाक प्रयास करैत छथि तँ दोसर दिस अपन प्रदेश ओ भाषाक समुन्नतिक मार्ग प्रशस्त करबाक हेतु अनुसंधान करबाक प्रयास करैत छथि। उपेक्षाक दंश सहितो ई लोकनि जाहि उत्साहक संग मिथिलाक ग्राम-गणराज्यक गरिमाक पक्षमे क्रान्तिकारी परिवर्त्तनक आकांक्षी छथि, से उपन्यासकारक आदर्शोन्मुखी प्रवृत्तिक दृष्टान्त थिक। उत्कर्ष कहैत छथि जे 'हमर उत्साह कम नहि भेल अछि। कोनो प्रकारक चुनौतीसँ जुझबाक संकल्पसँ जलजल करैत हमरा लोकनिक वर्त्तमान पीढ़ी आब किनको अपेक्षा वा उपेक्षासँ कनिञो विचलित नहि होयत, नहि भऽ सकैछ। से यदि रहितय तँ हम सभ आइ एना विआहे नहि करितहुँ, नहि कऽ सकितहुँ।' (पृ.-61)

आगू ओ मिथिलाक ग्राम-गणराज्यक गरिमाक स्थापनाक हेतु पराक्रमक प्रधानताक उद्घोषणा सेहो करैत कहैत छथि, 'हमरा दुनू गोटेक विचारसँ अपना भूमिक गरिमाकेँ तकबाक हेतु सभसँ पहिने अपनहि सम्बन्धमे सोचय पड़त, अपनहिँकेँ ताकय पड़त। से नहि कयने तँ संसारक चकाचौंध भरल मेलामे हम सब अपनहिँ कतहु हेरा जायब। हमरा लोकनि नास्तिक नहि छी। भगवानोपर भरोसा अछि तँ कखनो-कखनो भगवानोसँ ई पुछबाक मोन होइत अछि जे मिथिलामे गरीबी, अन्धविश्वास, वैमनस्य, ईर्ष्या, अन्याय, पक्षपात तथा बेकारीक एहन विकराल समस्या किएक अछि? जखन की अहाँ एहि सभटाकेँ मात्र अपने पराक्रमसँ हटा सकैत छी, मेटा सकैत छी।' (पृ.-61)

ग्राम-गणराज्य उपन्यास सतरह खण्डमे विभाजित अछि। प्रत्येक खण्डकेँ उल्लास कहल गेलैक अछि। एकर प्रथम तीन उल्लास उपन्यासक पूर्वपीठिका वा प्रस्तावना थिक। प्रस्तावना नरकक जीव लोकनिक यमराजसँ एहि माँगक संग शुरू होइत अछि जे हुनकालोकनिकेँ मर्त्यलोकेक नोकरी जकाँ नरकमे सेहो किछु दिनक हेतु अवकाशक प्रावधान कयल जाइनि। अन्ततः इन्द्रक सभामे पर्याप्त घमर्थनक बाद स्वर्ग ओ नरकवासी लोकनिकेँ लॉटरीक आधारपर बेरा-बेरी मर्त्यलोकसँ घूमि अयबाक स्वीकृति किछु शर्तक संग देल जाइत छनि। एहि अवधिमे ई लोकनि अपन पूर्वक जन्मस्थानमे नहि जा सकैत छलाह तथा मर्त्यलोकमे परकाया प्रवेशहिक द्वारा ओहि ठामक अनुभूति ग्रहण कऽ सकैत छलाह। एहि तरहेँ जीव, आत्मा, यमराज-धर्मराज, इन्द्र-चित्रगुप्त, स्वर्ग-नरक आदि मिथकीय विषय-वस्तुक आधारपर उपन्यासक प्रस्तावनाक सूत्रपात भेल अछि। उपन्यासकार ओहि सोलह गोट जीवात्माक द्वारा अनुभूत सत्यकेँ उपन्यासक कथावस्तुक रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि जे सभ अपन अवकाश बितयबाक हेतु मिथिला अयबाक हेतु चयनित भेल छलाह।

उपन्यासकारक प्रस्तावनाक ई विधि अत्यन्त रोचक आ मनोरम अछि। अगिला चारिमसँ सोलहम उल्लास धरिमे विभिन्न जीवात्माक द्वारा परिभ्रमणक क्रममे अनुभूत कोनो एक दिनुक घटनाक रेखाचित्र अछि आ ई प्रत्येक रेखाचित्र उपन्यासक वस्तु-विन्यासकेँ आगू बढ़बैत चलैत अछि। अन्तिम सत्रहम उल्लासमे जीवात्मालोकनिक द्वारा मिथिलाक ओकर

वर्तमान विकृत पक्ष सभक निराकरणसँ सम्बद्ध व्याख्या आ परामर्श अछि।

प्रस्तावना अंशमे मिथिलाक अधोगतिक वर्णन अत्यन्त व्यंग्यात्मक ढंगसँ कयल गेल अछि। एहिमे निविष्ट कथासूत्रक अनुसार पहिल खेपमे मात्र सोलह गोट जीवात्माकेँ मिथिला जा कऽ परिभ्रमण करबाक स्वीकृति भेटल छनि जाहिमे पूर्वजन्मक हिसाबेँ केओ जम्मू-कश्मीरक छथि तँ क्यो पंजाब, गुजरात, महाराष्ट्र, कर्णाटक, तमिलनाडु, केरल, नागालैंड, आसाम, झारखण्ड, पश्चिम बंगाल, हरियाणा, अरुणाञ्चल, सिक्किम ओ उत्तरांचलक। उपन्यासकार मिथिलामे जाहि जीवात्मा सभकेँ अयबाक कथा कहलनि अछि से सब जेँ लऽ कऽ पूर्व जन्ममे भारतक विभिन्न प्रान्तक वासी छलाह, हुनका लोकनिकेँ मिथिला अयलापर अपन प्रदेशक संग मिथिलाक दशाक तुलना करबाक स्वाभाविक अवसर भेटलनि। हिनका सभकेँ लऽ कऽ जखने विमान मिथिला अबैत अछि तँ सभ केओ अपना ओहि ठामक उत्कृष्ट वस्तुक वर्णन करैत ओहने ठाम उतरबाक आकांक्षा करैत छथि जतऽ ओहने उत्कृष्ट वस्तु मिथिलोमे उपलब्ध हो। जेना कश्मीरक जीवात्मा इच्छा छनि जे ओ तेहन ठाम उतरथि जतऽ की तँ युद्धक मैदान होइक वा डल झील सन नौका विहार करबाक कोनो झील, आन्ध्रप्रदेशक जीवात्मा एहन ठाम उतरबाक आकांक्षा व्यक्त करैत छथि जतऽ तिरुपति सन कोनो प्रसिद्ध देवस्थान होइक, अरुणाञ्चलक जीवात्मा एहन ठाम उतरऽ चाहैत छथि जतऽ सामूहिक लोकनृत्य आयोजन होइत होइक, आसामक जीवात्मा एहन ठाम उतरऽ चाहैत छथि जतऽ रेशम आ धातुक उद्योग लागल हो आ बाँसक कलाकार लोकनि बसल होथि, गुजरातक जीवात्मा चाहैत छथि जे हुनका तेहन ठाम उतारल जाइनि जतऽ बाजरा, जनेर, मकइ, धान, गहूमक बेस उन्नत खेती होइत होइक, हरियाणाक जीवात्मा चाहैत छथि जे हुनका तेहन ठाम उतारल जाइनि जतऽ रेणुका सदृश झील होइ आ दालि, आलू, सोयाबीन आदिक उन्नत खेती होइत हो, झारखण्डक जीवात्मा ओतऽ उतरऽ चाहैत छथि जतऽ बोकारो, धनबाद की राँची सन औद्योगिक नगर होइक, कर्णाटकक जीवात्मा एहन ठाम उतरऽ चाहैत छथि जतऽ बन्दीपुर वाइल्ड लाइफ सैंक्चुअरी सन कोनो जैविक पार्क होइक, केरलक जीवात्मा एहन ठाम उतरऽ चाहैत छथि जतऽ सर्वाधिक साक्षरता होइक, महाराष्ट्रक जीवात्मा एहन ठाम उतरऽ चाहैत छथि जतऽ अजन्ता, सतमाला, महाबलेश्वर सन

पहाड़कशृंखला होइक, पंजाबक जीवात्मा एहन ठाम उतरऽ चाहैत छथि जतऽ भांगड़ा, जिद्दा किंवा ठूमर नृत्यक आयोजन होइत होइक। मुदा ओ जीवात्मा सभ तखन स्तब्ध रहि गेलाह जखन ई जनलनि जे मिथिलामे कतहु एहन स्थल नहि छैक जे हुनका सभक मनोनुकूल होइनि। अवश्ये उपन्यासकार एहि प्रकरणक माध्यमे ई जनबऽ चाहलनि अछि जे मिथिला भारतक सभसँ पिछड़ल क्षेत्र थिक जतऽ ने उद्योग-धंधा छैक ने विकसित खेती, ने प्रसिद्ध पर्यटक स्थल छैक ने तेहन कोनो सांस्कृतिक कला जे अखिल भारतीय स्तरपर सुप्रसिद्ध हो। एहि तरहेँ अखिल भारतीय स्तरपर मिथिलाक यथार्थकेँ तीक्ष्ण व्यंजनाक माध्यमे देखाओल गेल अछि। बेंगलूरक एकटा जीवात्मा जखन विमानक चालक सँ पुछैत छथिन जे मिथिलामे बेंगलूरू सन कोनो विशाल हवाइ अड्डा छैक की नहि तँ ई सूनि विमानचालक अत्यन्त गंभीर भऽ जाइत छैक आ कहैत छैक जे कतऽ मिथिला, कतऽ बेंगलूरू। एक दिस बेंगलूरू जँ अत्याधुनिक संचार-तकनीकक क्षेत्र आ उद्योग-व्यवसायमे बेजोड़ अछि तँ दोसर दिस मिथिला सीताक जन्मस्थली, राजा जनकक राजधानी, भव्य मन्दिरकशृंखलासँ युक्त एकटा विशुद्ध आध्यात्मिक केन्द्र अछि। एतहु उपन्यासकारक ई दर्द प्रकट भऽ उठलनि अछि जे मिथिलाक लग इतिहास भने कतबो समुज्ज्वल होइक मुदा एकर वर्तमान गर्हित स्थितिमे जा जूमल छैक।

आगूक उल्लास सभमे सोलहो जीवात्माक मिथिलाक परिभ्रमणक क्रममे अनुभूत यथार्थक विस्तृत विवरण देल गेल अछि। ई विवरण सभ कथ्यात्मक अछि। एहि कथा सभक आधारपर मिथिलाक लोकजीवनक वर्तमान स्थितिमे पसरल दैन्य किंवा तकर परिहारक हेतु प्रयत्न सभ आलोकित भेल अछि जे मिथिला-मैथिल-मैथिलीक विकास-प्रकाशक हेतु एक गोट सुचिन्तनशील लेखकीय परिकल्पना थिक। एहि कथा सभमे मिथिलाक रूढ़ व्यवस्थाक झाँकी सभ सेहो भेटैत अछि आ ओहिमे युगानुरूप होइत परिवर्तनक उदाहरण सेहो।

चतुर्थ उल्लासमे उपन्यासकार मिथिलाक ग्रामीण क्षेत्रक महिला समाजक अशिक्षा ओ तद्जन्य आर्थिक परतन्त्रताक दशाकेँ आन्ध्रप्रदेशक जीवात्मा पाटिलजीक अनुभवक आधारपर विवरणक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। एहिमे वर्णित कथाक आधारपर उपन्यासकार मिथिलाक नारी-समाजक

दैन्यकेँ प्रस्तुत कऽ एहि समाजकेँ समाजक मुख्य धारामे अयबाक हेतु सुगबुगाहटिकेँ प्रस्फुटित करैत छथि। एहिमे एकटा विधवा महिलाक कथा अछि जे वैधव्यक कटु अनुभवकेँ अन्ततः सुखी जीवनक सम्बल बनयबामे सफल होइत छथि तथा ग्रामीण महिला लोकनिकेँ सेहो सहिष्णुता ओ आत्मनिर्भरताक पाठ पढ़यबामे योगदान दैत छथि।

एहि महिलाक नाम छनि रुसनी काकी। संयोगसँ अल्पे वयसमे हिनक पतिक आकस्मिक मृत्यु भऽ जाइत छनि। एहि समयमे हिनका एकटा पुत्री रहैत छथिन सावित्री। इहो सावित्री चारि सालक भऽ कऽ कालकवलित भऽ जाइत छथिन। एहन विधवाकेँ जकरा बाल-बच्चा नहि रहैत छैक किंवा बालो-बच्चा मरि जाइत छैक, सम्पूर्ण नारी समाज डाइनिक दृष्टिसँ आ शंकाक नजरिसँ देखऽ लगैत छैक। रुसनी काकीक संग सेहो सैह होइत छनि। उपन्यासकार कहैत छथि जे तकरा बादक स्थिति तँ तेहन भऽ गेल जे हुनक प्रत्येक गतिविधिपर संदेहक रंग चढ़ऽ लागल। ओ अपन दीयरेसँ गप्प करैत छथि तँ किएक करैत छथि? कोनो देयादिनीएसँ गप्प करैत छथि, तँ की गप्प करैत छथि। पूस मासक जाड़मे ओ यदि दिनुका महग रौदमे अपन सुजनीए-सीड़क कने सुखबैत छथि, तँ सेहो कियैक करैत छथि? अपन घरो-दुआरि बहारैत छथि, की निपैत छथि तँ सेहो कियैक करैत छथि? ककरो दिस यदि तकबे करैत छथि तँ कियैक तकैत छथि? नैहरेसँ यदि क्यो अबैत छलनि तँ से कियैक अयलनि? (पृ.-33)।'

ततबे नहि हिनक सिन्नुर-काजर जरैत छनि तँ तकरा संगे पेटो पर आफदि पड़ऽ लगैत छनि। परिवारमे हुनक अवहेलना होमऽ लगैत छनि। सभ गोटेकेँ खयला-पीलाक बाद जे बचैत छैक सैह हुनका क्षुधा तृप्तिक हेतु देल जाइत छनि, जे स्वभावतः बेसी काल अपर्याप्त रहैत होयतनि। परिणामतः हुनका भूखे-प्यासे आँट होयबाक स्थिति बनि जाइत छनि आ हद तँ तखन भऽ जाइत छैक जखन हुनका भात तँ दालि नहि, दालि तँ तरकारी नहि परसल जाय लगैत छनि। पछाति अनेको साँझ धरि जखन हुनका भातक संग केवल अँचारटा साँठल जाइत छनि तँ ओ रुसि रहैत छथि आ अनशनपर चलि जाइत छथि। तथापि परिवारक लोक सभ काकु करैत छथिन जे एतेक-एतेक दिन धरि केओ भूखल

रहि सकैछ, तेँ अवश्ये किछु चोरा कऽ खा लैत होयतीह। ततबे नहि हुनक शील आ चरित्रपर सेहो शंका कयल जाइत छनि। जखन ओ बेस बीमार पड़ि जाइत छथि तखन हुनक उपचार तँ करा देल जाइत छनि मुदा परिवारसँ भिन्न कऽ देल जाइत छनि। आब हुनका अपना लेल भानस अलग बनयबाक अधिकार तँ भेटि जाइत छनि मुदा वस्तुक हेतु परिवारक मुँहतक्की तँ रहिये जाइत छनि।

मुदा ई काकी आब अपन रक्षाक हेतु सन्नद्ध भऽ जाइत छथि आ अलग चूल्हि पजारब शुरू कऽ दैत छथि। तकर बाद हुनका अनुभव होइत छनि जे रुसबाक परिवेश खाली हुनकेटा बर्दाश्त करऽ पड़लनि अछि से नहि, गाममे घरे-घरे अवहेलनाप्राप्त किंवा लड़क्का स्वभावक कारणे नारी सभ बेसी काल रूसि-फूलि रहैत छथि आ हुनका घरमे आबि कऽ तावत् धरि अभ्यागत बनल रहऽ चाहैत छथि यावत् हुनका सभक क्रोध की तँ शान्त नहि भऽ जाइत छनि किंवा हुनक परिवारक केओ हुनका मनबऽ नहि अबैत छथिन। एहना स्थितिमे ओ काकी अन्ततः रुसबा-फुलबाक प्रक्रियाकेँ अपन व्यवसाय बना लैत छथि आ जे केओ हुनक अभ्यागत बनैत छथि, हुनका सभकेँ चूल्हि, बरतन-बासन आ जारनिक संगहि आनो सामग्री जुटा देल करैत छथिन आ अपनेसँ बना लेबाक हेतु कहैत छथिन। संसाधन जुटयबाक बदला ओ पाइयो ग्रहण करब शुरू कऽ दैत छथि। रुस्सा-फुल्लीक आधिक्यक कारणेँ हुनक ई व्यवसाय क्रमशः फूलित-फलित होमऽ लगैत छनि आ बड़का-बड़का घरक माय, पितिआइन, पुतोहु सभ सेहो हुनक शरणस्थलीमे आबि अपना क्रोधकेँ शान्त करऽ लगैत छथि। क्रमशः हुनका द्वारा स्थापित ई व्यावसायिक संगठन लोकरुचि ओ लोकसाहाय्यक प्रभावेँ जमीनो अरजि लैत अछि आ एकटा विशिष्ट महिला संगठन बनि जाइत अछि जतऽ सभ प्रकारक रूसल महिलाकेँ शरण भेटऽ लगैत छनि। एहि तरहेँ गाम-घरमे क्रोधावेश जन्य आत्महत्याक स्थिति समाप्त भऽ जाइत अछि आ ओहि विधवाक घर एकटा सशुल्क धर्मशालाक रूप धारण कऽ लैत अछि जकर एकमात्र उद्देश्य रूसल-भूलल लोककेँ परिवारसँ बहरयलाक बाद पुनः ससम्मान घर घुरयबाक व्यवस्था रहैत छैक।

एहि उल्लासमे वर्णित कथाक माध्यमे उपन्यासकार सभसँ पहिने

तँ विधवाक प्रति सामाजिक लोकनिक उपेक्षाक प्रवृत्तिक आलोचना करऽ चाहलनि अछि, दोसर दिस अशिक्षित महिला समाजकेँ क्रान्तिपूर्वक शिक्षण ओ व्यवसायसँ जुड़ि कऽ आत्मनिर्भरताक संदेश देलनि अछि जाहिसँ ने केओ हुनकालोकनिक मानसिक शोषण कऽ सकय आ ने ओ सभ अपन अज्ञानतावश आपसमे ईर्ष्या-द्वेषक वशीभूत भऽ जान हतबाक वा एहने गर्हित काज करबाक हेतु प्रेरित होथि। संगहि जाहि बात सभपर ओ लोकनि लगले रुस्सा-फुल्ली कऽ लेल करैत छथि, तकरा उदार दृष्टिसँ सोचथि, आत्ममंथन करथि तँ अनेरे बुझना जयतनि जे दोसराक कोन बोल वा कृत्य रुसबाक कारण नहिञो भऽ सकैछ। उपन्यासकार तिलेसरक भाउजक माध्यमे कहबैत छथि जे 'हम रुसलहुँ की? बुझै जाथु जे ई रूसब हमर आँखिए खोलि देलक। एगारह बर्खसँ हम सासुर बसै छी। आइ तक ई नहि बुझल छल जे कोन चीजक कतेक दाम छैक? कमेनहार जे आनिकेँ देलनि तकरा कूटब-बनायब आ रान्हबटा अपन काज। मुदा रुसनी काकीक कृपासँ आब हमरा सभ वस्तुक भाव बुझल भऽ गेल। आ ताहीसँ कमेनहारक फिरीसानी सेहो मोनमे मेघ जकाँ उमरि गेल। धनबाद दी कमेनहार सभकेँ जे ऐ महगीयोक जमानामे घरक बेगर्ता कहुना पुरबइ जाइ छथि। (पृ.-42)।'

एहि तरहेँ एहि उल्लासक कथाक माध्यमे उपन्यासकार मिथिलाक ग्रामवासिनी महिला सभक अशिक्षाजन्य व्यावहारिक त्रुटि ओ तद्जन्य विफलता, स्वरोजगारक अभावमे आर्थिक स्वतंत्रताक अभावजन्य हीनमन्यता ओ तकरा सभसँ त्राण पयबाक हेतु कर्मपथ दिश ईंगित करौलनि अछि। एहि उल्लासमे इहो देखाओल गेल अछि जे अशिक्षिता रहितो मिथिलाक कतोक धूर्त्त महिला उदार प्रकृतिक महिलाक संग ठकैतीक व्यवहार करबामे निष्णात रहैत छथि जेना कि मौसी अमैठीवालीक पुतहुकेँ एक बेर तँ सय टाका पैंच लऽ नहिञे घुरबैत छथिन आ फेर पैंच माङि कऽ प्रताड़ित करऽ चाहैत छलथिन।

एही उल्लासमे उपन्यासकार भक्तिक जाहि दुइ प्रकारक चर्चा कयलनि अछि से अछि, निष्काम भक्ति आ सकाम भक्ति। निष्काम भक्त थिकीह एकटा वृद्धा जे प्रतिदिन स्नान करबा काल अपन खोंइछमे राखल फूलकेँ प्रणाम कऽ जलमे प्रवाहित कऽ देबाक नियम बनौने

छथि आ नित्य महादेवक पूजा बिना कोनो कामनाक करैत छथि। दोसर दिस एकटा सकाम जोड़ी सेहो अछि जकर जे अभिलाषा पूर्ण होइत छैक, तकरासँ सम्बद्ध दीप तँ जरबैत अछि मुदा जे कबुला पूर्ण नहि होइत छैक, ताहिसँ सम्बद्ध दीप जरायब आवश्यक नहि बुझैत अछि। की सकाम भक्तिसँ कयल पूजाकेँ भगवानक प्रति प्रदत्त उत्कोच नहि मानल जाय, एहि प्रश्नकेँ उठबैत उपन्यासकार धार्मिक क्षेत्रमे व्याप्त पाखंड ओ स्वार्थपरताकेँ उजागर कयलनि अछि। जेँ लऽ कऽ एहि स्वार्थपरतासँ समाज आबद्ध भऽ गेल अछि तेँ सामाजिक जीवन अधोगतिकेँ प्राप्त भऽ रहल अछि, से उपन्यासकारक संकेत छनि।

एहि उल्लासमे उपन्यासकार एकटा आर तथ्यकेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि। ई तथ्य थिक आधुनिक मैथिल कन्याक पाक-कलाक प्रति अरुचि। अमैठीवालीक पुतोहु बी.एस-सी. छथिन मुदा ओ माछकेँ कऽर लगयबाक क्रममे नहि केवल तेल जियान कऽ दैत छथि, बरण्डाकेँ घिना दैत छथि अपितु अपनो मुँह झरकयबाक स्थितिमे आबि जाइत छथि। एतावता ई उल्लास मिथिलाक नारी-वर्गक यथातथ्यात्मक वर्णनकेँ समर्पित बुझना जाइत अछि जे खास कऽ मैथिल नारी समाजक चारू कात पसरल दुर्बलता ओ क्रूरताकेँ उजागर करैत अछि।

पंचम उल्लासमे उपन्यासकार मिथिलाक वैवाहिक प्रथामे परिव्याप्त जाति व्यवस्थापर कशाघात करैत अन्तर्जातीय विवाहक समर्थन करैत देखि पड़ैत छथि। रूप आ गुण उपर्युपरि रहलाक बादो मिथिलामे विवाह एहने युवा-युवतीक बीच सामान्य अछि जे समान जातिक हो। मुदा वर्तमानमे एहि विचारधारामे जे क्रान्तिकारी परिवर्त्तन भेल अछि, तकरे यथार्थवादी स्वरूपकेँ उपन्यासकार तमिलनाडुक जीवात्मा राव साहेबक अनुभवक आधारपर प्रस्तुत कयलनि अछि। एहिमे दूटा स्कुलिया छात्र-छात्राक पारस्परिक विवाहक मानदण्ड जातिकेँ नहि अपितु पारस्परिक स्नेह आ समान नेतृत्वक्षमताकेँ बनाओल गेल अछि। मनोहर आ बिजली नामक छात्र-छात्रा एकटा स्कूलमे पढ़ैत छथि। दुनू फुटबॉलक नीक खेलाड़ी छथि। अपन-अपन अभ्यासक बलेँ मनोहरमे पुरुष टीमक नेतृत्वक क्षमता छैक तँ बिजलीमे छात्रा वर्गक टीमक नेतृत्व-क्षमता। हिनका सभक स्कूलमे फुटबॉल टूर्नामेंट होइत छैक जाहिमे प्रमण्डल स्तरपर सत्तर गोट टीम

भाग लैत छैक। स्कूलक गेम टीचर मल्लिकजी एकटा उत्साही, इमानदार ओ निष्पक्ष लोक छथि जे योग्यताक आधारपर मनोहर ओ बिजलीकेँ क्रमशः छात्र ओ छात्रा वर्गक टीमक हेतु कैप्टन चुनैत छथि। एहि क्रममे ओ नियम-कानून बुझयबाक हेतु मनोहरकेँ एकटा फुटबॉलसँ सम्बन्धित अंग्रेजी किताब दैत छथिन जे ओ पहिने स्वयं पढ़ि पश्चात् बिजलीकेँ दऽ दितैक। मनोहर पोथी लेबाक हेतु बिजलीकेँ अपन होस्टलमे बजा लैत छैक। एही क्रममे दुनूमे पूर्वराग पनुघैत छैक। बादमे बिजली तँ सेमीफाइनल जीति लैत अछि मुदा मनोहरक खेल चलिये रहल छलैक। ओ फाइनलमे पहुँचबाक लेल आश्वस्त नहि भेल छल। जखन दुनूक भेट होइत छैक तँ मनोहर बिजलीकेँ निरुत्साहित करबाक हेतु मजाकमे कहि दैत छैक जे ओकर सेमीफाइनलमे जीतक कारण ओकर चातुर्य नहि, अपितु स्पर्द्धा कयनिहार टीमक कमजोर होयब छलै। मुदा बिजली निरुत्साहित नहि होइत अछि। फाइनल दिन जखन बिजली अपन टीमक संग मैदानमे निकलैत अछि तँ मनोहर ओकर उत्साहवर्द्धन करबाक हेतु समक्ष अबैत छैक आ अपन बात आपस लैत कहैत छैक जे वस्तुतः ओकरा बिजलीक खेल ततेक पसिन्न पड़ल छलैक जे ओकरा मनमे अयलैक जे ओकरा खेलैत कालक हेतु पहिरल गेल जरसीएमे भरि पाँज उठा कऽ मूँह चुमि लितैक। तखन तँ बिजली किछु जवाब नहि दैत छैक मुदा जखन मनोहर फाइनल खेलयबाक हेतु बहराइत अछि तँ ओकर टीमक उत्साहवर्द्धनक हेतु गेल बिजली ओकरा कहैत छैक जे हम अहाँक बात मानि लेब, मुदा जँ अहाँ जीति जायब तँ हमहूँ चाहब जे अपन फ्रॉक खोलि कऽ अहाँक देहमे चिभुटि जाइ। अन्ततः दुनूक टीम जीति जाइत छैक आ समारोहपूर्वक दुनू टीमक कप्तान क्रमशः मनोहर आ बिजली अपना-अपना टीमक दिससँ शिल्ड प्राप्त करैत अछि। तखने समारोहक ओहि स्टेजपर भरल सभामे मनोहर बिजलीकेँ पाँजमे उठा ओकर मुँह चूमि लैत छैक आ बिजलीयो अपन फ्रॉक उतारि मनोहरक देहमे चिभुटि जाइत छैक। युवा समुदाय तँ एहि दृश्यपर हर्ष व्यक्त करैत अछि मुदा प्रौढ़ सभासद लोकनि स्तब्ध रहि जाइत छथि।

पाँच सालक बाद जखन बिजलीक पिता अपन बेटीक हेतु घटकैती करैत छथि तँ केओ हुनक पुत्रीसँ अपन पुत्रक विवाह एहि

हेतुएँ नहि करबऽ चाहैत छथि जे ओ अपन फ्रॉक खोलि कऽ भरल सभामे एकटा युवकक देहसँ चिभुटि गेल छलि। अन्ततः मनोहर स्वयं बिजलीक पिताकेँ ओकरा संग बिजलीक विवाहक प्रस्ताव दैत छैक आ दुनूक विवाह भऽ जाइत छैक। एहि विवाहकेँ समाजक युवा आ प्रौढ़ दुनू वर्गक समर्थन भेटि जाइत छैक।

स्पष्टतः उपन्यासकार गुण आधारित विवाहक पक्षधर छथि, जाति आधारित नहि आ एहि कथाक माध्यमे मिथिलाक लोकजीवनमे विवाह प्रथाक मानदण्डमे होइत परिवर्तनकेँ सेहो लक्षित करौलनि अछि।

एही उल्लासमे नम्बूदरीजी द्वारा अन्य विवाहक सेहो चर्चा कएल गेल अछि जाहिमे एकटा प्रतिष्ठित कौलेजक अर्थशास्त्रक छात्रा 'संभावना' अपना पसिन्नसँ स्नातकोत्तरक एक गोट मैथिली छात्र 'उत्कर्ष'क संग विवाह-बन्धनमे बन्हाइत छथि। दुनूक ई विवाह सेहो प्रेम आधारित छल, जाति आधारित नहि। एकर औचित्यक सम्बन्धमे उपन्यासकार नम्बूदरीजीक माध्यमे कहबैत छथि जे हमरा लगैत अछि जे आब मिथिलोमे हवाक रूखि बदलल अछि। आइ एहि परिसरमे जे विवाह सम्पन्न भेल, तकरा आदर्श कहल जाय कि बदलैत युगक बसात? से बुझबाक भार हम अहाँ सभपर छोड़ि दैत छी।' (पृ.-58)

नम्बूदरीजीक एहि उक्तिमे वैवाहिक प्रथामे जातीय बन्धनक प्रति उपेक्षा भाव प्रकट भेल अछि। संगहि मिथिलाक वैवाहिक प्रथामे होइत परिवर्तनकेँ लक्षित कयल गेल अछि।

एहि उल्लासक अन्तमे मिथिलाक प्राचीन गरिमाक उल्लेख करैत ई चिन्ता व्यक्त कयल गेल अछि जे ई भूमि आइ संगठनविहीन किएक अछि? उत्कर्षक उक्ति 'जाहि समाजमे संगठनक बल नहि हो ओ अपनो देशक अन्य क्षेत्रक हेतु कदापि स्मरणीय आ वन्दनीय नहि भऽ सकैछ। संगहि सबसँ पैघ दुर्भाग्यक विषय तँ ई थिक जे आइ मैथिलीक नामपर सम्पूर्ण देशमे चलयवला तथाकथित संगठनक कर्त्ता-धर्त्ता लोकनिसँ हुनक अपनो सदस्य सभ अहर्निश संघर्षे ठनने रहैत छथि।' (पृ.-60) मिथिलाक संगठन क्षमताक दुर्दशाक वास्तविकताकेँ अभिव्यक्त करैत अछि।

उपन्यासकार मिथिलाक गरिमाक पुनःस्थापनाक हेतु चिन्तनशील छथि। एकर निदान ओ मिथिलाक व्यक्ति-व्यक्तिमे पराक्रमक संधानकेँ

मानैत छथि। उत्कर्ष कहैत छथि जे 'अपना भूमिक गरिमाकेँ तकबाक हेतु सभसँ पहिने अपनहि सम्बन्धमे सोचय पड़त, अपनहिकेँ ताकय पड़त। से नहि कयने तँ संसारक चकाचौंध भरल मेलामे हम सब अपनहि कतहु हेरा जायब। हमरालोकनि नास्तिक नहि छी। भगवानोपर भरोसा अछि। तँ कखनो-कखनो भगवानोसँ ई पुछबाक मोन होइत अछि जे मिथिलामे गरीबी, अन्धविश्वास, वैमनस्य, ईर्ष्या, अन्याय, पक्षपात तथा बेकारीक एहन विकराल समस्या किएक अछि, जखन कि अहाँ एहि सभटाकेँ अपन पराक्रमसँ मेटा सकैत छी? मुदा हमरा ई डर होइत अछि जे भगवानो हमरा सभसँ कहूँ यैह प्रश्न ने पूछि देथि। (पृ.-61) हिनक उक्तिमे मिथिलाक विकासक हेतु सुविचारित सामूहिक प्रयत्न करबाक दिशानिर्देश भेटैत अछि।

छठम उल्लासमे कर्णाटकक सिंहमूर्ति द्वारा मिथिलाक परिभ्रमणक क्रममे अनुभूत जाहि कथाक वाचन भेल अछि, ताहिमे एहि ठामक व्यवसायकेँ बढ़यबाक युक्तिक निदर्शन भेटैत अछि। एखन विज्ञापनक युग छैक। मिथिलामे सेहो अनेक प्रकारक व्यवसायक संभावना छैक। मुदा कोनो व्यवसाय तखने सफल भऽ सकैत अछि जखन ओकर कर्त्ता ने केवल उद्यमी होमय अपितु ओकरा ग्राहकक आवश्यकताक पहचान होइक आ अपन उत्पादकेँ नीक जकाँ विज्ञापित कऽ सकय। व्यावसायिक कल-बल-छलमे निपुणताक संगहि पूजीक उचित स्थलपर निवेश भेनहि व्यवसायमे उन्नति भऽ सकैत छैक आ बेरोजगारी समाप्त भऽ सकैत छैक।

कथा मिथिलाक एक गोट होटलसँ सम्बद्ध छैक जकर नाम छैक बुड़बक होटल। एहि होटलक मालिक छलाह वैकुण्ठ। ई जखन युवक छलाह तखन आजीवकाक खोजमे कलकत्ता चलि गेलाह। ओहि ठाम ओ ट्यूशन कऽ कऽ काज चलाबथि। एही क्रममे हुनका एकटा मोटर ड्राइभिंग ट्रेनिंग इन्स्टीच्यूटक मालिकसँ परिचय भऽ गेलनि आ हुनके इन्स्टीच्यूटमे ई ट्रेनिंग लऽ कऽ ड्राइवर बनि गेलाह। संयोगसँ एक बेर विख्यात नृत्यांगना मल्लिकाक ड्राइवर जखन छुट्टीपर चल गेलनि तँ ओहि अवधिमे वैकुण्ठ हुनक ड्राइवरी करऽ लगलाह। मल्लिका हिनक ड्राइवरी आ स्वभावक संग इमानदारीपर प्रसन्न भेलीह, मुदा ड्राइवर यूनियनक दवाबमे हिनका ओ स्थायी नोकरी नहि दऽ सकलथिन। विदा

होइत काल मल्लिका कहलथिन जे जँ हमर कोनो सहयोगक काज पड़य तँ हमरासँ सम्पर्क करब आ से कहि ओ अपन विजिटिंग कार्ड हिनका प्रदान कऽ देलथिन। वैकुण्ठ मल्लिकाक नृत्यकालक प्रत्यक्षदर्शी सेहो छलाह। हुनक व्यावसायिक बुद्धि तत्काल काज कयलकनि आ ओ मल्लिकासँ ई वचन लऽ लेलनि जे जँ ओ अपन जिलामे मल्लिकाक कार्यक्रम करौताह तँ मल्लिका उपस्थित भऽ जयतीह।

वैकुण्ठ किछु दिनक बाद अपन गाम अबैत छथि आ मल्लिकाक कार्यक्रमक तिथि स्वयं तय कऽ तकर प्रचार-प्रसार करऽ लगै छथि। मुदा ओहि प्रसिद्ध नृत्यांगनाक अयने लॉ-आर्डरक समस्या भऽ सकैत छलैक तेँ प्रशासन हुनकासँ स्वीकृति-पत्र मङलकनि। मुदा वैकुण्ठ लग तऽ रहनि केवल विजिटिंग कार्ड मात्र, तेँ मिथ्या प्रचारकेँ आधार बनाय हुनका हाजतिमे बन्द कऽ देल गेलनि। एम्हर प्रशासन जखन मल्लिकासँ सम्पर्क कयलक तँ ओ साफ कहि देलथिन जे ओ एहि कार्यक्रमक हेतु कोनो सट्टा नहि बनौने छथि। मुदा वैकुण्ठो हारि मानऽवला नहि रहथि। ओ लऽ दऽ कऽ मल्लिकासँ स्वयं गप्प करबाक जोगाड़ धरौलनि। अपन परिचय देलाक बाद वैकुण्ठ कहलथिन जे ओ एकटा होटल खोलबाक विचार कयने छथि जकर नामकरण हुनकेसँ करयबाक इच्छा छलनि। ओही अवसरपर एकटा कार्यक्रमो होइतैक। मुदा मल्लिका ने हुनका चिह्नलथिन आ ने कोनो आश्वासने देलथिन। खाली 'बुड़बक' कहैत फोन काटि देलथिन। अन्ततः प्रशासन वैकुण्ठकेँ विक्षिप्त जानि छोड़ि देलकनि जकर परिणामस्वरूप युवाक दल हुनका थानापरसँ गाजा-बाजाक संग घुरा अनलकनि। ततःपर वैकुण्ठ मल्लिका द्वारा कथित अन्तिम शब्द 'बुड़बक'हिकेँ अपन होटलक नामकरण हेतु चुनि लेलनि। ओहि बुड़बक होटलक माछ-भात ततेक अपूर्व होइत छल जे ओ दिन दूना राति चौगूना नफा देबऽ लागल। मुदा क्रमशः वैकुण्ठ बूढ़ भेलाह। माछ-भातक अनेक होटल लग-पासमे फुजि गेलैक। हुनक तीनू बेटा सेहो बुड़बक होटलकेँ तीन भाग कऽ क्रमशः ओकर सभक नाम रखलक बुड़बक होटल, महाबुड़बक होटल आ श्रीबुड़बक होटल। अपन होटल सभक आमदनी बढ़यबाक हेतु ई तीनू होटल नेनाकेँ आधा दाम पर आ महिलाकेँ चौथाइ छूटपर भोजन करबऽ लागल जे एकर

सभक विशिष्ट विज्ञापनक काज कयलकैक आ तीनू होटलक व्यवसाय आन होटल सभसँ आगू बढ़िते रहलैक।

एतावता एहि उल्लासमे आधुनिक व्यावसायिक जीवनमे होइत परिवर्तनकेँ लक्षित कयल गेल अछि जे लालाफीताशाहीक प्रक्रियाबद्धतामे धूर्ततापूर्वक काज निकालबामे समर्थ तथा पूजी, श्रम आदिक संगहि विज्ञापनमे उदार निवेशकेक हेतु लाभप्रद रहलैक अछि।

सातम उल्लासमे मिथिलाक लोकजगतपर बाह्य सांस्कृतिक संक्रमणक कारणे होइत परिवर्तन तथा व्यावसायिक जगतक धूर्तताक वर्णन अरुणाञ्चलक तवांग क्षेत्रक निवासी संगमाजीक विवरण द्वारा प्रस्तुत कयल गेल अछि। एहिमे जे विवरण प्रस्तुत भेल अछि से शहरी चाकचिक्यमे पड़ल मजदूर वर्गक शोषणक कथा थिक जे कहियो ओकर किंवा अगिला पीढ़ीकेँ विकासक पथपर अग्रसर नहि होमऽ दऽ सकैत छैक, कारण ओ सभ उपभोक्तावादी संस्कृतिकेँ ग्रहण कऽ अंग्रेजीक 'ईट ड्रिंक एण्ड बी मेरी' धरि अपन जीवनकेँ सीमांकित कऽ चुकल अछि। कथामे एकटा चिमनी भट्ठा अछि। ओतऽ ईटक पथैया तथा पकैयाक हेतु दू सय मजदूरक एकटा महल्ले बसाओल गेलैक अछि। ई मजदूर सभ पहिने तँ अपने मजूरी करऽ चल जाइत छल आ ओकरा सभक भोजन ओकरा सभक स्त्री समयसँ पहुँचा दैत छलैक। मुदा अर्थलोभमे पड़ि स्त्रीलोकनि सेहो अर्थोपार्जन दिस उन्मुख भेलीह। आब मजदूरलोकनिकेँ समयपर भोजन भेटब दुरूह होमऽ लगलनि। तकरा व्यवस्थित करबाक हेतु अनेक प्रयत्न कयल गेल मुदा सफल नहि भेल। अन्तमे चिमनीक मालिक अपन एकटा भागिनसँ एकटा होटल खोलबैत छथि। होटल मालिक सभटा मजदूरकेँ उधारी भोजन दैत छथि आ साप्ताहिक वेतन दैत काल चिमनी मालिकक मुंशी सभक वेतनसँ भोजनक मूल्य ओसूलि लेल करैत छैक। एहिसँ सुविधा तँ होइत छैक मुदा मजूरा सभक हाथमे कम नगद आबऽ लगैत छैक।

किछु दिनक बाद होटलक मालिक एकटा जीन्स-शर्टक दोकान सेहो खोलि लेलनि आ गर्दासँ लेढ़ायवला मजूर सभकेँ ओ वस्त्र धारण करबाक हेतु प्रेरित कयलनि। आधुनिकताक दिस उन्मुख मजूर सभ जीन्स-शर्टक उपयोग करऽ लागल आ ओकरा सभक घरवाली सभ गराड़ा धारण करऽ लगलीह। परिणामत: एक दिस जँ होटल मालिकक व्यवसाय

बढ़लैक तँ दोसर दिस मजूर सभकेँ कीनल गेल वस्त्रोक मूल्य मिनहा करैत जयबाक कारणे हाथ पर आबऽवला नगदी कम भऽ गेलैक।

ततःपर यैह होटल मालिक ओतहि एकटा फ्रेश-लुक पार्लर खोलि लेलनि आ मजूरा सभक घरवालीकेँ ओकर सेवा प्राप्त करबाक हेतु उकसौलनि। क्रमशः ओ पार्लर सेहो चलऽ लागल मुदा मजूर सभकेँ वेतनसँ प्राप्त राशि आर कम भऽ गेलैक। एहिना क्रमशः मजूर सभक हेतु मोबाइल, ट्रांजिस्टर तथा सिनेमाक सुविधा सेहो उपलब्ध कराओल गेल। क्रमशः मजूर सभ एहि स्थितिमे आबि गेल जे आब ओकरा सभक हाथमे पाइ नहिञेक बरोबरि अबैक आ सभटा उधारी उपभोक्ता सामग्री सबमे मिनहा भऽ गेल करैक।

एहि उल्लासक माध्यमे उपन्यासकार लोकजगतपर उपभोक्ता संस्कृतिक दुष्प्रभावकेँ ईंगित करऽ चाहलनि अछि जे चाकचिक्य आ सौख्यक हेतु भने होअय मुदा एक बेर ओकर चसक लागि गेलापर लोक भविष्यक प्रति उदासीन भऽ वर्तमानेक ऐश-मौज करबा दिस उन्मुख भऽ जाइत छथि। स्वभावतः व्यवसायी वर्ग तँ समुन्नत होइत छथि मुदा जनसामान्य क्रमशः अधोगतिये दिस आगू बढ़ैत चलि जाइत छथि।

एही उल्लासमे आस्थाक क्षेत्रमे होइत प्रदूषणक एकटा चित्र सेहो प्रस्तुत भेल अछि। धार्मिक कृत्य केवल आस्थाजन्य नहि रहि गेल अछि अपितु समाजक बइमान आ मक्कार लोक सभ सेहो एकर उपयोग भ्रष्टाचारक आवरण वा रक्षाकवचक रूपमे करैत छथि। एहिमे एहन लोकक कथा अछि जे सरकारी योजनाक अनुरूप सबसिडी प्राप्त करबाक हेतु एकटा ट्रैक्टर लेबाक हेतु बैंकसँ कर्ज लैत छथि। प्रतिभूतिक रूपमे बैंकमे ओ जाहि जमीनक कागत जमा करैत छथि से फर्जी जमीनसँ सम्बद्ध छैक। परिणामतः जखन ओ किस्त देब बन्द करैत छथि तँ प्रतिभूतिक माध्यमे ऋण वसूलीक प्रक्रियाक क्रममे बैंककेँ ई पता लगैत छैक जे प्रतिभूतिक कागत अनुपयुक्त प्रदान कयल गेल छल। परिणामतः बैंक हिनका सभपर केस कऽ दैत छनि आ ई लोकनि महादेवक दुग्धाभिषेक करैत काल पकड़ा जाइत छथि। मिथिलाक लोकजगतमे सरकारी सबसिडीक प्रति जे अवधारणा छैक से एहि कथामे उजागर भेल अछि। लोक ओहि सबसिडीक आधारपर अपन उद्यमिताक सृजन

कऽ विकास नहि चाहैत छथि अपितु नहि केवल सबसिडीटा अपितु मूलो कर्जकेँ पचयबाक मनःस्थितिमे रहैत छथि।

आठम उल्लासमे हिमाचल प्रदेशक किन्नौर निवासी फारूकक द्वारा जे कथा सुनाओल गेल अछि ताहिमे सभटा धर्मक प्रति समानभाव रखबाक प्रेरणा अछि। ई समभाव भारतीय संस्कृतिक वैशिष्ट्य थिक आ एकर अनुपालन मिथिलोमे भऽ रहलैक अछि, से प्रकट करब उपन्यासकारक अभिप्रेत छनि। एहिमे एकटा वृद्धा छथि शबरी माय जनिका दूटा बेटा छनि सुमीर आ प्रवीर। सुमीरक विवाह हनी नामक इसाइ कन्यासँ भेल छलनि जे चर्चक प्रति पूर्ण निष्ठावान छथि। हनीक बेटा प्लैनेट अछि। प्रवीर ब्यूटी नामक एक गोट मेडिकल छात्रासँ विवाह करैत छथि। हिनका एकटा बेटा प्रिन्स आ बेटी स्वीटी छनि। ई दुनू अपन पितामहीक अनुसरण करैत हिन्दू देवी-देवताक प्रति आस्थावान होइत अछि। परिणाम ई होइत छैक जे प्लैनेटकेँ मन्दिर जयबासँ मनाही रहैत छैक आ प्रिन्स तथा स्वीटीकेँ मन्दिरक प्रति पूर्ण आस्था भऽ जाइत छैक। स्वभावतः एहि तीनू नेनाक बाल मनमे ई प्रश्न उठैत छैक जे जखन इसाई देवता सेहो लोकक कष्ट हरणेक काज करैत छथि आ हिन्दू देवी-देवता सेहो, तखन ककरो मन्दिरमे आ ककरो चर्चमे जयबासँ परहेज किएक रहैत छैक। दोसर दिस एहि नेना सभकेँ इहो जिज्ञासा छैक जे इसाई धर्ममे एकेटा ईश्वरक पूजा किएक होइत छनि आ हिन्दूमे एतेक देवी-देवता किएक छथि? शबरी दादी अपन चातुर्यसँ अपन पौत्र-पौत्री सभक जिज्ञासाक शमन करैत कहैत छथिन जे भगवान दुनू ठाम एकेटा छथि मुदा हिन्दू धर्ममे एकेटा देवता विभिन्न समयमे विभिन्न रूपमे अवतरित भऽ लोकक कष्ट हरण करैत छथिन, तेँ विभिन्न स्वरूपमे पूजल जाइत छथि। तत्त्वतः सभ एके छथि। एहि तरहेँ शबरी माता विभिन्न धार्मिक विश्वासक आन्तरिक एकताकेँ व्याख्यात करैत छथि आ सर्वधर्म समभावक स्थापनाक प्रयास करैत देखि पड़ैत छथि जे हमरा लोकनिक राष्ट्रीय भावनाक अनुकूल तँ अछिये, मिथिलोक लोकजीवनमे धार्मिक एकताक परिचायक थिक।

एही उल्लासमे मिथिलाक लोकक तार्किक बुद्धि आ कोनो बातकेँ टेढ़ कऽ कऽ कहबाक दुष्प्रवृत्तिक सेहो उदाहरण प्रस्तुत भेल

कऽ विकास नहि चाहैत छथि अपितु नहि केवल सबसिडीटा अपितु मूलो कर्जकेँ पचयबाक मन:स्थितिमे रहैत छथि।

आठम उल्लासमे हिमाचल प्रदेशक किन्नौर निवासी फारूकक द्वारा जे कथा सुनाओल गेल अछि ताहिमे सभटा धर्मक प्रति समानभाव रखबाक प्रेरणा अछि। ई समभाव भारतीय संस्कृतिक वैशिष्ट्य थिक आ एकर अनुपालन मिथिलोमे भऽ रहलैक अछि, से प्रकट करब उपन्यासकारक अभिप्रेत छनि। एहिमे एकटा वृद्धा छथि शबरी माय जनिका दूटा बेटा छनि सुमीर आ प्रवीर। सुमीरक विवाह हनी नामक इसाइ कन्यासँ भेल छलनि जे चर्चक प्रति पूर्ण निष्ठावान छथि। हनीक बेटा प्लैनेट अछि। प्रवीर ब्यूटी नामक एक गोट मेडिकल छात्रासँ विवाह करैत छथि। हिनका एकटा बेटा प्रिन्स आ बेटी स्वीटी छनि। ई दुनू अपन पितामहीक अनुसरण करैत हिन्दू देवी-देवताक प्रति आस्थावान होइत अछि। परिणाम ई होइत छैक जे प्लैनेटकेँ मन्दिर जयबासँ मनाही रहैत छैक आ प्रिन्स तथा स्वीटीकेँ मन्दिरक प्रति पूर्ण आस्था भऽ जाइत छैक। स्वभावत: एहि तीनू नेनाक बाल मनमे ई प्रश्न उठैत छैक जे जखन इसाई देवता सेहो लोकक कष्ट हरणेक काज करैत छथि आ हिन्दू देवी-देवता सेहो, तखन ककरो मन्दिरमे आ ककरो चर्चमे जयबासँ परहेज किएक रहैत छैक। दोसर दिस एहि नेना सभकेँ इहो जिज्ञासा छैक जे इसाई धर्ममे एकेटा ईश्वरक पूजा किएक होइत छनि आ हिन्दूमे एतेक देवी-देवता किएक छथि? शबरी दादी अपन चातुर्यसँ अपन पौत्र-पौत्री सभक जिज्ञासाक शमन करैत कहैत छथिन जे भगवान दुनू ठाम एकेटा छथि मुदा हिन्दू धर्ममे एकेटा देवता विभिन्न समयमे विभिन्न रूपमे अवतरित भऽ लोकक कष्ट हरण करैत छथिन, तेँ विभिन्न स्वरूपमे पूजल जाइत छथि। तत्त्वत: सभ एके छथि। एहि तरहेँ शबरी माता विभिन्न धार्मिक विश्वासक आन्तरिक एकताकेँ व्याख्यात करैत छथि आ सर्वधर्म समभावक स्थापनाक प्रयास करैत देखि पड़ैत छथि जे हमरा लोकनिक राष्ट्रीय भावनाक अनुकूल तँ अछिये, मिथिलोक लोकजीवनमे धार्मिक एकताक परिचायक थिक।

एही उल्लासमे मिथिलाक लोकक तार्किक बुद्धि आ कोनो बातकेँ टेढ़ कऽ कऽ कहबाक दुष्प्रवृत्तिक सेहो उदाहरण प्रस्तुत भेल

अछि जे मिथिलाक लोकक अहंभावक भने परिचायक हो मुदा आजुक तेज जीवनक हेतु सर्वथा अनुपयुक्ते अछि। उपन्यासकार कहैत छथि जे एकटा बटोही ककरोसँ राह चलैत कोनो स्थानक दूरी पुछलनि ताहिपर ओ कहलथिन जे बस, सातो डेगसँ कम्मे। मुदा वस्तुतः ओ स्थान बड्ड दूर छल। बादमे जखन ओ ओहि व्यक्ति द्वारा छकल जयबाक शिकायत कयलथिन तँ ओ कहलथिन जे अपने हमर इशारा नहि बुझल। वस्तुतः सात डेगसँ कमक अर्थ भेल सासुरक रस्तासँ कम, से तँ छले। सातो डेगक आधारपर ने ककरो सासुर बनैत अछि।

एहिना एकटा महिला जखन कोनो दोसर महिलासँ जा कऽ पुछैत छथिन जे अहाँक गाय दूध दैत अछि की? तँ ओ जवाब दैत छथिन जे काल्हि हुनक जमाय आयल छलथिन। एहि दार्शनिक उत्तर-प्रत्युत्तरक अर्थ ओ दुनू जनी जनैत छलीह मुदा तेसर केओ बुझि नहि सकैत। पहिल महिला कहऽ चाहैत छलीह जे हमरा दूध वा दहीक काज अछि, से माङऽ अयलहुँ अछि। ताहिपर दोसर महिलाक जवाब छलनि जे हमर जमाय आयल छलाह आ जनिक जमाय आयल रहथिन, हुनका घरमे दूध-दही कोना रहि सकैत छल, से नहि बूझि सकैत छी की? एहि तरह उत्तर-प्रत्युत्तरक स्थिति मिथिले सन प्रदेशमे जीवित अछि।

एहि प्रकारक अनेक उदाहरणपरक कथाक द्वारा उपन्यासकार मिथिलाक लोकजीवनमे पसरल व्यर्थ वाद-विवाद ओ अभिमानी प्रवृत्तिक उल्लेख कऽ एकर अधोगतिक कारण सभपर विचार करबाक अवसर उपलब्ध करओलनि अछि।

नवम उल्लासमे पूर्व जन्मक केरल निवासी जैकोबक द्वारा मिथिला भ्रमणक वृत्तान्त अछि। एहि वृत्तान्तमे शंकराचार्य ओ मण्डन मिश्रक बीच भेल ऐतिहासिक शास्त्रार्थ ओ भारतीक द्वारा शंकराचार्यकेँ पानि पिअयबाक माध्यमे गृहस्थाश्रमक महिलाक चातुर्यक अनुगायन भेल अछि। एहि उल्लासमे मिथिलाक नारी शक्तिक प्रशंसा करैत कहल गेल अछि जे 'जगज्जननी सीताक जन्मभूमिक नारी शक्ति प्रत्यक्षतः पवन सदृश व्यापक, पर्वत सन सुदृढ़, गंभीर आ असीम अछि। (पृ.-105) तहिना नारी मात्रकेँ पुरुषक ऊर्जाक स्रोतक रूपमे विवृत करैत कहल गेल अछि जे 'केओ स्त्री, केहनो आलसी पुरुषकेँ स्फूर्तिवान बनाबऽवाली

पुष्टिकारक औषधिए जकाँ काज करैत छथि। पुरुष कतबो निराश, शिथिल, उदास किंवा उत्पीड़ित होथु, हुनका नवीन ऊर्जासँ भरऽवाली स्त्री स्वयं रहस्यमयी रहितहुँ कखनो एकटा सम्मोहक आसवोक काज करैत छथि, तेँ मानवीय अनुभूतिक आंतरिक संसाधनक रूपमे ख्यात दशेन्द्रियजन्य कोनो प्रकारक विकारकेँ दूर करऽवाली स्त्री स्वयं 'दशमूलारिष्ट' सेहो कहबैत छथि। (पृ.-105)

एहि तरहेँ एहि उल्लासमे मिथिलाक ऐतिहासिक विदुषी नारी भारतीक स्मरणपूर्वक वस्तुतः उपन्यासकार मिथिलाक आधुनिक नारीकेँ स्तरीयताक प्रति सचेष्ट होयबाक आह्वान करैत छथि।

उपन्यासकारक हृदयमे मिथिलाक महिमामयी नारीलोकनिक प्रति केहन अगाध श्रद्धा छनि तकर एकटा आर उदाहरण षोडशोल्लासमे चमसक मुँहसँ भामतीक प्रसंग कहल गेल उक्तिमे भेटैत अछि–"भारतमे भामतीक तुलना ताकब असंभव अछि। वाचस्पति यदि स्वयं सूत्र रहथि तँ भामती तकर व्याख्या, पति यदि अवयव रहथिन तँ पत्नी तकर शाखा, वाचस्पतिक ब्रह्मोपासना यदि दिव्य-दर्पण छल तँ भामती तकर शुभ्र प्रतिबिम्ब तथा पति यदि प्रज्ञाक शिखा रहथि तँ भामती तकरा दिव्य बनौनिहार स्वयं तेजःस्वरूपिणी" (पृ.-185)

दशम उल्लासमे उत्तरांचलक जीवात्मा कोशियारीजीक वार्ताक माध्यमे उपन्यासकार जाहि आध्यात्मिक सिद्धान्तक प्रक्षेपण कयलनि अछि से वस्तुतः भाग्यवादी सिद्धान्त अछि। एहि सिद्धान्तमे कर्मक ततेक महत्ता नहि छैक। सम्भव अछि उपन्यासकार मिथिलाक लोकजीवनमे पसरल फुच्चन सन-सन अकर्मण्यक हेतु ई सिद्धान्त मानने होयताह। फुच्चन चाकरी कऽ कऽ जीवनक निर्वाह करैत छथि मुदा ताड़ी धरि हुनका नित्यह चाहियनि। स्वभावतः हिनक पत्नी हिनकासँ प्रसन्न नहि रहैत छलथिन आ दुनू गोटेमे तकरार चलैत रहैत छलनि। एकटा पत्नी जखन फुच्चनक परित्याग कऽ देलकनि तँ ई लगले दोसर बिआह कऽ लेलनि। मुदा इहो स्त्री बदमासिये छलनि। परिणामतः फुच्चन एक दिन गाम-घरक माया त्यागि ट्रेन पकड़ि कऽ बाहर जयबाक नेयार कयलनि। बाहरो गेलापर जखन हिनका मनपसंद काज नहि भेटलनि तँ फेर गाम दिस घुरि जयबाक निर्णय लेलनि। मुदा तावत् संयोगसँ हिनका एकटा स्कूलमे भनसीयाक

काज भेटि गेलनि। स्कूलोक अनुशासन ई मानि नहि सकलाह आ फेर अपन पुरना मालिक लग घुरि गेलाह। फुच्चनकेँ ई बुझल छलनि जे मुइलहो लोकक नाम पर वृद्धा पेन्शन उठैत छैक। तेँ ओ पेंशनक हेतु जोगाड़ लगबैत छथि। मुदा सेहो भेटबामे हुनक अल्प वयस बाधक भऽ जाइत छनि। अन्ततः ब्लॉकक कर्मचारी फुच्चनकेँ अपन कबीरपंथी गुरुसँ भेट करा हुनक शिष्य बनबा देलथिन। आब फुच्चन-फुच्चन महाराज भऽ कऽ सन्त कोटिमे जगजियार भऽ गेलाह।

फुच्चनक कथाक आधारपर उपन्यासकार मिथिलाक लोकजीवनमे पसरल अकर्मण्यता एवं विषय-वासनासँ ग्रस्त लोकहुक द्वारा सन्त समाजक बाना धारण करबाक स्थितिकेँ उजागर कयलनि अछि। संगहि ई एहि कथामे पुरुषक नियामक नारीकेँ मानलनि अछि, जे अपन प्रकृतिक अनुरूप पुरुषकेँ पतित किंवा उन्नत बना सकैत छथि। कथाक समाप्तिपर नम्बूदरीजी जे टिप्पणी कयलनि अछि ताहिमे कहल गेल अछि जे 'मर्त्यलोकमे जतऽ अजामिल, गीध, गणिका आदिक तीव्र उद्रेकक उदाहरण भेटैत अछि ततऽ जीवनक सुख-दुःखक मरीचिकासँ ऊबि कऽ के कखन वैराग्यक बाट पकड़ि लेत से कहब असंभव। रहल प्रश्न, के असली, के नकली? इहो परिस्थितिये पर निर्भर करैत अछि। रामलीला वा कृष्णलीला करैत अनेको पात्रक जीवनमे आयल विलक्षण परिवर्त्तनक उदाहरण सेहो भेटैछ।... ककरा भाग्यमे कखन, कोन आ केहन परिवर्तन लिखल रहैत अछि तकरा के बाँचि सकैछ? साहित्य, कृषि आ साधनाक एहि अदृष्ट भूमि पर भेटयवला यश, कीर्ति आ सिद्धिक हेतु ई अनिवार्य नहि अछि जे ताहि निमित्त कोनो बूझल-गमल वा देखल-सूनल कौलिक मार्गे भेटक चाही। अहुना तकर आश्रय किंवा शरण सभकेँ भेटितो नहि अछि। परन्तु संसारक अनुभव-संहिता एतेक बात जरूर कहैत अछि जे वैयक्तिक, पारिवारिक, कौटुम्बिक किंवा सामाजिक स्तरपर भेटऽवला तीव्र अपमानक परमाणु-विस्फोटसँ ककरो-ककरो हृदयमे उत्पन्न होमऽवला कोनो दृढ़ संकल्प प्रबल हनुमान बनिकेँ प्रकट भऽ जाइत अछि। तखन ओकर अनुग्रह मात्रसँ संसारक सभटा दुर्गम काज सुगम भऽ जाइत अछि। वाल्मीकि, कालिदास, विद्यापति, सूरदास, कबीर, तुलसी, रैदास, मलूकदास, मीरा तथा धर्मव्याध आदि तकरे उत्प्रेरक उदाहरण छथि। परन्तु 'संतुष्टि-सिद्धि'क

ओ गाछ बहुत सुस्ता-सुस्ता कऽ नहुँ-नहुँ बढ़ैत अछि आ फड़ऽवला होयबासँ पहिने ओकरा अनेक प्रकारक शोक, उदासी, आलोचना आ दुर्दशाक झाँट-बिहाड़िसँ संघर्ष करऽ पड़ैत छैक (पृ.-115)।

एहि तरहेँ एहि उल्लासकेँ मिथिलाक भाग्यवादी विचारधारा ओ अकर्मण्यताक परिवेशक परिप्रेक्ष्यमे देखल जा सकैत अछि।

एगारम उल्लासमे पंजाबक एक गोट सरदारजीक मिथिला भ्रमणक वृत्तान्त वर्णित अछि। एहि उल्लासमे मिथिलासँ युवा वर्गक रोजी-रोटीक हेतु प्रवास दिस पलायन आ तज्जन्य मिथिलाक गाम-घरक उदास होयबाक उल्लेख भेल अछि। मिथिलाक गाम नहि केवल अपन प्रवासी युवा समुदायसँ वञ्चित भेल अछि अपितु एहि समुदायक संगहि जेना मिथिलाक कृषिक सेहो पलायन भऽ गेल छैक। नगदी मजूरीक व्यवस्था भऽ गेलासँ मालिक आ मजूरक बीच जे आपकताक सम्बन्ध छलैक, से नष्ट भऽ गेल छैक। वासगीत पर्चा भेटि गेलासँ मालिक आ मजदूरक बीच जेना कोनो सम्बन्धे नहि रहि गेल छैक। ने सम्मिलित पारिवारक व्यवस्था रहल, ने एक-दोसरासँ निश्छल सम्बन्धे। तखन एतबा तँ अवश्य भेलैक अछि जे मजूरो वर्गक धियापुता उच्च शिक्षा प्राप्त कऽ नीक-नीक पदपर आसीन भेल छथि, भऽ रहल छथि।

एहि प्रकारेँ उपन्यासकार पलायनक कारणे गाममे होइत परिवर्तनकेँ लक्षित कयलनि अछि जे गामक हेतु तँ अधलाह अछिये, शहरमे पलायन कऽ कऽ गेल युवा समुदायक लेल सेहो नीक नहि छैक, कारण ओहि ठाम सभकेँ स्वस्थ वातावरण तँ नहिञे भेटैत छैक, ओ सभ क्रमशः अपन अस्मिताकेँ सेहो हेरा लैत अछि। तथापि एहि परिवर्तनक कारणे कृषक-मजदूर वर्गमे चेतना जाग्रत भेलैक अछि, से भावी मिथिलाक हेतु शुभंकर छैक। एहि जाग्रत चेतनाक आश्रयणहिसँ ई वर्ग स्वाभिमानक संग युगक पैरमे पैर मिला कऽ चलब सिखलक अछि, आत्मनिर्भर भेल अछि, शिक्षित भेल अछि आ सम्मानपूर्ण नागरिक जीवन पओलक अछि।

बारहम उल्लासमे क्षुद्र राजनीतिक ओ आर्थिक स्वार्थसँ ग्रस्त ठीकेदार सभक मिथिलाक लोकजीवनपर पड़ल प्रभावक एकटा सुन्दर चित्र उतारल गेल अछि।

एहिमे कहल गेल अछि जे सरकार अर्थात् सत्ताधारी दल जखन

जनताक हेतु कोनो नीको योजना लागू करऽ चाहैत अछि तखन ओहि काजकेँ करबाक हेतु स्पर्द्धामे ठाढ़ ठीकेदार ओकरा आगू नहि होअऽ दैत छैक। कारण ई जे ओ ठीकेदारी नहि भेटबाक कारणे स्वयं लाभान्वित नहि भऽ पबैत अछि। एहि तरहक मनोवृत्तिसँ लोककेँ सरकारी योजना सभक सम्यक् लाभ नहि भेटि पबैत छनि। मुदा अफवाह पसारनिहारकेँ संग तँ जनते दैत अछि, तखने ई व्यापार भऽ पबैत अछि। तेँ एहन कृत्यक दोषी अशिक्षित जनतेकेँ मानल जा सकैत छैक। उपन्यासकार वस्तुतः लोकशिक्षा ओ लोकजागरणकेँ मिथिलाक हेतु आवश्यक आवश्यकता जनबैत एकर विकासक प्रति सन्नद्ध होयबाक आह्वान करऽ चाहैत छथि।

झारखण्डी जीवात्माक माध्यमे एहि उल्लासक आरम्भमे जे कथा कहल गेल ताहिमे एक बेर स्वार्थक वशीभूत भेल सत्ताधारी दल द्वारा गरीबी रेखासँ नीचावला परिवारकेँ आयोडीनयुक्त नोन मुफ्त बँटबाक घोषणा कयल गेल। सत्ताधारी दल एहि माध्यमसँ पुष्ट भोट अर्जित कऽ लेबाक मंसूबा बन्हने छल। मुदा तखने जाहि ठीकेदारकेँ ई काज करबाक ठीकेदारी नहि भेटि सकलैक से कानो-कान ई अफवाह पसरबा देलक जे प्रस्तावित नोनमे तेहन रसायन छैक जे माउगि खायत तँ बाँझ होयत, पुरुष खायत तँ नपुंसक। परिणामतः ओ नोन केओ लेबाक हेतु तत्परे ने भेल। जनता निरक्षर रहबाक कारणे अफवाहक औचित्यपर विचार नहि कऽ सकल। तेँ कहि सकैत छी जे एहि कथाकेँ अन्तर्भुक्त करबाक उपन्यासकारक उद्देश्य छनि मिथिलाक लोकजीवनमे व्याप्त अशिक्षाकेँ ईंगित करब तथा सरकारी तंत्रक प्रत्येक योजनामे राजनीतिक स्वार्थसाधनाक प्रवृत्तिकेँ उजागर करब। वोटक लोभमे सरकारी तंत्र जे धनक दुरुपयोग करैत अछि, से स्वस्थ प्रजातंत्रक हेतु घातक वृत्ति थिक आ जाधरि जनता अशिक्षित रहत ताधरि ओ कोनो प्रकारक लोक कल्याणक योजनाक सम्यक् लाभ लेबामे असमर्थ रहत, से प्रतिपाद्य अछि। उपन्यासकारकेँ इहो प्रतिपाद्य छनि जे सरकारी तंत्र जँ भ्रष्ट अछि तँ जनतो कोनो कम लोभी नहि अछि। मिथिलाक जनता मुफ्तखोरी दिस पड़िकल अछि। तेँ कहियोक अयाचीक सन्तान आब सरकारक नोनो सन खाद्य सामग्री मुफ्तमे लेबामे कनेको रोच नहि करऽ चाहैत छथि। एकटा जनता तँ एतेक धरि कहि उठैत अछि जे 'सरकारकेँ जखन देबेक छलैक तँ ओ नोनक संगे यदि

थोड़ेक करू तेल आ एक मुट्ठी मेरचाइ सेहो दऽ दितैक तँ तरकारियो बनैबाक जनीजातिकेँ कोनो हुज्जति नहि रहितनि। (पृ.-125)' संगहि उपन्यासकार इहो जनाबऽ चाहैत छथि जे वस्तुतः सरकारी योजनाक लाभ गरीब धरि पहुँचब बड़ मोसकिल होइत छैक। एकटा पात्रसँ ओ कहबैत छथि, 'गरीबक हिस्साक रौदो-बसात जखन लोक लूझि लैये तखन ई तँ नोन थिक जकर काज सभकेँ पड़ैत छैक।'

एही उल्लासमे असमी जीवात्मा द्वारा जे कथा कहल गेल अछि ताहिमे सेहो खानाबदोश लोकनि द्वारा मुसहरीक वितरणक अवहेलना करबाक पाछाँ जनताक अशिक्षा ओ अफवाह पसारनिहारक स्वार्थकेँ उजागर कयल गेल अछि। सरकारी योजना सभक जड़िमे कोना घोटाला दर घोटाला होइत रहल अछि तकरा कैंसरसँ पीड़ित रोगीकेँ देय राशिकेँ स्वस्थ लोक द्वारा अपना खातामे करयबाक फरेब, गरीबी रेखासँ नीचावला लोकक हेतु इनार खुनयलापर देय अनुदान राशिकेँ बिना इनार खुनौने हड़पि लेबाक साजिशक घटना द्वारा स्पष्ट कराओल गेल अछि। नम्बूदरीजीक एहि उक्तिमे मिथिलाक लोकजगतमे होइत घोटाला सभपर विमर्श करैत कहल गेल अछि, 'मर्त्यलोकक नेंत आ नीयत दुनू सम्प्रति बदलि गेल अछि आ से सब दिन नव-नव रूपमे प्रकट भऽ रहल अछि। एतेक घोटाला सभ पहिने कहाँ होइत छल? पाइ कमयबाक जाहि वृत्तिमे लोक अपन लाज-धाख सभटा घोंटि जाइत अछि, सैह ने घोटाला कहबैत अछि। से क्यो व्यक्ति करओ वा कोनो संस्था अथवा सरकारेक कोनो महकमा। (पृ.-129)

तेरहम उल्लासमे कश्मीरी जीवात्माक द्वारा वर्णित कथाक माध्यमे मिथिलाक ग्राम्य जीवनमे स्वार्थपरताक कारणे होइत पारिवारिक विघटनक नग्न यथार्थक वर्णन कयल गेल अछि तथा वयस ओ शिक्षाजन्य अनमेल विवाहक प्रति प्रतिरोधी स्वर अभिव्यक्त कयल गेल अछि। एहि कथामे दया आ लक्ष्मी दू भाइ छथि। हिनकालोकनिक अपन नाम क्रमशः बतहू आ टुकुड़ रहनि। हिनका लोकनिक पिता जखन मरणशय्यापर छलथिन ताधरि बतहू छठा पास कऽ गेल छलाह। मरबा काल पिता हिनका टुकुड़केँ अवश्य पढ़यबाक आदेश कऽ गेल छलथिन। पिताक आज्ञाक पालन करैत बतहू टुकुड़केँ बी.ए. धरि पढ़ौलनि।

बतहूकेँ चारिटा नेना छलनि आ चारू एकपिठिये छलनि। तेँ

ओकरा सभक पालन-पोषणमे सहायताक हेतु बतहूक पत्नी अपन नैहरसँ अपन एक छोट पितियौत बहिन काजलकेँ बजबा लेलथिन। अपन वर्तमान आ भावीओ धिया-पुताकेँ थथमारबाक हेतु काजलकेँ उपयुक्त बूझि अपना स्वार्थमे आन्हर बतहूक पत्नी टुकुड़हिसँ ओकर विवाह करा देबाक योजना बनौलनि। टुकुड़क वयस ओ शिक्षाक संग काजलक कोनो तालमेल नहि छलैक। परिणामतः टुकुड़ बिआहसँ बचबाक हेतु गामसँ पड़ा गेलाह। एम्हर काजलक बिआह एक गोट निःसंस्तान विधुरसँ करयबाक योजना बनैत अछि मुदा इहो बिआह अनमेले छल जकर प्रतिरोध स्वरूप काजल इनारमे डुबि कऽ जान दऽ दैत छथि। काजलक मुइलापर लोकमे ई प्रवाद प्रचारित भेलैक जे टुकुड़ आ काजलमे अवैध सम्बन्ध छल होयतैक तेँ दोसर ठाम विवाह ठीक होयबाक कारणे काजल अपन जान हति लेलक अछि।

टुकुड़ परदेशमे एकटा हनुमान मन्दिरक पुजेगरी बनि कऽ जीवन-यापन करऽ लगलाह। बतहूक मातृकक कोनो सूत्रसँ ई तथ्य गाममे प्रसारित भऽ गेलैक। आब बतहूक दयादवादकेँ ई स्वार्थ जकड़ि लेलकनि जे टुकुड़ जँ गाम नहि अबैत छथि तँ ओ अपन सम्पत्ति तँ मड़ुआक दोबर दाममे दियादवादकेँ लिखि सकैत छथि। घुनुर नामक एक व्यक्ति हुनका ओतऽ जा जूमैत छथि आ हुनका गाम चलबाक आग्रह करैत छथिन। बहुत समझौला-बुझौलाक बादो जखन टुकुड़ गाम चलबाक हेतु तैयार नहि होइत छथि तखन घुनुर टुकुड़क गुरु महाराजकेँ ई प्रलोभन दैत छथिन जे जखन टुकुड़ गामपर रहबे नहि करताह तँ अपन हिस्साक सम्पत्ति बेचि कऽ मन्दिरेमे लगा देथि। एहि तरहेँ सहजहिमे एहि मन्दिरक हेतु पर्याप्त सम्पत्ति उपलब्ध भऽ सकैत छनि। मन्दिरक गुरु महाराज सेहो स्वार्थक वशीभूत भेलाह आ ओ टुकुड़केँ अपन सम्पत्ति बेचबाक हेतु लगले विदा कऽ देलथिन। मुदा घर पहुँचलापर टुकुड़क बबाजी वेष हुनक भाय-भाउजिकेँ नहि सोहयलनि। ओ सभ गाममे ई प्रचार करा देलथिन जे टुकुड़ निछच्छ बताह भऽ गेल छथि।

अंतमे बतहू अपन सर-कुटुम्बकेँ बजाय टुकुड़क मानसिक चिकित्सा करयबाक विचार कयलनि। मुदा अस्पतालमे टुकुड़ अपना जाँचक कालमे अपन भाइएक नाम-पता रोगीक रूपमे लिखा देलथिन

आ हुनके अस्पतालमे भर्ती कराय स्वयं पार भऽ गेलाह। एहि तरहेँ बतहू अपन पत्नीक स्वार्थपरता, घुनुर पर-सम्पत्तिक प्रति लोभ ओ टुकुड़ गुरु बबाजीक स्वार्थक जालमे फँसि गेलाह आ एकटा परिवारे नष्ट होयबाक समतूल भऽ गेल।

एहि वृत्तान्तक माध्यमे उपन्यासकार मिथिलाक लोकजगतमे व्यक्ति, परिवार ओ समाजमे पसरल स्वार्थपरताक विडम्बनाकेँ उजागर कयलनि अछि जकरा कारणे निरन्तर पारिवारिक विघटन भऽ रहल अछि। संगहि ओ एहि कथामे टुकुड़ ओ काजलक चरित्रक द्वारा अनमेल विवाहक वीभत्स परिणाम देखाय मिथिलाक एहू प्रथाक प्रति जुगुप्सा दर्शौलनि अछि।

चौदहम उल्लासमे तीन गोट जीवात्माक भ्रमणक अनुभवपर आधारित विवरण अछि। एहिमे पहिल विवरण गुजराती जीवात्माक छलनि जे अपन अनुभूतिमे मिथिलाक कन्या लोकनिमे होइत नवजागरणक स्थितिकेँ उपस्थापित कयलनि अछि। महाराष्ट्रक जीवात्मा मिथिलाक दूटा भैयारी आ देयादिनी सभक बीच पारस्परिक स्नेहक अभाव आ स्वार्थक अतिरेकक कारणे संयुक्त परिवारक विघटनक कथा उपस्थापित कयलनि अछि तथा गोरखा भूमिक जीवात्मा उच्चैठ भगवतीस्थानमे देवीभागवत्क कथावाचक द्वारा सुनल एक गोट औपनिषदिक कथाक माध्यमे व्यक्ति ओ समाजक बीचक अटूट सम्बन्धक व्याख्या कयलनि अछि।

एहि उल्लासक पहिल कथामे 'अहल्या-स्वाभिमान प्रतिष्ठा' नामक महिला संस्थानक त्रिदिवसीय मंथन शिविरक चर्चा कयल गेल अछि जाहिमे नहि केवल शिक्षाक क्षेत्रमे नारी सभक पुरुषक संग समान रूपेँ आगू बढ़बाक स्थिति आ जीवनक कोनो क्षेत्रमे पुरुषक बराबरीक वर्णन कयल गेल अछि अपितु हुनका सभक सुरक्षा सेहो हुनके सभक भरोसे छोड़ि देबाक निर्णय लेल गेल अछि। उपन्यासकार मिथिलाक नारी जगतक प्राचीन स्तरीयता ओ आधुनिक कालक क्रान्तिकारी परिवर्त्तनक रेखाचित्र प्रस्तुत कऽ एकटा दिशानिदेशकक काज कयलनि अछि। मिथिलाक नारी शक्तिक सम्बन्धमे एकटा जीवात्माक ई उक्ति सर्वथा समीचीन अछि जे 'वर्तमान एकैसम शताब्दीमे नारीकेँ पढ़यबाक हेतु आब कोनो विशेष उपक्रम अपेक्षित नहि अछि। शिक्षाक अधिकार आब देशक कानून बनि चुकल अछि। बाल-विवाह, भ्रूण हत्या आ दहेज-उत्पीड़नक आघातकेँ

सहितहुँ मिथिलाक कन्यामे पढ़बाक ओ सिखबाक जे लौल उत्पन्न भेल अछि, जे जिद्द जन्म लेलक अछि, सर्वथा स्वागत योग्य अछि। एकर परिणाम आगू देखाइ पड़त।'

एहि उल्लासक दोसर कथामे मिथिलाक एक गोट हँसैत-खेलैत परिवारक विघटनक कथा अछि जे केवल आत्माभिमानक कारणेँ भेल अछि। बड़की देयादिनी अपन दीयरक प्रशंसे करैत कहैत छथि जे ओ नीक जकाँ भानस कऽ सकैत छथि आ भानसमे पत्नीयोकेँ नीक जकाँ सहयोग करैत छथिन। मुदा छोटकी देयादिनीकेँ हुनक ई बोल अखरि जाइत छनि। ओ ई सहबाक लेल तैयार नहि छथि जे हुनक घरवला नोकर जकाँ भोजन बनयबाक काजेपर नियुक्ति कऽ देल जाथि। परिणामत: जतऽ दुनू परिवारक भानस एके ठाम होइत छलनि, आब दू ठाम होमऽ लगलनि आ कटुतो तेहन बढ़लनि जे एक-दोसरसँ बाजब सेहो बन्द भऽ गेलनि जकर कारणे सब गोटे एकसरुआपन भोगबाक हेतु शापित भऽ गेलाह।

एकर तेसर कथामे देह रूपी समाजक हेतु व्यक्तिकेँ अंगी-अंग भावसँ रहबाक प्रेरणा देल गेलैक अछि। वाक्, आँखि, कान, मन आदि व्यक्तिक हेतु विभिन्न विषयक उपभोगक संसाधन थिक मुदा जँ शरीरमे प्राणहि नहि रहत तँ ई सभटा बेकार भऽ जायत। तहिना व्यक्ति-व्यक्तिक सङोरसँ सुदृढ़ समाज व्यवस्था बनाओल जा सकैत अछि। 'समाजेक ई दायित्व थिक जे ओ नव-नव मेधा आ प्रतिभासँ सम्पन्न व्यक्तिक अन्वेषण कऽ ओकरासँ उपयुक्त काज लेबाक संयोजन करय। तेहने संयोजको बनबय। (पृ.- 155)

पन्द्रहम उल्लासमे बंगालक जीवात्मा जे कथा सुनौलनि अछि तकर माध्यमे ई विज्ञापित कयल गेल अछि जे मिथिलाक गाम छल-छद्मक भंडार बनि रहल अछि, अत: प्रवासोमे जीवन-यापन कऽ अन्तत: प्रत्यावर्तित लोक जँ अपना गामोमे कोनो नीक काज करऽ चाहताह, से संभव नहि भऽ सकैत छनि। परिणाम ई होइत छैक जे, जे केओ गामसँ एक बेर बाहर भऽ जाइत छथि ओ कतबो नीक पद, पदक ओ पदवी किएक ने धारण कऽ लेथि, अपना लेल गामक वातावरणकेँ उपयुक्त नहि बुझैत छथि। गाममे नागरिक-सुविधाक अभावक कारणे

सेहो एहन लोक सब गाम नहि घूरऽ चाहैत छथि। परिणामतः मिथिलाक गाम क्रमशः उजाड़ भेल जा रहल अछि।

उपन्यासकार एहि उल्लासक एक गोट कथामे एकटा कम्पनीक मैनेजर साहेबकेँ गाममे प्रत्यावर्तित दर्शौलनि अछि। मुदा गाम अबैत देरी मैनेजर साहेबक शोषण आरम्भ भऽ जाइत छनि। जेठ लोकनि पैंचक नामपर हिनकासँ जे किछु लैत छथिन से फेर घुरबैत नहि छथिन आ छोट लोक सभ सहायताक नामपर जे लऽ जाइत छनि तकरा तँ घुरयबाक प्रश्ने नहि। मुदा ताहिमे गामक लोकक आवश्यकतासँ बेसी धूर्तते रहैत छनि। एहि तरहक कृत्यक कारणे गाम-घरक प्रबुद्ध लोक क्रमशः गाम दिस आयब मूर्खतापूर्ण बुझऽ लगैत छथि।

उल्लासक दोसर कथा गुरगाँववला जीवात्मा द्वारा सुनाओल गेल अछि। एहिमे मिथिलामे होइत भ्रूण-हत्या ओ पारस्परिक एकताक सर्वथा अभावक तँ चित्रण कयले गेल अछि, संगहि मिथ्या अभिमान जन्य मोकदमेबाजी, परिवारक सदस्य लोकनिक बीच वैमनस्य ओ धूर्ततापूर्वक दोसराक धनक अपहरणक कथा कहल गेल अछि। एहिमे एकटा डिप्टी साहेबक कथा छनि जे गाममे शिक्षाक प्रचार हेतु एकटा विद्यालय खोलैत छथि आ तीनटा विद्यार्थीपर अभिभावककेँ एकटा विद्यार्थीकेँ निःशुल्क शिक्षा देबाक छूटक घोषणा कयने रहैत छथि। निःशुल्क शिक्षा दिअयबाक हेतु एकटा ओकील साहेब विभिन्न परिवारक छात्रक अभिभावक बनि एहि छूटक लाभ उठा लैत छथि आ ओकर असली अभिभावक सबसँ भरपूर फीस ओसूलि लैत छथि। हुनका सन-सन बिचौलियाक कारणे अन्ततः स्कूल बन्दे भऽ जाइत अछि।

एही उल्लासमे एकटा एहन भाइक कथा कहल गेल अछि जे स्वयं तँ दयादवादसँ भतबरी कयनहि रहैत छथि, अपन भाइक काजमे सेहो हुनका दयादवादसँ भतबरी करबा देबामे सफल होइत छथि। मुदा जखन हुनक अपन करतेबता उपस्थित होइत छनि तँ ओही भाइक माध्यमे दयादवादसँ मेलो कऽ लेबऽ चाहैत छथि। एहि तरहेँ गर्हित स्वार्थपरताक एकटा विशिष्ट नमूना प्रस्तुत भेल अछि।

एहि उल्लासमे उपन्यासकार मिथिलाक गाममे होइत भोजमे अपव्ययक दृष्टान्त सेहो प्रस्तुत कयलनि अछि जकर आडम्बर ओ

बर्बादीक कारण मिथिला आर्थिक दृष्टिसँ पछुआयल रहल अछि।

सोलहम उल्लासमे उदयनाचार्य, कुमारिल भट्ट, वाचस्पति मिश्र आदिक स्मरण करैत मिथिलाक गौरवकेँ पुनःस्थापित करबाक उपाय सभपर विवेचन करैत सीताक जन्मक कथा कहल गेल अछि। एहि कथाक माध्यमे ई निष्कर्ष निकालल गेल अछि जे जहिना राजर्षि जनक खेतमे हर चलाय सीता रूपी लक्ष्मीकेँ प्राप्त कयलनि तहिना मिथिलाक लोक शारीरिक श्रमक महत्ता जँ बुझय लगताह तँ सर्वथा सम्पन्न भऽ सकैत छथि।

एही उल्लासमे इहो वर्णन कयल गेल अछि जे मिथिलाक लोक शास्त्रीय वचनक अर्थकेँ अनर्थ लगा कऽ कोना अनेक दुर्गुण सभकेँ पोसि लेने छथि। जतऽ 'मथ्यन्ते रिपवो यत्र सा मिथिला'मे काम, क्रोध, मद, लोभ, मत्सर आदि शत्रुकेँ मथि कऽ निर्मूल करबाक अर्थ विवक्षित अछि, ततऽ मिथिलाक लोक साधारणसँ साधारण बातक हेतु अपने लोककेँ रिपु मानि ओकरा नेस्तनाबूद करबाक भाव पोसि लेने छथि। तहिना 'मिथिलावास समासाद्य जीवन्मुक्तो भवेन्नरः'क अर्थ ई निकालल जाइत अछि जे केवल मिथिलामे वासहिसँ लोक जीवनमुक्त भऽ जायत, जखन कि एकर अर्थ अछि जे मिथिलामे रहनिहार लोक अपन आचरणक शुचिता द्वारा जीवनमुक्त भऽ सकैत छथि। तहिना महर्षि नारदक योगी स्वरूपकेँ तँ कोनो मिथिलावासी ग्रहण नहि करऽ चाहैत छथि मुदा हुनक झगड़लगाओन वृत्तियेकेँ काम्य मानि लेने छथि आ ऋषि अगस्त्यक समस्त गुणक अवहेलना करैत हुनका द्वारा समुद्र सोखल जयबाक वृत्तिक अनुकरणटामे दत्तचित्त भऽ भोजादिमे अपन वर्चस्व स्थापित करऽ चाहैत छथि।

एतावता एहि उल्लासमे उपन्यासकार मिथिलाक लोकजीवनक अनेक त्रुटि सभक वर्णन कयलनि अछि जाहिसँ हिनक यथार्थवादी प्रवृत्तिक पोषण भेल अछि।

अन्तिम सत्रहम उल्लासमे जीवात्मा सभक द्वारा अनुभूत मिथिलाक सम्बन्धमे विचार करैत एकर उत्थान हेतु कर्त्तव्याकर्तव्यक निर्धारण कयल गेल अछि। एहि क्रममे मैथिलीकेँ एहि सामर्थ्यसँ युक्त कहल गेल अछि जे ई समस्त कृत्रिम अवरोधकेँ तोड़ि समाजकेँ उर्वर समरसताक महिमासँ आच्छादित कऽ सकैछ। तेँ जँ मैथिली उत्थान होयत तँ मिथिलाक समस्त

जड़ताकेँ तोड़ि पुनः एकटा नव मिथिलाक उदय भऽ सकैछ आ तखने मिथिलाक ग्राम-गणराज्य लोकमंगलकारी सिद्ध होयत।

उपन्यासक अंतमे **उत्सर्ग** शीर्षकसँ मैथिलीक आलोचकलोकनिक पूर्वाग्रहग्रस्त मानसिकतापर कशाघात करैत ई चेतना जगाओल गेल अछि जे ओ लोकनि सर्वथा निरपेक्ष रहि नीर-क्षीर विवेकक उपयोग करथि।

उपन्यासक शैली विवरणात्मक अछि। लेखक अपन समस्त स्थापनाकेँ पात्रक माध्यमे अभिव्यक्त कयलनि अछि। कथ्यक बीच-बीचमे सार्वजनीन सत्यक अवतारणा द्वारा अपन प्रतिपाद्यकेँ सम्पुष्ट कयलनि अछि। एकर किछु उदाहरण सभ द्रष्टव्य अछि–

'स्त्री भऽ कऽ जे जनमल अछि तकरा क्रोध तँ हयबेटा करतैक। क्रोध ओकर शृंगार थिक। ओ रुसबे करत। आ तेँ कोपभवनमे जाकऽ बैसब स्त्रीक विशेषाधिकार थिक, मर्यादाक रक्षा-कवच थिक।' (पृ.-40)

'नैतिक रूपसँ जे पदार्थ अग्राह्य हो ओकरा प्राप्त कऽ कऽ सुख वा संतोष यदि ककरो भेटियो जाइत अछि तँ ओ कहियो सराहल नहि जा सकैछ।' (पृ.-48)

'मिथिलाक माटिपर ततेक ने यज्ञ आ तर्क-मीमांसाक शास्त्रार्थ अदौसँ होइत रहल अछि जे एहि ठामक पंचमहाभूत आ तकर तन्मात्रो सभ तार्किक बनि गेल अछि आ ओहिसँ एहि ठामक लोको सभ तहिना प्रभावित भेल अछि। मिथिलाक लोकक बात अहाँ सोझे बुझि जायब से भइये ने सकैत अछि। ओहि हेतु अहाँकेँ अपन बुद्धिक अनुमान-खण्डकेँ जगबय पड़त। (पृ.-87)'

'रोगक अनुरूप उचित औषधिसँ दूर रहयवला रोगी कहियो स्वस्थ नहि भऽ सकैत अछि। मुदा समाजक केहनो अचेतावस्था किएक ने हो समय पर जँ ओकरा आपात्कालीन चिकित्सकीय वाहन उपलब्ध भऽ जाय तँ ओ अपटी खेतमे होमयवला अपन प्राणान्तसँ बचिये जायत। (पृ.-154) आदि।

विदितजीक **ग्राम-गणराज्य** वस्तुतः मिथिलाक ग्रामीण जीवनक नग्न यथार्थ थिक। एहिमे मिथिलाक लोकजीवनमे पसरल अहंभाव, अन्धविश्वास, अज्ञान, स्वार्थपरता, अकर्मण्यता, दुर्वह सेहन्ता, साम्प्रदायिक भेदभाव, मिथ्याभिमान, पलायनवाद, जातिवाद, धूर्त्तता, घोटालाबाजी, मुफ्तखोरी,

आलस्य, ठकैती, निर्लज्जता, आडम्बर, अपव्यय, कट्टरवादिता, जड़ता, संवेदनहीनता आदिकेँ ओकर समस्त नग्नता ओ भयावहतामे प्रस्तुत कयल गेल अछि। युगक प्रभावसँ एहि यथार्थमे होइत किछु परिवर्तनकेँ सेहो एहिमे आदर्शवादी दृष्टिकोणक संग प्रस्तुत कयल गेल अछि। समाधानक रूपमे मातृभाषा मैथिलीक उन्नयन द्वारा लोकजीवनमे समरसताक सृजन कऽ भव्य मिथिलाक कल्पना कयल गेल अछि। ई समाधान तर्कसंगत ओ वैज्ञानिक बुझना जाइत अछि। उपन्यासकार जखन कहैत छथि जे 'जाति, धर्म, वर्ण, स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष आ संघर्षक लौहपट्टिकासँ बनल पिजड़ामे आइ मिथिलाक भविष्य बाँचयवला सुग्गा स्वयं बन्द अछि। ओ बाहर होयबाक लेल ओहि लोहक पत्तीपर रहि-रहि कऽ अपन चाङुरसँ प्रहारो कऽ रहल अछि जे कहिया ई पिजड़ा टूटत जे हम मिथिलाक कंठवासिनी मैथिलीक भविष्य एक बेर पुनः लोककेँ सुनाबी? मुदा एखन तँ ओहि ठामक सभटा पढ़लो सुग्गा सभ बौके-बहीर बनल अछि, तखन ओहि पिजड़ाकेँ तोड़त के? (पृ.-191); तँ हुनक पीड़ा आ दिव्य मिथिलाक संकल्पनाक संकेत भेटैत अछि।

वस्तुतः ग्राम-गणराज्य मिथिलाक लोकजीवनक महाकाव्य थिक जाहिमे समकालीन मिथिलाक समाजमे व्याप्त अनेक अप्रिय प्रसंग आ प्रश्न सभकेँ उठाओल गेल अछि खाहे ओ सामाजिक हो, आर्थिक हो, राजनीतिक हो, व्यक्तिगत हो वा सामूहिक हो। लेखक अत्यन्त गंभीरता ओ अन्तरंगताक संग स्वातन्त्र्योत्तर मिथिलाक समाजमे होइत परिवर्तनोक चित्रांकन कयलनि अछि आ एकटा आदर्श मिथिला समाजक संकल्पना कयलनि अछि जे एकर पाठक समुदायकेँ चिन्तन ओ विमर्शक हेतु बेर-बेर आह्वान करैत रहत। एकरा उपन्यासकार द्वारा प्रस्तुत विलक्षण आ आदर्शोन्मुख यथार्थवादक परिणति कहल जा सकैछ।

●●●

अवदान-मूल्यांकन

- आचार्य 'सुमन'क दैनिक स्वदेश
- मैथिलीक भाषातात्त्विक अध्ययन आ सुभद्रझा
- मैथिली साहित्यक विकासमे जयकान्तमिश्रक योगदान
- सजीवनी समालोचना : रामदेवझा
- मैथिलीक लोकगाथा-अनुसंधान ओ मणिपद्म

आचार्य 'सुमन'क दैनिक स्वदेश

मिथिलाक गामक चौपाड़ि, सम्भ्रान्त लोकक दलान तथा मिथिलाक वर्त्तमान ओ भविष्यक आशादीपकेँ निष्कम्पित, सुशोभित ओ प्रज्ज्वलित रखबाक संदेश मिथिलाक लोकजीवनक भाषामे देबऽवला सक्षम दैनिकक तँ कथे नहि हो। मैथिलीमे दैनिक पत्रक यैह स्थिति रहल अछि जे एहि सूचना-प्राद्यौगिकीक युगहुमे आजुक तिथिमे एकेटा मैथिली दैनिक नाम गनयबाक हेतु वर्त्तमान अछि से थिक **मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश** जे लगभग एक साल धरि अंगुलि पाठ्य (Digital) ओ गंभीर पाठ्य (Hard) दुनू स्वरूपमे प्रकाशित होइत रहल मुदा सम्प्रति संभवत: केवल अंगुलि पाठ्ये बनल हुकहुक कऽ रहल अछि। पत्रकारितासँ बेसी साहित्यकारिताक परम्परित नीतिपर आधारित ई दैनिक दिनांक 26 दिसम्बर, 2021सँ मैथिली माध्यमे मधुबनीसँ प्रकाशित होमऽ लागल आ अपन आदर्श (Motto) 'मिथिलाक्षर साक्षरता अभियान', हरिमोहन झाक कृतिक पुन:प्रकाशन द्वारा मैथिलीक प्रचार-प्रसार ओ बहुधा नव तूरक साहित्यकारक केहनो कृतिकेँ मानक वर्तनी दिस अनुन्मुख रहि प्रकाशित करैत दैनिक पत्रक रूपमे छपैत-वितरित होइत रहल। मुदा आब ई कोनो समुद्धारकक प्रतीक्षामे जीवैत जा रहल अछि आ तेँ एकरो प्रयोगात्मके बूझल जयबाक चाही जखन कि एकर दुनू स्वरूपक देश-विदेशमे पाठकीयता दस लाख धरि कहल जाइत रहल अछि। तथापि प्रयोगात्मके सही मैथिलीमे पत्रक प्रकाशनक गौरवमय इतिहास छैक। अपन दुइ गोट मैथिली दैनिक पत्र क्रमश: **स्वदेश** ओ **मिथिला मिहिर**क माध्यमे ई राष्ट्रीय भाषिक क्षमताक परिचय दऽ चुकल अछि जाहिमे प्रथम दैनिकक द्रष्टा आ स्त्रष्टा छलाह मैथिली दधीचि आचार्य सुमनजी। परवर्त्तीकालमे कोलकातासँ **मैथिली समाद** ओ दरभंगासँ **मिथिला आवाज** सेहो मैथिलीमे दैनिकक असफल प्रयोग भेल छल।

दैनिक स्वदेश : प्रथम प्रयत्न

जनवरी 1948 इ. सँ दरभंगासँ आचार्य सुमनजीक सम्पादकत्वमे स्वदेश नामक मैथिली मासिकक प्रकाशन प्रारम्भ भेल छल जे छओ गोट अंक बहार भेलाक बाद बन्द भऽ गेल छल। हिनके प्रधान सम्पादकत्वमे दरभंगेसँ दैनिक स्वदेशक प्रकाशनक प्रथम प्रयत्न 9 अक्टूबर, 1955 इ. तदनुसार आश्विन कृष्ण अष्टमी उपरान्त मातृनवमी रविकेँ सिद्धियोगमे 1363 सालमे सफलीभूत भेल। एकर सम्पादन मंडलमे छलाह प्रो. धर्मप्रिय लाल, प. काञ्चीनाथझा 'किरण', प्रो. श्रीकृष्णमिश्र, प. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' आ सूर्यकान्त ठाकुर। एहि पत्रक आकार छल 11"x8"। एहिमे चारि गोट पृष्ठ रहैत छल आ मूल्य छलैक दू पाइ। ताहि समयमे ई मिथिला भाषाक एकमात्र आ उत्तर बिहारक प्रथम दैनिक पत्र होयबाक गौरव प्राप्त कयने छल। सिद्धियोगमे अवतरित ई पत्र मैथिली दैनिकक ऐतिहासिक सिद्धिकेँ प्राप्त कऽ सकल।

एहि पत्रक प्रथम पृष्ठक शीर्ष भागमे नामक दुनू कात मंजूषा (इयर पैनल)मे वामा कात वाल्मीकि ओ व्यासक तथा दहिना कात विद्यापति ओ तुलसीक एक एक गोट सुक्ति छपैत छल जकर स्वरूप क्रमशः ई छलैक–

'अपि स्वर्णमयी लंका न मे लक्ष्मण रोचते।
जननी जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी।।'–वाल्मीकि
'यदर्थं' क्षत्रिया सूते तस्य कालोऽयमागतः'–व्यास
'बालचंद विज्जावइ भासा
दुहु नहि लग्गई दुज्जन हासा'–विद्यापति
'ताते मैं अति अलप बखाने
थोड़े महु जानिहहिं सयाने'–तुलसी

ई चारू सदुक्तिये पत्रक प्रकाशनक मौलिक भावनाकेँ सहृदय धरि अभिव्यंजित करबामे पर्याप्त छल। पत्रक चारिम पृष्ठ पर दैनिक पञ्चांग रहैत छलैक जाहिमे नक्षत्र, राशि, तिथि, मास, दिन, सूर्योदय ओ सूर्यास्तक समयक संगहि गृहस्थोपयोगी अन्य सूचना सभ रहैत छल। पत्रक शेष भाग समाचार ओ विचारहिटाकेँ समर्पित छल, केवल प्रारंभिक अंकक तेसर पृष्ठ पर लोकपति सिंहक 'जय जय स्वदेश' कविता गृहीत

भेल छल तथा 6 दिसम्बर 1955क अंकक चारिम पृष्ठ पर मधुपजीक कविता 'बहेड़ाक रक्तदानी छात्र' अन्तर्भुक्त कयल गेल छल।

वस्तुतः ई पत्र कम आ **मैथिली मन्दिर**मे अर्चनाक दीप बेसी छल। एकरा माध्यमे आचार्य सुमन मिथिलाक लोकजीवनमे अपन मातृभाषाक प्रति अजस्त्र चेतनाकेँ जाग्रत करयबाक प्रयास कयने छलाह। सम्पादकीयमे हुनक प्राथमिक उद्‌गार ''महतो महीयान्'क युगमे 'अणोरणीयान्'क की संगति से मन्त्रद्रष्टा पूछल जाथु'' हुनक पत्रक स्थितिकेँ सहजहिँ स्पष्ट कऽ देने छल। तथापि एहि पत्रक माध्यमे ओ मैथिलीमे दैनिक पत्रक स्वयं मन्त्रद्रष्टा बनि गेलाह। 'महतो महीयान्'क हुनक स्वप्न आइ धरि मिथिलाक कोनो सपूत, की समुदाय, की संस्था पूर्ण नहि कऽ सकल अछि, तथापि जाहि दीपकेँ ओ स्वदेशक माध्यमे मैथिलीक अर्चनामे प्रस्तुत कयने छलाह तकरे आभासँ अनुप्राणित भऽ आइयो धरि मिथिलाक लेखक समुदाय मैथिलीमे लेखन-प्रकाशनक हेतु सर्वस्व समर्पित कऽ सकबाक संकल्पक संग अपन भाषा ओ साहित्यक संरक्षण-संवर्द्धनमे संलग्न रहलाह अछि। अभियानी स्वप्नद्रष्टा लोकनि दैनिकोक ओरिआओनसँ विरति नहि ग्रहण कयलनि अछि।

मैथिली पत्रकारिताक क्षेत्रमे आचार्य सुमनजीक ई अवदान वस्तुतः एकटा मिशन छल जे मैथिलीक अस्तित्व रक्षा, मिथिलाक लोकजीवनक अस्मिता, मौलिक अधिकारक जागरण ओ लोक शिक्षणक संदेशवाहक सिद्ध भेल। एहि पत्रक प्रत्येक अंकमे सूचनात्मक अग्रलेख किंवा सम्पादकीय रहैत छलैक जाहिमे प्रभावशाली शीर्षकक अन्तर्गत जनहितक समसामयिक विषयक वर्णन-विश्लेषण रहैत छल। उदाहरणार्थ 'नव कल्प' शीर्षक अन्तर्गत मिथिला प्रदेशक विकासक मार्ग प्रशस्त करबाक हेतु सरकारक ध्यान आकृष्ट करबासँ सम्बद्ध एहि अग्रलेखक किछु पाँती द्रष्टव्य–'शताब्दीक दासताक भस्म राशि पर राष्ट्रमे नव चेतना अंकुरित भै रहल अछि। रात्रिक शेष अंधकारकेँ चीरि प्राच्य सीमा पर अरुण किरण नव प्रभातक सूचना दै रहल अछि। हिम शिखरसँ सागर तीर धरि आत्मविकासक भावना जागरित अछि। आइ गंगा हिमारण्यक अन्तरालवर्ती तीरभुक्तिहुक उजड़ल उद्यानमे नव कल्पक उद्दाम लालसा स्वाभाविके।...भारत भाग्य विधाता एहू तीरवर्ती प्रदेशकेँ कनडेरियेँ

देखथु–दक्ष दक्षिण उत्तरवर्ती एहू अपन अंगक हेतु दक्षिण बनल रहथु, एहिसँ अधिक स्वदेशकेँ किछु कहबाक नहि। हम विश्वास करैत छी, मिथिला भाषाक विशाल क्षेत्र आब आन भाषाक चारागाह नहि बनल रहत'। (दैनिक स्वदेश, 6 नवम्बर 1955)।

स्वदेशक एहि प्रयत्नमे सम्पादकक नामे लिखल पत्र सभकेँ 'लोकमत' शीर्षक अधीन प्रकाशित कयल जाइत छल। एहिमे गृहीत सूचना सभ महत्वपूर्ण, उत्तेजक, समसामयिक, ज्ञानवर्धक, रोचक ओ परिवर्त्तनकारी होइत छल। सूचनाक शीर्षक सभ सम्पादकीय दक्षताक निर्देशक रहैत छल। सूचना सभ तत्कालीन विशिष्ट, तात्कालिक सामान्य ओ व्याख्यात्मक तीनू प्रकारक रहैत छल। एहिमे एक दिस जँ प्रचलित शब्दावली द्वारा शीर्षक निर्माण कयल जाइत छल तँ दोसर दिस मैथिलीक रूढ़ शब्दावलीक प्रयोग द्वारा सूचनाकेँ चित्ताकर्षक बनयबाक सफल प्रयत्न होइत छल। किछु विशिष्ट शीर्षक देखल जाय–'चुनावमे 'एडहॉक' कमीटी बनबाक संभावना?' कांग्रेस क्षेत्रमे चरचा गरम : दुनू दलक दौड़बरहा', शिशुकेँ चौमुखी शिक्षा, नटुआक वेशमे डकैत : गोनड़िमे लपेटल बन्दूक भेटल, उद्जन बम परीक्षण, दिल्ली दलमलित, खजौलीमे गोली इत्यादि। एहि तरहेँ सम्पादकीय ओ अग्रलेखमे जँ आचार्य सुमनजीक संस्कृतनिष्ठ, संक्षिप्त ओ गस्सल वाक्य प्रयोग देखि पड़ैछ तँ समाचारमे प्रचलित शब्दावलीक प्रयोगक प्रति रुझान देखि पड़ैछ। अपन एही औदात्यक बलेँ स्वदेश मैथिलीक शब्द भंडारकेँ सम्पुष्ट करैत रहल।

एहि पत्रक प्रत्येक अंकमे व्यंग्य स्तंभ रहैत छल। एकर शीर्षक रहैत छलैक–हमरा किछु कहऽ दियऽ, आइ हमरो सुनू, हमरा सूनू, आइ हमरे सुनू इत्यादि। लेखक छलाह प. चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर', छद्मनाम सभ रहैत छलनि–उचितराम, बचकानी मड़र, खौकारलाल, रामचरन महतो आदि। हिनक समसामयिक विषयपरक व्यंग्य सभ सटीक, तीक्ष्ण, परिहासमूलक, विदग्धतापूर्ण ओ शूलवेधी रहैत छल। मुदा ताहूसँ अधिक एहि व्यंग्य सभक महत्त्व एहि लऽ कऽ अछि जे ई मिथिलाक ग्राम्य भाषाक बानगी होइत छल। एहि स्तंभक माध्यमे स्वदेश पढ़निहारकेँ लगैत छलैक जे ओ निछच्छ देहातक कोनो घूर तरक कोनो वज्र देहातीसँ गप्प कऽ रहल हो। एहि स्तंभ सभक माध्यमे मैथिलीक ग्राम्य भाषाकेँ

संस्कारित कयल गेलैक आ ओकरा साहित्यिकता प्रदान कयल गेलैक। संगहि ई भ्रान्ति दूर करबाक प्रयास भेलैक जे बुद्धिजीवीक स्तरीय भाषेटा मैथिली नहि थिकैक, ग्राम्य जीवनक प्रचलित भाषा, वर्गीय भाषा सेहो। मैथिलीक मोहावरा, लोकोक्ति, ग्राम्य शैली, अभिव्यक्तिक वैविध्य आदि एहि स्तंभ सभमे प्रकट होइत रहल, तेँ भाषा-साहित्यक ई अमूल्य निधि थिक। उदाहरणक हेतु एहि स्तंभमे प्रयुक्त किछु कहबीक बानगी द्रष्टव्य-'एक दिस गुरू गोसञिञा, एक दिस कुर्थी बौग', 'हड़बड़ी बिआह तेँ कनपट्टी सिन्नुर' इत्यादि।

एही तरहेँ समाचार ओ विचारक अतिरिक्त ई पत्र किछु सामान्य जनोपयोगी सूचना-समाचार सभ सेहो समाविष्ट कयने रहैत छल यथा खेलधूप, फिल्मलोकमे, दरभंगा बाजार भाव, दरभंगासँ रेल छुटबाक समय आदि। क्वचित्-कदाचित् किछु विज्ञापनो जे सर्वथा व्यक्तिगत होइत छल होयत, एहिमे छपैत रहल, मुदा तकर आमदनी पत्रक हेतु ऊँटक मुँहमे जीरेक फोड़न जकाँ छल होयत।

राजनीति ओ साहित्यिकतासँ निरपेक्ष दैनिक स्वदेशक ई प्रयत्न परिमार्जित सम्पादकीय, चहटगर व्यंग्य, प्रसंगानुकूल शब्द-सम्पदाक निर्माण, भाषिक चेतनाक प्रस्फुटनमे सहायता, लोकभाषाकेँ साहित्यिक भाषा बनयबाक पटुता, आचार्य सुमनजीक संस्कृतनिष्ठ संक्षिप्त सम्पादकीय आदिक बल पर बुद्धिजीवीवर्गक मान्य दैनिक भऽ गेल छल। मुदा पूर्णतः मैथिली भाषा-सेवाक भावनापर आश्रित ई पत्र पूँजी ओ सरंजामक अभावमे अपन रिक्थ छोड़ि 27 दिसम्बर 1955सँ स्थगित भऽ गेल।

मिथिलाक बुद्धिजीवीवर्ग खास कऽ शिक्षक, वकील, डाक्टर आदिक लेल स्वदेश दैनिक स्थगित भेलाक बादो 'जय स्वदेश'क नाराक रूपमे जीवित रहल, जकर प्रयोग स्वदेशक कार्यकर्त्ता ओ ग्राहक पर्य्यन्त पारस्परिक अभिवादनक हेतु कतोक वर्ष धरि करैत रहलाह। स्वदेशक स्थगन मिथिला-मैथिल-मैथिलीकेँ एकटा दराड़ि, एकटा प्रश्नचिह्न छोड़ि गेलैक जकर प्रतिपूर्ति आइयो प्रत्याशिते अछि।

दैनिक स्वदेश : दोसर प्रयोग क्रम

दैनिक स्वदेशक प्रथम प्रयत्नक विरामक लगभग अढ़ाइ दशकक

बादो एहन प्रयत्नक कोनो अनुगामी सोझाँ नहि आबि सकलाह। मैथिली दैनिक शून्यांके पर रहल। एहि अवधि धरि मैथिलीक चतुर्मुखी विकासक मार्ग फूजि गेल छलैक। ई केन्द्रीय संस्था साहित्य अकादेमीमे तँ प्रतिष्ठापित भइये चुकल छल, शत-सहस्रशः शिक्षक, कर्मी, गायक-कविलोकनि मैथिली भाषाक उद्योगसँ आजीविका-आय ग्रहण करऽ लागल छलाह। मैथिली विद्यार्थी ओ पाठक लोकनिक एकटा विशाल समूह सम्पूर्ण मिथिलाञ्चलमे तैयार भऽ चुकल छल। आचार्य सुमनजीक हृदयमे मैथिलीमे दैनिक नहि होयबाक टीस छलनिहेँ। आठम अनुसूचीमे मैथिलीकेँ स्थान देबाक मांग जोर पकड़ि रहल छल, मुदा तकर प्राथमिक आधारमे एहि भाषामे एकटा दैनिक पत्र होयब सेहो वांछित छल। आचार्य सुमनजीक प्रेस अर्थात् राजकुमारगंज, दरभंगा डेरापर संध्याकाल कऽ साहित्यिक लोकनिक जुटान भेल करय। एही जुटानमे स्वदेशक पुनःप्रकाशनक योजना बनल। पहिल प्रयत्नक स्वदेशक कार्यकर्त्तालोकनि जनिक समूह स्वदेश गोष्ठी कहबैत छल, जीवन्त भऽ उठलाह। क्रमशः एहि नवका आ पुनःजीवित स्वदेश-गोष्ठीमे मातृभाषानुरागी लोकनि जुड़ैत गेलाह। एहि गोष्ठीक समर्पित ओ आबद्ध सदस्यलोकनि द्वारा मैथिलीक प्रेमक संबल पाबि आचार्य सुमनजीक पूँजी ओ प्रेसक सरंजाम पर आधारित दैनिक स्वदेशक पुनःप्रकाशन प्रवेशांकक रूपमे 1981 इ.क भारतीय स्वतंत्रता दिवसक अवसर पर कयल गेल। क्रमशः साप्ताहिक, अर्द्धसाप्ताहिक ओ द्विदैनिकसँ ई दैनिक स्वरूपमे प्रकाशित होअऽ लागल। ई क्रम 16 अक्टूबर 1983 धरि अवश्य चलल जाहि मध्य कुल 262 गोट अंक प्रकाशित भेल।

एहि पत्रक एहि प्रयोगक्रमक आकार कहियो 16"x14" छल, तँ कहियो 15"x12" आ कहियो 12"x8"। कहियो एहिमे पृष्ठ संख्या चारि रहैत छल तँ कहियो दुइये तथा कहियो-कहियो आठो। एकर मूल्य क्रमशः बीस पाइसँ लऽ कऽ पचास पाइ धरि गेल। एकर निबन्धन संख्या छल डी.बी.एन.-13 आर.एन. 39582/82।

एहि प्रयोगक्रममे अंकक प्रथम पृष्ठ पर व्यासक उक्तिकेँ किञ्चित परिमार्जित रूपमे अंकित कयल जाइत रहल जकर स्वरूप छल–'यदर्थं जननी सूते तस्य कालोऽयमागतः'। ई सूत्रवाक्य अधिकाधिक मातृभाषाप्रेमीकेँ स्वदेशक संग जोड़लक आ सुमनजीक एहि पत्रक

संकल्प, अवधारणा ओ संदेशकेँ विज्ञापित करैत रहल।

पत्रक चारिम पृष्ठ पर बहुधा अंकित रहैत छल–

एक कप चाह चाहे दू खिल्ली पान।
छोड़ि कऽ सकैत छी स्वदेश केर मान।।
पाठ जे पढ़ैत छी पढ़ैत अपन जाउ।
किन्तु मातृभाषाकेँ बिसरू ने बाउ।।

एहि प्रकारेँ इहो प्रयोगक्रम पत्रकारितासँ बेसी मातृभाषाक प्रति प्रेम जगयबाक बुलेटिन छल।

एहि पत्रक स्थिति, साधनहीनता, दुर्बलता, व्यवस्था, लक्ष्य, उद्देश्य ओ चिंतन कोन प्रकारक रहल से 24 सितम्बर, 1983 इ. कऽ प्रकाशित अंकमे अवस्थित 'स्वदेशक आह्वान' शीर्षक सम्पादकीयमे द्रष्टव्य अछि जकरा यथावत् राखल जाइछ–''प्रिय बन्धु, स्वदेश'क प्रकाशनमे जाहि कोनो कारणेँ हो–जे सब त्रुटि होइत रहल अछि– सामग्री, शुद्धता, वितरण ओ व्यवस्थामे जतेक स्खलन–अनियमितता जखन-तखन होइत रहल अछि–ताहिसँ ग्राहके-अनुग्राहके नहि, पाठके-आलोचके नहि, सेवा व्यस्त संपादक-प्रकाशकमंडलहुकेँ कम असन्तोष नहि। ओहि सब त्रुटिकेँ दूर करबाक हेतु घोर विचार-मन्थन चलि रहल अछि।

घसल टाइपक नवीकरण, बिजलीक अव्यवस्था दूर करबाक हेतु जेनरेटर, वितरण लेल स्वयंसेवीक संगहि वेतनभोगी वितरक, स्थान-स्थानमे संवादक सह प्रचारक एवं यथेष्ट संख्यामे प्रेस कर्मचारीक व्यवस्था तथा कागज आदि अन्य संसाधनक व्यवस्था सद्यः अपेक्षित अछि। परंच 'सर्वारम्भे अर्थमूलाः प्रसिद्धः।'

अद्यावधि स्थिति तँ यैह रहल जे किछु सहस्रक आय जुटाय, लक्षादिक राशि गमाय, दू वर्षक समय-शक्ति लगाय, उद्देश्यक यथार्थ स्पर्शो नहि कैल जा सकल अछि, पत्रकेँ वास्तविक दैनिकक स्तर नहि देल जा सकल अछि। केवल प्रयास मात्र जारी अछि आ जारी रहत जे मैथिलीक पत्रकारिताकेँ कोना सफल रूप देल जाय। साढ़े तीन कोटि मैथिलीभाषीक अपन एकोटा दैनिक नहि। मिथिला-मैथिलीकेँ मुख्यता देनिहार समाचार-विचारक दैनन्दिन संवाहक अपन कोनो साधन नहि। किन्तु एहि दुःसह अंक-कलंकक परिमार्जन व्यक्ति नहि समष्टिक साध्य

थिक। मिथिलाक भूभागकेँ अपन भाषा-संस्कृति, कला-कौशल, लिपि-शिल्प ओ जीवन-पद्धतिक परिष्कारक संग कृषि-उद्योग, शिक्षा-स्वास्थ्य, यातायात आदिक अभाव-अभियोगकेँ दूर करबाक लेल जाहि सामाजिक-राजनीतिक ओ सांस्कृतिक चेतना जगैबाक अहर्निश आवश्यकता अछि तकरा स्वर देबा लेल, लोकमतकेँ अभिव्यक्ति देबा लेल, सबल, स्वस्थ, नियमित आधुनिक साधनसँ सम्पन्न दैनिकक अनिवार्यताक अनुभव व्यक्ति-व्यक्तिकेँ होइत रहल अछि।

स्वदेश ओही भावनासँ कार्यक्षेत्रमे साहस बटोरि अवतीर्ण भेल अछि। एहिमे सन्देह नहि जे अनेको भावुक सहृदय एकरा असीम स्नेह देलनि अछि, हुनकेलोकनिक बल-संबल पर ई उच्छ्वासित अछि। किन्तु इहो तथ्य नुकैल नहि अछि जे जनिकालोकनिसँ सहभागी बनबाक अखंड विश्वास सहज छल ओ कनडेरियहु एम्हर दृष्टिपात नहि कैल। संगहि इहो सत्य जे अनेक स्थल ओ व्यक्ति-समाजमे स्वदेशकेँ पहुँचैबाक संघटनो नहि कैल जा सकल अछि।

एहि घोर अर्थयुगमे केवल साहस वा संकल्पसँ भावना वा भक्तिसँ काज नहि चलैछ, एहि लेल चाही अर्थशक्ति, प्रचुर सहयोग राशि। आइ तकरहु मैथिलीभाषी समाजमे कमी नहि। वाग्विलासमे, मनोरंजन-उल्लासमे, प्रदर्शन-प्रकाशमे नगर-नगर, डगर-डगर ओ घर-घरमे अर्थ भाफ जकाँ उड़ि रहल अछि। आवश्यकता अछि एहि दिशामे समाजक ध्यान आकृष्ट होयबाक-सामाजिक कार्यमे सामूहिक सहयोग भावना जगबाक, जाहि लेल तत्काल वांछित अछि संपर्क अभियान, संस्था-संघटनक संधान, व्यक्ति-व्यक्तिक प्रति आह्वान। यैह सब एहि बीच स्वदेशक अग्रिम योजनाक प्रावधान रहत।

एहि सब क्रिया-कल्प लेल पारम्परिक वैचारिक आदान-प्रदान एवं सम्पर्क हेतु 'स्वदेश' तत्काल किछु सप्ताह दैनिक रूपमे विरमित होइत, रविवासरीय अंक द्वारा सेवापथपर अग्रसर होयत जाहिसँ ओ शीघ्रे पुनः नवीन उत्साहेँ नव रूप-परिवेशमे संचालित होइत रहय। आस्था ओ पूर्ण विश्वासक संग साग्रह सानुनय अनुरोध जे **स्वदेश**क साधनकेँ पूर्णता पर पहुँचैबाक हेतु मातृभाषानुरागी मिथिला-मैथिलीक संस्कारी उदार महानुभाव एवं उत्साहप्रवण तरुण वर्ग कृपया अपन सहयोगसँ कृतार्थ

करथि जाहिसँ अभावक दुर्दिन दूर हो–बाधाक उमड़ैत मेघ छँटि-छुटि जाय एवं साधनक शरद स्वच्छ वातावरण प्रस्तुत कऽ सकय। स्वदेशक आह्वान अछि–'तस्य कालोऽयमागतः।'

उपरिलिखित सम्पादकीय स्वदेशक द्वितीय प्रयोगक्रमक यात्रा, तकर कठिनता, संबल ओ कठिनताक निवारणक उपाय सबपर साङ्गोपाङ्ग टिप्पणी अछि जाहिसँ अधिक एहि पत्रक सम्बन्धमे कहले की जा सकैछ?

एहि प्रयोगक्रममे स्वदेश बेसी प्रौढ़ मुदा स्वभावतः कम उर्जस्वित रहल। एकर बाह्य स्वरूप भने बदलि गेल छलैक मुदा अन्तःसंरचनाक पूँजी, प्रेस, कामगार, संवादवाहक, वितरण प्रणाली आदिमे कोनो खास परिवर्त्तन नहि भऽ सकलैक आ ई जनसहयोग पर जेना-तेना बहार होइत रहल। परिमाणतः पृष्ठ संख्या, आकार आदि तँ प्रभावित होइते रहलैक, आवृत्तिपर सेहो असरि पड़लैक। एतऽ धरि जे एकर कतोक अंकमे सम्पादकीय वा अग्रलेखोक अभाव रहऽ लगलैक। एहिमे विश्वमंच, मिथिलांचलक चहल-पहल, स्थानीय, लोकमत, यत्र-तत्र-सर्वत्र, अभाव-अभियोजन, सुभाषित, अमृतवाणी, कतरन ओ सिकताकण, विचार-चर्चा आदि पूरक समाचार ओ विचारक कालम भितरका पृष्ठ सभमे रहैल छल। मुख पृष्ठक समाचार बेस सारगर्भित ओ सुनियोजित रहैत छल। किछु महत्त्वपूर्ण सूचना तथा रेलवे-बसक दरभंगासँ प्रस्थानक सूचना सेहो छपैत छल। एकर व्यंग्य स्तम्भ प. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'जी सैह लिखैत रहलाह जकर विभिन्न शीर्षक सभ होइत छल–चेलारामक चौल, पुन्नीपाठकक पसाठ, खोखाइसिंहक खखास, उचितरामक उचिती, कैलूकमतीक कूही। व्यंग्य स्तम्भ कतेक तीक्ष्ण, समसामयिक ओ ग्राम्य भाषापरक होइत छल तकर एकटा बानगी–'महामान्यवर सम्पादकजी, स्वदेश अमर हो। उचितराम एन्नी खूब अकबार पढ़ऽ लागल छैथ। अपनेकेँ स्वदेश पढ़ैत-पढ़ैत केनाहितो कऽ अरियावरथान, हिन्दुस्तार, आज ई सब एकबार के उनटा-पुनटा कऽ पैढ़ लैत छैथ। ई जे रूइच जगलनि गऽ से सब अपने के स्वदेश के परभाव सऽ। से सम्पादकजी, उचितराम एक समेचार पढ़लैथ कानपुर के। समेचार रहै जे टेलीफोन विभागमे 5 करोड़ के घोटाला।

सम्पादकजी, उचितरामके विचार से ऐसन समाचार कोनो समेचार भेलै? दस बरिस पहिने जेकरा लोक भ्रष्टाचार कहै छलै गऽ से आब

भ्रष्टाचार रह गेलै? भ्रष्ट आदमी जे आचार करे से ने भ्रष्टाचार भेल, महज आइ जे जुग-जवानामे जखनी अपन-अपन घर भरे के हूमाहूमी मचल ऐछ, चपरासी रहो खाहे किरानी-अफसर रहौथ, खाहे मुनिस्टर, सब दूध के धोल छैथ, ताही सऽ जेन्नी जाउ तेन्नी माछी भिन-भिन करैत मिलैयऽ।

सम्पादकजी! मुनिस्टरके भय रहै छैक जे कखनी ई कुर्सी ऐछ आ कखनी घसकि जैत तेकर कोन ठेकाना? तखनी तऽ जाले ऐ पर छिकी ताले पीढ़ी के वास्ते कमाके नै रैख लेब तऽ बादमे के जाने सियाराम गती। अफसर आउर आइ ऐठिन छैथ काइल्ह बदलि कऽ कहाँ फेक देत से के जनैयऽ? ताही सऽ झोर के जरे जे कुटिया आइब जाइयऽ से छोड़ै के नै चाही। आब तऽ राजपाट केकरो नै, तऽ जेहे हाथ सेहे साथ।... अपनेहीक परेमी उचितराम (16.02.82)।

एहि प्रयोगक्रमक सम्पादकीय सभ सेहो पठनीय ओ मननीय रहैत छल। एहि प्रयोगक कतोक आकर्षक शीर्षक सभ छल–किमाश्चर्यमत: परम्, फेर चौंआ बच्चा, प्राथमिक शिक्षा समस्या : जड़ि सुखायल जाइछ फुनगीपर पानि, ई परीक्षा थिक की हूराहूरी, रेडियोवाला खेत-खरिहानमे, आपूर्तिक चुस्ती : उपभोक्ताक मस्ती, सर्पदंश वा नागदेवताक अभिशाप, संयोग वा दैवी चमत्कार, कार इंजनमे रगड़-रपट : अनुमंडल पदाधिकारीक समाङक रोम भंगो नहि, आनक झगड़ा अपन कपार आदि।

परवर्तीकालमे स्वदेशक ई प्रयोगक्रम समाचार-विचारकेँ प्राथमिकता दैतो साहित्यकेँ अंगीकृत करऽ लागल। एहि क्रममे स्थानपूर्तिक हेतु विद्यापति, आचार्य सुमन, अमर, ईशनाथ झा, दामोदरलालदास, आरसीप्रसाद सिंह, चन्द्रभानुसिंह आदिक कविता समाविष्ट कयल गेल। जाहि कवि लोकनिक कविता एहि पत्रमे प्रकाशित भेल ताहिमे प्रमुख छथि–जीवकान्त, मायानन्दमिश्र, रमानाथमिश्र 'मिहिर', कुलानन्द झा, अम्बिकामिश्र, दुर्गाकुमारीझा, रामचैतन्यधीरज, देवेन्द्रझा, गोविन्दझा, रवीन्द्रनाथठाकुर, सिंहवाड़ानन्द, लक्ष्मीनारायण ठाकुर 'ऊर्मिलेश', विद्याधरमिश्र, माधवकश्यप आदि। एही प्रयोगक्रममे प. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर'जीक **दुविधा** ओ डा. धीरेन्द्रनाथ मिश्रक **कनिञाहरण** कथा छपल। कमलाकान्त झाक कतोक मनोरंजक प्रसंगक वर्णन एहि पत्रक रंग-व्यंग्य शीर्ष द्वारा प्रकाशित भेल। हरिमोहनझाक

ख्यात संस्मरण **ओ दरभंगा : ई दरभंगा** एही पत्रमे प्रथम प्रकाश पओलक। डा. रामदेवझाक शोधपूर्ण लोकगाथा **दीना भदरी** एही प्रयोगक्रममे प्रकाशित भेल। एहि पंक्तिक लेखकक कतोक लोकगाथा जे आब **लोकजीवन ओ लोकसाहित्य** पोथीमे समाहित अछि, एही प्रयोगक्रममे स्थान पओने छल। केवलाझाक नामे श्यामसिंहक गाथा सेहो एकर कतोक अंकमे छपल छल। स्वयं आचार्य सुमन एक गोट अंग्रेजी कथाक संक्षेपिका मैथिलीमे एहि माध्यमे प्रस्तुत कयने छलाह। तदतिरिक्त विशेष लेखमालाक अन्तर्गत ई पत्र विभिन्न विषयपर डा. राधानन्दनझा, प. रामनन्दनमिश्र, शशिनाथझा, प्रबोधकुमारझा, एल.पी.सिंह आदिक निबन्ध सेहो प्रकाशित कयलक आ मैथिलीक विभिन्न विधाकेँ सम्पुष्ट करैत रहल।

एहि तरहेँ दैनिक स्वदेशक ई दोसर प्रयोगक्रम मैथिलीमे दैनिक प्रयोगकेँ एक बेर फेर जीवन प्रदान कयने रहल, पत्रकारिताक समाचार-विचारपरकताकेँ मैथिलीक माध्यमे प्रस्तुत करैत रहल आ साहित्यिक पत्रकारिताक डेगहुमे डेग मिलबैत रहल।

यावत् मैथिलीक भाषिक ओ साहित्यिक स्वरूप रहत, स्वदेशकेँ बिसरल नहि जा सकैछ आ ने ओकर मंत्रद्रष्टा आ स्रष्टा दधीचि सुमनेजीकेँ। हुनक प्रथम पुण्यस्मृति तिथि 5 मार्च, 2003 छलनि आ ई तिथि प्रतिवर्ष आबि ओहि युगचेताक स्मरण करबैत रहल अछि। एहि बीच माननीय दिवंगत प्रधानमंत्री अटलबिहारी वाजपेयी ओ लालकृष्ण आडवाणीक प्रसादेँ मैथिली संविधान-संशोधनपूर्वक आठम अनुसूचीमे सम्मिलित भऽ गेल अछि आ तकर लाभो सेन्ट्रल इन्स्टीट्यूट ऑफ इडियन लैंग्वेजेज (CIIL) सदृश संस्थादिसँ भेटऽ लगलैक अछि।। मुदा की मैथिली स्वदेशक समानान्तरो सही, निरन्तरगामी दैनिक पत्र प्रकाशित करबामे सक्षम भऽ सकल अछि? ई प्रश्न मैथिली अनुरागी लोकनिकेँ यक्ष-प्रश्न जकाँ मथैत रहतनि। मुदा से कते दिन धरि?

●●●

मैथिलीक भाषातात्त्विक अध्ययन ओ सुभद्रझा

डा. सुभद्रझा भारतक विख्यात भाषाशास्त्रीक रूपमे समादृत छलाह। मैथिलीकेँ भाषा वैज्ञानिक आधार प्रदान कऽ ई एहि अति प्राचीन ओ साहित्य-समृद्ध भाषाकेँ आधुनिक भारतीय भाषा मध्य स्थापित करबामे अपूर्व योगदान कयने छलाह। हिनका द्वारा रचित 'द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज' मैथिली भाषा विषयक गौरव ग्रंथ थिक। ई ग्रंथ हिनका द्वारा पटना विश्वविद्यालयक डी.लिट् उपाधिक हेतु रचित शोध प्रबंध छल। एही प्रबंधपर हिनका 1944 ई.मे डी.लिट्क उपाधि प्राप्त भेल छलनि।

डा. सुभद्रझाक आर्विभाव ओहि कालखण्डमे भेल छलनि जखन मैथिलीमे नवजागरणक सूत्रपात भऽ रहल छल। एक दिस मैथिलीक रचनाकारलोकनि साहित्यक विभिन्न विधामे रचना कऽ एहि भाषाक साहित्यिक समृद्धिमे जुटल छलाह, तँ दोसर दिस एहि भाषाक भाषिक अस्तित्वक रक्षाक हेतु विद्वानलोकनि संघर्ष कऽ रहल छलाह। मैथिली भाषी क्षेत्रहुमे मैथिली भाषाकेँ मान्यता प्राप्त नहि छलैक आ हिन्दीक विद्वानलोकनि एकरा हिन्दीक उपभाषाक रूपमे स्थापित कऽ एहि भाषाकेँ गीड़ि जयबाक षड्यन्त्र चला रहल छलाह। एहन समयमे मैथिलीक भाषातात्त्विक अध्ययन प्रस्तुत कऽ डा. सुभद्रझा मैथिलीक अस्तित्वक रक्षा कयने छलाह आ एकरा स्वतंत्र आधुनिक भारतीय भाषाक रूपमे स्थापित करबामे सफल भेल छलाह। हिन्दीक विद्वानलोकनिक कुचक्रकेँ नष्ट करबाक प्रति हिनक सन्नद्धता 'द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज'क भूमिकामे एहि रूपेँ उद्धृत भेल अछि–'Maithili has suffered grievious'y on account of Hindustani as the medium of instruction in the Maithili speaking area. Maithili has not been recognised by the Bihar

government as an independent language and still there are persons who believe that Maithili is but a dialect of Hindi. It would have died a natural death, had not the lovers and speakers of this language raised a voice for its recognition as an independent language.

डा. झाक उपर्युक्त चिन्तनधारापर आधृत हिनक उक्त ग्रंथ अंग्रेजीक माध्यमे प्रस्तुत भऽ विश्व भरिक भाषाशास्त्री लोकनिकेँ ई मानबाक हेतु बाध्य कयलक जे भाषावैज्ञानिक आधारहुपर मैथिली एक गोट स्वतंत्र भाषा थिक।

मैथिलीक महत्ताकेँ विज्ञापित करैत डा. सुभद्रझाक स्पष्ट मान्यता छलनि जे मैथिली बिहारी भाषा (मैथिली, मगही, भोजपुरी) मध्य एकमात्र एहन भाषा थिक जकर किछु साहित्यो छैक। नव्य भारतीय आर्यभाषाक विकासक समस्त कालमे एकर साहित्यिक अभिलेख प्राप्त होइत छैक। मध्यकालमे ई पूर्वी भारतक समस्त भाषा मध्य साहित्यिक भाषाक रूपमे प्रतिष्ठा प्राप्त कयने छल। बंगला, असमी, उड़िया, नेपाली आदि भाषापर प्रचुर प्रभावकारी ई भाषा भाषाशास्त्रीय दृष्टिकोणसँ सेहो अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रहल अछि। अवश्ये ई भाषा पूर्वी हिन्दी (वस्तुतः भोजपुरी) आ बंगलाक मध्यवर्ती भाषा थिक।

'द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज'मे मैथिली भाषाक प्रत्येक पक्षपर सविस्तर विचार कयल गेल अछि। एहिमे आरम्भमे भूमिकामे मिथिला, मैथिली, मैथिली भाषी क्षेत्र, ओकर चौहद्दी, मैथिलीक उपभाषा, विभिन्न आधुनिक भारतीय आर्यभाषा यथा मगही, भोजपुरी, उड़िया, बंगला, असमी, पूर्वी हिन्दी, पश्चिमी हिन्दी, नेपाली, राजस्थानी, गुजराती, सिन्धी, पंजाबी, कश्मीरी, मराठी आदिक संग मैथिलीक तुलना, भारतीय आर्यभाषा मध्य मैथिलीक स्थान, मैथिलीक उत्पत्ति, एकर महत्त्व, मैथिली भाषाभाषी लोकनिक संख्या, मैथिलीक प्रारम्भिक स्वरूप, मैथिली भाषाक अध्ययनक क्षेत्रमे पूर्वकृत कार्य, मैथिलीक किछु विशिष्टता, मैथिली लिपि आदिक संक्षिप्त परिचय देल गेल अछि।

सम्पूर्ण ग्रंथ सोलह अध्यायमे विभक्त अछि। भूमिकाक बाद क्रमशः स्वर ध्वनि, व्यञ्जन ध्वनि, प्रत्यय ओ उपसर्ग, संज्ञा, विशेषण,

संख्यावाची शब्द, सर्वनाम, क्रियापद, अव्यय, योजक, विस्मयादि बोधक, विभाजक, प्रबलतासूचक शब्द, वाक्य रचना, अर्थविचार आदिक क्रमिक ओ वैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत भेल अछि। प्रत्येक अध्यायमे प्रत्येक स्थापनासँ सम्बद्ध उदाहरण, अपवाद ओ मूलक उल्लेख द्वारा विद्वान लेखक मैथिलीक भाषिक स्वरूपकेँ स्पष्ट कयने छथि। उदाहरणक प्रस्तुतिमे विद्वान लेखक मध्यकालीन ओ आधुनिक मैथिली दुनूक शब्दावलीकेँ संग-संग रखैत एकर भाषिक परिवर्त्तनकेँ रेखांकित करैत देखि पड़ैत छथि। सम्पूर्ण ग्रंथ 822 गोट अनुच्छेदमे विभक्त अछि।

डा. झा एहि ग्रंथमे मैथिलीक सात गोट उपभाषाक उल्लेख कयने छथि क्रमशः मानक, दक्षिणी, पूर्वी, छिकाछिकी, पश्चिमी, जोलही आ केन्द्रीय। एहि बोली सभक क्षेत्र निर्धारण कऽ ई मैथिलीक विस्तृत परिक्षेत्रक अभिज्ञान तँ करौनहि छथि संगहि पूर्वी मैथिली ओ केन्द्रीय मैथिलीकेँ सेहो क्षेत्रीय वैशिष्ट्यक आधार पर दू-दू भागमे बँटने छथि। एहि क्रममे ओ पूर्वी मैथिलीक दू गोट बोलीमे प्रथमकेँ पूर्णिआक बोली तथा अपरकेँ मालदा आ दिनाजपुरक मैथिली कहने छथि। केन्द्रीय बोलीकेँ सेहो ई पूर्वी आ पश्चिमी दू भागमे विभक्त करबाक पक्षपाती छथि। मैथिलीक कालविभाजनमे सेहो हिनक अपन अभिमत छनि आ ई एकर प्राचीन काल 1000 इ. सँ 1300 इ. धरि, मध्यकाल 1300 इ. सँ 1800 इ. धरि तथा आधुनिक काल 1800 इ.क बादक कालकेँ मानैत छथि।

डा. सुभद्रझा शब्द-साधनमे प्रयुक्त प्रत्यय ओ उपसर्ग विधान पर प्रचुर कार्य कयने छथि। ई कृदन्त, तद्धितान्त, क्रियावाची विशेषण ओ नामक निर्माण करऽवला लगभग साढ़े चारि सय प्रत्यय पर विचार कयने छलाह तथा ओकर मूलकेँ तकबाक प्रयास कयने छलाह। हिनक स्पष्ट स्थापना छलनि जे मैथिलीमे अनेक एहन प्रत्यय अछि जे ने तँ भोजपुरीमे भेटैत अछि ने बंगलेमे। स्वभावतः ई सभ भाषाक स्वरूप निर्धारण ओ मौलिकताक विज्ञापनमे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कारक थिक। प्रत्यय विधानपर विचार करैत ई कहने छथि जे नव्य भारतीय आर्य भाषाक विकासक संग अनेक यौगिक प्रकृतिक शब्दक अपर भाग ततेक घसा गेल जे ओकर मूल रूपे विस्मृत भऽ गेलैक आ ओ घसायल भाग

आब अर्थहीन होयबाक कारणे प्रत्यय बनि गेल अछि। किछु विशिष्ट उदाहरणक रूपमे एहि प्रत्यय सभकेँ देखल जा सकैछ।

ठी–तिलठी, जराठी, जरियाठी; एकर मूल काष्ठ कहल गेल अछि।

–उकाठी, फुकाठी, सनठी, लहठी, दीयठि; एकर मूल यष्टि कहल गेल अछि।

औटी–पथरौटी, चमौटी कसौटी; एकर मूल पट्टिका कहल गेल अछि।

औरी–अदौरी, दनौरी, तिसियौरी, कुम्हरौरी, दहियौरी, मुरौरी–एकर मूल वटिका कहल गेल अछि।

ई केवल छब्बीस गोट उपसर्गक उदाहरण प्रस्तुत कयने छथि आ उपसर्गक सम्बन्धमे कहने छथि जे अधिकांश संस्कृत उपसर्ग अर्द्धतत्सम ओ तद्भवे शब्दक संग जीवन्त अछि मुदा भाषिक संक्रमणक प्रभावेँ फारसी ओ अंग्रेजी मूलक अनेक उपसर्गक उदाहरण मैथिलीमे भेटैत अछि यथा–बे-बेकसूर, बेहत्थ, बेटाइम; बद–बदमास, बदचालि, हेड–हेडपण्डित, हेडमास्टर आदि।

डा. सुभद्रझा मैथिली संज्ञा शब्दक तीन कोटि ग्रियर्सने जकाँ मानलनि अछि–लघु, गुरु आ गुरुतम तथा प्रत्येक शब्दक तीनू रूपक अनिवार्यताकेँ पूर्वाचार्ये लोकनिक अनुसरणमे अपेक्षित नहि कहलनि अछि यथा–हाथी-हथीबा, साहु-सहुब्बा, डाकू-डकूबा आदिमे।

एही प्रकारेँ डा. झा मैथिली भाषाक प्रकृतिक विश्लेषण समग्रतामे कऽ एकरा एकटा पूर्ण विकसित भाषाक रूपमे स्थापित करबामे सफल भेलाह। हिनक एहि एकमात्र योगदानहुक कारणे मैथिलीक भाषिक इतिहासमे हिनक नाम अमर रहतनि। यद्यपि हिनकासँ पूर्वहु डा. ग्रियर्सन ओ प. दीनबन्धुझा मैथिलीक भाषिक प्रकृतिक उद्घाटनक दिशामे आधार प्रदान कयने छलाह तथापि हिनक ई कृति ओहि कार्यकेँ एकटा सबलता ओ देश-विदेशक भाषा-शास्त्रीक मान्यताक हेतु सुपुष्ट प्रमाण प्रदान कयलक।

मैथिली भाषाक विकास-मार्गकेँ प्रशस्त करबाक दिशामे डा. सुभद्रझाक अन्यतम प्रयास छल हिनका द्वारा नेपाल पदावलीपर आधारित

'साँग्स ऑफ विद्यापति'क प्रकाशन। एहि ग्रंथमे ई विद्यापतिक काव्यक गम्भीर अध्येताक रूपमे प्रस्तुत भेल छथि। एहिमे विद्यापतिक पद सभक अँग्रेजीमे नहि केवल रूपान्तरण भेल अछि, अपितु विद्यापति पर गवेषणात्मक भूमिका लिखि मैथिलीक एहि महाकविक प्रतिभासँ देशान्तर धरिक विद्वानकेँ परिचित कराओल जयबाक श्लाघ्य प्रयत्न भेल अछि जाहिसँ मैथिली भाषाक अस्मिताक रक्षामे प्रचुर सहयोग भेटि सकल।

एक गोट विशिष्ट भाषावैज्ञानिक होयबाक कारणेँ डा. सुभद्रझा मैथिलीक व्याकरण पर सेहो अधिकार रखैत छलाह। यद्यपि हिनका समय धरि दीनबन्धुझा कृत **मिथिला भाषा विद्योतन** आबि गेल छल, मुदा ई संस्कृत सरणि पर होयबाक कारणेँ हिनका नहि सोहयलनि। बाबू भोलालालदास अथवा आचार्य रमानाथझाक व्याकरण हिन्दीक आधारपर लिखल रहबाक कारणेँ ई ताहूसँ सहमत नहि छलाह आ मैथिलीक प्रकृतिक अनुरूप व्याकरणक निर्माण चाहैत छलाह। मैथिली व्याकरणपर आधारित हिनक दुइ गोट भाषण **मैथिली व्याकरण मीमांसा** नामे चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालय, दरभंगा द्वारा वर्ष 1983मे प्रकाशित भेल छल। एहि पोथीमे अनुस्यूत प्रथम भाषणमे प. दीनबन्धुझा कृत **मिथिला भाषा विद्योतन**क समीक्षा करैत कहल गेल अछि जे 'हमरालोकनि यैह कहि सकैत छी जे मैथिलीक निर्माण संस्कृतक आधारपर नहि, प्रत्युत ओहि अज्ञात प्राचीन भाषाक आधारपर भेल अछि जकरा आधारपर संस्कृतक निर्माण भेल अछि। ई बात ओहिना संगत अछि जेना ई कहब जे अंग्रेजी जर्मन, फ्रान्सीसी, यूनानी, रूसी, लातीय प्रभृति सबहिक मूलाधार सर्वथा काल्पनिक एक प्राचीन भारत-यूरोपीय भाषा रहल होयत। एना मैथिलीक मूलाधार संस्कृत प्रमाणित नहि भेला सन्ताँ एकर व्याकरण संस्कृत व्याकरणक आधारपर बनायब उपयुक्त नहि जानि पड़ैछ।' भाषणकार अपन मतक समर्थनमे मैथिलीमे अए, अइ, अओ, अउ आदि स्वरध्वनिक अवस्थिति, ह्रस्वतर स्वर, ऋक प्रयोग केवल संस्कृतसम शब्द मात्रमे होयब, मैथिलीक विशिष्ट सन्धि विन्यास आदिसँ उदाहरण प्रस्तुत करैत अन्ततः ई निष्कर्ष निकाललनि अछि जे 'वास्तविक बात तँ ई अछि जे संस्कृत व्याकरणक साँचमे मैथिलीक माटिकेँ पानिमे सानि-ढारि... बनल मिथिला भाषा विद्योतन मैथिलीक यथार्थ रूपकेँ लोकक समक्ष

उपस्थित नहि कए सकत।' अवश्ये हिनक उक्ति मैथिलीक व्याकरण लिखनिहार लोकनिकेँ नव ढंगे सोचबाक हेतु विवश कयलकनि। एहि ग्रंथमे अनुस्यूत दोसर भाषणमे युगेश्वरझा कृत 'मैथिली व्याकरण आओर रचना'क हिन्दी व्याकरणक अनुसरणपरक होयबाक आलोचना कयल गेल अछि आ ओकरो मैथिलीक प्रकृतिक अनुकूल सजयबाक परामर्श प्रदान कयल गेल अछि। स्वभावतः साम्प्रतिक भाषाविज्ञानी ओ व्याकरणाचार्य प. गोविन्दझाक रचना सभमे मैथिलीक प्रकृतिक प्रति संवेदनशील दृष्टि देखि पड़ैत अछि।

डा. सुभद्रझा भाषाशास्त्री होयबाक संगहि ई जनैत छलाह जे समृद्ध भाषाक निदर्शन होइछ ओकर वृहत्तर कोश। डा. ग्रियर्सनक शब्दकोश ओ प. दीनबन्धुझाक **मिथिला भाषा कोश** मात्रसँ ओ संतुष्ट नहि छलाह आ अन्यान्ये विद्वान लोकनिक जकाँ मैथिली भाषाक कोश निर्माणक दिशामे जीवनपर्यन्त लागल रहलाह। हिनक कोश 'रंजना मैथिली शब्दकोश' नामे ख्यात भेल छल जकर प्रकाशन नहि भऽ सकल। ई कोश भने नष्ट भऽ गेल होअय किएक तँ हुनक मृत्युक बाद ओकर अवस्थितिपर प्रश्नचिह्न लागल बुझना जाइछ, मुदा से कोनो कल्पनापरक मात्र रहल होयत, से एहि हेतुएँ नहि मानल जा सकैछ जे 'द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज' मात्रमे ओ जतेक शब्दक उदाहरण प्रस्तुत कयने छथि, तकरो मात्र जँ संकलन कऽ लेल जाय तँ एकटा विशिष्ट कोशक निर्माण भऽ जा सकैछ।

डा. सुभद्रझाक दुइ गोट निबन्ध क्रमशः 'मिथिला भाषा शब्दकोश' आ 'वर्त्तनी प्रसंग'मे मैथिली शब्दकोश ओ वर्त्तनी व्यवस्थाक सम्बन्धमे बहुमूल्य दिशानिर्देश उल्लिखित भेल अछि। मैथिली वर्त्तनीक मानकीकरणक दिशामे डा. झाक प्रयास श्लाघ्य रहल। 1940 इ.क लगपास जखन आचार्य रमानाथझा मैथिली वर्त्तनीक एकरूपता ओ मानकीकरणक प्रयास कयल तँ डा. सुभद्रझा अपन सयुक्ति अभिमत प्रदान कऽ एहि दिशामे सहयोग प्रदान कयने छलाह। ई अपन वर्त्तनीक प्रति आजीवन आबद्ध रहलाह आ ओकरा भाषावैज्ञानिक आधारपर शुद्ध मानैत रहलाह।

मैथिली भाषा-साहित्यक विकास-प्रकाशक दृष्टिजे साहित्य अकादेमीक अवदानकेँ अवडेरल नहि जा सकैछ। साहित्य अकादेमीमे

मैथिलीकेँ स्वीकृति प्रदान करबाक हेतु एकर औचित्य अनबाक लेल जाहि पाँच गोट सुविख्यात विद्वानलोकनिक समिति बनल छल ताहिमे सुभद्रझा सेहो छलाह। ई अपन अभिमतमे मैथिलीकेँ सप्रमाण स्वतंत्र सुविकसित ओ श्रेष्ठ भाषाक रूपमे प्रस्तुत कयलनि आ ताहि हेतु अकाट्य तर्कक उल्लेख कयलनि जकर फलस्वरूप समिति एहि भाषाकेँ साहित्य अकादेमी स्वीकृत भाषाक श्रेणीमे अनबाक योग्य बूझि अनुशंसित कयने छल। मैथिली भाषाक विकास-मार्गकेँ प्रशस्त करबामे हिनक एहू योगदानकेँ कथमपि न्यून नहि कहल जा सकैछ।

भाषावैज्ञानिक चिन्तक डा. सुभद्रझा एकटा सहृदय लेखको छलाह आ मैथिली साहित्यकेँ **प्रवास जीवन**, **यात्रा प्रकरण शतक**, **नातिक पत्रक उत्तर** आदि रचना द्वारा समृद्ध कयलनि। मुदा मैथिली जगत हिनक भाषाविज्ञानी स्वरूपक चिरऋणी रहत जे ई सावित करबामे समर्थ भेलाह जे 'Maithili is from political piont of view to be included in the dialects of Hindi, while linguistically it stands in between Bengali and Hindi and is different from both especially on account of each verb forms. It has its own structural form although it is an Indo-Aryan language, its special features make it different from each of the literary modern Indian languages.'

●●●

मैथिली साहित्यक विकासमे जयकान्तमिश्रक योगदान

डा. जयकान्तमिश्र मैथिलीक वरेण्य उन्नायक लोकनिमे छलाह। हिनक परिगणना नहि केवल विख्यात विद्वान, गम्भीर अन्वेषक, ऐतिहासिक पद्धतिक मूर्धन्य आलोचक ओ मैथिली साहित्येतिहासक अग्रचेताक रूपमे होइत रहलनि अपितु मिथिला-मैथिलीक विकास-प्रकाशक हेतु प्रतिबद्ध आन्दोलनकारी रूपमे सेहो ई प्रख्यात रहलाह।

मैथिलीक कवि प्रवासी साहित्यालंकार हिनक मृत्यूपरान्त श्रद्धासुमन समर्पित करैत लिखने छलाह–

वैदेही मुख-मुखरित भाषा, हिनक प्राण पाथेय।
भगीरथक चर्या निमाहलन्हि, लेल न किंचित श्रेय।।
कर्मयोग केर अनासक्त पथ, हिनका सन हठयोगी।
निःस्पृह साधक बनि गन्तव्यक दिस चलि गेल बटोही।।

(जयकान्त जयन्तिका, पृ.-245)

से वस्तुतः ई एक गोट अनासक्त योगी जकाँ गीताक 'कर्मण्येवाधिकारस्ते'क अनुगमन करैत मैथिली ओ मिथिलाक विकासक हेतु आजीवन संघर्ष करैत रहलाह आ जहिया जे किछु सफलता प्राप्त भेलनि तकर श्रेय लेबाक ने उत्कंठा देखौलनि आ ने विफलता भेटला पर हतोत्साहे भेलाह।

हिनक जन्म 19 नवम्बर, 1922 इ.केँ भेल छलनि। पारिवारिक परिवेश सरस्वतीक साधक लोकनिक छलनि। पितामह म.म. जयदेव मिश्र संस्कृतक प्रकाण्ड पंडित छलथिन तँ पिता म.म. उमेशमिश्र दर्शनशास्त्रक महान विद्वानक संगहि आधुनिक मैथिली गद्यक अधिष्ठाता लोकनिमे प्रतिष्ठापित भेलाह। एहि सारस्वत परिवेशमे ज्ञानार्जन करैत डा. मिश्र 1944 इ.मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयमे व्याख्याताक रूपमे आजीविका

ग्रहण कयलनि। तदुपरान्त ई 'प्री शेक्सपियरियन लिटरेचर' पर शोधकार्य करबाक हेतु सन्नद्ध भेल छलाह मुदा अपन गुरुवर डा. अमरनाथझाक सुझाओपर 'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' विषयपर अनुसन्धान कार्य आरम्भ कयलनि आ 1948 इ. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयसँ डी. फिल. क उपाधिसँ अलंकृत भेलाह। मैथिलीक प्रति सहज रूपेँ आसक्त पारिवारिक परिवेश ओ मैथिली साहित्येतिहास लेखनमे शोधकार्यक उपरान्त डा. मिश्र सम्भवतः मिथिला-मैथिल-मैथिलीक पूर्णकालिक सेवाभावसँ संपृक्त भऽ गेलाह आ आजीवन मैथिलीक सेवाक प्रति समर्पित रहलाह।

जाहि कालावधिमे डा. मिश्र मैथिली साहित्यक विकास-प्रकाशक हेतु समर्पित भेल छलाह ताधरि मैथिली साहित्यमे पुनर्जागरण अपन चेतन अवस्थाकेँ प्राप्त कऽ चुकल छल।

डा. रामदेवझा उनैसम शताब्दीक उत्तरार्धकेँ मैथिली साहित्यक नव जागरणक काल इंगित करैत कहलनि अछि जे 'उनैसम शताब्दीमे किछु एहन साहित्यस्रष्टा लोकनिक आविर्भाव अवश्य भेल जे अपन-अपन साहित्यक सर्जनात्मक धाराकेँ नव दिशा ओ गति प्रदान कयलनि। मध्यकालीन काव्यक विषय, काव्य रूप, छन्द, भाषा-प्रयोग ओ विचारधारामे महान् परिवर्तन आनि देलनि। पद्यक प्रवाहक स्थानमे गद्यक महत्ता बढ़ि गेल। पद्यहुमे परम्परित छन्दक स्थानमे नवीन छन्द सब प्रयुक्त होबऽ लागल। पारम्परिक भाषा-सरणिक परित्याग कऽ साहित्य लोकप्रचलित भाषा-रूपकेँ आत्मसात् करऽ लागल। आलंकारिताक स्थानमे सरल-सहज अभिव्यक्तिक पद्धति प्रतिष्ठित भेल। भक्ति भावनाक स्थानमे वैचारिकताक महत्त्व बढ़ल। पौराणिक ओ धार्मिक वर्ण्यवस्तुक स्थानमे लौकिक ओ सामाजिक विषय साहित्यक वर्ण्यवस्तुक रूपमे प्रमुखता ग्रहण कयलक।'

(जनार्दनझा 'जनसीदन'-डा. रामदेवझा, सा. अकादेमी, नई दिल्ली, 1998, पृ.-11)

वस्तुतः मैथिली साहित्यमे नवयुगक तोरण द्वार पर अवस्थित चन्दाझा एहि भाषामे पुनर्जागरणक शंखनाद कयलनि। कविवर जीवनझा अपन नाट्यविधाक माध्यमे नव्यताक सूत्रपात कयलनि आ वैयाकरणकेसरी म.म. परमेश्वर झा एकर गद्यविधाक परिमार्जन कऽ ओहिमे प्रयोगशीलताक सूत्रधार कहौलनि। क्रमशः बाबू तुलापति सिंह, महाकवि लालदास,

विद्यावाचस्पति मधुसूदनझा, डा. गंगानाथझा, अमरनाथझा, म.म. मुरलीधरझा, म.म. मुकुन्दझा बख्शी, मुंशी रघुनन्दनदास, यदुनाथझा; 'यदुवर', प. जनार्दनझा 'जनसीदन', रामेश्वर मिश्र, प. दीनबन्धुझा, प. बबुआजी मिश्र, राजपण्डित बलदेव मिश्र, ज्यो. बलदेव मिश्र, सीतारामझा, कविशेखर बदरीनाथझा, म.म. उमेशमिश्र, नरेन्द्रनाथदास, बाबू भोलालालदास, कुमार गंगानन्दसिंह, प्रो. रमानाथझा, प. काशीकान्तमिश्र 'मधुप', बाबू भुवनेश्वरसिंह 'भुवन', हरिनन्दठाकुर 'सरोज', डा. काञ्चीनाथझा 'किरण', नन्दकिशोरलालदास, लक्ष्मीपतिसिंह, अच्युतानन्ददत्त, प्रो. तन्त्रनाथझा, आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन'; डा. सुभद्रझा, प. जीवनाथझा, वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' आदि प्रतिभासम्पन्न साहित्यकार लोकनिक आविर्भावसँ मैथिली भाषा-साहित्यक चतुर्दिक विकास गति पकड़ैत गेलैक। एकर परिणामस्वरूप मैथिली रचनामे व्यक्तिवादी दृष्टिकोण, स्वच्छन्द विचार ओ राष्ट्रीय भावनाक प्रति प्रतिबद्धता बद्धमूल होइत गेल। गद्यक विविध रूप यथा कथा, उपन्यास, निबन्ध, आलोचना आदि विधाक उद्‌भव ओ विकास होइत गेल। काव्यक विविध स्वरूप यथा महाकाव्य, खण्डकाव्य, कथाकाव्यादि प्रणीत होमऽ लागल। विशुद्ध मैथिली नाटक ओ एकांकीक प्रति रचनाकारलोकनिक रुझान बढ़लनि। रचना सभमे बौद्धिकताक प्राधान्य, मानवमूल्यक प्रतिष्ठा, युगीन ज्वलन्त समस्याक चित्रण आदिकेँ आत्मसात् कयल जाय लगलैक तथा विभिन्न प्रकारक वादसाहित्य यथा प्रगतिवादी, मनोविश्लेषणवादी, आदर्शवादी, मानवतावादी आदिसँ सम्बद्ध लेखन आरम्भ भेल।

मैथिली साहित्यक एहि बहुआयामी विस्तारक प्रारम्भिक अर्द्धशतकक बाद डा. मिश्र मैथिलीक प्रति प्रतिबद्ध भेल छलाह। अवश्ये एहि काल धरि मैथिलीमे पत्रकारिताक उदय सेहो भऽ चुकल छलैक आ नित्य नव लेखक लोकनिक समूह द्वारा साहित्यिक अभिव्यक्तिकेँ प्रशस्त माध्यम भेटि चुकल छलैक। तथापि मैथिली भाषा ओ साहित्यकेँ अखिल भारतीय पटलपर जे गरिमा भेटबाक चाहैत छलैक, तकर सर्वथा अभावे छलैक। एकर सीमा बहुधा लोकरंजनीये साहित्य धरि छलैक आ ज्ञान-संवर्द्धक साहित्यक रूपमे एकर मोजर नहि छलैक। दोसर दिस हिन्दी साम्राज्यवाद एकर स्वतंत्र अस्तित्व नहि मानि एकरा अपन बोलीक परिचिति देबाक ओ अपनेमे आत्मसात् कऽ लेबाक प्रवृत्तिसँ ग्रस्त छलैक।

एहने विषम परिस्थितिमे डा. मिश्र अंग्रेजीमे मैथिली साहित्यक इतिहास लिखि एहि भाषाक क्षेत्र, जनसंख्या, लिपि, भाषा-वैज्ञानिक अवस्थिति एवं निरन्तर प्रयोग ओ साहित्य लेखनक सहस्रो वर्षक परम्पराकेँ सुसंगठित ओ प्रामाणिक रूपमे प्रस्तुत कयलनि आ मैथिली भाषा-साहित्यक गरिमाकेँ अखिल भारतीय स्तरसँ लऽ कऽ देशान्तर धरि प्रतिष्ठापित कयलनि। तदतिरिक्तो मैथिली लोकसाहित्यक परिचयात्मक शोधकार्य, पी.ई.एन. एवं साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक मान्यता, कीर्त्तनिञा नाटककेँ नाटकक रूपमे स्थापना, मैथिली शब्दकोशक निर्माण, तिरहुताक प्रसार, मैथिली प्रकाशन ओ पत्रकारिता, मैथिली महिला विद्यापीठक स्थापना, आकाशवाणीमे मैथिली, प्राथमिक शिक्षाक माध्यमक रूपमे मैथिलीक उपयोगक हेतु संघर्ष तथा मिथिला राज्यक स्थापनाक हेतु प्रयास आदि हिनक बहुआयामी व्यक्तित्वक किछु स्पृहणीय ओ स्मरणीय कार्य सभ अछि जे हिनका मैथिली साहित्यक चतुर्दिक विकासक हेतु सन्नद्ध महारथीक रूपमे स्थापित कयलकनि।

साहित्येतिहास लेखन

डा. जयकान्तमिश्रकेँ मैथिली साहित्येतिहास लेखनक प्रथम पुरुष मानल जाइत छनि। हिनका द्वारा रचित इतिहास अंग्रेजी भाषाक माध्यमे प्रस्तुत भेल छल आ हिनक डी.फिल. उपाधिक हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबन्ध छल। हिनकासँ पूर्वहि मैथिली साहित्येतिहास लेखनक प्रयास सब चन्दाझाक उदयकालेसँ प्रारम्भ भऽ गेल छल। स्वयं कवीश्वर चन्दाझा अनेकानेक मैथिली लेखक लोकनि पर टिप्पणीत्यादि लिखने छलाह। 'मैथिली साहित्यक प्रगति' विषयक एक गोट पुस्ती प. यदुनाथझा 'यदुवर'क प्रकाशित भेल छलनि। प्रो. रमानाथझा, डा. सुभद्रझा, आचार्य सुरेन्द्रझा 'सुमन', डा. शैलेन्द्रमोहनझा, बालगोविन्दझा 'व्यथित' ओ अन्यान्य विद्वान लोकनि ऐतिहासिक सामग्रीक संचयन-विवेचन-विश्लेषण दिस प्रत्नशील भेल छलाह, तथापि प्रकाशित ओ सर्वाङ्गपूर्ण इतिहास ग्रंथक रूपमे डा. जयकान्तमिश्रक शोध-प्रबन्ध मैथिलीक प्रथम सुव्यवस्थित इतिहास छल, ताहिमे कोनो सन्देह नहि। डा. मिश्र परिश्रमपूर्वक मिथिलाक विभिन्न क्षेत्र, रजवाड़ा, संस्थागत ओ व्यक्तिगत संग्रह सभक अवलोकन कऽ, पाण्डुलिपि

सभक अध्ययन कऽ मैथिली साहित्यक क्रमबद्ध ओ तर्कसंगत ऐतिहासिक विवरणी प्रस्तुति कयलनि। हिनका द्वारा अनेक पुस्तकालय ओ मिथिलाक गाम-गाममे राखल हस्तलेख सभक खोज कयल गेल। दरभंगाक राज पुस्तकालय, पटनाक बिहार रिसर्च सोसाइटी, सखबारक नरेन्द्रनाथदासक हस्तलेख संग्रह ओ नेपालक राजकीय पुस्तकालय आदिमे पोथी ओ पाण्डुलिपिक अध्ययन कऽ ई अपन इतिहासकेँ प्रामाणिक ढंगे प्रस्तुत कयने छलाह। अपन इतिहास ग्रंथक दोसर भॉल्यूममे ई लगभग तीन सय मैथिली हस्तलेखकेँ सूचीबद्ध कयने छलाह जे मैथिली साहित्येतिहासक अमूल्य निधि थिक। क्रमबद्धता ओ विवेचन-विश्लेषणक वैज्ञानिक पद्धति हिनक इतिहासक मूर्धन्यताक सविशेष कारण अछि।

डा. मिश्रक इतिहास ग्रंथ दू खण्डमे क्रमश: 'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर भॉल्यूम-1' तथा 'ए हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर भॉल्यूम-2 नामे प्रकाशित भेल अछि। एहिमे प्रथम भॉल्यूमक प्रकाशन 1949 ई.मे तथा दोसर भॉल्यूमक प्रकाशन 1950 ई.मे भेल छल। प्रथम खण्डमे आदिकाल ओ मध्यकाल तथा दोसर खण्डमे आधुनिक कालक विवेचन कयल गेल अछि, से उद्धरण सहित आ प्रामाणिक रीतिजे। तथ्य संकलन ओ स्थापनाक दृष्टिजे हिनक इतिहास ग्रंथ आइयो मानक ओ आधार ग्रंथक रूपमे प्रतिष्ठित अछि तथा एकर बहुलांश स्थापना संगत, समीचीन ओ सुविचारित अछि। एकर महत्ता एहू लऽ कऽ छैक जे एकरा माध्यमे नहि केवल भाषान्तरेक लोक अपितु मैथिली भाषीलोकनिकेँ सेहो अपन भाषाक प्राचीनता, समृद्धि, निरन्तर काव्यक रचनाक परम्पराक बोध भेलनि आ मैथिली स्तरीय भाषाक रूपमे प्रतिष्ठापित भेलीह। एकरा बोली कहनिहार-बुझनिहारक मुँह झमान भेलनि। डा. अमरनाथझा एहि ग्रंथक प्राक्कथनमे कहलनि–'The present work by Dr. Jayakant Mishra is the first attempt to make a comprehensive survey of Mithila's language & literature. It is a work that must have entailed long and patient investigation. The author has familiarised himself with everything that has been published on the subject and has also had the advantage of consulting book still in manuscript form, whether in Mithila or Nepal. It will be a valuable addition to the

histories of Indian literatures and will prove of great use for all scholars.' (**जयकान्त जयन्तिका, पृ.-74**)

परवर्तीकालमे 1976 ई.मे डा. मिश्रक एकटा और इतिहास ग्रंथ प्रकाशित भेलनि साहित्य अकादेमीसँ जाहिमे एके खण्डमे History of Maithili literature केँ समाहित कऽ लेल गेल अछि। अंग्रेजीमे लिखित हिनक मैथिली साहित्यक ई इतिहास ग्रंथ पूर्व इतिहासक संक्षिप्तीकरण थिक तथा एहिमे बादक प्रगतिक सेहो यत्किंचित विश्लेषण भेल अछि। एकर मैथिली रूपान्तर सेहो उपलब्ध अछि।

मैथिली लोकसाहित्यक परिचयात्मक शोध-आलेख

डा. जयकान्त मिश्र अपन इतिहासलेखनक क्रममे मैथिली लोक-साहित्यानुसंधान दिस सेहो प्रेरित भेल छलाह आ 'युनिवर्सिटी ऑफ इलाहाबाद स्टडीज' नामक अंग्रेजी शोधपत्रिकाक 1950 ओ 1951क अंकमे हिनका द्वारा 'An Introduction to the folk literature of Mithila' शीर्षकसँ मैथिली लोकसाहित्य पर दुइ गोट आलेख प्रकाशित कराओल गेल। एहि दुनू आलेखमे प्रथममे मैथिली लोकसाहित्यक पद्य विधाक वर्गीकरण ओ सोदाहरण व्याख्या प्रस्तुत कयल गेल अछि तथा दोसरमे गाथाकाव्य, नेनागीत, बुझौअलि, कहबी, लोकनाट्यगीत, लोकमंत्र, लोकगाथा ओ लोककथा सभहिक विवेचनपूर्वक उदाहरण प्रस्तुत कयल गेल अछि। मैथिली लोकसाहित्य क्षेत्रमे हिनक ई अनुसंधान कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण अछि। एकरा हिनक मौलिक इतिहासग्रंथक परिशिष्टक रूपमे देखल जाइत रहल अछि। यद्यपि हिनकासँ पूर्व डा. ग्रियर्सन सलहेस गाथा, दीनाभद्री ओ नेवारक गीत प्रकाशित कराय मैथिली लोकसाहित्यक उर्वर क्षेत्र दिस विद्वानलोकनिक ध्यान आकृष्ट करौने रहथि मुदा तत:पर प्रथम व्यवस्थित कार्यक श्रेय डा. मिश्रहिकेँ जाइत छनि जे मैथिली लोकसाहित्य पर समग्रतामे विमर्श कयने छलाह। आइ जे मैथिली लोकसाहित्यक विराट महल ठाढ़ देखि पड़ैत अछि आ तकर उत्खननसँ नित्य नव-नव मणि-माणिक्य प्राप्त भऽ रहल अछि, तकर आधारभूत ओ दिशानिर्देशक सामग्रीक रूपमे डा. मिश्रक ई कार्य श्लाघनीय छनि।

मैथिली शब्दकोशक निर्माण

डा. जयकान्त मिश्र वृहत् मैथिली शब्दकोशक निर्माण कयने छलाह जे सर्वथा वैज्ञानिक पद्धतिपर आधारित अछि। एकर केवल दुइ गोट खण्ड क्रमशः 1973 ओ 1995मे प्रकाशित भेल आ एखनो अपूर्ण अछि, खास कऽ व्यंजनादि शब्दसँ सम्बद्ध भाग। एहि कोशमे शब्दक व्युत्पत्ति, साहित्यिक प्रयोग, वर्तनीगत, उच्चारणगत ओ व्यवहारगत रूपान्तरक संगहि प्रत्यय सहित स्वरूपकेँ गृहीत कयल गेल अछि। एकर सर्वाधिक वैशिष्ट्य थिक एहिमे शब्दक मिथिलाक्षर स्वरूपक समावेश। एहि तरहेँ मैथिली कोश-विज्ञानक क्षेत्रमे ई कोश असमानान्तर ओ उच्च कोटिक प्रमाणित अछि। वस्तुतः डा. मिश्र भारतक अन्यान्य भाषामे रचित स्पृहणीय कोशक समानान्तर ई कोश प्रस्तुत कयलनि जे मैथिली भाषा ओ साहित्यक गरिमाक प्रतिपादक सिद्ध भेल। दुर्भाग्यवश ई कोश सम्पूर्णतामे प्रकाशित नहि भऽ सकल। एहि कोशकेँ मैथिलीक समृद्धिक प्रमाणक रूपमे प्रस्तावित करब डा. मिश्रक दूरगामी ओ श्रमसाध्य लक्ष्य छलनि। मैथिली कोश रचनाक दिशामे ई दिशानिर्देशक बनल रहल अछि।

प्रकाशन ओ पत्र संचालन

डा. जयकान्त मिश्र साहित्यिक गतिविधिक संचालनक हेतु 'अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति' ओ प्रकाशन कार्यक हेतु 'तीरभुक्ति पब्लिकेशन्स' नामक संस्था खोलने छलाह जे 1944मे हिनक पिता म.म. उमेश मिश्रक संरक्षणमे आरम्भ कयल गेल छल। एहि संस्था सभक माध्यमे मैथिली, संस्कृत ओ अँग्रेजीमे अनेकानेक पोथीक प्रकाशन होइत रहल। एकरे तत्त्वावधानमे मिथिलाक्षर लिपिक प्रचार-प्रसार हेतु तिरहुता ककहरा पोथी प्रकाशित भेल छल। डा. मिश्र द्वारा कीर्तनिञा नाटकक स्थापनासँ सम्बद्ध आलोचनात्मक ग्रंथ आ कतोक मध्यकालीन नाटक सभ वस्तु, कवि, हस्तलेख आदिक विवेचनपूर्वक एही संस्थाक माध्यमे प्रकाशित भेल छल यथा श्रीकान्तगणककृत **श्रीकृष्णजन्मरहस्य**, शिवदत्तकृत **गौरी परिणय**, कान्हारामदासकृत **गौरी स्वयंवर**, रमापतिकृत **रुक्मिणी परिणय**, नन्दीपतिकृत **कृष्ण केलिमाला** आदि। डा. मिश्र द्वारा अनुसंधित ओ प्रकाशित विद्यापतिकृत **गोरक्षविजय** तथा कविशेखराचार्य

ज्योतिरीश्वरकृत **धूर्तसमागम** तँ मैथिली नाट्य साहित्यक इतिहासमे नव मोड़े आनि देलक।

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समितिक मुख पत्र छल **मैथिली समाचार**। ई पाक्षिक पत्र छल जकरा माध्यमे मैथिलीक तत्कालीन गतिविधि, सद्यःप्रकाशित पोथीक सूचना-समीक्षा तथा मैथिलीक विकाससँ सम्बद्ध विचारादि प्रकाशित होइत छल। मैथिली आन्दोलनसँ सम्बन्धित डा. मिश्रक पत्राचारादि सेहो एकरे द्वारा सुप्रचारित कयल जाइत छल।

एहि पत्रक ई खास वैशिष्ट्य छलैक जे एकर प्रथम पृष्ठक उपरिभागमे ग्रियर्सन द्वारा इंगित मैथिलीभाषी क्षेत्रक आधारपर निर्मित नकशा रहैत छलै जे मैथिलीक व्यापक क्षेत्रकेँ विज्ञापित करैत रहल।

पी.ई.एन.मे मैथिली

पी.ई.एन. एक गोट अन्तःराष्ट्रीय साहित्यिक संस्था छल जकर मुख्यालय तँ यूरोपमे छलैक मुदा भारतवर्षीय शाखा (Indian Chapter) मुम्बइमे कार्यरत छलैक। थियोसोफिकल सोसाइटी ऑफ इण्डियाक अध्यक्षा आयरिश मूलक महिला सोफिया बाडिया एकर इण्डियन चैप्टरक संचालिका छलीह। एहि संस्थाक प्रमुख उद्देश्य छलैक संसारक विभिन्न भाषाक रचनाकार लोकनिक बीच हुनका लोकनिक साहित्यक आदान-प्रदानक द्वारा अन्तःसम्बन्ध स्थापित करब। स्वभावतः एकर इण्डियन चैप्टर द्वारा विभिन्न भारतीय भाषा सभक बीच पारस्परिक साहित्यिक गतिविधिक सम्बन्धमे आदान-प्रदानक माध्यमे ओहि भाषा सभक एकटा मिलन बिन्दु बनाओल गेल छल। पी.ई.एन. तत्कालीन भारतीय संविधानमे मान्यता प्राप्त भाषा सभहिकेँ अपन कार्यक्रम ओ प्रकाशनमे मान्यता देने छल। स्वभावतः मैथिली अपवारित छल। मैथिलीक विकास-प्रकाश हेतु प्रतिबद्ध डा. जयकान्तमिश्रकेँ पी.ई.एन.मे ओहि उष्माक दर्शन भेलनि जकर प्रभावसँ मैथिलीक रचनाशीलता विश्व स्तरपर प्रसारित भऽ सकैत छल। तेँ ओ एकर भारतवर्षीय संचालिकासँ पत्राचार कऽ हुनका एहि संस्थामे एकटा स्वतंत्र भारतीय भाषाक रूपमे मैथिलीकेँ सम्मिलित करयबाक अनुरोध कयने छलथिन आ सफल भेल छलाह। परिणामतः एहि संस्थाक अधिवेशन सभमे मैथिलीक प्रतिनिधिक रूपमे अनेक मैथिली लेखकलोकनि

बजाओल जाइत रहलाह, हुनका लोकनिक आलेख पाठ होइत रहलनि तथा मैथिली सामग्री ओहि संस्थाक पत्रिका 'इण्डियन पी.ई.एन.' मे प्रकाशित भऽ विश्वस्तरीय प्रचार पओलक। भाषा सम्मान प्राप्तिक अवसर पर प्रदत्त भाषणमे डा. मिश्र ओहि अवधिकेँ मन पाड़ैत कहने छलाह जे 'During the period in Bombay, a cultural renaissance had been started by a theosophist of European orgin. I am refering to Ms. sophia wadia who was instrumental in starting the Indian Chapter of the International P.E.N. and bringing writers of different Indian languages at a common plateform. She was the first person to recognise on her own Maithili as an independent literary language of India. She invited scholars to lecture on Maithili literature in different sessions of India P.E.N. (**जयकान्त जयन्तिका, पृ.-258**)। अवश्ये मैथिलीकेँ भाषाक रूपमे विश्वस्तरीय परिचिति देअयबामे डा. जयकान्तमिश्रक योगदान अन्यतम रहलनि।

साहित्य अकादेमीमे मैथिली

1954 इ. मे भारत सरकार द्वारा भारतीय भाषा सभक विकासक हेतु एक गोट राष्ट्रीय संस्थाक स्थापना कयल गेल जकर नाम राखल गेल साहित्य अकादेमी। एहि संस्थाक मूल उद्देश्य छल विभिन्न भारतीय भाषा-साहित्य ओ साहित्यकारक माध्यमे भाषिक समन्वय द्वारा राष्ट्रीय भावनात्मक समन्वयक पल्लवन। एहिमे संविधानमे अनुसूचित भाषा मात्रकेँ सम्मिलित कयल गेल छल, तेँ मैथिली एहि संस्थाक मान्यतासँ अपवारित रहलीह। मैथिली साहित्यक प्रेमी ओ विद्वाललोकनिकेँ ई राष्ट्रीय अपमान सदृश अनुभूत भेलनि आ साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक मान्यताक हेतु संघर्षक स्थिति बनल।

डा. जयकान्त मिश्र सेहो साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक मान्यताक हेतु संघर्षमे सन्नद्ध भेलाह। एहि हेतु ओ सर्वप्रथम 1959मे दिल्ली जाय अकादेमीक वस्तुस्थितिक सम्बन्धमे पूर्ण जानकारी प्राप्त कयलने छलाह। प. जवाहरलालनेहरू तत्कालीन प्रधानमंत्री ओ अकादेमीक अध्यक्ष छलाह। डा. मिश्र हुनक इलाहाबाद आगमन भेलापर 'आनन्द भवन' जाय

अकादेमीमे मैथिलीकेँ मान्यता प्रदान करयबाक हेतु अनुरोध कयने छलथिन। 1963 इ. मे हुनका कामेश्वर सिंह दरभंगा संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा साहित्य अकादेमीक नामित सदस्यक रूपमे ओकर सामान्य परिषद्क सदस्य बनाओल गेलनि। एहि प्राप्त अवसरक उपयोग ओ साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक मान्यताक हेतु तत्परतापूर्वक ओ योजनाबद्ध रूपसँ कयने छलाह। 31 मार्च 1963केँ ई साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषद्मे प्रस्ताव रखने छलाह जे मैथिलीकेँ स्वतंत्र आधुनिक भारतीय भाषाक रूपमे अकादेमी अंगीकृत करय आ तकर समर्थन हेतु 'द केस ऑफ मैथिली' नामक पुस्तिकाक मुद्रित प्रति परिषदक सदस्यलोकनिक बीच वितरित कऽ अपन संभाषण द्वारा मैथिलीक पक्ष रखने छलाह। परवर्ती कालमे मैथिलीक पक्ष मजगूत करबाक हेतु ओहि पुस्तिकाक प्रति देशीय ओ विदेशी विद्वानलोकनिकेँ पठौने छलथिन तथा मैथिलीक भाषिक स्थितिपर हुनकालोकनिक मन्तव्य 'ह्वाट दे से' नामक पुस्तिकामे छपाय ओकर प्रति साहित्य अकादेमीक सामान्य परिषदमे वितरित कराय मैथिलीक मान्यताक पक्ष दृढ़ कयने छलाह। ततःपर दिल्लीमे मैथिली पोथीक एकटा त्रिदिवसीय प्रदर्शनी दिनांक 9 दिसम्बर, 1963 सँ 11 दिसम्बर 1963 धरि लगबौलनि। एहि प्रदर्शनीमे सोलह खण्ड क्रमशः विद्यापति साहित्य, कविता, नाटक, प्रबन्धकाव्य, गद्य, बालसाहित्य, पत्र-पत्रिका, लोकसाहित्य, पत्राचार, पांडुलिपि; विविध यथा कर्मकाण्ड, पंजी प्रबन्ध, तिरहुता लिपि; मैथिली सम्बन्धी पोथी, मैथिली लेखकलोकनिक चित्रावली, लोकगीतक टेप, प्रदर्शनीक अतिथिलोकनि द्वारा मैथिली साहित्यक झाँकी तथा मिथिला पेंटिंग आदिमे मैथिलीक सीमा विस्तारक सद्यः प्रतीति करयबाक प्रयत्न कयने छलाह। इन्द्रप्रस्थ स्टेटक आजाद भवनमे आयोजित एहि प्रदर्शनीक उद्घाटन कयने छलाह तत्कालीन प्रधानमंत्री ओ साहित्य अकादेमीक अध्यक्ष प. जवाहरलाल नेहरू। मैथिली भाषाक वैशद्यसँ परिचित नेहरूजी जे अभिमत प्रदान कयने छलाह से परवर्ती कालमे साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक मान्यताक विशिष्ट आधार-स्तम्भ बनल। नेहरूजीक ऐतिहासिक अभिमत छलनि–'I was happy to inaugurate yesterday the Maithili Book Exhibition and to see the large collection of books & manuscripts in Maithili. This demonstrates that

Maithili has been for a long and is today a living language among the people of that area. The language deserves encouragement'.

एकरे सभक परिणामस्वरूप साहित्य अकादेमी एकटा एक्सपर्ट कमिटीक गठन कयलक आ अन्ततः 1965 इ. मे मैथिलीकेँ साहित्य अकादेमीमे मान्यता भेटि गेलैक। ओना तँ एहि तरहक कोनो सार्वजनिक आन्दोलनक प्रतिफल कोनो व्यक्ति-विशेष सापेक्ष नहि होइछ मुदा साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक मान्यताक श्रेय जँ कोनो एकटा व्यक्तिकेँ प्रदान कयल जयतनि तँ से डा. मिश्रहि छलाह आ मैथिलीक उन्नतिक हेतु हिनक ई अवदान सर्वथा स्मरणीय ओ ऐतिहासिक छनि।

मैथिलीक विकासक हेतु डा. जयकान्तमिश्रक उपरिलिखित अवदान सभ हिनका भावी पीढ़ीक हेतु प्रेरणादर्श ओ मार्गदर्शक बनौने रहतनि। तदतिरिक्तो ई मैथिली आन्दोलनक विभिन्न आयाममे अपन सक्रियता देखबैत रहलाह आ मैथिलीक प्रति प्रतिबद्ध रहलाह। मैथिलीक हेतु ई आजीवन अपन बौद्धिक क्षमताक दोहन करैत रहलाह आ जहिया जे अवसर भेटलनि तकरा मैथिलीक विकासक निमित्त उपयोग करैत रहलाह। गम्भीर अध्ययनजन्य प्रखर वाग्मितासँ संबधित तथा लिपिबद्ध संघर्षक माध्यमे भारतीय प्रजातांत्रिक व्यवस्थामे अपन अधिकार प्राप्तिक प्रति निष्ठावान डा. मिश्र प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीकेँ जमीनी स्तरपर माध्यम बनयबाक अभियानमे, दरभंगामे आकाशवाणी केन्द्रक स्थापनाक उद्योगमे तथा मिथिला प्रान्तक पृथक् अस्तित्वक हेतु जनचेतना जगयबाक संघर्ष सभमे सेहो पाङ्क्तेय बनल रहलाह। तथापि हिनक मैथिली क्षेत्रक महिलाकेँ शिक्षित कराय मैथिल परिवारमे मैथिलीक सम्मानित स्थितिक संरक्षणक दिशामे कृत प्रयत्न 'मैथिली महिला विद्यापीठक स्थापना' सेहो अछि जकरा हिनक दूरदृष्टिक परिचायक मानल जा सकैछ।

एहि ठाम ई उल्लेख नहि कऽ देब हुनका प्रति अकृतज्ञता भऽ सकैछ जे डा. मिश्र नहि केवल तन-मन अपितु धनो लऽ मैथिलीक निमित्त तत्पर रहैत छलाह। कहल जाइछ जे दिल्ली पुस्तक प्रदर्शनीक हेतु ई अपन सामान्य भविष्य निधिसँ ऋण लेने छलाह आ मिथिला राज्यक संघर्ष समितिक तत्त्वावधानमे समितिक दिसिसँ बिहार विधानसभाक हेतु प्रत्याशी ठाढ़ कऽ ओकर प्रचारो अभियानक व्यय 2000 इ. मे

उठौने छलाह। प्राथमिक शिक्षामे मैथिलीकेँ माध्यम बनयबाक हेतु जनजागरण अभियानमे गामे-गामे, विद्यालये-विद्यालये बौअयबामे सेहो पर्याप्त व्यय कयने छलाह। कहल जाइछ जे एहि क्रममे मिथिलाक उतरबारी कातसँ लऽ कऽ सुदूर दक्षिणबारी कातक बेगूसराय आदि क्षेत्रक लगभग तीन सय गाममे ई पदयात्रा कयने छलाह।

एतावता भने पंचानन मिश्रजीक उक्ति जे 'जयकान्त बाबू मैथिलीयेटा लेल जीवैत रहलाह, मैथिलीयेक स्पन्दन हिनक साँसमे स्थान पओने रहय' किंवा 'जयकान्त बाबू मैथिली साहित्य, मैथिली आन्दोलन आ मैथिलीक संस्कृतिक महास्रोत, महानिधि आ महासागर छथि' (**जयकान्त जयन्तिका**, पृ.-28) श्रद्धेयक प्रति श्रद्धाक अतिरेकक अभिव्यक्ति मानल जाय, अलंकारक दृष्टिजे अतिशयोक्तिपूर्ण बूझल जाय मुदा एतबा तँ तथ्ये थिक जे ओ अपन उत्कर्ष कालमे मैथिलीक महत्तम हितकारी साबित भेल छलाह। एहि सम्बन्धमे डा. सुनीति कुमार चटर्जीक ई उद्गार द्रष्टव्य अछि जाहिमे डा. मिश्रक मैथिलीक हेतु अवदानकेँ रेखांकित करैत कहल गेल अछि–'We can confidently say that Dr. Jayakant Mishra's name will be handed down to posterity in India as the greatest benefactor of Maithili at the present day after that of the illustration George Abraham Grierson and will earn for him gratitude of 16 millions of Maithili speakers in the first instance and of the scholarly world of India, in the second.

●●●

सजीवनी समालोचना : रामदेवझा

डा. रामदेवझाक समग्र व्यक्तित्व ओ कर्त्तृत्वकेँ उद्घाटित करैत आचार्य सुरेन्द्रझा'सुमन'जी सूत्र रूपमे हुनकहि 'धरती माता' कथा-संग्रहक पुरोवचनमे कहने छथि जे ''कथाकार (विगत शताब्दीक) छठम दशकसँ तँ साहित्य मञ्च पर अवतीर्ण भेल छथि परञ्च उत्तीर्ण भेल छथि जीवनक नेपथ्यहिमे। जेना ई अनवरत साधना करैत रहला, स्कूल-वर्गमे एको दिन अनुपस्थित नहि भेला, कॉलेज-क्लासमे कखनहुँ दोसर पंक्तिमे नहि गेला, अध्यापक जीवनमे कहिओ अप्रस्तुत भऽ कऽ नहि अयला, साहित्यिक क्षेत्रमे सव्यसाची जकाँ बाम-दहिन दुनू सन्धान करैत रहला, निबन्ध-कथा- कविता-एकांकी सभ विधामे कलमक कमाल देखबैत रहला—ताहि सबसँ बहुत पुर्वहिसँ चिन्हारे नहि, मैथिली क्षेत्रमे चमत्कारे सिद्ध छथि। रुचि-संस्कार ओ लेखन-भाषण, शोध-अनुसन्धान सब दिशामे भाषा-साहित्यक अनुपम उपहारे प्रसिद्ध छथि।''

कबिलपुर (दरभंगा) निवासी डा. झा 1936 इसवीक श्रावणी पूर्णिमा दिन अपन मातृक एहोड़ा (दरभंगा)मे अवतीर्ण भेल छलाह। अपन कबिलपुर निवासहिमे दिनांक 18.03.2021 कऽ गोलोकवासी भऽ गेलाह। छात्रावस्थामे प्रथम श्रेणीमे मैट्रिक परीक्षोत्तीर्ण डा. झा बिहार विश्वविद्यालयसँ मैथिली विषयमे बी.ए. आनर्स स्वर्णपदक सहित प्राप्त कयने छलाह तथा पटना विश्वविद्यालयसँ सेहो स्वर्णपदक संग एम.ए. परीक्षोत्तीर्ण भेल छलाह। मेधावी छात्र ओ आदर्श प्राध्यापक मनीषीक रूपमे आजीवन प्रख्यात रहलाह।

डा. झा जहिना कारयित्री प्रतिभासँ सम्पन्न छलाह तहिना भावयित्री प्रतिभासँ सेहो। तेँ मैथिली जगत हुनका मैथिलीक विश्वकोष कहि सम्मान प्रदान करैत रहलनि। कविता, कथा, उपन्यास, नाटक, बाल साहित्य,

संस्मरण, ललित-निबंध, लोक साहित्य आदि विविध विधामे गंभीर लेखनमे निष्णात डा. झा निरन्तर शोध-अनुसन्धानमे मग्न रहि मैथिली साहित्येतिहास लेखनकेँ परिवर्तित-परिवर्द्धित, संशोधित ओ विस्तृत करैत रहल छलाह। स्वभावतः आधुनिक मैथिली साहित्यक वरेण्य आचार्यक रूपमे ई राष्ट्रीय संस्था साहित्य अकादेमी द्वारा तीन-तीन गोट ईर्ष्य पुरस्कार सभसँ सम्मानित मैथिलीक ध्वजवाहक सिद्ध भेलाह।

अनुसंधान ओ आलोचना डा. रामदेवझाक अत्यन्त प्रिय विषय रहलनि। गुण, परिमाण ओ लेखनक निरन्तरताक दृष्टिजे एहि विधामे हिनक रचनाशीलता हिनक कारयित्री प्रतिभासँ निष्पन्न कविता-कथा-उपन्यास-नाटक आदि विधाक अपेक्षा कनेको न्यून नहि रहलनि। कल्पनापरक मौलिक लेखन ओ चिन्तनपरक अनुषंगी लेखनक दुहू क्षेत्रमे हिनक लेखनीक सम्यक् ओ सन्तुलित गतिक प्रति अभिभूत भइये कऽ मैथिली दधीचि आचार्य सुरेन्द्रझा'सुमन' हिनका **सव्यसाची** साहित्यकारक रूपमे आख्यात कयने छलथिन।

डा. झाक अनुसन्धान क्षेत्र अतिशय व्यापक रहलनि। हिनक अनुसन्धान कलासँ मैथिलीक इतिहासलेखनकेँ प्रचुर दिशाबोध भेटलैक। एहि क्षेत्रमे हिनक सर्वाधिक प्रशस्त कार्य छनि हिनका द्वारा रचित **मैथिली शैव साहित्य** ओ **मैथिली शैव साहित्यक भूमिका**। ई दुनू ग्रन्थ एक दोसराक परिपूरक थिक। 'मैथिली शैव साहित्य'मे मैथिली साहित्यक एक गोट विशिष्ट काव्यधाराकेँ समेकित रूपेँ व्याख्यात कऽ ई स्थापित कयल गेल अछि जे आदिकालसँ लऽ कऽ अधुनातन काल धरि शैव भक्ति साहित्यक अक्षुण्ण परम्परा रहल अछि आ एहि परम्पराक निरन्तरता ओ पुष्कलता ई सिद्ध करैछ जे मैथिली साहित्यक वैष्णव काव्यधारासँ ई कनेको कम महत्त्वक नहि अछि। प्रसिद्ध समालोचक रमानाथझाक मैथिली कालविभाजनक क्रममे केवल दुइ गोट काव्यधारा क्रमशः कृष्ण काव्यधारा ओ राम काव्यधाराक मिथक एहि अनुसन्धानसँ सर्वथा निरस्त भेल अछि आ मैथिली इतिहास लेखनमे एक गोट नव अवधारणा ओ अध्याय जुटल अछि जे राम काव्यधारा ओ कृष्णकाव्यधाराक समानान्तर शैव काव्यधारा सेहो मैथिलीमे प्रवहमान रहल अछि।

एहि दुनू गुरु ग्रन्थक अतिरिक्त मैथिली इतिहासलेखनक विभिन्न

निगूढ़ तत्त्व सभक अनुशीलन ओ प्रकाशन द्वारा मैथिलीक प्राचीन ओ मध्यकालीन साहित्यक अनुसन्धानक क्षेत्रमे डा. झा जाहि अमूल्य, अनभिज्ञात किंवा अल्पज्ञात सामग्री सभकेँ प्रकाशमे आनि मैथिली इतिहासलेखनमे योगदान दैत रहला से सभ थिक–**नन्दीपति गीतिमाला, रामविजय नाट ओ वरगीत, हरगौरी विवाह नाटक, शिलोत्कीर्ण मैथिली गीत, मैथिली प्राचीन गीतावली, कुञ्जविहार नाटक, दशावतार नृत्यम् ओ षोडस गीतम्, मैथिली प्राचीन गीत मञ्जरी, दुर्गाविजय नाटक, मुदितकुवलयाश्वनाटक** इत्यादि।

मिथिलाक लोकसाहित्य सेहो डा. झाक अनुसन्धानपरक दृष्टि पर रहलनि। एहि क्षेत्रमे हिनका द्वारा कृत कार्य थिक–**मिथिलाक लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य**। मैथिली लोकसाहित्य व्यापक क्षेत्रमे हिनक ई ग्रंथ मौलिक अनुसंधान थिकनि।

प्रारंभमे मैथिली समालोचनामे सामान्यत: शास्त्रीय पद्धतिक उपयोग होइत छल आ कोनो कृतिक मूल्यांकनक आधार रहैत छल पौर्वात्य शास्त्रीय सिद्धान्त। मुदा क्रमश: पाश्चात्य आलोचना पद्धतिक प्रभावेँ समालोचक लोकनि अन्यान्य अनेक आधारपर विवेचन-विश्लेषणक प्रक्रियाकेँ आगू बढ़ौलनि जाहिमे कृतिक संगहि कृतिकारक परिवेशकेँ सन्तुलित स्थान प्रदान कयल जाइत रहलैक। एहने समालोचनाकेँ व्यापक, समुन्नत, व्यावहारिक, उपादेय, सन्तुलित ओ वस्तुनिष्ठ मानल गेल। समालोचनाक एहि पद्धतिमे कृतिकारक समसामयिक ऐतिहासिक, सामाजिक, आर्थिक ओ सांस्कृतिक परिवेश तथा पूर्ववर्त्ती, समकालीन ओ परवर्त्ती काव्यधाराक संग ओकर कृतिक तुलनात्मक विश्लेषणकेँ अन्तर्भुक्त करैत रचनाक आदर्श ओ उद्देश्यक परिशीलन कऽ मन्तव्य प्रदान कयल जाइत रहलैक अछि।

सजीवनी समालोचना :

वस्तुत: कोनो रचनाकारक कृतिपर ओकर जन्मकाल, जन्मस्थानक भौगोलिक परिस्थिति, परिवार, शिक्षा-दीक्षा, आचार-विचार, सभ्यता-संस्कृति, तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक परिस्थिति एवं पूर्ववर्त्ती काव्यधाराक प्रभाव पड़ितहिँ छैक आ यैह परिवेश ओ परिस्थिति सभ बहुत दूर

धरि ओकर रचनाप्रक्रिया ओ रचनाधर्मिताक नियामक सेहो होइत छैक। तेँ समालोचना क्रममे आलोच्य लेखकक जीवनवृत्तक विवेचन-विश्लेषण ओ तकरे परिप्रेक्ष्यमे ओकर रचनाक मूल्यांकन करबाक विशिष्ट परिपाटीक प्रादुर्भाव भेल अछि जकरा **स-जीवनी समालोचना** कहल जयबाक चाही। समालोचनाक एहि पद्धतिमे लेखकक जीवन-वृत्तक विवेचन-विश्लेषण ओतबे महत्त्वपूर्ण भऽ जाइत छैक जतेक ओकर कृतिक विवेचन-विश्लेषण आ एहि दुनूक बीच पारस्परिक समन्वयक सेहो विश्लेषण कऽ समालोचक एक गोट अन्वेषकक रूपमे पाठकक समक्ष प्रचुर सामग्री उपलब्ध करा दैत छथि जे सहजहिँ कृतिक मूल्यवत्ताकेँ उद्घाटित कऽ दैत छैक।

डा. रामदेवझाक समालोचनात्मक साहित्यमे अनेक पुस्तकाकार प्रकाशित छनि, मुदा अधिकांश विभिन्न संकलन ग्रन्थ ओ पत्र-पत्रिकामे विकीर्णे छनि। हिनक समस्त समालोचनात्मक कृतिकेँ स्थूल रूपेँ दुइ कोटिमे विभाजित कयल जा सकैछ—विधापरक आलोचना ओ सजीवनी समालोचना। हिनक विधापरक समालोचना कतहु विषय केन्द्रित अछि तँ कतहु कृति केन्द्रित। अवश्ये हिनक सजीवनी समालोचनात्मक कृति सभमे रचनाकारक जीवन ओ परिवेशक परिप्रेक्ष्यमे ओकर समस्त कृतिक मूल्यांकन कयल गेल अछि। हिनक एहि कोटिक रचनावलीमे जाहि स्फुट ओ ग्रन्थाकार कृति सभकेँ समेटल जा सकैत अछि, तकरा सभकेँ ओकर विवेच्य कृतिक कालक आधारपर दुइ गोट वर्ग कयल जा सकैछ—मध्यकालीन रचनाकारपर आधारित ओ आधुनिक कालक रचनाकारपर आधारित। हिनका द्वारा जाहि मध्यकालीन रचनाकार सबपर आधारित प्रमुख सजीवनी समालोचना रचित भेल अछि से सब थिकाह क्रमश: **शंकरदेव**, **जगज्ज्योतिर्मल्ल**, **जगत्प्रकाशमल्ल**, **उमापति** ओ **नन्दीपति**। हिनक आधुनिक कालक मैथिली रचनाकार सबपर केन्द्रित सजीवनी समालोचना मध्य प्रमुख विवेच्य रचनाकार थिकाह **जीवनझा**, **जनार्दनझा 'जनसीदन'**, **कविवर सीतारामझा** एवं **सुभद्रझा**।

शंकरदेव :

पन्द्रहम शताब्दीमे प्रादुर्भूत शंकरदेव असममे विकसित मैथिली नाट्यपरम्पराक शलाका पुरुषक रूपमे प्रख्यात छथि। हिनका द्वारा रचित

कालियदमन, **पत्नी प्रसाद**, **रसक्रीड़ा** वा **केलिगोपाल**, **रुक्मिणीहरण**, **पारिजातहरण** एवं **रामविजय नाट** मैथिली नाट्य साहित्यक विकास-प्रकाशमे असमक अमूल्य देन थिक। यद्यपि एहि नाटक सभक भाषा बहुधा असमी मिश्रित मैथिली थिक तथापि मैथिली साहित्येतिहासमे एकरा सभकेँ प्रमुख स्थान प्राप्त छैक।

डा. रामदेवझा स्वसम्पादित **रामविजयनाटक** (1967)क भूमिकामे शंकरदेवक सजीवनी समालोचना प्रस्तुत कयने छथि। एहिमे प्रारम्भमे कहल गेल अछि जे विजातीय आक्रमणसँ निरस्त होइत भारतीय समाजकेँ अपन अस्तित्वरक्षाक साधनक रूपमे एक गोट आन्दोलनक रूपमे वैष्णव धर्मक अभ्युदय भेल छल आ एही धर्मक एक गोट महान सन्तक रूपमे असममे शंकरदेव अवतरित भेल छलाह जे असमक परवर्त्ती साहित्य-समाज, धर्म-दर्शन, आचार-विचार, सभ्यता-संस्कृतिकेँ सर्वाधिक प्रभावित कयलनि।

ततःपर शंकरदेवक जन्म, पालन, अध्ययन ओ काव्य प्रतिभाक चर्च करैत हिनक वैराग्य धारणक कारणक विवेचन भेल अछि। ततःपर लेखक ई सूचना देलनि अछि जे वैराग्य धारणक बाद शंकरदेव बारह वर्ष धरि तीर्थाटन करैत रहलाह आ विभिन्न साधु, सन्त, वैष्णव भक्त ओ दार्शनिक-विद्वान लोकनिक सम्पर्कमे अयलाह आ वैष्णव मतमे दीक्षित भऽ असमक शाक्त प्रदेशमे प्रत्यावर्त्तित भेलाक बाद वैष्णव धर्मक प्रचार-प्रसारमे लागि गेलाह। ई पुनः विवाह कयलनि आ अपना गामेक निकट एक गोट मठक स्थापना कऽ ओहिमे सामूहिक उपासना स्थलक निर्माण करौलनि एवं नाम संकीर्त्तनक प्रचारमे दत्तचित भेलाह। हिनके द्वारा एकशरणिया वैष्णव मतक प्रवर्त्तन भेल जाहिमे 'कृष्णमेव शरणम्' केर उपदेश देल जाइत छल। परवर्त्ती कालमे श्रीमद्भागवतक दार्शनिक विचारधाराक आत्सातीकरणपूर्वक शंकरदेव अनेक आत्मनिवेदनपरक वरगीत ओ अंकीयानाटक रचना कयलनि आ असममे विकसित मैथिली नाट्य परम्पराक प्रवर्त्तकक रूपमे अपन स्थान बनौलनि। लेखकक अभिमत छनि जे 'दृश्यावली युक्त परदाक प्रयोग शंकरदेवक महत्त्वपूर्ण अवदान थिकनि। ओ जाहि अंकीया नाटककेँ शास्त्रीय स्वरूप प्रदान कयलनि तकर प्रेरक तत्त्वक दर्शन हुनका तीर्थाटनक क्रममे विभिन्न जनपदमे प्रचलित अभिनय प्रकार यथा किरतनिआ नाटक, रामलीला,

रासलीला, यात्रा, कथक, यक्षगान, भवाइ आदिसँ भेल होयतनि', जे सर्वथा समीचीन बुझना जाइछ।

ततःपर लेखक शंकरदेवक परवर्त्ती नाट्यपरम्पराक किछु विशिष्ट नाटककार माधवदेव, गोपालदेव, रामचरण ठाकुर, दैत्यारिठाकुर आदिक सूचना प्रदान कयलनि अछि। एहि क्रममे अंकीया नाटक शिल्पक विश्लेषण करैत ओहिमे प्रयुक्त नान्दी, सूत्रधार, भटिमा, मुक्तिमंगल भटिमा आदिक स्वरूपक उल्लेख भेल अछि। लेखक असममे विकसित मैथिली नाट्य साहित्यक भाषा ओ गद्यपर सेहो सविशेष चर्चा कयलनि अछि तथा ओहि नाट्य साहित्यक संग कीर्तनिञा नाटकक तुलना कऽ ई सिद्ध करबामे सफल भेल छथि जे असमहुमे विकसित मैथिली नाट्यपरम्परामे गीतक प्रयोगबाहुल्य ओ प्रवेश गीतक दृष्टिञे कीर्तनिञाक प्रभाव अत्यन्त सहज देखि पड़ैत अछि।

एहि तरहेँ एहि सजीवनी समालोचनाक माध्यमे लेखक नहि केवल शंकरदेवक जीवन-चर्या ओ परिवेश किंवा हुनक कृति रामविजय मात्रक मूल्यांकनेटा कयलनि अपितु अंकीया नाटक क्षेत्रमे परवर्त्ती अनुसन्धानक हेतु मार्गो प्रशस्त कयलनि। संगहि लेखक मैथिली साहित्येतिहास लेखनमे एकटा अध्यायकेँ पल्लवित-पुष्पित सेहो कयलनि जे मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अनुसन्धानक प्रति हिनक गहन रुचिकेँ विज्ञापित करैत अछि।

जगज्ज्योतिर्मल्ल :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक दोसर अवदान थिकनि **जगज्ज्योतिर्मल्ल**। जगज्ज्योतिर्मल्ल मध्यकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यक एक गोट विशिष्ट कवि ओ नाटककार भऽ गेल छथि। हिनक व्यक्तित्व ओ कृतित्वक सम्यक् विवेचनपर आधारित डा. झाक विनिबन्ध थिकनि 'जगज्ज्योतिर्मल्ल' जे साहित्य अकादेमीक 'भारतीय साहित्य निर्माता' शृंखला मध्य 1995मे प्रकाशित भेल। एहि अनुसन्धानपरक विनिबन्धक माध्यमे मध्यकालीन मैथिली साहित्यक अनेक अभिज्ञात तथ्यक विश्लेषण ओ अज्ञात तथ्यक प्रकाशनक संगहि मैथिली साहित्येतिहासक अनेक भ्रान्तिपूर्ण तथ्यक परिमार्जन भेल अछि।

एहि विनिबन्धक पूर्वपीठिकामे दुइ गोट शीर्ष क्रमशः 'राजनीतिक

परम्परा ओ परिवेश' तथा 'साहित्यिक परम्परा ओ परिवेश'क माध्यमे तत्कालीन नेपालक राजनीतिक ओ साहित्यिक परिवेशक सविशेष मूल्यांकन करैत ओहि समस्त बिन्दुपर प्रकाश देल गेल अछि जे जगज्ज्योतिर्मल्ल सदृश मार्गदर्शक कवि ओ नाटककारक प्रादुर्भावक कारण बनल छल।

ग्रन्थकार नेपालीय मैथिली साहित्यक कारणभूत तत्त्व सभक विश्लेषण करैत कहलनि जे–'मिथिलासँ विद्वान, पण्डित, कवि, संगीतज्ञ, गुणी, नर्त्तक एवं अन्य शास्त्र ओ विषयक ज्ञातालोकनिकेँ आमन्त्रित कऽ नेपालक राज्यसभामे स्थान देल जाइत रहलनि। मिथिलाक सारस्वत धारा नेपालोन्मुख भऽ कऽ अनवरत प्रवहमान होमऽ लागल आ ओही संग आयल मैथिली भाषा, मैथिलीक गीतिकाव्य ओ नाटक। मिथिलाक साहित्य ओ संगीतसँ मल्लराजवंशीय नेपाल उपत्यका जेना गुञ्जायमान भऽ उठल। मैथिलीक विद्यापति, विष्णुपुरी, अमृतकर, गोविन्द, कंसनारायण इत्यादि कविगणक कोमलकान्त पदावलीक गाने मात्र नहि होइत रहल, मिथिलामे रचित नाटकक अभिनये नहि होइत रहल, अपितु गीत ओ नाटकक रूपमे मैथिलीक अजस्र साहित्यक सर्जना सेहो अठारहम शताब्दीक तृतीय चरण धरि अविराम गतिसँ होइत रहल। ओहि अन्तरालमे नेपालमे मैथिली सभ्य, सुसंस्कृत ओ सम्भ्रान्त जनसमुदायक भाषाक रूपमे प्रतिष्ठित रहल। मैथिली भाषाक ज्ञान ओ मैथिली भाषामे काव्य-सर्जनक क्षमता विकसित ओ परिमार्जित रुचिक मानदण्ड बनि गेल।'

एहि क्रममे ग्रन्थकार जगज्ज्योतिर्मल्ल पूर्ववर्त्ती नेपालीय साहित्यक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करैत एहि निष्कर्षकेँ सुस्थापित कयलनि जे जगज्ज्योतिर्मल्लकेँ मैथिली भाषामे गीत ओ नाट्य रचनाक प्रेरक पृष्ठभूमि रूपमे मैथिली ओ नेपालीय संस्कृत तथा भाषा काव्य-नाटकक समृद्ध परम्परा ओ परिवेश प्राप्त छलनि।

मुख्य ग्रन्थ छओ गोट अध्यायमे विभक्त अछि। एहिमे पहिल अछि **जगज्ज्योतिर्मल्लक जीवन : परिवार ओ परिजन**। एहि अध्यायमे सर्वप्रथम ग्रन्थकार अनेक अन्तःसाक्ष्यक आधार प्रस्तुत करैत इतिहासकार लोकनिक एहि भ्रान्त धारणाकेँ निर्मूल करबाक प्रमाण देलनि अछि जे त्रैलोक्यमल्ल आ त्रिभुवनमल्ल एके व्यक्तिक अभिधान थिक। वस्तुतः दुनू गोटे परस्पर भाइ छलाह आ जगज्ज्योतिर्मल्ल त्रैलोक्यमल्लक पुत्र

छलाह। ग्रन्थकार मुदित कुवलयाश्व नाटकक प्रस्तावनाक आधारपर नेपालक राजनीतिक इतिहासक एहि भ्रान्तिक सेहो निराकरण कयलनि अछि जकर अनुसार भक्तपुरक राजसत्ताक हस्तान्तरण सहज रूपेँ जगज्ज्योतिर्मल्लकेँ भऽ जयबाक संकेत भेटैत अछि। ग्रन्थकार ई साबित कयलनि अछि जे दुइ गोट दुष्ट मन्त्री ओ ओकर किछु सहायक लोकनि द्वारा जगज्ज्योतिर्मल्लक पिताक मृत्यूपरान्त राजसत्ता हथिया लेल गेल, मुदा अपन बुद्धिबल, राजनीतिक कौशल ओ संघर्षक बलेँ जगज्ज्योतिर्मल्ल अपन पिताक राज्यकेँ प्राप्त करबामे सफल भेल छलाह। ग्रन्थकार इतिहासकार पर्सिविल, लन्दनक एहू मतक खण्डन कयलनि अछि जकर अनुसार जगज्ज्योतिर्मल्लकेँ निरन्तर काठमाण्डूपर आक्रमण करैत रहऽवला राजाक रूपमे उद्धृत कयल गेलनि अछि।

एही अध्यायमे जगज्ज्योतिर्मल्लक जन्म वर्ष 1568 इ. सँ लऽ कऽ 1590 इ.क बीच निर्धारित करैत ग्रन्थकार हुनक जीवनक अनेक कार्य ओ घटना सबहिक उल्लेख कऽ हुनका दानवीर, दयावीर, सत्यवीर ओ युद्धवीर शासकक रूपेँ प्रतिष्ठापित कयलनि अछि। अन्ततः ग्रन्थकारक ई निष्कर्ष छनि जे जगज्ज्योतिर्मल्लक तन-मन-जीवन धार्मिक आस्था, आस्तिकता ओ भक्तिभावनासँ पूर्ण छलनि। ग्रन्थकारक ई निष्कर्ष जगज्ज्योतिर्मल्लक कृतिमे अभिव्यक्त भावनापर आधारित रहबाक कारणेँ सर्वथा समीचीन अछि।

एहि ग्रन्थक दोसर अध्याय थिक **जगज्ज्योतिर्मल्लक कृति**। एहि अध्यायमे हिनक रचनाक आधारपर हिनका बहुभाषाविज्ञ कहल गेलनि अछि। हिनक रचनामे संस्कृत, प्राकृत, मैथिली, नेवारी, बंगला ओ ब्रज-अवधीक प्रयोग भेटैत अछि। नेवारीमे हिनक ग्रन्थ अछि **अश्वशास्त्र टीका** तथा संस्कृतमे सेहो ई ज्योतिष, कामशास्त्र, संगीतशास्त्रक ग्रन्थक अतिरिक्त अनेक पद्यक रचना कयने छथि, जकर उल्लेख ग्रन्थकार कयने छथि। ततःपर ग्रन्थकार हिनक मैथिली कृति सभक परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत कयने छथि। ग्रन्थकार जगज्ज्योतिर्मल्ल रचित मुदित कुवलयाश्व, हरगौरी विवाह, कुञ्जविहार, षोडशगीतम्, दण्डपाणि उत्पति नाच एवं दशावतार नृत्यम् नाटकक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करैत एक गोट ऐतिहासिक भ्रान्तिकेँ निर्मूल करबाक आयोजन कयलनि अछि।

ई ऐतिहासिक भ्रान्ति रहल अछि मुदित कुवलयाश्व नाटककेँ वंशमणिक कृति मानब। एहि भ्रान्तिक कारण रहल अछि एहि नाटकमे प्रस्तावनामे नाट्यवस्तु निर्देशक क्रममे वंशमणिक परिचय सहित उल्लेख। मुदा ग्रन्थकार सूत्रधारक कथन 'श्रीवंशमणि उझाञे कएल, जे मोञे कहि अएलहु तन्हिहि' एहि वाक्यांशक आधारपर ई सिद्ध कयलनि अछि जे सूत्रधारक उक्तिक तात्पर्य बहराइछ जे अभिनेय नाटकक कथानक वंशमणिक तद्विषयक कृतिपर आधारित अछि। एतावता ई कृति जगज्ज्योतिर्मल्लक थिकनि से निर्विवाद भऽ गेल अछि।

ततःपर ग्रन्थकार जगज्ज्योतिर्मल्लक गीत संग्रह सभक संक्षिप्त परिचयक क्रममे गीतपञ्चाशिका, गीतसंग्रह, नानागीतरागसंग्रह, नवरस संगीत, नादोत्पत्तित्यादि भाषा संगीतम्, राग भजन संग्रह एवं नानाराग गीतम् आदि संकलनक स्वरूपक वर्णन कयने छथि जाहिसँ जगज्ज्योतिर्मल्लक गेय पदावलीक परिचय भेटि जाइत अछि। अन्तमे ग्रन्थकार जगज्ज्योतिर्मल्लक सर्वथा अनधीत कृति **कीचक वध** वर्णनात्मक काव्यक उल्लेख ओ परिचय दऽ एहि अध्यायक समापन कयलनि अछि। एहि अध्यायमे ग्रन्थकारक बहुश्रुति ओ सूक्ष्म पर्यवेक्षणक प्रवृत्ति उद्घाटित भेलनि अछि जे मैथिली साहित्येतिहासक अनुसन्धान-आलोचनाक क्षेत्रमे मार्गदर्शक ओ नियामक कहल जा सकैत अछि।

परवर्त्ती अध्यायमे शास्त्रीय आलोचना पद्धतिक आधारपर जगज्ज्योतिर्मल्लक नाटक सभक प्रस्तावना, समापन, अंक विभाजन, अभिनय शैली, जमनिका, अर्थोपक्षेपक, कथोपकथन आदिक विश्लेषणपूर्वक समस्त नाट्यकृतिक वस्तुक उल्लेख करैत वैशिष्ट्यक विवेचन भेल अछि। एहि अध्यायमे लेखकक रुझान शास्त्रीय आलोचना पद्धति दिस छनि।

ग्रन्थक चारिम अध्याय जगज्ज्योतिर्मल्लक गीतकाव्यक विवेचन-विश्लेषणपर आधारित अछि। एहिमे गीत सभकेँ राग-भास, भाषा-अलंकार, भावपक्ष, रसपक्ष, युगव्यवहार आदिक सन्दर्भमे परेखल गेल अछि जाहिसँ जगज्ज्योतिर्मल्लक गेय काव्यक वैशिष्ट्य उद्घाटित भेलनि अछि।

एहि ग्रन्थक पाँचम ओ अन्तिम अध्यायमे जगज्ज्योतिर्मल्लक भक्तिभावनापर विस्तारपूर्वक चर्चा करैत ग्रन्थकार हिनका एक गोट विशिष्ट शैव कविक रूपमे प्रतिष्ठापित कयलनि अछि। ग्रन्थकारक उक्ति

छनि जे–ओ केवल नेपालीय शैव साहित्यमे नहि प्रत्युत् समस्त मैथिली शैव साहित्यमे अत्युच्च स्थान रखैत छथि।

ग्रन्थक अन्तमे परिशिष्ट रूपमे जगज्ज्योतिर्मल्लक अनुभूत सत्य ओ सूक्ति सभ संकलित अछि। सार्वकालिक ओ सार्वजनीन एहि उक्ति सभक संकलनसँ ग्रन्थक उपादेयता आर बढ़ि गेल अछि।

एतावता डा. रामदेवझा कृत जगज्ज्योतिर्मल्ल विनिबन्ध हिनका द्वारा रचित सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे एक गोट नियामक ग्रन्थ सिद्ध भेल अछि। एकरा माध्यमे मध्यकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यक एक गोट ज्योतिस्तम्भक नहि केवल समुचित परिचयेटा भेटैत अछि अपितु हिनक कृति सभक वैशिष्ट्यक निरूपणक संगहि साहित्येतिहासक विभिन्न भ्रान्तिक सेहो निराकरण भेल अछि। एहि ग्रन्थमे नहि केवल आलोचकक बहुज्ञता अपितु रचना सभक तहमे जाय ओकर सुवासकेँ उद्घाटित करबाक विवेचनात्मक गुणक निदर्शन भेटैत अछि। एहि ग्रन्थक रचनासँ बहुत पूर्वहि लेखक द्वारा अनुसन्धित ओ प्रकाशित हरगौरीविवाह नाटकक (1970) प्रस्तावनामे सेहो जगज्ज्योतिर्मल्लक संक्षिप्त सजीवनी समालोचना प्रस्तुत भेल छल। मुदा स्वतंत्र ग्रन्थक अवतरणसँ जगज्ज्योतिर्मल्लसँ सम्बन्धित ओ प्रस्तावना आब गौण भऽ गेल अछि।

जगत्प्रकाशमल्ल :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक तेसर अवदान थिकनि **जगत्प्रकाशमल्ल**। एकर प्रकाशन भारतीय साहित्यक निर्माता, शृंखलाक विनिबन्धक रूपमे साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 1990मे भेल। इहो ग्रन्थ मध्यकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यक अन्य विशिष्ट स्तम्भक व्यक्तित्व ओ कृति पक्षकेँ समग्रतामे उजागर कयने अछि। एहिमे व्याख्यात्मक आलोचना पद्धतिक माध्यमे मैथिली साहित्येतिहासक अनेक अनभिज्ञात ओ अल्पज्ञात तथ्य सभकेँ प्रकाशमे आनल गेल अछि।

ग्रन्थक प्रथम अध्याय **जगत्प्रकाशमल्लक पूर्ववर्त्ती मैथिली साहित्यधारामे** मध्यकालीन मैथिली साहित्यधाराक दुइ गोट प्रभेदक उल्लेख भेल अछि–अन्तरंग ओ बहिरंग। मिथिलावासी ओ मैथिलीभाषी साहित्यकार लोकनिक मैथिली रचनाकेँ अन्तरंग ओ मिथिलेतर प्रान्तमे

विकसित मैथिली रचनाकेँ बहिरंग साहित्य कहल गेल अछि। बहिरंगो साहित्यकेँ पुनश्च दू भागमे विभाजित कयल गेल अछि–बंगाल, असम ओ उड़ीसामे विकसित मैथिली साहित्य किंवा ब्रजबूलि साहित्य तथा नेपालमे विकसित नेपालीय मैथिली साहित्य। तत:पर प्राक्विद्यापति साहित्यक चर्चा करैत ग्रन्थकार कहलनि अछि जे–'विद्यापतिक तिरोधानक पश्चात् मिथिला, बंगाल, उड़ीसा, असम एवं नेपालक कविगणक लेल विद्यापतिक काव्य प्रेरणादर्श बनल रहल तथा ओ लोकनि विद्यापतिक भाव, भाषा, भास, छन्द ओ उक्ति भंगिमाक एकात्म भावेँ अनुकरण-अनुसरण करैत रहलाह। एहिमे मिथिलेतर प्रदेशक मैथिली गीतकाव्य ओ नाट्य साहित्य-सम्पदा भेल : बहिरंग मध्यकालीन मैथिली साहित्य। बहिरंग मध्यकालिक मैथिली साहित्यक नेपालीय परम्परामे एकटा प्रमुख नाटककार ओ गीतकारक रूपमे जगत्प्रकाशमल्लक नाम अबैत छनि।'

दोसर अध्यायमे नेपालीय मैथिली साहित्यमे जगत्प्रकाशमल्लक स्थानक निरूपण भेल अछि। एहि अध्यायमे मिथिला ओ नेपालक साहित्यिक-सांस्कृतिक सम्बन्धक विवेचन करैत ग्रन्थकार नेपालक राजनीतिक इतिहासक आधारपर जगत्प्रकाशमल्लक वंश-परम्पराक उल्लेख कऽ ई स्थापना देलनि अछि जे–'जगत्प्रकाशमल्ल नेपालक मैथिली साहित्यक विकासक्रमक मध्यवर्ती बिन्दु थिकाह जे अपन काव्यपरम्पराकेँ आत्मसात् कयल तथा परवर्ती साहित्यक प्रवाहकेँ सशक्त ओ विस्तृत कयल।'

तेसर अध्यायमे जगत्प्रकाशमल्लक परिवार ओ परिजनक उल्लेख भेल अछि। ग्रन्थकार अन्त:साक्ष्यक आधारपर जगत्प्रकाशक तीन गोट पत्नी ओ दुइ गोट पुत्र होयबाक उल्लेख कयलनि अछि। तथापि एहि अध्यायमे जगच्चन्द्रक भणिताक व्याख्या द्वारा जाहि तरहेँ ग्रन्थकार जगत्प्रकाशमल्ल ओ चान्दशेखरसिंहक अभिन्न मैत्रीभावकेँ प्रतिपादित कयलनि अछि, से हुनक सूक्ष्म दृष्टि ओ अनुसन्धान प्रज्ञाक परिचायक छनि।

ग्रन्थक चारिम अध्याय थिक **साहित्य-संगीत-कलाक क्षेत्रमे जगत्प्रकाशमल्ल योगदान**। एहि अध्यायमे विवरणात्मक शैलीमे जगत्प्रकाशमल्ल द्वारा निर्मित वास्तुशिल्प सभक उल्लेख कयल गेल अछि। संगहि हिनका गानविद्या ओ सहित्यविद्यामे निष्णात मानल जयबाक अन्त:साक्ष्य सभक विवेचन प्रस्तुत भेल अछि।

पाँचम अध्याय थिक जगत्प्रकाशमल्लक **जीवनिका**। एहिमे चारि वर्षक अल्पायुमे जगत्प्रकाशक राज्यारोहण, महामात्यक अभिभावकत्वमे शासन-संचालन, शिक्षा-दीक्षा आदिक संगहि चौंतीसे वर्षक अल्पायुमे हुनक मृत्युक उल्लेख भेल अछि। ग्रन्थकार हिनक व्यक्तित्व पक्षकेँ उजागर करैत कहने छथि जे-'अल्पहु जीवनकालमे सर्वथा विपरीत राजनीतिक परिस्थितिमे संघर्ष करैत, भक्तपुरक मर्यादाकेँ सुरक्षित कयल, राज्यक ऊपर होइत आक्रमणक प्रतिरोध कयल, शासनकेँ सुव्यवस्थित कयल, अपन मेधावितासँ विविध विषयक ज्ञानार्जन कयल, अपन प्रतिभाक अवदानसँ साहित्यकेँ समृद्ध कयल, कला ओ संगीत क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण योगदान कयल तथा आरम्भिक अवस्थासँ अपन ज्येष्ठ पुत्र ओ भावी उत्तराधिकारी जयजितामित्रमल्लकेँ समुचित शिक्षा-दीक्षा ओ राज्यशासनक प्रशिक्षण दऽ ततबा योग्य बना देल जे ओ भविष्यमे नेपाल उपत्यकाक प्रौढ़ शासकक रूपमे प्रतिष्ठित भेलाह।' एही क्रममे युद्धग्रस्त जगत्प्रकाश ओ श्रीनिवासमल्लक पारस्परिक सन्धि ओ श्रीनिवासमल्लक सम्मानमे जगत्प्रकाशक नाट्यरचना ओ तकर अभिनय करयबाक उल्लेख भेल अछि।

छठम अध्याय थिक **जगत्प्रकाशमल्लक कृति ओ भाषा**। एहि अध्यायमे जगत्प्रकाशमल्लकृत बारह गोट नाटकक उल्लेख भेल अछि आ हुनक गीतावलीपर आधारित दुइ गोट आर नाटकक प्रणयनक सम्भावना व्यक्त कयल गेल अछि। एही अध्यायमे जगत्प्रकाशक एकल किंवा जगत्प्रकाशक गीतक संग अन्यान्यो कविक गीतसँ सम्बन्धित आठ गोट संग्रहक उल्लेख भेल अछि। एहिसँ ई स्फुट होइछ जे जगत्प्रकाशमल्लक साहित्य संसार विराट छलनि। अध्यायक अन्तमे ग्रन्थकार जगत्प्रकाशक भाषा-प्रयोगपर विचार कयलनि अछि आ हुनका संस्कृत, नेवारी ओ ब्रजभाषामे निपुण सावित कहलनि अछि।

सातम अध्यायमे जगत्प्रकाशमल्लक नाटक सभक वस्तुविन्यास उल्लिखित भेल अछि तथा ओकरा सभक रचना शैलीपर विमर्श कयल गेल अछि। ग्रन्थकार एहि नाटक सभक आधार-स्रोतपर विशद् विवेचन कयलनि अछि तथा रसविन्यासक दृष्टिजे सेहो एकरा सभक विश्लेषण कयलनि अछि। ग्रन्थकारक सप्रमाण निष्कर्ष छनि जे 'शृंगार, वीर रसान्वित होइतहुँ जगत्प्रकाशक नाटक सभक रस-परिपाक अन्ततः शान्त रसहिमे

देखि पड़ैत अछि।'

आठम अध्यायमे जगत्प्रकाशक गीतविधाक शास्त्रीय आलोचना कयल गेलनि अछि। हिनक गीतकेँ दुइ प्रभेदमे बाँटल गेलनि अछि–नाट्य गीत ओ मुक्तक गीत। नाट्यगीतमे नान्दी गीत, पुष्पांजलि गीत, राजवर्ण्णना गीत, नगर वर्ण्णनागीत, स्तुति गीत, वैराग्य भावक गीत, प्रवेश गीत, निस्सार गीत, संवाद गीत, वर्णनात्मक गीत आदि प्रकार भेद अछि जे पुनश्च लघु गीत, पूर्ण गीत ओ उत्तर-प्रत्युत्तरक दण्डक गीतमे विभक्त कयल गेल अछि। पुनश्च रसाभिव्यंजनाक दृष्टिजे हिनक गीतक दुइ कोटि कहल गेल अछि–शृंगार गीत ओ भक्ति गीत।शृंगार गीतक पुनश्च अनेक भेदोपभेदक उल्लेख ओकर आलम्बन ओ आश्रयक आधारपर कयल गेल अछि। तथापि ग्रन्थकार जाहि विशिष्ट गीत संग्रहक प्रति अभिभूत देखि पड़ैत छथि से थिक गीतपंचक जकरा शोककाव्य कहल जा सकैछ। मध्यकालीन मैथिली साहित्यक दृष्टिजे ई गीतसंग्रह सर्वथा अनुपम अन्वेषण थिक।

अन्तमे उपसंहारमे जगत्प्रकाशमल्लक नाटक ओ गीतक कतोक विशेषताक वर्णन कऽ ग्रन्थकार हुनक रचनामे उपलब्ध सूक्तिक संकलनक संग ग्रन्थक समापन कऽ देलनि अछि।

एहि तरहेँ एहि सजीवनी समालोचनात्मक ग्रन्थक माध्यमे मध्यकालीन नेपालीय मैथिली साहित्यक एक गोट अन्यतम नाटककार ओ गीतकारक सम्बन्धमे समग्रतामे विवेचन-विश्लेषण उपस्थित कऽ ग्रन्थकार मैथिली साहित्येतिहासक कतोक अस्पृष्ट तथ्यकेँ उजागर करबामे सक्षम सिद्ध भेल छथि।

उमापति :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक चारिम अवदान थिकनि **उमापति** शीर्षक शोधग्रन्थ। ई ग्रन्थ मध्यकालीन नाटकक उमापतिक व्यक्तित्व ओ कृतिपक्षक विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि। एकर ग्रन्थाकार संस्करण मैथिली अकादमी, पटना द्वारा 1980 मे प्रकाशित भेल।

एहि ग्रन्थक प्रस्तावनामे उद्धृत विचारक आधारपर ग्रन्थक उद्देश्य उमापतिक आश्रयदाता, स्थितिकाल ओ परिचयक सम्बन्धमे एकवाक्यता स्थापित करब छल। मुदा वस्तुतः ई ग्रन्थ मध्यकालीन कीर्त्तनिञा नाटकमे

सर्वप्रमुख ओ सर्वाधिक लोकप्रिय नाटक पारिजातहरणक प्रणेता उमापतिक समग्रतामे विवेचन-विश्लेषणसँ सम्बन्धित अछि। एकर माध्यमे ग्रन्थकार मैथिली साहित्यक इतिहासलेखनक कतिपय भ्रान्तिकेँ दूर कऽ विवेचित नाटककारक सम्बन्धमे वृहत्तर परिप्रेक्ष्यमे विचार समुपस्थित कयलनि अछि।

उमापतिक आश्रयदाताक रूपमे पारिजातहरणक प्रस्तावनामे हिन्दूपति हरिहरदेवक उल्लेखक आधारपर ग्रियर्सन हुनक आश्रयदाता कर्णाटवंशीय हरसिंहदेवकेँ मानने छलाह जनिक समय चौदहम शताब्दी छनि। प. चेतनाथझा हुनका भपटियाहीक निकट नेपालमे स्थित मकमानी राजाक आश्रित मानने छलाह जनिक समय अठारहम शताब्दी छलनि आ प्रसिद्ध इतिहासकार डा. जयकान्तमिश्र हुनका बुन्देलखंडक राजा हिन्दूपतिसिंहक आश्रित मानने छलाह जनिको समय अठारहम शताब्दी छनि। डा. रामदेवझा एहि अवधारणा सभपर प्रमाण-पुरस्सर विचार करैत ओ उमापतिक गीतेक अन्त:साक्ष्यक आधारपर प. चेतनाथझाक मतक समर्थन कऽ एहि विषयमे प्रचलित समस्त भ्रान्तिकेँ दूर करैत एकरा सर्वमान्य बनौलनि। लेखक पारिजातहरण नाटकक दोसर नान्दी श्लोकमे प्राप्त 'मैथिलेश' पदकेँ प्रक्षेप सिद्ध कयलनि अछि। मैथिली साहित्यक इतिहासलेखनक दृष्टिञे हिनक ई अन्वेषणात्मक कार्य मैथिली साहित्यकेँ अनुपम देन थिकनि। साहित्य अकादमी, नई दिल्लीसँ प्रकाशित मैथिली साहित्यक इतिहास ग्रन्थमे डा. जयकान्तमिश्र, डा. झाक एहि स्थापनाक अनुमोदन कयने छथि।

एही क्रममे ग्रन्थकार उमापतिक समय निर्धारण नेपालक राजनीतिक इतिहासक आधारपर सोलहम शताब्दीक अन्तिम चरणसँ लऽ कऽ सत्रहम शताब्दीक तेसर चरण धरि कयलनि अछि। संगहि ओ उमापतिक वासस्थानक सम्बन्धमे प्रचलित द्वैध जे ओ मंगरौनीक निवासी छलाह कि कोइलखक, तकरो निदान विभिन्न अन्त:साक्ष्यक आधारपर कऽ देलनि अछि। उमापतिक पितृकुल ओ मातृकुलक परिचय सेहो अन्त:साक्ष्य सभक आधारपर व्याख्यात भेल अछि।

तत:पर ग्रन्थकार मकमानी राजसभामे मैथिली भाषा-साहित्यक स्थितिक अन्वेषणपूर्वक कतोक एहन गीत सभक दृष्टान्त प्रस्तुत कयलनि अछि जे मकमानीराजक किंवा हुनक आश्रित कविलोकनिक भनितामे उपलब्ध अछि तथा प्रमाणित करैत अछि जे वस्तुत: एहि राजमे मैथिलीक

गतिविधि वर्त्तमान छलैक। उमापतिक कृतिक विश्लेषणक क्रममे ग्रन्थकार नहि केवल हिनका **पदार्थीयदिव्यचक्षु** नामक न्याय ग्रन्थक प्रणेता सिद्ध कयलनि अछि अपितु हिनक कतोक स्फुट गीत सभक सेहो अन्वेषण कऽ मध्यकालीन मैथिली साहित्यक ज्ञानक अभिवृद्धि करौलनि अछि। ग्रन्थकार उमापतिक कतोक गीतक आधारपर हिनकामे अनेक मैथिली नाटकक प्रणयनकर्त्ताक सम्भावनाकेँ अभिव्यक्त कयलनि अछि। हुनक स्पष्ट मान्यता छनि जे–'परन्तु आब जहिना उमापतिक सम्बन्धमे गम्भीर अध्ययन करैत गेलहुँ अछि, तहिना-तहिना हुनक आरो नाट्यकृति होयबाक सम्भावना गाढ़ होइत जा रहल अछि। ग्रन्थकार उमापतिक पन्द्रह गोट स्फुट गीत ओ अपना लग प्राप्त पारिजातहरणक हस्तलेखमे ग्रथित दुइ गोट नव गीतकेँ संकलित कऽ एहि ग्रन्थकेँ अत्यन्त उपयोगी बना देलनि अछि। पारिजातहरणक मुद्रित ओ हस्तलिखित प्रति सभक सूचना प्रदान कऽ लेखक परवर्त्ती अन्वेषकलोकनिक मार्गकेँ प्रशस्त कऽ देलनि अछि। ग्रन्थान्तमे उमापतिक काव्यवैशिष्ट्यपर सेहो ग्रन्थकार अति संक्षिप्त विवरण दऽ देलनि अछि जाहिमे एहि नाटककारक भाव, भाषा, अभिव्यक्ति-पद्धति, अलंकारयोजना, माधुर्य गुण आदिक उल्लेख मात्र भेल अछि।

ग्रन्थकार एहि ग्रन्थक उद्देश्य उमापतिक परिचय प्रस्तुत करब कहने छथि आ तकरा समग्रतामे निर्वाह कयने छथि। तथापि उमापतिक काव्य प्रतिभा, हुनक काव्यक शास्त्रीय विश्लेषण-मूल्यांकन, पारिजातहरणक ऐतिहासिक महत्त्वक प्रतिपादन ओ नाट्यशास्त्रीय समीक्षा' जकरा एहि ग्रन्थमे समेटल नहि जा सकल तकरा हेतु अपन बाध्यताक उल्लेख कयने छथि। यद्यपि एहि विषय-वस्तु सभक विश्लेषणसँ उमापति सम्बन्धी ई ग्रन्थ आर बेसी उपादेय भऽ सकैत छल मुदा एहिमे जतबे विषयक प्रस्तुति भऽ सकल से साहित्यान्वेषीकेँ निरन्तर अनुप्रेरित करबाक हेतु मार्गदर्शक बनल रहल अछि।

नन्दीपति :

डा. रामदेवझा द्वारा अनुसन्धित ओ सम्पादित-प्रकाशित **नन्दीपति गीतिमाला** (1965) ग्रन्थक भूमिका भागमे नन्दीपति शीर्षकसँ एक गोट निबन्ध अनुगुम्फित अछि जकरा सजीवनी समालोचना कहल जा

सकैछ। एहि निबन्धक आरम्भहिमे मध्यकालीन मैथिली साहित्यमे नन्दीपतिक स्थान निरूपण करैत हुनका उमापति, रमापति ओ मनबोधक समकक्ष कहल गेलनि अछि।

ततःपर नन्दीपतिक रचनावलीपर विचार कयल गेल छनि तथा हुनक उपलब्ध कीर्त्तनिञा नाटक **कृष्ण केलिमाला**क अतिरिक्त एक गोट दोसर नाटक **कदम्ब केलिमाला**क सेहो उल्लेख भेल अछि। हुनक गीतावलीक आधारपर लेखकीय संकल्पना अभिव्यक्त भेल अछि जे नन्दीपतिक एक गोट नाटक **रुक्मिणीपरिणय** अभिधानसँ सेहो प्राप्त होयबाक चाही। एही ठाम लोकजीवनमे हिनक गीतावलीक प्रसारक सेहो उल्लेख भेल अछि।

सजीवनी समालोचना पद्धतिक अनुसरण करैत लेखक नन्दीपतिक परिचयक क्रममे हुनक वंशावली प्रस्तुत कयने छथि। नन्दीपतिक वंशावलीक स्थिरीकरण हेतु ओ हुनक नाटकमे प्रदत्त प्रस्तावनामे सूत्रधारक मुँहसँ वर्णित कवि-वंशावली तथा आचार्य रमानाथझा द्वारा उपलब्ध कराओल गेल पञ्जी प्रबन्धक आधार लऽ कऽ इतिहासकार डा. जयकान्तमिश्रक एहि अवधारणाकेँ निरस्त कयलनि जे नन्दीपतिक पिता कवि कृष्णपति, हरिपतिक (नन्दीपतिक पितामह) भ्राता छलाह। एहिसँ नन्दीपतिक कालनिर्धारणक त्रुटिक मार्जन भऽ सकल। लेखक नन्दीपतिक वंशक विद्वत्-परम्परा ओ कवि-प्रवृत्तिक उद्घाटन करैत ई सिद्ध करबाक प्रयास कयने छथि जे नन्दीपतिक कवि-प्रवृत्ति हुनका आनुवंशिक अवदान छलनि।

ततःपर लेखक नन्दीपतिक कालनिर्धारणक हेतु अनेक तथ्यक उल्लेख करैत हुनक आविर्भाव काल अठारहम शताब्दीक पहिल दशक निर्धारित कयने छथि। एहि क्रममे पुत्रत्व प्राप्तिक अभावमे नन्दीपतिक विरक्तिक उल्लेख करैत लेखक ई मान्यता स्थापित करबाक सामग्री प्रस्तुत कयने छथि जे नन्दीपति राज्याश्रयकेँ बेसी महत्त्व प्रदान नहि कयलनि जकर कारणेँ हुनक गीत सभमे बहुधा राज्याश्रयक उल्लेखक अभाव अछि।

समालोचनाक क्रममे लेखक नन्दीपतिक अनेकानेक उपनाम होयबाक उल्लेख कयने छथि आ कोविद, कलानिधि, निधि, बादरि आदि भणितासँ युक्त रचनाकेँ हिनके मानने छथि। एहिसँ निधि, बादरि आदि नामधारी पृथक् कविक पृथक् अस्तित्वपरक ऐतिहासिक त्रुटिक

मार्जन भऽ गेल अछि। अनन्तर लेखक गीतिमालामे संकलित गीतक औचित्यक विवेचन कऽ एहि समालोचात्मक निबन्धक समापन कयने छथि। एहि निबन्धमे जतेक लेखकक जीवन-वृत्तपर प्रकाश देल गेल अछि ततेक हुनक कृतिपर नहि। स्वभावतः ई सजीवनी समालोचना एकभगाह ओ अनुसन्धान कोटि मात्रक कहल जा सकैछ।

जीवनझा :

डा. रामदेवझाक सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे छठम अवदान थिकनि **कविवर जीवनझा रचनावलीक पूर्वरंग**। एहिमे आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रथम नाटककार प. जीवनझाक जीवन ओ कृतिकेँ समग्रतामे परखबाक प्रयास भेल अछि। ग्रन्थ मैथिली अकादमी, पटना द्वारा 1980मे प्रकाशित भेल।

एहि वृहत्तर निबन्धमे डा. झा व्याख्याताक आलोचना पद्धतिक अनुसरण कयने छथि। ग्रन्थकार आलोच्य नाटककारक अन्तरात्मामे प्रविष्ट भऽ अत्यन्त सहृदयतापूर्वक हुनक आदर्श, उद्देश्य ओ विशेषता सभक उत्खनन कयने छथि। हिनक ई आलोचना वस्तुनिष्ठ अछि। आरम्भमे आलोचकक कहब उचिते छनि जे–'हम मानैत छी जे आधुनिक मैथिली साहित्यक शीर्षस्थ निर्मातृगणमे कविवर जीवनझाक स्थान अक्षुण्ण छनि, कवीश्वर चन्दाझा आधुनिक मैथिली साहित्यक जनक थिकाह। परन्तु हुनक पश्चात् मैथिली साहित्यकेँ सर्जनात्मक दिशा प्रदान कयनिहार कविवर जीवनेझा भेलाह।'

एहि निबन्धक माध्यमे कविवर जीवनझाक स्थितिकालक विवाद शमित भेल अछि। एहिसँ पूर्व आचार्य रमानाथझा जीवनझाक जीवनकाल 1856-1920 कहने छलाह ओ प्रसिद्ध इतिहासकार डा. जयकान्तमिश्र हुनक जीवनकाल 1848-1912 मानैत छलाह। निबन्धकार मिथिला मोदक समाचार एवं सुन्दर संयोगक भूमिकामे उल्लिखित अन्तःसाक्ष्यक आधारपर डा.जयकान्तमिश्रेक अवधारणासँ प्रमाण-पुरस्सर सहमति जतौलनि जाहिसँ एहि क्षेत्रमे पसरल भ्रान्तिक निराकरण भऽ गेल।

एहि निबन्धसँ पूर्व कविवर जीवनझाक सम्बन्धमे तथ्यात्मक विवरणक सर्वथा अभाव छल। डा. रामदेवझा प्रथमतः हुनक मूल नाम,

वासस्थान, शिक्षा, वृत्ति आदिक समबन्धमे एकत्रैव सूचना प्रदान करैत हुनक आनुवंशिकीक स्थितिकेँ सेहो स्पष्ट कयलनि। संगहि निबन्धकार कविवर जीवनझाकेँ चारि गोट नाटक ओ किछु स्फुट गीतक रचनाकारक रूपमे प्रतिष्ठापित कयलनि एवं ओकरा सभक प्राप्त अंशकेँ सम्पादित कऽ प्रकाशित करौलनि।

निबन्धकार मैथिल हितसाधनक आधारपर मैथिली सट्टकक प्रकाशित अंशकेँ एहि निबन्धमे संरक्षित कऽ ई निर्विवाद निष्कर्ष प्रदान कयलनि अछि जे–'मैथिली सट्टक'क एहि अंशसँ अनुमान होइत अछि जे एकर विषयवस्तु प्रायः जनकक प्रतिज्ञासँ आरम्भ कऽ सीताक विवाह धरि रहल होयत। एहिठाम जे गीत उद्धृत अछि ताहिसँ एतबा तँ स्पष्ट होइत अछि जे कविवर जीवनझा, चन्दाझाक वैषयिक अनुसरण कयने छलाह।'

निबन्धकार मैथिली सट्टकक आधारपर एहि अवधारणाकेँ सम्पुष्ट कयने छथि जे एहिसँ सीताविषयक नाट्यरचनाक एकटा परम्पराक निर्माण भेल जाहिमे सूर्यनारायणमिश्र कृत **जानकी** नाटक, आनन्दझा कृत **सीता-स्वयंवर** नाटक एवं ठाकुरप्रसादझा कृत **सीता परिणय** नाटक अबैत अछि। तथ्यक सम्पुष्टिक हेतु निबन्धकार तत्कालीन परिवेशमे कीर्त्तनिञा नाटकक ह्रासक बाद ओकर मंडली सभक रामलीलाकेँ व्यवसाय रूपमे अंगीकार कऽ समस्त उत्तर भारतक यात्रा करबाक बाध्यताक उल्लेख कयलनि। निबन्धकारक उक्ति छनि जे–'एहि रामलीला सभमे जनकपुरलीला विशेषतः सीता स्वयंवर अत्यन्त मधुर ओ मनोहर प्रसंग मानल जाइत छल। मिथिलावासी मैथिलीभाषी रामलीला मंडली सभ रामलीला अभिनयमे जनकपुर लीलाक प्रकरणमे पात्रक कथ्य भाषाक रूपमे मैथिली भाषाक प्रयोग करैत छल। विशेषतः सीताक मुखसँ उच्चरित मैथिलीक माधुर्यसँ अमैथिली भाषी दर्शकगण विभोर भऽ जाइत छलाह। अनेक ठाम समस्त लीलामे सेहो सीताक कथ्य भाषा मैथिली रहैत छल', सर्वथा प्रासंगिक छनि।

निबन्धकारक सुविचारित मत छनि जे–'कविवरक कार्यक्षेत्र बनारसक रामनगर स्टेट छलनि जे रामलीलाक विशिष्ट ओ स्थायी केन्द्र छल। ओहि रामलीलामे मैथिलीक स्वादयुक्त जनकपुरलीला देखबाक बेर-बेर अवसर भेटैत रहलनि। ओहिसँ प्रेरित भऽ कऽ सीताचरित्रकेँ विशेषतः सीतापरिणयक कथाकेँ अपन नाट्य वस्तु बनौलनि।'

ततःपर निबन्धकार जीवनझाक दोसर नाटक सामवती-पुनर्जन्मक मौलिक होयबाक स्थापना कयने छथि आ एहि सम्बन्धमे प. जीवछमिश्रक ओहि उक्तिक खण्डन कयने छथि जाहिमे ओ जीवनझाक एहि नाटककेँ अम्बिकादत्त व्यास कृत संस्कृत सामवतम्क अनुवाद कहने छलाह। एहि हेतु निबन्धकार सामवतम् नाटकक पौराणिक मूल स्रोत आ व्यासजीक नाटकक संक्षिप्त कथावस्तुक उल्लेख करैत जीवनझाक रचनाकेँ सर्वथा मौलिक कृति सावित कयने छथि। अंकविभाजन, पात्रयोजना, चरित्र चित्रण आदिक आधारपर अकाट्य तर्क सबहिक द्वारा तुलनात्मक विवेचन करैत डा. झा अपन स्थापनाकेँ आधार प्रदान कयलनि जे सर्वथा समीचीन अछि ओ सर्वमान्य सेहो।

ततःपर निबन्धकार **सुन्दर संयोग**क रचनाकाल ओ विविध संस्करणपर अन्वेषणात्मक टिप्पणी दैत **नर्मदासागर सट्टक**क मोदसँ प्राप्त अंशहिकेँ पूर्ण कहने छथि जकरा युक्तियुक्त मानल गेल।

एहि निबन्धमे निबन्धकार ऐतिहासिक समालोचनापरक दृष्टिकोण अत्यन्त सूक्ष्म ओ सारगर्भित छनि। निबन्धकार तत्कालीन सामाजिक, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक परिस्थितिक परिप्रेक्ष्यमे कविवर जीवनझाक समयमे प्रचलित विभिन्न आदर्श ओ उद्देश्यक परीक्षण अत्यन्त सूक्ष्म रीतिएँ कयने छथि। निबन्धकारक ई निष्कर्ष अत्यन्त समीचीन छनि जे–'मैथिल समाजमे काटर प्रथा, जाति-पाँजिक नामपर कन्याक ऊपर होइत अन्याय एवं अन्य सामाजिक कुप्रथा सभपर प्रत्यक्ष वा परोक्ष रूपेँ नाटककार जे आलोचनात्मक दृष्टिकोण रखलनि अछि तकरा की सर्वथा अस्वीकार कऽ देल जाय?' ग्रन्थकारक चिन्तनपरक ओ सुविचारित धारणा छनि जे–'नाटककार समाजक ओहि मानसिक स्थितिक चित्रण कयलनि अछि जे जाति-पाँजि, कुलीनता, बिकौआ प्रथा इत्यादिक आधारपर प्रचलित बहुविवाह ओ पत्नी-परित्याग सन विकृतिसँ उत्पन्न होइत छल। जीवनझा एहि परिस्थितिकेँ नीक जकाँ देखने छलाह। एकर दुष्प्रभावक अनुभव कयने छलाह। समाजक ओही परिवेशमे कन्या पक्षक विशेषतः परिणीता कन्याक मानसिक अन्तर्द्वन्द्वकेँ सुन्दर संयोगमे अभिव्यक्त कयलनि। समाजक सोझा सुन्दरमिश्र सन आदर्श पुरुषकेँ प्रस्तुत कयलनि।'

डा. रामदेवझाक एहि निबन्धमे कविवर जीवनझाक रंगमंचक

सम्बन्धमे अवधारणा ओ ओकर नवनिर्माणक सम्बन्धमे परिकल्पनाक सेहो सविशेष विश्लेषण भेल अछि। एहि सम्बन्धमे हुनक उक्ति छनि जे–'ई कहब उपयुक्त नहि जे ओ केवल मैथिलीक प्राचीन नाटकक गीतक महत्त्वकेँ स्वीकार कयलनि, नवीनताक नामपर मैथिली संवाद ओ सामाजिक नाट्य वस्तुक समावेश कऽ सन्तुष्ट भऽ गेलाह, **मिथिला मोद** ओ **मैथिल महासभा**क देशोन्नति आन्दोलनसँ प्रेरित नहि भेलाह। कोनो नवीन रंगमंचक सर्जन नहि कऽ सकलाह।' अनन्तर हुनक निष्कर्ष छनि जे–'कविवर जीवनझा कीर्त्तनिञा रंगमंचक क्षयिष्णु स्वरूप, पारसी थियेटरक लोकप्रियता, रामलीलाक रंगस्थली ओ अभिनय शैली आदिक आधारपर अभिनव रंगमंच निर्माणक दिशामे प्रयत्न आरम्भ कयलनि। तदनुरूप ओ अपन चारू नाटकक प्रणयन कयलनि।' एहि हेतु निबन्धकार नाटकक शास्त्रीय पद्धति, कीर्त्तनिञा अभिनय शैली ओ पारसी रंगमंचक नाट्यशैली आदिकेँ दृष्टिपथपर रखैत जीवनझाक विवेचन कयलनि अछि, जे सर्वथा अभिनव चिन्तन थिक। निबन्धकारक सूक्ष्म दृष्टि जीवनझाक नाटकक भाषा-प्रयोगक विश्लेषणमे सेहो देखि पड़ैत अछि। खास कऽ कविवरक भाषामे संक्षिप्त क्रियापद, संश्लिष्ट क्रियापद, विकारीक प्रयोग आदि लोकधर्मिताकेँ इंगित कऽ निबन्धकार जीवनझाक शिल्प-शैलीक कतोक विशिष्ट तत्त्व सभकेँ उद्घाटित कऽ देलनि अछि।

ई निबन्ध मैथिलीक सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे नियामक एवं जीवनझाक उत्खननक प्रथम सफल प्रयास रहल। डा. प्रेमशंकरसिंह प्रणीत ओ मैथिली अकादमी, पटनासँ प्रकाशित विनिबन्ध जीवनझाक हेतु ई ग्रन्थ आधारभूत सिद्ध भेल।

परवर्त्ती कालमे डा. झाकेँ साहित्य अकादेमी द्वारा भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखलाक अन्तर्गत 'जीवन झा' विनिबन्धक प्रणयन हेतु अनुबन्धित कयल गेलनि। डा. झा ओहि विनिबन्धक प्रणयन तँ पूर्ण कऽ लेलनि मुदा दुर्भाग्यवश ओ प्रकाशित भऽ कऽ यावत् आयल ताधरि हुनक पार्थिव शरीर धराधाम छोड़ि चुकल छलनि। ओना एकर प्रकाशन वर्ष वैह थिक जकर मार्च मासक अठारहम तिथि मैथिलीक एहि सपूतकेँ स्मृतिशेष कीर्तिपुरुष बना देलकनि।

डा. झा द्वारा प्रणीत ई विनिबन्ध पूर्णतः विनिबन्ध लिखबाक

प्रणालीक अनुसरण कयने अछि। एहिमे प्रारम्भमे **लेखकीय वक्तव्य** अछि जाहिमे डा. झा द्वारा जीवनझा पर पूर्वकृत कार्यक किछु तथाकथित पूर्वाग्रहग्रस्त आलोचक द्वारा अभिनिन्दन करबाक प्रति क्षोभ व्यक्त कयल गेल अछि। वस्तुतः हुनका द्वारा कृत कार्यक माध्यमे जीवनझा सन आधुनिक मैथिली नाटकक प्रवर्त्तककेँ प्रकाशमे आनल जयबाक तथा एहि अल्पज्ञात नाटककारक व्यक्तित्व ओ कर्तृत्वकेँ साहित्यिक समाजक समकक्ष राखि मैथिली इतिहास लेखनकेँ भेटल ऊर्जाक प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कयल जयबाक चाहैत छलनि, सम्मान-अभिनन्दन होयबाक चाहैत छलनि। मुदा मैथिली अकादमी सदृश संस्था आलोचक लोकनिक ओहि वर्गकेँ प्रोत्साहित करैत जीवनझा पर स्वतंत्र पोथीक प्रकाशन करौलक जखन कि एहन मिथ्यालोचक लग ने अपन अनुसन्धित किछु वस्तु छलनि आ ने सजीवनी समालोचना। ओ जीवनझा रचनावलीक आश्रय लऽ पोथी तँ प्रणीत कऽ लेलनि मुदा अनेक ठाम अन्धानुकरणक कारणे उपहासक पात्रो बनलाह।

एहि वक्तव्यक बाद **प्रावेशिकी** शीर्षकसँ ऐतिहासिक सन्दर्भमे परिचय प्रस्तुत करैत जीवनझाकेँ बहुभाषाविद् ओ बहुभाषिक रचनाकार कहल गेलनि अछि तथा विनिबन्धकार मैथिली साहित्यमे हुनक स्थान निरुपण करैत ई निष्कर्ष प्रदान कयलनि अछि जे 'मैथिली साहित्यक आधुनिक युगक प्रवर्त्तक जँ चन्दाझा छथि तँ ओहि युग-प्रवर्त्तनकेँ गति एवं दिशा देनिहार गेलाह कविवर जीवनझा यज्वालय।' 'ओ आधुनिक मैथिली साहित्यक प्रथम नाटककारक रूपमे अवर्त्तीर्ण भेलाह।' एही क्रममे जँ लऽ कऽ जीवनझा अपन समस्त रचनावलीमे अपन नामक आगाँ अथवा पूर्वहि यज्वालय किंवा यज्वा शब्दक प्रयोग करैत छलाह, तँ विनिबन्धक नामक सार्थकता पर प्रश्नचिह्न लगबैत विनिबन्धकार ई सुझाओ प्रस्तुत कयलनि अछि जे एहि विनिबन्धक नामकरण **जीवनझा यज्वालय** सैह समुचित होइत। ततःपर जीवनझाक मातृभाषानुरागक चर्च करैत कहल गेल अछि जे ओ जहिना देवभाषा संस्कृतक अधीत विद्वान छलाह, रामनगर स्टेटक वृत्तिपक्षीय भाषा ब्रजभाषामे निष्णात छलाह, तहिना मातृभाषा मैथिलीयोक प्रति असीम अनुराग रखैत छलाह। हुनक रचनावली प्रधानतः संस्कृत ओ मैथिलीमे भेटैत अछि तथापि ब्रजभाषहुमे ओ समस्या-पूर्तिक माध्यमे रचनाशील देखि पड़ैत छथि।

अग्रिम अध्याय **जीवनझाक पैतृक एवं मातृक**मे हुनक गोत्र-मूलक संज्ञान लैत पैतृक गाम मधुबनी जिलाक माँड़र कहल गेल अछि। ततःपर हुनक चारि पुस्तकक नामकरण दऽ ई जनाओल गेल अछि जे हिनक पैतृक वंशमे पाण्डित्यक कोनो वैशिष्ट्य नहि भेटैत अछि। हिनक पिताक विवाह समस्तीपुर जिला हरिपुर (हरिपुरबा-बरहेता)मे भेलनि जतऽ हिनक ससुरक एकमात्र कन्या होयबाक कारणे हिनक माता नैहरक समस्त सम्पत्तिक उत्तराधिकारिणी भेलथिन आ हिनक पिता सासुरेमे बसि गेलथिन। स्वभावतः जीवनझाक जन्मस्थली ओ गाम दुनू मातृके भऽ गेलनि।

ततःपर जीवनझाक मातृक पक्षक पाण्डित्यक विवरण देल गेल अछि जकर कारणे ओ लोकनि क्रमशः नरहन स्टेट एवं परवर्ती कालमे काशिराजवंशक विभिन्न राजकीय पद पर अधिष्ठित होइत रहल छलाह। हिनका लोकनिक सम्पोषण सेहो काशिराजवंशे द्वारा होइत रहलनि।

ततःपर अग्रिम अध्याय **जीवनझाक जीवन-वृत्त**मे हिनक जन्मवर्ष, जन्मस्थली, शिक्षा, वृत्ति, सम्मानोपाधिपरक धौत-सम्मानक प्राप्ति, उदात्त स्वभाव, मैथिल हितसाधनकेँ सहयोग, मैथिल विद्वज्जन समितिक संस्थापक अध्यक्षक रूपमे मिथिला मोदक प्रकाशन उद्योगमे सहभागिता, समितिक सभामे हिनक नाटक नर्मदा सागर सट्टकक अभिनय, सर्जनशीलताक अवधि, रोगग्रस्तता ओ अवसानक प्रमाणपुरस्सर विवरण प्रस्तुत कयल गेल अछि। आगू हिनक पुत्रवंशक समाप्ति ओ परपुतोहु द्वारा अपन वंशक तीन पुरुषक नाम पर त्रिलिंगेश्वर मन्दिरक हरिपुरबामे स्थापनाक माध्यमे हुनका लोकनिक पाण्डित्यकेँ स्थायित्व प्रदान करबाक विवरण अछि। ततःपर विनिबन्धकार हिनक कन्या पक्षक अभिवृद्धि ओ हुनका लोकनिक कर्त्तृत्वक विवरणक संग जीवनझाक काशीस्थ आवासक सेहो सूचना देलनि अछि जाहिसँ अनुसन्धानक गहनता विज्ञापित होइत अछि।

अग्रिम अध्याय **संस्कृत साहित्यमे योगदान**मे जीवनझाक चारि गोट प्रकाशित ओ ओतबे अप्रकाशित कृतिक वस्तु-विन्यासक संक्षिप्त समीक्षा प्रस्तुत करैत प्रकीर्ण संस्कृत कृतिक रूपमे समस्यापूर्ति ओ मैथिली नाटकमे व्यवहृत संस्कृतक संगहि हिनका द्वारा सम्पादित **काशी विनोद चम्पू** काव्यक सम्पादन-भूमिका लेखनक विवरण प्रस्तुत भेल अछि। विनिबन्धकार हिनक एक गोट संस्कृत नाटक **अर्जुन अभिधान**सँ उल्लिखित

होयबाक सूचना सेहो प्रदान कयलनि अछि तथा अनुमान-प्रमाणक माध्यमे ई सिद्ध करबाक प्रयास कयलनि अछि जे काशीनरेश प्रभुनारायणसिंह विरचित पार्थपाथेयम् संस्कृत नाटकक रचनामे सेहो ई सहायक भेल होयथिन। एहि अध्यायमे विनिबन्धकारक शोध-कार्यक प्रति स्फीत दृष्टि एवं कुशाग्र बुद्धिक मार्गदर्शक परिचय भेटैत अछि।

अग्रिम अध्याय अछि **जीवनझाक मैथिली कृति**। एहिमे प्रथमत: जीवनझाकेँ मिथिलामोदक अनुसार तत्कालीन मैथिलीक वृहत्त्रयीमे परिगणित होयबाक सूचना प्रदान कयल गेल अछि। तत:पर हुनक बहुभाषिक होइतो सविशेष मातृभाषाभिमानक प्रमाण प्रस्तुत भेल अछि। विनिबन्धकार हुनका द्वारा रचित मुदा अप्रकाशित कृतिक रूपमे मिथिला भाषा व्याकरण (खण्डित)क उल्लेख होयबाक प्रमाण पुरस्सर सूचना प्रदान कयलनि अछि मुदा तकरा अनुपलब्ध मानलनि अछि। एहि अध्यायमे ओ डा. जयकान्तमिश्र द्वारा जीवनझा रचित **निषध** नामक कृतिक उल्लेखसँ सम्बन्धित हुनक इतिहास लेखन सम्बन्धी त्रुटिक मार्जनमे सेहो दत्तचित्र भेलाह अछि आ हुनका द्वारा प्रदत्त सूचनाक विश्वसनीयता पर सप्रमाण प्रश्नचिह्न उपस्थित कयलनि अछि। अन्तत: विनिबन्धाकर मैथिली सट्टक (आंशिक); सामवती पुनर्जन्म ओ सुन्दर संयोग नाटक, नर्मदा-सागर सट्टक ओ कतिपय मुक्तक गीत एवं स्फुट पद्य मात्रकेँ कविवरक मैथिली रचनावलीक रूपमे परिगणित करौलनि अछि।

तत:पर **जीवनझाक नाट्य-रचनाक प्रेरणा** अध्यायमे कीर्तनिञा नाट्यपद्धतिक पतन, काशी राजवंशक अभिनय कला प्रेम, पोषण ओ आश्रयण, युवावस्थामे जीवनझा द्वारा बनारस थियेटरमे समारोहपूर्वक अभिनीत जानकी मंगल नाटक प्रेक्षण, तत्कालीन रामलीला मंडली द्वारा जनकपुर लीलाक अभिनयमे सीताक संवादमे मैथिलीक अनुगुम्फन, रामगनरमे रामलीलाक स्थायी रंगमंचक स्थापना ओ वार्षिक मंचन, जीवनझाक मैथिली सट्टक किछु अंशकेँ गिरिजा-स्तुतिक रूपमे रामलीला मंडलीसभक द्वारा पुष्पवाटिका लीला प्रकरणमे अधिग्रहण आदिकेँ हुनक नव नाट्य रचना प्रणालीक दिस अभिमुख होयबाक प्रेरणास्रोत कहल गेल अछि जे तर्कसम्मत ओ सर्वथा समीचीन एवं युक्तियुक्त बुझना जाइत अछि।

अग्रिम अध्यायक अभिधान अछि **मैथिली सट्टक**। एहि अध्यायमे

विनिबन्धकारक अनुसन्धानी प्रवृत्तिक नैरन्तर्य उद्भासित भेलनि अछि। जीवनझाक पूर्वकृत सजीवनी समालोचनाक संग प्रकाशित रचनावलीमे डा. झा मैथिली सट्टकक जाहि अंशक प्रकाशन करा चुकल छलाह, ताहीसँ संतुष्ट नहि भेलाह अपितु मैथिलीक एहि अमूल्य निधिक प्रति हिनक चिन्तन बनले रहलनि। एकरे परिणामस्वरूप ओ मैथिल हित साधनहिक माध्यमे एहि सट्टकक प्रथम अंकक उत्तर भागक संगहि द्वितीय अंकक पूर्व अनुसन्धित भागसँ पूर्वक अंशकेँ प्रकाशमे अनलनि। एतावता एहि नव अनुसन्धानसँ एहि सट्टक प्रस्तावना एवं प्रथम अंकक आरम्भिक भाग अनुपलब्धो रहैत जीवनझाक ओहि अनुपम गिरिजा स्तुतिक प्राप्ति सम्भव भऽ सकल जकरा कतोक रामलीला मंडली अविकल पुष्पवाटिका प्रकरणमे सीताक माध्यमे प्रस्तुत करबैत छलाह आ देशान्तरोमे मैथिली अभिनन्दित होइत रहैत छलीह। एहि अनुसन्धानक फलस्वरूप मैथिली सट्टक वस्तु-विन्यास बेस फरिच्छ भऽ कऽ समक्ष आयल आ विनिबन्धकार सट्टकक अग्रिम घटनासभक प्रति जे अनुमान प्रकट कयने छलाह यथा–परशुराम आगमन, महेशक चाप टूटल देखि क्रोध प्रदर्शन; लक्ष्मण, राम, जनक ओ विश्वामित्रसँ हुनक संवाद तथा अन्तमे सन्तुष्ट भऽ बहिर्गमन, से सर्वथा तर्कसम्मत सावित भेल। विनिबन्धकारक ई अनुसन्धान हुनक एकान्त साधनाक एक गोट तुच्छ बानगी प्रस्तुत करैत अछि जे अनुसन्धित्सु लोकनिक प्रेरणास्रोत बनल रहत।

ततःपर अगिला अध्यायक नाम राखल गेल अछि **सामवती-पुनर्जन्म नाटक**। एहिमे सामवती-पुनर्जन्मक नामकेँ नाट्यशास्त्रीय लक्षणानुसार उचित कहल गेल अछि। ततःपर डा. जयकान्तमिश्रक ओहि विभ्रान्त ऐतिहासिक स्थापनाक खण्डन कयल गेल अछि जाहिमे एकर रचनाकाल 1908/1920 इसवी कहल गेल अछि जखन कि जीवनझाक मृत्यु 1912 इसविअहिमे भऽ गेल छलनि। ततःपर एकर आवरण पर भ्रमवशात् सामवती-पुनर्जन्म नाम छपबाक उल्लेख कऽ एकर मौलिक नाम **'पुनर्जन्म'** होयबाक सप्रमाण उल्लेख कयल गेल अछि। अवश्ये ई नाटक संस्कृतक **सामवतम्** नाटकसँ प्रेरणा ग्रहण कयने छल मुदा एहिमे मिथिलाक सांस्कृतिक आदर्शक संरक्षा हेतु जीवनझा एकर वस्तु-विन्यासमे आवश्यक संशोधन कऽ देने छलाह। तदतिरिक्त

विनिबन्धकारक मूल उद्देश्य एहि अध्यायमे सामवती-पुनर्जन्मक संक्षिप्त कथाक पुनः लेखनटा बुझना जाइत अछि।

अग्रिम अध्याय **सुन्दर संयोग नाटक**मे एहि नाटकक प्रथम प्रकाशन वर्षक रूपमे डा. जयकान्तमिश्रक इतिहासमे उल्लिखित वर्ष 1904 इसवी आ तकर समर्थनमे कुलानन्ददास 'नन्दन', डा. लेखनाथ मिश्र आदिक मतक खण्डन करैत विनिबन्धकार सप्रमाण ई जनौलनि अछि जे एकर प्रथम संस्करण 1892 इसवीमे भेल छल। एकर प्रमाणक रूपमे ब्रिटिश म्यूजियमक पुस्तकालयक निमित्त अधिगृहीत पुस्तक पञ्जीकेँ प्रमाण रूपमे अग्रेषित करब विनिबन्धकारक सूक्ष्मवेधी दृष्टिक परिचायक अछि। ततःपर एहि अध्यायमे नाटकक संक्षिप्त समीक्षापूर्वक ओकर वस्तु-विन्यासक परिचय प्रदान कयल गेल अछि।

अग्रिम अध्याय **नर्मदा सागर सट्टक**मे विनिबन्धकार एहि सट्टक रचनाकालक रूपमे 1906 इसवीक हराहरी उपयोग पूर्वक भ्रान्त धारणाकेँ सम्पोषित करबाक इतिहासकार ओ समालोचक लोकनिक अवधारणाकेँ अन्तःसाक्ष्यक आधार पर प्रतिरोध करैत एकर रचनाकाल 1905 इसवीसँ पूर्वहि मान्य कऽ देलनि अछि। एतहु विनिबन्धकारक सूक्ष्म पर्यवेक्षण दृष्टि ओ अधीत आचार्यक विद्वत्ताक परिचय भेटैत अछि। ततःपर एहि सट्टकक मिथिला-मोदमे प्रकाशनक उल्लेख सहित एहि शंकाक निवारण करा देल गेल अछि जे एकर प्राप्त अंश अपूर्ण अछि, किएक तँ एहिमे जीवनझाक नाट्यशिल्पक परम्परित रूपमे विधि-विधान सहित वर-कन्याक विवाह घटनाक विधिवत प्रदर्शन नहि भेल आ ने भरतवाक्येक प्रयोग भेल अछि। मुदा विनिबन्धकार एहि शिल्पगत वस्तुकेँ नाटककारक पुनरुक्तिसँ बचबाक गुण कहि एकर निराकरण कऽ देलनि अछि। सट्टकक वस्तुक संक्षिप्त स्वरूप एहि अध्यायक अन्तमे उल्लिखित भेल अछि।

अग्रिम अध्यायमे **जीवनझाक नाट्य वैशिष्ट्यक विश्लेषण** विनिबन्धकारक उद्देश्य छनि। एहिमे विनिबन्धकार ओहि समस्त विकृत मानसिकतापरस्त ओ पूर्वाग्रहग्रस्त आलोचक लोकनिक अवधारणा पर कशाघात कयलनि अछि जनिक अवधारणामे प्रचार सामग्रीक रूपमे विवृत भेल अछि जे जीवनझा नाटकमे परम्परित गीतक बहुल प्रयोग कयलनि अछि, हुनका आधुनिक रंगमंचक अवगति नहि छलनि, ओ मैथिल महासभा

ओ मोदक देशोन्नतिक विचारधाराक प्रति आकृष्ट नहि भेलाह आदि। विनिबन्धकार तर्ककर्कशतापूर्वक ई प्रमाणित कयलनि अछि जे गीत लास्यांगक रूपमे नाटकक प्राणशक्ति थिकैक, तेँ ओकर प्रयोग कथमपि अकारथ नहि कहल जा सकैछ। जीवनझा किरतनिञा, रामलीला ओ पारसी थियेटर, तीनू रंगमंचसँ सम्पृक्त छलाह आ अपन नाटकमे एहि तीनूक उचित अंशक समावेश कयलनि। हुनका आधुनिक रंगमंचक अवगतिसँ हीन किएक मानल जाय जखन कि ओ एहि तीनू रंगमंचसँ रसग्रहण कऽ मैथिली नाटककेँ किरतनिञाक शिल्प जाल, पारसी थियेटरक फूहड़ कथोपकथन ओ संस्कृत नाटकक तत्सम शब्दजालसँ उबारि चलित भाषाक उन्मुक्त प्रयोगक दिस अग्रेषित करौलनि। विनिबन्धकारक स्पष्ट मत छनि जे नाट्य-वस्तु, संवाद-भाषा, गद्य, पद्य ओ गीत प्रयोगक विधान तथा गजल सदृश उर्दू-फारसीक छन्द प्रयोग जीवनझाक प्रगतिगामिताक द्योतक थिक।

अग्रिम **मुक्त गीत एवं स्फुट पद्य** अध्यायमे विनिबन्धकार मिथिला मोद ओ मैथिल हित साधन सन दुष्प्राप्य स्रोतसँ जीवनझाक एकैस गोट मुक्त गीत, स्फुट पद्य ओ समस्यापूर्तिपरक पद्यक अन्वेषण-अनुसन्धानक परिणाम प्रकाशमे आनि ओकरा सभक विवेचन-विश्लेषण द्वारा नाटकेतर गीत ओ पद्यक आधार पर जीवनझाक जाहि छविक स्वरूप ठाढ़ करबामे सफल भेलाह से जीवनझाक कवि व्यक्तित्वकेँ अत्युच्च बनयबामे सफल भेल अछि। एहि काव्य सभक माध्यमे ओ आर्त्त भक्त, समाजसुधारक, शृंगाररसिक ओ राष्ट्रीय भावधारा सम्पन्न श्रेष्ठ कविक रूपमे स्थापित होइत छथि। अवश्ये ई अन्वेषण-अनुसन्धान विनिबन्धकारक प्राध्यापकीय गरिमाक परिचायक ओ शोध-अनुसन्धानक मार्गदर्शक स्वरूपकेँ प्रकट कयने अछि।

ततःपर अग्रिम अध्यायक शीर्षक थिक **जीवनझा ओ कविवर विशेषणक ऐतिहासिकता**। एहिमे विनिबन्धकार मैथिलीक किछु दिव्यांग आलोचकक पूर्वाग्रहग्रस्त टिप्पणीक प्रतिकार कयलनि अछि जनिका लोकनिक अवधारणा छलनि जे जीवनझा वस्तुतः नाटककारक रूपमे प्रसिद्ध छलाह, तखन हुनक रचनावलीक प्रकाशन 'कविवर जीवनझा रचनावली' अभिधाने कऽ कऽ पोथीक सम्पादकद्वय क्रमशः प. चन्द्रनाथमिश्र 'अमर' ओ रामदेवझा साहित्यिक भ्रान्ति पसारलनि अछि। एहन दिव्यांग

ओ पूर्वाग्रहग्रस्त, अन्ध अनुकरणसँ आह्लादित, अज्ञ-अल्पज्ञ प्रचारवादी ओ अल्पहि परिश्रमे किछु अनर्गल छापि-छपबा चटपट लोकप्रिय बनबाक हेतु उताहुल तथाकथित आलोचक लोकनिकेँ प्रमाण पुरस्सर अनेकानेक अन्तः ओ बहिः साक्ष्य उपस्थित कऽ विनिबन्धकार जीवनझाक हेतु कविवर विशेषणक औचित्य सिद्ध कऽ साहित्य जगतमे क्रमिक व्याप्त होइत भ्रान्तिकेँ अपवारित कयलनि जे हुनक मनस्विता, मसिजीविता, व्यापक अध्ययनशीलता, सुविचारित लेखन एवं विस्तृत शास्त्रीयताक परिचय करबैत अछि।

ततःपर एहि विनिबन्धपरक पोथीमे दुइ गोट परिशिष्ट प्रदान कऽ पोथीक समापन कयल गेल अछि। पहिल परिशिष्टमे इन्साइक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन लिटरेचरमे 'जीवनझा' विषयक प्रविष्टिक क्रममे प्रदत्त विवरण अछि जाहिसँ अखिल भारतीय स्तरपर हुनक व्यक्तित्व ओ कर्त्तृत्वकेँ विज्ञापित कयल गेल अछि तथा दोसर परिशिष्टमे जीवनझाक वंशलताकेँ प्रकाशित कऽ हुनक वर्त्तमान सखा-सन्तति धरिक नामावलीकेँ सर्वजन सुलभ कऽ देल गेल अछि।

एतावता जीवनझा पर सजीवनी समालोचनाद्वयक माध्यमे डा. रामदेवझा मैथिली साहित्येतिहास लेखनकेँ प्रामाणिकता एवं शुद्धता प्रदान करबे कयलनि, संगहि विभ्रष्ट आलोचक मंडलकेँ सेहो हठधर्मिताकेँ त्याग करबाक पाठ पढ़यबामे संकोच नहि कयलनि।

जनार्दनझा 'जनसीदन' :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक सातम अवदान थिकनि **जनार्दनझा 'जनसीदन'**। ई ग्रन्थ भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखलामे साहित्य अकादेमी द्वारा 1998मे प्रकाशित भेल। ई विनिबन्ध शैलीमे लिखल गेल अछि। विनिबन्धक विषय 'जनसीदनजी'केँ आधुनिक मैथिली कथासाहित्यक प्रवर्त्तक, उपन्यास विधाक पुरोधाक रूपमे मानल जाइत रहलनि अछि।

ग्रन्थक आरम्भमे **अवतरणिका**मे उनैसम शताब्दीक उत्तरार्द्धकेँ भारतीय साहित्यमे पुनर्जागरणक कालक रूपमे व्याख्यात करैत कहल गेल अछि जे एहि कालकेँ मैथिलीओमे पुनर्जागरण अनबाक श्रेय छैक।

एही कालमे कवीश्वर चन्दाझा, जीवनझा ओ परमेश्वरझा सदृश रचनाकारलोकनि मैथिली क्षेत्रमे अवतीर्ण भऽ एकर साहित्यमे आधुनिकताक सूत्रपात् करौलनि। हिनके लोकनिक कड़ीक एक गोट विशिष्ट रूपमे जनसीदनजीक चर्चा करैत ग्रन्थकार हुनका उपन्यास ओ कथाक अभिनव विधाक प्रवर्त्तकक रूपमे प्रस्तावित कयलनि अछि।

ग्रन्थक दोसर अध्याय **जीवनिका**मे एकर नामक अनुरूप एहिमे जनसीदनजीक जीवनचर्यापर प्रकाश देल गेल अछि। ग्रन्थकार जनसीदनजीक जीवनचर्याकेँ प्रामाणिक रूपेँ प्रस्तुत कयलनि अछि। एहि हेतु ओ कुशेश्वरकुमर रचित प्रशस्ति वाक्य, जनसीदनजीक स्वरचित आत्म परिचय तथा हुनक पुत्र हरिमोहनझा एवं पौत्र मनमोहनझा द्वारा प्रदत्त सूचना सभकेँ प्रामाणिक मानलनि अछि। तदनुसार जनार्दनझाक पूर्वज कोइलख ग्रामक मूलवासी छलाह। पछाति हिनक पितामह बेचनझा अपन मातृक वीरसायरमे बसि गेल छलाह। हुनक पुत्र नाथझाक दोसर विवाह भेलनि कुमर वाजितपुरक श्रीसम्पन्न चन्द्रमणिकुमरक कन्या लालवतीसँ जनिक एक पुत्र ओ तीन कन्याक पछाति दोसर पुत्र भेलथिन जनार्दनझा। परवर्त्तीकालमे नाथझाक मृत्यु भेला उत्तर सौतिनक उत्पीड़नसँ हारि लालवती अपन नेनाक संग नैहर कुमर वाजितपुर चल अयलीह आ परवर्त्तीकालमे वैह जनसीदनजीक वासस्थल रहलनि।

ग्रन्थकार लिखलनि अछि जे जनसीदनजी स्कूली शिक्षाक परिवेशक अभावमे ज्ञानप्राप्तिक उत्साहक बलेँ संस्कृत शिक्षा दिस अभिमुख भेलाह, हाजीपुर जाय ज्यौतिषशास्त्रक अध्ययन कयलनि, व्याकरण ओ साहित्यक अध्ययन सेहो ओतहि विभिन्न शिक्षकलोकनिक माध्यमे कयलनि आ स्वाध्यायक बलपर व्रजभाषा, हिन्दी, अँग्रजीमे निष्णात भऽ गेलाह। क्रमशः आयुर्वेद ओ बंग भाषाक ज्ञान सेहो प्राप्त कयलनि। सर्जनात्मक प्रतिभाक विकास भेला उत्तर ई काव्य रचना करऽ लगलाह।

ततःपर जनार्दनझा बैरगिनिञा, सुरसंड, धुबौली आदिक प्राइमरी स्कूलमे शिक्षकक वृत्ति धारण कयलनि आ मुजफ्फरपुर स्थित जैतपुरमे संस्कृत शिक्षकक रूपमे नियुक्ति प्राप्त कयलनि। परवर्त्तीकालमे अपन कवि प्रवृत्तिक कारणेँ श्रीनगर स्टेटक राजा कमलानन्दसिंहक सान्निध्यमे साहित्य विषयक आप्त सचिवक रूपमे नियुक्त भेलाह। एही क्रममे जनसीदनजीक

महावीरप्रसादद्विवेदीक संग परिचय ओ सरस्वतीमे हुनक रचना निरन्तर छपबाक उल्लेख भेल अछि जाहिसँ जनसीदनजीक परिचिति हिन्दी जगतमे बनि सकल छलनि। ग्रन्थकार **रजत जयन्ती स्मारक ग्रन्थ**मे संकलित पत्रक आधारपर ई सिद्ध कयने छथि जे द्विवेदीजीक पत्रावलीसँ जनसीदनजीक प्रतिभा आ परिचयक शोषण होयबाक आरोप सर्वथा असत्य अछि। परवर्त्तीकालमे जनसीदनजी इण्डियन प्रेस, प्रयागमे जीविकापन्न भेलाह, मुदा रुग्न भऽ गाम चलि अयलाह आ कतोक बंगला ग्रन्थक अनुवाद कयलनि। पछाति किछु दिन हाइस्कूलक शिक्षकक वृत्ति कयलाक उपरान्त **मिथिला मिहिर**मे संयुक्त सम्पादकक रूपमे नियुक्त भेलाह। तीन वर्षक बाद मिथिला मिहिर छोड़ि कलकत्ता चल गेलाह आ ओतऽ अनेक बंगला ओ संस्कृत ग्रन्थक अनुवाद कयलनि। पाँच वर्षक कलकत्ता प्रवासक बाद जनसीदनजी पटना ओ दरभंगाक विभिन्न प्रेससँ जुड़ि ओकरा सभक लेल अनेक ग्रन्थक प्रणयन कयलनि। एही क्रममे गिद्धौर राज्यक सम्पर्कमे आबि **राज्यवंशावली** शीर्षक संस्कृत ग्रन्थ ओ ओकर हिन्दी टीका लिखलनि। तत:पर दु:खित भेलाक बाद गामेपर रहि साहित्य-साधना करऽ लगलाह। एहि तरहेँ जनसीदनजीक सम्पूर्ण जीवन एकटा साहित्यजीवीक जीवन रहल जकरा ग्रन्थकार साङ्गोपाङ्ग रूपायित करैत, हुनक पत्र-लेखन कलाक व्याख्या करैत, रुचि आदिक सेहो वर्णन कयलनि अछि। सभटा कथ्य विवरणात्मक शैलीमे प्रस्तुत भेल अछि।

एहि ग्रन्थक दोसर अध्याय अछि **साहित्य साधना**। एहि अध्यायमे जनसीदनजीक साहित्य लेखनकेँ तीन कालखण्डमे बाँटल गेल अछि–प्रवृत्ति काल, कृति काल ओ निवृत्ति काल। हिनक प्रवृत्ति काल 1903 सँ 1909 इसवी धरि रहल जाहिमे ई समस्या पूर्ति, मुक्तक काव्य ओ दीर्घ काव्य सभक रचना कयलनि तथा विद्यापतिक **पुरुष परीक्षा**क हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत कयलनि। 1910सँ 1933 इ.क मध्य जनसीदनजीक साहित्यरचना हिनक साहित्यिक उत्कर्षक काल छल जाहिमे ई पचीस गोट बंगला कृतिक हिन्दी अनुवाद एवं साहित्येतर विषयक पोथीक अनुवाद कयलनि तथा मैथिलीमे रचना करबाक हेतु प्रविष्ट भेलाह। 1933क बाद मृत्यु पर्यन्त ई स्वान्त:सुखाय विविध विषयक पोथीक रचना करैत रहलाह। ग्रन्थकार एहि अध्यायमे हिनक

मैथिलेतर पोथी सभक यथोपलब्ध नाम प्रस्तुत कयने छथि जाहिसँ जनसीदनजीक प्रौढ़ साहित्यिकक स्वरूप ठाढ़ होइत छनि।

तेसर अध्याय थिक **मैथिली साहित्यमे अवदान**। एहिमे एहि तथ्यक उल्लेख भेल अछि जे 1910 इसवी धरि मैथिली लेखनसँ जनसीदनजी जुड़ल नहि छलाह, मुदा ततःपर ओ एहि दिशामे निरन्तर गतिशील रहलाह। ग्रन्थकार साहित्यिक जगतमे प्रचलित एहि मान्यताकेँ सप्रमाण खण्डित कयलनि अछि जे जनसीदनजीकेँ हिन्दी जगतमे पर्याप्त सम्मान नहि भेटलनि तेँ ओ मैथिली दिश अभिमुख भेल होयताह। ओ जनसीदनजीक मैथिली रचनासभक आधार पर ई सम्पुष्ट कयलनि अछि जे–उपन्यास, कथा, निबन्ध ओ कविता सन सर्जनात्मक विधामे अपन अमूल्य योगदानसँ ओ मैथिली साहित्यकेँ समृद्ध कयलनि। ततबहि नहि, मैथिली पत्रकारितामे सेहो हिनक योगदान महत्त्वपूर्ण छनि।

ग्रन्थकार सरस्वती प्रेसमे प्रकाशित हिनक निबन्ध **मैथिल समाज की वैवाहिक परिपाटी** ओ ताहिपर उत्पन्न विवादक उल्लेख कऽ हिनक सुधारवादी प्रवृत्तिकेँ उजागर कयने छथि। मोदमे प्रकाशित हिनक निबन्ध **मैथिल समाजसँ निवेदन**क प्रकाशित भागक सविशेष उल्लेख करैत ग्रन्थकारक ई प्रमाण-पुष्ट निष्कर्ष छनि जे 'विभिन्न सामाजिक विषयक निबन्ध सभमे अभिव्यक्त विचारधाराक निदर्शन रूपमे जनार्दनझा अनेकशः उपन्यासक रचना कऽ मैथिली साहित्यमे अभिनव विधाक प्रतिष्ठापक भेलाह जकर रूप, विषय ओ भाषाक अनुसरण कतोक दशक धरि होइत रहल।

एही अध्यायमे मैथिली पत्रकारितामे जनसीदनजीक योगदानक चर्चा भेल अछि आ ग्रन्थकार ई सूचित कयलनि अछि जे मिहिरमे मैथिली भाषाकेँ विशेष स्थान प्रदान करयबामे ओ ओकर स्तर सुधारबाक संगहि लोकप्रिय मैथिली रचनावलीक प्रकाशनमे हिनक योगदान विशिष्ट छलनि।

एही अध्यायमे जनसीदनजीक वंशपरम्पराक द्वारा तीन पीढ़ी धरि लगातार मैथिली साहित्य लेखनमे अत्युच्च स्थान रखबाक चर्च करैत हरिमोहनझा, राजमोहनझाक उल्लेख भेलनि अछि। अवश्ये एहिमे मनमोहन झाक उल्लेख नहि भेलनि अछि जनिका **खिस्सा** कथा-संग्रह पर परवर्ती कालमे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेलनि।

चारिम अध्याय **उपन्यास**मे जनसीदनजीसँ पूर्वक मैथिली गद्य साहित्यक विहंगालोकन करबैत **मोहिनी मोहन**केँ मैथिलीक प्रथम उपन्यासक रूपमे प्रतिष्ठापित कयल गेल अछि। ततःपर ग्रन्थकार जनसीदनजीक मैथिली उपन्यास रचनाक कौशल हुनका द्वारा अनूदित उपन्यास सभक माध्यमे प्राप्त होयबाक चर्चा कयलनि अछि। ग्रन्थकारक स्पष्ट आ सुचिन्तित निष्कर्ष छनि जे 'अपन मातृभाषा मैथिलीकेँ समृद्ध करबाक हेतु आ साहित्य सर्जनक माध्यमसँ अपन समाजकेँ मध्यकालीन रूढ़ि, कुप्रथा, कुत्सित परम्परा, अज्ञानता ओ अशिक्षासँ मुक्तिक दिशामे अग्रसर होयबाक सन्देश देबाक उद्देश्यसँ जनसीदनजी उपन्यास-लेखन आरम्भ कयने छलाह।'

एहि अध्यायमे जनार्दनझा द्वारा रचित **सती सर्वस्व, निर्दयी सासु, शशिकला, पुनर्विवाह** ओ **द्विरागम रहस्य**क संक्षिप्त कथावस्तु देल गेल अछि तथा हिनक **कलियुगी संन्यासी** वा **ढकोसलानन्द** उपन्यासक सम्बन्धमे डा. जयकान्तमिश्रक उक्तिक अनुसार ओकर प्रहसन होयबाक वस्तुस्थितिक ने तँ खंडने कयल गेल अछि आ ने मंडने। एहिसँ ग्रन्थकारक ई प्रवृत्ति द्योतित होइत छनि जे अपन निष्पक्ष आलोचकक धर्मक निर्वाह करैत ओ कोनो निर्णय बिना वस्तुक अवलोकन कयने नहि करैत छलाह। ग्रन्थकार जनसीदनजीक समस्त उपन्यासक वस्तुविन्यास, वर्णन, संवाद, भाषा, चरित्र-चित्रण ओ उद्देश्य आदिक विवेचन कऽ अपन स्फीत दृष्टिक परिचय देलनि अछि।

पाँचम अध्यायमे जनसीदनजीक कथा विधाक विवेचन भेल अछि। हिनक एकमात्र कथा **ताराक वैधव्य**केँ ग्रन्थकार मैथिलीक प्रथम कथाक रूपमे आख्यात कयलनि अछि तथा ओकर संक्षिप्त कथावस्तु दैत ई निष्कर्ष प्रदान कयलनि अछि जे 'जनार्दनझाक ताराक वैधव्य कथामे आधुनिक कथाक लक्षण सभ सम्यक् रूपमे विद्यमान अछि। सुगठित कथानक, चरित्र-चित्रणमे वैशिष्ट्य, सन्तुलित संवाद, वातावरण ओ परिवेशक रोचकता, चरम परिणतिक अभिज्ञानक औत्सुक्य, प्राञ्जल ओ स्वाभाविक भाषा-शैलीसँ ई कथा संबलित अछि जे कथामे स्थित कतिपय दुर्बल बिन्दुकेँ आवृत कऽ दैत अछि। आधुनिक मैथिलीक एहि प्रथम कथामे जनार्दनझा सामाजिक यथार्थक प्रस्तुति द्वारा पाठकमे

करुणा जगाय सामाजिक मनोवृत्तिमे परिवर्त्तन अनबाक हेतु प्रेरित करबाक सफल प्रयास कयलनि अछि।' अपन निरन्तर अनुसन्धानी प्रवृत्तिक कारणे ग्रन्थकार मैथिलीक प्रथम कथाक सम्बन्धमे स्थापित अपन एहि मान्यताकेँ **मंडन निकेत**, दिसम्बर 2005मे प्रकाशित जलधरझाक **विलक्षण दाम्पत्यक** प्रकाशनपूर्वक खण्डित कऽ आलोचकक हंसवृत्तिक परिचय देलनि आ **ताराक वैधव्यक** प्रथम कथा होयबाक मान्यताकेँ निरस्त कऽ देलनि।

छठम अध्यायमे जनार्दनझा रचित निबन्ध सभक विवेचन भेल अछि। मैथिलीक पुरान पत्रिकाक फाइल सभसँ ग्रन्थकार कतोक अल्पज्ञात-अज्ञात निबन्ध सभक अन्वेषणपूर्वक ई निष्कर्ष निकाललनि अछि जे 'वास्तवमे नारी समस्या जनार्दनझाक चिन्तनक प्रमुख विषय छलनि। लेखक समाजक बहुतो समस्याक कारण समाजमे व्याप्त नारी वर्गक उपेक्षा, प्रताड़ना, अशिक्षा, बालविवाह, बहुविवाह इत्यादिकेँ मानैत तकर निराकरणक दिशामे प्रबुद्ध वर्गकेँ उद्बोधित करबाक प्रयत्न कयलनि अछि। अन्यान्य निबन्ध **मिथिलाक महत्त्व, सामयिक वसन्तवर्णन, प्रेम** अथवा **प्रेमविवेचन** आदिक उल्लेख करैत ग्रन्थकार ई सिद्ध कयलनि अछि जे आलोचनात्मक दृष्टिकोणक संगहि प्रमाणपुरस्सर तार्किक प्रतिपादन जनार्दनझाक निबन्ध सभक वैशिष्ट्य छलनि।

सातम अध्यायमे जनसीदनजीक काव्य विधापर विमर्श भेल अछि। ग्रन्थकार हिनक काव्य सभकेँ पाँच वर्गमे विभक्त कयलनि अछि—भक्तिभाव, नीति-उपदेश, भूमि-भाषा, समाजसुधार तथा सामाजिक व्यंग्य ओ देशदशा-विषयक तथा एहि पाँचो प्रकार भेदक सोदाहरण प्रस्तुतिक संग समीक्षापूर्वक ई निरूपित कयलनि अछि जे 'समग्रतामे देखला उत्तर निष्कर्ष रूपमे कहि सकैत छी जे जनार्दनझा 'जनसीदन'क कविता वस्तुनिष्ठ ओ वर्णनात्मक होइत छलनि। हिनक कवितामे समसामयिकताक रंग विशेष गाढ़ रहैत छलनि। समसामयिक परिवेश ओ परिस्थिति, जाहिमे संवेदनाक तत्त्व रहैत अछि से हिनक काव्यक मुख्य उपादान रहैत छलनि। एहिसँ कविताक दीर्घजीविताक क्षति होइत छैक अवश्य, किन्तु ओकरा रचनाकालक परिप्रेक्ष्यमे देखला उत्तर ओकर जीवन्तता ओ महत्त्वकेँ स्वीकार करऽ पड़ैछ।'

अन्तमे उपसंहारमे ग्रन्थकार जनसीदनजीक अभ्यर्थना करैत

लिखलनि अछि जे 'जनसीदनजी मिथिलाक रत्न तँ छलाहे, मैथिलीक विभूति तँ छलाहे, किन्तु प्रान्त भरिक ओ साहित्यिक मर्यादाक रक्षक छलाह। एहन आजीवन मसिजीविता व्रतानुष्ठानी अक्षरपुरुष जनार्दनझा 'जनसीदन'क जीवन ओ कृति भावी पीढ़ीक साहित्य सर्जनक पक्षमे प्रेरणादर्श ओ मार्गदर्शक रहत।'

ग्रन्थक परिशिष्टमे **ताराक वैधव्य** कथाकेँ अविकल रूपेँ समाहित कऽ देल गेल अछि।

एहि तरहेँ आलोचक विवरणात्मक शैलीमे जनसीदनजीक व्यक्तित्व ओ कर्त्तृत्व पक्षकेँ समग्रतामे सप्रमाण समुपस्थित करबामे सफल भेल छथि।

सीतारामझा :

डा. रामदेवझाक सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे हिनक आठम अवदान थिकनि **कविवर सीतारामझा**। ई एक गोट आलेख थिक जे 1977मे मैथिली अकादमी द्वारा आयोजित एक गोष्ठीमे पढ़ल गेल छल आ पश्चात् कालमे **स्मृति संध्या** नामक सम्पादित ग्रन्थमे संकलित कयल गेल।

एहि आलेखमे आलोचनाक व्याख्यात्मक सरणिक उपयोग कयल गेल अछि। आलेखकार वर्ण्य कविक आदर्श, उद्देश्य ओ विशेषता सभक व्याख्या ओ विश्लेषण-विवेचन कयलनि अछि। एहिमे कविक प्रेरणाक मूल स्रोत, जीवन ओ काव्य आदिक वर्णन कऽ ओकरे सभक आलोकमे हुनक कृति सभक परीक्षण ओ मूल्यांकन कयल गेल अछि।

आलेखक आरम्भमे सर्वप्रथम लेखक आधुनिक युगक मैथिली साहित्यकार लोकनिक दायित्वक चर्च करैत ओहि दायित्वक निर्वहणक दृष्टिञे आधुनिक मैथिलीक वरेण्य कवि सीतारामझाक प्रशस्तिक वर्णन कयलनि अछि। तत:पर हुनक जीवन-वृत्तिपर विचार कयल गेल अछि। जीवनवृत्तिक वर्णनक क्रममे सीतारामझाक मातृक सहोड़ा होयबाक तथ्यक विज्ञापन आलेखकारक सूक्ष्म अनुसन्धित्सु प्रवृत्ति एवं स्वमातृकक प्रति स्नेहक प्रतीक छनि। एहि क्रममे ई दर्शाओल गेल अछि जे प्रथम श्रेणीमे अपर परीक्षा उत्तीर्ण भेलाक उपरान्त आर्थिक विपन्नताक कारणेँ सीतारामझाकेँ अध्यापन वृत्ति आरम्भ करऽ पड़लनि, मुदा से खानगी

शिक्षकक रूपमे, कारण अल्पवयसक कारणेँ हुनका सरकारी नोकरी प्राप्त नहि भऽ सकलनि। परिणामतः ओ संस्कृत शिक्षा दिस उन्मुख भेलाह आ अपन प्रतिभा ओ आशुकवित्वक बलेँ नेहरा गामक उदितनारायण चौधरीसँ व्यय पाबि काशीमे उच्च शिक्षा प्राप्त करबाक अवसर पौलनि। क्रमशः ई ज्यौतिषाचार्य ओ धौतपरीक्षोत्तीर्ण भऽ पण्डितक रूपमे गण्य भेलाह। अखिल भारतीय प्रतिष्ठा प्राप्त एहि पण्डितक चतुर्दिक सम्मान होअऽ लगलनि। यद्यपि संस्कृत शिक्षा सैह हिनक वृत्तिक साधन रहलनि मुदा स्वभाषा उन्नतिक प्रति दत्तचित सीतारामझा निरन्तर मैथिलीमे रचनाशील रहलाह। ऐतिहासिक पद्धतिक अनुसरण कऽ आलेखकार सीतारामझाक मैथिली गतिविधिक कारणभूत तत्त्वक अनुशीलन करैत ई निष्कर्ष निकाललनि अछि जे तत्कालीन परिवेशमे बंगाली लोकनिक स्वभाषा प्रेमसँ अनुप्राणित भऽ कविवर सीतारामझा मैथिलीक प्रति प्रतिबद्ध भेल छलाह। आलेखकारक स्पष्ट आ उचिते मान्यता छनि जे–कविवरक रचनाक माध्यम भाषा मैथिलीक अतिरिक्त संस्कृत ओ खड़ी बोली हिन्दी सेहो छलनि। परन्तु ओ हुनक शास्त्रे धरि सीमित छल। ज्योतिषशास्त्र विषयक रचना, सम्पादन, टीका इत्यादि उक्त दुहू भाषाक माध्यमसँ भेल। ओ हुनक व्यवसायक भाषा छलनि, ज्ञानचर्चाक भाषा छलनि, अर्थोपार्जनक भाषा छलनि। परन्तु कवि-कर्मक भाषा, भावाभिव्यक्तिक भाषा, समाजक हृदयक तारमे झंकार उत्पन्न करऽवला भाषा छलनि मातृभाषा मैथिलीये।

सीतारामझाक रचना तत्त्वक विवेचन करैत लेखक कहने छथि जे 'हास्य-व्यंग्य शैली, सरल ओ प्रसादगुण युक्त ठेठ ओ देशज शब्द बहुल भाषा, सामाजिक विरूपताक उद्घाटन, नवीनताक आग्रहक संग संस्कृति ओ आचारक रक्षाक प्रवृत्ति, देश-दशा ओ सामाजिक स्थितिक आलोचनात्मक वर्णन, उद्बोधन ओ नैतिकताक प्रतिपादन जे कविवरक कविताक सहज धर्म मानल जाइछ से **'पढ़ुआ चरित्र** तथा **पूर्वापर व्यवहार'**मे बीजरूपमे भेटैत अछि। परवर्त्ती रचना सभमे कविवर ओही बीज रूप गुण सभकेँ पल्लवित-पुष्पित कयलनि। एकर तात्पर्य ई नहि जे हिनक रचनामे अन्य प्रवृत्ति सभक समावेश नहि भेल। नव-नव गुण ओ भावराशि सेहो समाविष्ट होइत गेल परन्तु प्रधानता ओही तत्त्वक रहल जकर प्रथम दर्शन प्रथम प्रकाशित रचनामे भेल छल।'

ततःपर सीतारामझाक पद्य रचनाकेँ दुइ कोटिमे विभाजित कयने छथि–शास्त्रात्मक ओ पद्यात्मक। शास्त्रात्मक पद्यक अन्तर्गत व्यवहार विवेक वा यात्रा सगुन विचार, पर्व निर्णय, अतीचार निर्णय, गीता तत्त्व सुधा तथा याज्ञवल्क्य स्मृतिकेँ राखल गेल अछि एवं ओकर सभक वैशिष्ट्यक वर्णन कयल गेल अछि। काव्यात्मक पद्य मध्य पढुआ चरित्र तथा पूर्वापर व्यवहारक संगहि सूक्ति सुधाकशृंखलामे प्रकाशित रत्न संग्रह, लोकलक्षण, उपदेशमाला; भूकम्प वर्णन, शिक्षा-सुधा, मैथिली परिचय दर्पण, उनटा बसात, मैथिली काव्य षट्रस ओ मैथिली काव्योपवनकेँ राखल गेल अछि। लेखक हिनक दुइ गोट काव्य ग्रन्थ विदुरोक्त उपदेशामृत ओ समयोचित पदावली तथा तीन गोट काव्यशास्त्रीय ग्रन्थ अलंकार दर्पण (शब्दलंकार), अलंकार दर्पण (अर्थालंकार) एवं मैथिली छन्दोऽलंकार मंजूषाक उल्लेख करैत हिनक द्वारा रचित **अम्बचरित** महाकाव्योक चर्च कयने छथि। ततःपर कविक रचनावली सभक परिचयपूर्वक वैशिष्ट्य सभक उद्घाटन कयल गेल अछि। एही क्रममे लेखक सीतारामझाक कतोक विकीर्ण कविता सम्बन्धी सूचना प्रदान कऽ अपन अनुसन्धानी प्रवृत्तिक परिचय देलनि अछि तथा कतोक अल्पज्ञात ओ अज्ञात तथ्यकेँ प्रकाशमे आनि सीतारामझाक कवि-व्यक्तित्वकेँ सम्पूर्णतामे प्रकट करबाक दिस उन्मुख भेल छथि।

एहि आलेखमे लेखकक विवेचनात्मक प्रतिभा हिनका द्वारा सीतारामझाक रचनावलीक वैज्ञानिक विभाजनमे सेहो प्रकट भेलनि अछि। एहि विभाजनक अनुसार सीतारामझाक समस्त रचनाकेँ तीन खण्डमे राखल गेल अछि–मुक्तक काव्य, विवरणात्मक वा इतिवृत्तात्मक काव्य तथा प्रबन्धात्मक काव्य। अन्तमे लेखक शास्त्रीय आलोचना पद्धतिसँ सीतारामझाक अम्बचरित महाकाव्यक विवेचना कयलनि अछि तथा ओकर रचनाक उद्देश्यक गहन चिन्तनपरक निष्कर्ष प्रदान कयलनि अछि जे 'कविवरक समस्त रचनाकेँ देखला उत्तर ई तथ्य स्फीत होइत अछि जे ओ मातृपदक प्रति अत्यधिक श्रद्धालु छलाह। स्वजननीसँ लय मातृभूमि, मातृभाषा ओ जगज्जननी धरि सब मातृपदमे अन्तर्भुक्त अछि। मैथिली भाषामे मिथिलाक महान कन्या जगज्जननी जानकीक चरितगान कऽ एकहि संग मातृपद बोधित जानकी, मातृभूमि मिथिला, मातृभाषा मैथिली ओ

माताक प्रति श्रद्धार्पणक अवसर पाबि गेलाह। एही समानान्तरमे एकटा सार्वभौम नारी चरित्रक रूप प्रतिष्ठित करब कविक उद्देश्य छलनि। से मिथिलेमे किएक, समस्त भारतमे, समस्त हिन्दू इतिहासमे सीतासँ बढ़ि आदर्श नारी पात्र दोसर कोन भऽ सकैत छल? एहन विश्वविश्रुत नारी जकर उद्भव मिथिलामे भेल छल हो, तकर चरित कीर्त्तन मिथिला भाषामे, मिथिलाक समाजक लेल एक मैथिल कवि द्वारा होयब नितान्त अपेक्षित छल जकरा कविवर पूर्ण कयलनि।'

एहि तरहेँ लेखकक सजीवनी समालोचनापरक आलेख 'कविवर सीतारामझा' हिनक व्यक्तिवादी आलोचना प्रणालीक दृष्टान्त अछि जाहिमे कविवरक व्यक्तित्व ओ कर्त्तृत्वक समग्रतामे परीक्षण ओ मूल्यांकन कविक भावनाक संग तादात्म्यपूर्वक कयल गेल अछि। परवर्त्तीकालमे एहि आलेखक परिणति डा. श्रीभीमनाथझा द्वारा रचित सीतारामझा विनिबन्धमे भेटैत अछि जे भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखलामे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित भेल। एहि विनिबन्धक रचनाक्रममे डा. श्रीझाकेँ उपरिचर्चित समालोचनात्मक आलेखसँ पूर्ण सहायता भेटल छलनि। एकर उल्लेख हुनक विनिबन्धमे भेल अछि। स्वभावतः डा.रामदेवझाक ई आलेख सीतारामझापर परवर्त्ती अनुष्ठानक मार्गदर्शक बनल रहत, से स्वयंसिद्ध भऽ जाइत अछि।

सुभद्रझा :

सजीवनी समालोचनाक क्षेत्रमे डा. रामदेवझाक अन्य विनिबन्ध थिकनि **सुभद्रझा**। इहो ग्रन्थ साहित्य अकादेमीक भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखलामे रचित भेल अछि। एहि ग्रन्थमे विश्वप्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. सुभद्रझाक व्यक्तित्व ओ कर्त्तृत्वकेँ समग्रतामे विवेचित-विश्लेषित कयल गेल अछि।

ग्रन्थारम्भमे डा. सुभद्रझाकेँ मैथिली व्याकरणक महत्त्रयीक रूपमे प्रतिष्ठापित कयल गेलनि अछि आ एहि क्षेत्र प्रथम स्थान जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन तथा दोसर स्थान दीनबन्धुझाकेँ प्रदान कयल गेलनि अछि, जे सर्वथा समीचीन अछि। एही क्रममे हिनका मातृभाषा मैथिलीक सम्मान ओ गौरवक रक्षार्थ बद्धपरिकर तथा गद्य साहित्यक निविष्ट रचनाकर्त्ताक रूपमे सेहो प्रतिष्ठापित कयल गेलनि अछि।

मुख्य ग्रन्थ सात अध्यायमे विभक्त अछि। प्रथम अध्यायमे डा. **सुभद्रझाक जीवन-वृत्त**क प्रस्तुतीकरण भेल अछि। तदनुसार डा. सुभद्रझाक आरम्भिक जीवन अत्यन्त दयनीय परिस्थितिमे बीतल छलनि। मुदा परिवारमे शिक्षाक प्रति घोर रुचि छलनि जकर फलस्वरूप ओ क्रमशः औपचारिक शिक्षा प्राप्त करैत अन्ततः कलकत्ता विश्वविद्यालयसँ हिन्दीमे एम.ए. कयलनि। पूर्वहुमे अपन प्रतिभाक प्रसादात् अनेकानेक पुरस्कार प्राप्त करैत हिनका पटना विश्वविद्यालयक रिसर्च स्कॉलरशिप प्राप्त भेलनि आ ई **मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास**पर अनुसन्धान कार्य आरम्भ कयलनि। डा. सुनीति कुमार चटर्जीक सान्निध्यमे सम्पन्न हिनक शोधप्रबन्धपर हिनका डी.लिट्क डिग्री प्रदान कयल गेलनि। पछाति ई पटना विश्वविद्यालयसँ रिसर्च फेलोशिप प्राप्त कऽ पेरिस विश्वविद्यालयमे उच्च शिक्षाक हेतु प्रस्थान कयलनि। क्रमशः ई अनेकानेक शैक्षणिक उपाधि ओ वृत्ति ग्रहण करैत अन्ततः वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयक पुस्तकालयाध्यक्षक पदसँ सेवानिवृत्त भेलाह। सेवानिवृत्तिक बादो ई अनेक शैक्षणिक संस्थान सभसँ जुड़ल रहलाह तथा विविध पुरस्कार प्राप्त करैत रहलाह। साहित्य अकादेमीमे मैथिलीकेँ प्रविष्ट करयबामे हिनक अनुपम योगदान रहलनि। तथापि मैथिली क्षेत्रमे सुभद्रझाकेँ अड़ियल, अखड़ियल, लड़क्का, जिद्दी, सुराह, एकभगाह आदि विरुदसँ आवृत रहऽ पड़लनि। समालोचक हिनक व्यक्तित्वक समेकित आकलन करैत अन्ततः ई निष्कर्ष प्रस्तुत कयने छथि जे 'आडम्बरहीन आचार-विचार, आहार-विहार, बगय-बानि, सामान्य खद्धरक धोती-कुर्त्ता, क्वचित् छड़ी-छत्ता धारण कयनिहार सुभद्र बाबूक व्यक्तित्व अन्तःसलिला फल्गू सदृश छलनि, ऊपरसँ नीरस, रुच्छ, कचकच बालु भरल, परन्तु बहुत भीतरमे रसत्व, तृप्तिदायकता, आह्लादकता भरल।' एतावता लेखक सुभद्रझाक व्यक्तित्वक ओहि तत्त्व सभकेँ समक्ष रखबाक प्रयास कयलनि अछि जे हुनक कारयित्री प्रतिभाक बाधक बनल रहल।

ग्रन्थक दोसर अध्याय थिक **ग्रन्थ परिचय**। एहिमे सुभद्रझा द्वारा रचित ग्रन्थावलीक नामक परिगणन वैदिक, संस्कृत एवं प्राकृत वाङ्मयसँ सम्बद्ध ग्रन्थ, अँगरेजी भाषामे अनूदित ग्रन्थ, अँगरेजी रूपान्तर, अँगरेजीमे मैथिली भाषा-साहित्य विषयक ग्रन्थ ओ मैथिलीमे रचित चारि गोट

मौलिक ओ दुइ गोट सम्पादित ग्रन्थक क्रममे कराओल गेल अछि। तदतिरिक्त हिनका द्वारा जाहि कृत कार्य सभक उल्लेख मात्र कऽ देल गेल अछि, से सभ थिक–कादम्बरीक मैथिली अनुवाद, फ्रेंच ग्रन्थ वर्ड्सक् अनुवाद, कबीरदासक मैथिली पदावली, लक्ष्मीनाथ गोसाँइक पदावली, धातुकोष ओ निरंजना शब्दकोश इत्यादि।

एहि ग्रन्थक तेसर अध्याय थिक **साहित्ययात्रा**। एहि अध्यायमे सुभद्रझाक लेखन यात्राक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत कयल गेलनि अछि।

चारिम अध्यायमे सुभद्रझाक मैथिली कृति सभक व्याख्यात्मक परिचय प्रस्तुत भेल अछि। एहि अध्यायमे विवेचित कृति सभ थिक **प्रवास जीवन, यात्रा-प्रकरण-शतक, नातिक पत्रक उत्तर, मैथिली व्याकरणं मीमांसा** एवं **विद्यापति गीत संग्रह**। एहिमे प्रथम तीनकेँ सप्रमाण समालोचनाक कवित्वमय गद्य काव्यक अभिधान देल गेलनि अछि, 'मैथिली व्याकरण मीमांसा'केँ मैथिली भाषा विषयक अनेक अभिनव तथ्यक भंडार कहल गेलनि अछि मुदा 'विद्यापति गीत संग्रह'केँ सर्वथा निरुद्देश्य विज्ञापित कयल गेलनि अछि। लेखकक सम्यक् तर्क छनि जे विद्यापति गीत संग्रहमे ने तँ सुभद्रझाक सम्पादनक निदर्शन भेटैछ ने विद्यापति विषयक विशेषता आ ने हुनक भाषा तत्त्वज्ञतेक अवक्षेपण भेल अछि।

पाँचम अध्यायमे निबन्धकार सुभद्रझाक **गद्य शैली**क विश्लेषण कयने छथि। एहिमे हिनका मैथिलीक ठेठ शब्दक प्रयोगक प्रति आग्रही, वाग्धारा ओ चतकारक प्रयोगमे निपुण एवं विदेशज शब्दक मैथिलीकरणमे पटु कहल गेलनि अछि। अनेक ठाम ई हिन्दुस्तानी भाषाक शब्दग्रहण सहज रूपेँ कऽ लैत छलाह। हिनक वाक्य-विन्यास कतहु अत्यन्त सरल तँ कतहु अत्यन्त संश्लिष्ट देखि पड़ैत छनि। अलंकृति हिनक भाविक सौन्दर्यक विशिष्ट अंग छलनि। अन्ततः समालोचक हिनक गद्यक आधारपर हिनका गद्यक गीत-कविक रूपमे प्रतिष्ठापित कयलनि अछि जकरा निबन्धकारक नीर-क्षीर विवेकी समालोचकक प्रवृत्तिपरक अनुसन्धान बूझल जा सकैछ।

एहि ग्रन्थक छठम अध्याय थिक मैथिली विषयक अंग्रेजी ग्रन्थ। एहि अध्यायमे डा. सुभद्रझाक दुइ गोट ग्रन्थ क्रमशः **द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज** तथा **साँग्स ऑफ विद्यापति**क विवेचन-विश्लेषण भेल अछि। समालोचक अत्यन्त गम्भीरतापूर्वक 'द फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लैंग्वेज'क प्रत्येक अध्यायक वैशिष्ट्य ओ अभाव-अभियोगकेँ

निरूपित कयलनि अछि। एहिसँ नहि केवल एहि ग्रन्थक उपादेयता प्रमाणित भेल अछि अपितु मैथिली भाषाक अध्ययन क्षेत्रक आयामक विस्तार भेल अछि। समालोचक, तुलनात्मक अध्ययन पद्धतिक अनुसरण करैत नहि केवल सुभद्रझाक कतोक कथ्यक परीक्षण कयने छथि अपितु अनेक नव अवधारणा सभ सेहो प्रस्तुत कयने छथि जे समीचीनताक कारणेँ मैथिली भाषा विज्ञानक क्षेत्रमे हिनक योगदान मानल जा सकैछ। खास कऽ समालोचक मैथिली उपसर्ग ओ प्रत्ययपर सविशेष विमर्श प्रस्तुत कयलनि अछि। धातु गुच्छ, सुनिश्चित वर्ण गुच्छ, युग्म, सहचर शब्द आदिक विवेचनमे समालोचकक वस्तुनिष्ठता, विद्वत्ता ओ बहुश्रुति स्फुट अछि।

एही अध्यायमे विवेचित साँग्स ऑफ विद्यापतिक आधारपर समालोचकक अनुसन्धानपरक निष्कर्ष छनि जे 'नेपाल पदावलीक बहुशः अपपाठक संशोधन ओ भ्रान्त पदच्छेद सभक परिहार डा. सुभद्रझाक एहि संस्करणमे सम्भव भऽ सकल अछि जाहिसँ विद्यापतिक दुर्बोध भऽ गेल उक्ति सभ सुबोध भऽ गेल अछि।' समालोचक एहि ग्रन्थक भूमिकाकेँ मूल्यवान ओ ऐतिहासिक महत्त्वक कहने छथि आ ताही क्रममे ग्रन्थक वृहदाकार भूमिकाक विषयक सेहो परिचय प्रस्तुत कयने छथि जाहिसँ हिनक निविष्ट पाठकीयता एवं गम्भीर अध्ययनशीलताक परिचय भेटैत अछि।

अन्तिम **कतिपय सम्पादित-अनूदित ग्रन्थ** शीर्षक अध्यायमे सुभद्रझाक **सर्वदेशवृत्तान्त संग्रह** वा **अकबरनामा**, **धर्मशास्त्रीय व्यवस्था-संग्रह**, **प्राकृत चन्द्रिका**, **ए ग्रामर ऑफ द प्राकृत लैंग्वेज-रिचार्ज पिशेल**, **द हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लिटरेचर-वाल्यूम III-एम्. विंतरनीज** पर परिचयात्मक टिप्पणी प्रस्तुत भेल अछि। एहि ग्रन्थ सभक आधारपर सुभद्रझा अँगरेजीक अधीत विद्वानक रूपमे प्रस्तुत भेल छथि। ग्रन्थान्तमे सुभद्रझाक नातिक पत्रक उत्तर ओ प्रवास जीवनमे ग्रथित कतिपय सदुक्तिक संग्रह परिशिष्ट रूपमे सूचीबद्ध कयल गेल अछि आ उपसंहारक संग ग्रन्थक समापन भेल अछि।

एहि ग्रन्थमे आदिसँ अन्त धरि समालोचनाक निर्णयात्मक ओ मनोवैज्ञानिक पद्धतिक अनुसरण भेल अछि तथा समालोचक एक गोट उदात्त व्याख्याताक रूपमे आलोच्य व्यक्तित्व ओ हुनक कृतिकेँ पाठकक समक्ष प्रस्तुत करबामे सफल भेल छथि।

निष्कर्ष :

एहि समस्त सजीवनी समालोचनामे डा. झा एकहि संग विशिष्ट अन्वेषक ओ समालोचकक रूपमे प्रस्तुत भेल छथि। ई हुनक व्यापक अध्ययनशीलतेक परिणाम थिक जे ई समस्त सजीवनी समालोचनामे विषयसँ सम्बद्ध अभिज्ञात सामग्रीक संकलन, व्यवस्थापन ओ तर्कसम्मत व्याख्या तँ कयनहि छथि, अनभिज्ञात सामग्री ओ सूचनाक आधारपर अपन मतकेँ सुस्थिर कऽ ओकरा सर्वग्राह्य बनयबाक योग्यता प्रदान करैत छथि। हिनक ई समालोचना पद्धति नहि केवल कृति विशेषक समुचित अध्ययनपूर्वक ओकर गुण-दोषक विवेचनटा प्रस्तुत कयने अछि अपितु रचनाकारक व्यक्तित्व, ओकर सृजन-प्रक्रिया ओ तत्कालीन परिवेशक संगहि ओकर प्रभावक सेहो वर्णन कयने अछि। डा. झा सजीवनी समालोचनाक क्रममे बहुधा व्याख्यात्मक प्रणालीक अवलम्बन कयने छथि आ अत्यन्त सहृदयतापूर्वक लेखकीय आदर्श, उद्देश्य ओ विशेषताक व्याख्या आ विवेचन कयने छथि। स्वभावत: हिनक आलोचना सर्वत्र न्यायसंगत देखि पड़ैत अछि। लेखक सदिखन आलोच्य विषयक प्रेरणाक मूल स्रोत तथा ऐतिहासिक ओ सामाजिक परिस्थितिक आकलनमे संलग्न देखि पड़ैत छथि। कखनो-कखनो ई तुलनात्मक पद्धतिसँ पूर्ववर्त्ती, समकालीन ओ परवर्त्ती काव्यधाराक संग आलोच्य कृतिक आकलन कयने छथि तँ कखनो शास्त्रीय सिद्धान्तक आधारपर कृतिक मूल्यांकन कयने छथि। हिनक सजीवनी समालोचनामे आलोच्य अवधिक राजनीतिक, सामाजिक, साहित्यिक ओ सांस्कृतिक परिस्थितिक विश्लेषणक संगहि लेखकक जीवन ओ पारिवारिक परिस्थितिक आयाम सभक सेहो विश्लेषण भेल अछि। मुदा हिनक एहि प्रकृतिक समालोचनाक जे सर्वाधिक विशिष्ट गुण अछि से थिक सामान्यत: अनधीत-अस्पृष्ट विषयक चयन तथा ओकर समग्रता ओ प्रामाणिकताक संग वैज्ञानिक विवेचन जे हिनका एहि क्षेत्रक मार्गद्रष्टाक रूपमे प्रतिष्ठापित कयने रहलनि। मैथिली साहित्यक इतिहासलेखन हिनक एहि प्रकारक कृति सभसँ रसग्रहण कऽ अनुप्राणित होइत रहल अछि।

●●●

मैथिलीक लोकगाथा-अनुसंधान ओ मणिपद्म

लोकगाथाकेँ लोकसाहित्यक महाकाव्य कहल गेल अछि। ई एक गोट लोकरंजनी साहित्य थिक जकर गायन लोकजीवनमे होइत रहल अछि। गेयधर्मिता, वर्णन-वैशद्य ओ लोकनायकत्वक संगहि महदुद्देश्य एकरा महाकाव्यक श्रेणीमे परिगणित करयबाक योग्यता प्रदान कयने छैक। महाकाव्यहि जकाँ ई पद्यविधा थिक मुदा एकर पद्यबन्ध शास्त्रीय छन्द-बन्धक आग्रही नहि रहैछ। तथापि मात्राक असन्तुलन रहितो एकर गायकलोकनि एकरा गेयधर्मी काव्यक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। एहिमे कथा-उपकथाक संयोजन एवं प्रासंगिक वर्णन महाकाव्ये जकाँ विशद् देखल जाइत अछि। एकर नायक शास्त्रीय महाकाव्य जकाँ उच्च कुलोत्पन्न अथवा इतिहास प्रसिद्धेटा नहि होइत छथि अपितु सामान्य जनो होइत छथि। सामान्यो कुलमे उत्पन्न एहन पात्र जे अपन शौर्य ओ पराक्रम, त्याग ओ तपस्या, प्रतिरोध ओ बलिदानक माध्यमे कोनो विशिष्ट कार्यक सम्पादनमे सक्षम होइत छथि, लोकगाथाक नायकक रूपमे प्रतिष्ठित छथि। हिनका लोकनिक कार्य जातीय जीवनक उत्थानपरक ओ लोककल्याणक मार्गकेँ प्रशस्त करऽवला, मानवताक उच्च आदर्शकेँ स्थापित करबाक क्षमतासँ युक्त एवं अद्‌भुत प्रकृतिक दर्शाओल जाइत अछि जाहिसँ अपन जातिक लोक मध्य तँ ई जातीय देवताक रूपमे सम्पूजित होइते रहलाह अछि, लोकजीवनक आकर्षणक सेहो कारण बनल रहल छथि।

मिथिलाक विभिन्न जातिक लोकक बीच अनेकानेक लोकनायक सभक गाथा प्रचलित अछि यथा लोरिकाइन, सलहेस, नैका बनिजारा, फेकूराम, दयाराम, गनीनाथ-गोविन्द, दुलरा दयाल, दीना-भद्री, वसावन-बख्तौर, अमरसिंह- जयसिंह, रइया रनपाल, रन्नू सरदार, श्यामसिंह, लालवन

बाबा, बेणीराम, विजयमल, कुमर-वृजभान, हंसराज वंशराज, लवहरि-कुशहरि, सारंगा-सदावृज, गोपीचंद, कारिख आदि। एहि गाथा सभमे किछुमे तँ कोनो लोकनायकक सम्पूर्ण चरितक अवतारणा भेल अछि जे अपन विशदताक कारणे लोकगाथाक रूपमे प्रशस्त भेल अछि मुदा किछु गाथामे लोकनायकक जीवनक खण्डचित्र मात्र देखि पड़ैत अछि, तेँ एकरा सभकेँ गाथागीत मात्र कहल जा सकैछ। एहन गाथागीतक नायक सभ बहुधा विशद् लोकगाथाक उपकथाक नायकक रूपमे सेहो देखल जाइत छथि।

वस्तुतः ई लोकगाथा सभ सामन्ती युगक उत्पीड़नसँ सीदित लोकजीवनक उत्साहक गाथा थिक जाहिमे कोनो शूर-वीर नायकक प्रेम ओ शौर्यक कथा कहल गेल अछि, एहन नायकक जे अपन शौर्यसँ अनाचारी-अत्याचारीक अन्त कऽ लोकजीवनकेँ शोषणमुक्त करयबामे सहायक भेलाह, किंवा अपन कोनो कृत्य द्वारा मानवताक आदर्श उपस्थापित कयलनि। बेगारी ओ नारी उत्पीड़नक विरुद्ध संघर्ष कयनिहार दीनाभद्री; राजा सहदेव, राजा मोचनि, राजा हरबा-बरबा, उघरा पमार आदिक अनाचार-अत्याचारक दमन कयनिहार लोरिक; चुहड़मलक षड्यंत्रकेँ विफल कयनिहार राजा सलहेस, पातिव्रत्यक आदर्श उपस्थित कयनिहारि सती बिहुला, वैराग्यक आदर्श उपस्थित कयनिहार गोपीचंद; बहुराक भय ओ आतंकक नाश कयनिहार दुलरा दयाल, नारी-विक्रयक विरोधमे ठाढ़ भेनिहार नैका-बनिजारा; पशुपालक समुदाय पर अत्याचार कयनिहार राजा दलेलक दमन कयनिहार बसावन-बख्तौर; पुत्रक आदर्शकेँ उपस्थित कयनिहार कारिख, मल्लविद्यामे निष्णात श्यामसिंह आदि मिथिलाक जातीय जीवन ओ लोकजीवनक देवताक रूपमे स्थापित छथि आ हिनका लोकनिक चरितक गायन लोकगाथाक माध्यमे होइत रहल छनि। मलाह जातिमे प्रचलित लवहरि-कुशहरि गाथा अवश्य रामकथासँ अनुबद्ध अछि आ सीताक उत्तरचरितकेँ लोक अभिज्ञानक रूपमे प्रस्तुत करैछ जकरा सीता-वनवासक प्रति मिथिलाक लोकजीवनक आक्रोशक अभिव्यक्ति बूझल जा सकैछ।

मैथिलीक प्राचीन साहित्यक सामग्री मध्य संस्कृत ग्रन्थ सभमे प्रयुक्त कठिन शब्दक अर्थनिष्पत्ति हेतु व्यवहृत कतिपय मैथिली शब्द, प्राकृतपैङ्गलम्मे अन्तर्भुक्त किछु पद, सिद्ध साहित्य, डाक वचनावली

आदिक संग जाहि महत्त्वपूर्ण निधिकेँ निर्विवाद रूपसँ परिगणित कयल जा सकैछ, से थिक एहि भाषाक प्रभूत लोक साहित्य। ई साहित्य श्रुत साहित्यक रूपमे लोकजीवनमे व्याप्त रहल अछि आ पुस्त दर पुस्त कण्ठान्तरित होइत रहल अछि। एकरे एक गोट प्रभेद थिक लोकगाथा जे गायक, क्षेत्र ओ कालसँ प्रभावित होइत रहल अछि। एहिमे नित्य परिवर्त्तन होइत रहलैक अछि। स्वभावत: एकर स्वरूप ओ भाषा बदलैत रहलैक अछि। परिणामत: कोनो गाथामे अनेक चरित्रक सम्मिलनसँ ओ महागाथाक रूप धारण कऽ लेलक अछि, तँ कतोकमे मात्र एके गोट चरित्रक उपस्थापनासँ ओ गाथागीतक रूपमे प्रचलित अछि। मैथिली लोकगाथाक शताधिक होयबाक पाछाँ इहो तथ्य अछि जे परस्पर आबद्ध चरित्र सभकेँ एके गोट महागाथामे अन्तर्भुक्त करबाक दिशामे विवेचन कम भेल अछि।

जतऽ धरि लोकगाथाक अध्ययन-अनुसंधानक विषय अछि तँ एहि सम्बन्धमे यैह कहल जा सकैत अछि जे पूर्वमे एकर जे श्रुत स्वरूप छल से काल ओ व्यक्ति तथा क्षेत्रक प्रभावसँ नित्य परिवर्त्तित होइत तत्तत् लोकदेवताक पूजक भगत किंवा एहि विधाक गायकलोकनिक कंठहिमे सुरक्षित रहल। ओकरा अभिलिखित करबाक दिशामे कोनो प्रयास नहि भऽ सकल। अवश्ये चौदहम शताब्दीमे रचित मैथिलीक आद्य गद्यग्रन्थ 'वर्णरत्नाकर'मे कविशेषराचार्य ज्योतिरीश्वर गाम-नगरमे गाओल जायवला लोकगानक एकटा प्रभेदक रूपमे लोरिक नाचो, मएना, बड़ती आदिक उल्लेख कयलनि अछि जाहिमे लोरिक लोकगाथाक रूपमे अत्यन्त प्रशस्त रहल अछि आ एकर नाचक रूपमे सेहो प्रदर्शन होइत रहल अछि। मएना, बड़ती सेहो तत्कालीन समाजमे प्रचलित कोनो लोकरंजनी विधेक स्वरूप भऽ सकैछ। ओना मयना मिथिलामे प्रचलित अनेक लोकगाथामे नारीपात्रक रूपमे पाओल जाइत अछि।

मैथिली लोकगाथाक संकलन-समालोचनाक दृष्टिजे प्राथमिक कार्यक श्रेय अंग्रेज विद्वान जी.ए. ग्रियर्सनकेँ छनि। ई 1881 ई.मे मिथिलाक सलहेस लोकगाथाकेँ संकलित कऽ अंग्रेजी अनुवादक संग प्रकाशन करौलनि। पछाति हिनके द्वारा 1885 ई.मे जर्मनीक एक गोट पत्रिकामे गीत दीनाभद्रीक ओ गीत नेवारक शीर्षकसँ दीनाभद्री लोकगाथा ओ शोभा

बनिजाराक लोकगाथाक अंश प्रकाशित कराओल गेल। एहि तरहेँ मैथिली लोकगाथा विश्व क्षितिजपर अपन मौलिक स्वरूपमे प्रकट भेल। क्रमशः मैथिलीक विद्वान लोकनिक ध्यान मैथिलीक एहि अपूर्व सम्पत्ति दिस गेलनि मुदा एहि दिशामे कोनो विशेष कार्य विगत शताब्दीक पाँचम दशक धरि नहि भऽ सकल। अवश्ये मधुबनीक रघुवर सिंह बुकसेलर द्वारा मैथिली जगतमे प्राप्त किछु लोकगाथा यथा बिहुलाक कथा, कुमर वृजभानक कथा ओ सुट्ठी कुमरिक गीत आदिक प्रकाशन कयल गेल।

परवर्त्ती कालमे डा. जयकान्त मिश्र 'इन्ट्रोडक्सन टू द फॉक लिटरेचर ऑफ मिथिला' भाग दू मे लोरिक, सलहेस, दीनाभद्री, जलेछ, बिहुला, कुमर वृजभान, गोपीचन्द-मैनावती, नेवार आदिक कथाक गेयस्वरूपक उद्धरण प्रस्तुत करैत एकर कथाभागक परिचय प्रस्तुत कयलनि। इतिहासविद् डा. मिश्रक ई कार्य मैथिली विद्वानलोकनिक हेतु मार्गदर्शकक काज कयलक आ लोकसाहित्यक एहि विधाक प्रति मैथिली विद्वानलोकनि सचेष्ट भेलाह।

क्रमशः मैथिली लोकगाथाक संकलन-समालोचना दिस अनेक विद्वान आकृष्ट भेलाह जाहिमे प्रो. राधाकृष्ण चौधरी, डा. पूर्णानन्द दास, प्रो. धीरेन्द्र, डा. मणिपद्म, प. राजेश्वरझा, प्रो. प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन', डा. विश्वेश्वरमिश्र, डा. लोकनाथमिश्र, डा. बालगोविन्दझा 'व्यथित', डा. रामदेवझा, डा. मोतीलालयादव, डा. योगानन्दझा, डा. महेन्द्रनारायणराम आदिक नाम उल्लेखनीय अछि। तथापि एहि सभमे अधिकांश विद्वानक लोकगाथा संकलन-अनुसंधानक परिणामसँ विद्वद्जगत अनभिज्ञे रहल अछि जकर कारण अछि मूल लोकगाथा ओ अनुसंधान कार्य सभक प्रकाशनक अभाव। तथापि अनेक विद्वानक प्रकाशित गाथाक कथाभाग ओ गेयपदक आंशिक उद्धरण तथा ताहिपर आधारित निबन्ध सभक प्राचुर्य ई साबित करबामे सक्षम अछि जे मैथिलीक एहि विधामे पर्याप्त काज होइत रहल अछि।

मैथिली लोकसाहित्यक अन्वेषणक दिशामे प्रो. प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन' एकटा विशिष्ट नाम रहल छथि। हिनक **ब्रह्मगाम** पोथीमे संगृहीत 'बकसि देहू रानू के प्राण, सुरुजक जोति कमला करय मलीन, शांखो ओझा ओ कमलेसरी, सुन सुन बेटा घुघुलिया, अमरसिंहक तरुआरि, नूजागढ़,

चानवेला आ चम्पा डगराइन, रेशमाक अतृप्त मन आदि ललित निबन्धमे कतोक लोकगाथाक वस्तु, प्रकृति आदिक आंशिक चित्र प्रस्तुत भेल अछि। 'मिथिला लोकसंस्कृतिक संदर्भ' ग्रन्थमे संकलित हिनक निबन्ध 'मिथिलाक लोकगाथाक सन्दर्भ'मे मैथिली लोकगाथाक क्षेत्रमे कृत कार्य, विभिन्न जातिमे प्रचलित लोकगाथा मध्य लोरिकाइन, सलहेस, दुलरादयाल, नैका बनिजारा, दीनाभद्री, बसाबन-बख्तौर, गोपीचन्द, रइया-रनपाल, राजा धनपाल, लवहरि-कुशहरि, गनीनाथ-गोविन्द, कारिख, मीरायन, ज्योतिष पजियार, सती बिहुला, श्यामसिंह, रन्नू सरदार आदि गाथाकेँ मिथिलाक सामाजिक सन्दर्भ, भौगोलिक पृष्ठभूमि एवं जनपदीय चेतनाक आलोकमे देखबाक प्रयास भेल अछि। हिनक निबन्ध सभसँ विभिन्न लोकगाथाक प्रति लोकचेतनाक मार्ग प्रशस्त भेल अछि तथा अनुसन्धित्सु लोकनिकेँ एहि क्षेत्रमे कार्य करबाक मार्गदर्शन भेटैत रहलनि अछि।

डा. रामदेवझाक ग्रंथ **मैथिली लोकसाहित्य : स्वरूप ओ सौन्दर्य**मे **उतिमा खिरलि पताल** गाथागीतक संग दीनाभद्री ओ लोरिक गाथा अनुस्यूत अछि। उतिमा खिरलि पतालमे चरित्र विपदापन्न नारीक मुक्तिक हेतु संघर्षक संदेशसँ सम्बद्ध नायिकाक प्रस्तुतीकरण भेल अछि तँ दीनाभद्री गाथामे एहि गाथाक कथ्य रूपकेँ सोझरायल गेल अछि। लोरिक लोकगाथाक वर्णनमे एकर कथ्य भागक संगहि मिथिलासँ एकर सम्बद्धता पर विमर्श भेल अछि। एहि ग्रन्थमे मैथिली लोकगाथाक शास्त्रीय विवेचन कयल गेल अछि आ एकर परिगणन, वर्गीकरण, वैशिष्ट्य, विशिष्ट शब्दावली, नायक, अध्ययन-अनुशीलनक दशा-दिशा एवं भविष्यपर गहन वैज्ञानिक चिन्तन प्रस्तुत कयल गेल अछि।

डा. राजेश्वरझा **लोकगाथा विवेचन** पोथीमे पाँच गोट गाथाक विवेचन प्रस्तुत कयलनि अछि। ओ गाथा सभ थिक लोरिकाइन, नैका बनिजारा, राजा सलहेस, दीनाभद्री आ राजा गोपीचन्द। हिनका अनुसार एहि गाथा सभमे कथा तत्त्व ओ कल्पना तत्त्वक अतिरिक्त ऐतिहासिक तथ्य सन्निहित अछि। एहि गाथा सभमे विभाव, अनुभाव ओ व्यभिचारी भावक उदाहरण जँ उपलब्ध अछि तँ संयोग-वियोगक मनोहर उद्गारो धरि सुलभ अछि जे अपन प्रकृत रूपमे पाओल जाइछ। अतएव एहि लोकगाथा सभमे लोकक मानसिक धरातलकेँ, ज्ञानक उपक्रमकेँ तथा

परिचयक क्षितिजक सीमाक आन्तरिक स्वरकेँ गाथाकारलोकनि साकार कऽ ओकर उक्ति, भावना तथा मान्यताकेँ राग एवं छन्दमे निरूपित एवं काव्यमे परिणत कऽ ऐतिहासिक सामग्रीक रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि जकरा सभकेँ युग-युगान्तरसँ लोक जोगौने अछि।

राजेश्वरझा लोरिकाइन हेतु प्रचलित शब्द महराइक व्याख्या कऽ एकर ऐतिहासिकता पर विचार कयलनि अछि आ एकर समय ईसाक एगारहम शताब्दी मानलनि अछि, जखन मिथिला अराजकतासँ ग्रस्त छल। ओ एहि गाथामे वर्णित स्थल सभक भूगोल, ओहि समयमे प्रचलित तान्त्रिक प्रक्रिया, लोकाचार, नृत्य आदिक विवेचन-विश्लेषणक संगहि एकर काव्यप्रबन्धक शिल्प ओ शैली पर सेहो विमर्शपूर्वक गहन अनुसन्धानक दिशा प्रशस्त कयलनि अछि। हिनक नैका-बनिजाराक विवेचनमे ओकर संक्षिप्त कथाक पश्चात् ओकर ऐतिहासिकता पर विमर्श प्रस्तुत कयल गेल अछि जाहिमे एहि गाथामे वर्णित स्थान सभक निरूपण, तत्कालीन वाणिज्य व्यवस्थाक स्वरूपक उल्लेखक संगहि एकर कालनिर्धारण सोलहम-सतरहम शताब्दी कयल गेल अछि। राजा सलहेस लोकगाथाक विवेचनमे एहू लोकगाथाक संक्षिप्त कथाक बाद एकर कालनिर्धारण करैत एकरा पन्द्रहम-सोलहम शताब्दीक गाथा निरूपित कयल गेल अछि तथा एहिमे वर्णित मालिनकेँ मिथिलाक तान्त्रिक साधनामे मुद्राक रूपमे व्यवहृत कहल गेल अछि। दीना-भदरीक विवेचनमे सेहो एहि गाथाक संक्षिप्त कथाक बाद एकरो ऐतिहासिकताकेँ आँकल गेल अछि आ एहिमे प्रयुक्त शब्दावलीक आधारपर एहि गाथाकेँ मुगलकालक कहल गेल अछि। राजा गोपीचन्दक विवेचनमे राजेश्वर बाबू ओकर संक्षिप्त कथाक विवरण दऽ ओकर इतिहास ओ भाषापर सेहो विमर्श करैत एहि गाथाक काल दशम-एगारहम शताब्दी निर्धारित कयलनि अछि।

एहि तरहेँ मैथिली लोकगाथाक ऐतिहासिक अध्ययनपूर्वक ओकर कालनिर्धारणक दृष्टिजे राजेश्वरझाक प्रयास सर्वथा सराहनीय अनुसन्धान थिक।

डा. प्रबोधनारायण सिंह द्वारा संकलित दीना-भदरी मिथिला दर्शनमे प्रकाशित होयबाक सूचना अछि। डा. अणिमा सिंह लोकसाहित्यक विवेचनक क्रममे लोकगाथाक सेहो विवेचन कयने छथि।

मैथिली लोकगाथाक अन्वेषण-अनुसन्धानक दृष्टिजे डा. विश्वेश्वर मिश्रक कृति **मैथिली लोकगाथा विवेचन** सेहो एक गोट विशिष्ट कार्य थिक। एहि ग्रन्थमे ओ नहि केवल अमरसिंह, कारिख पजियार, कुमर वृजभानु, केवलसिंह, गाङ्गो गोढ़िन, गुगुलिया, जयसिंह, दीनाभदरी, दुलरा दयाल, नइका बनिजारा, बख्तौर सिंह, बिहुला, रइया रनपाल, लवहरि-कुशहरि, लोरिक, मनियार, वंशीधर बाभन, विजयमल्ल तथा सुरमा सलहेस गाथाक संक्षिप्त कथावस्तु प्रस्तुत कयलनि अछि अपितु लोकगाथाक विविध सामान्य वर्ण्यविषय सभक अत्यन्त मनोयोगपूर्वक विश्लेषण कयलनि अछि। एहि ग्रन्थमे गाथाक गायन-पद्धति, सुमिरन, बन्हन, चाँचड़ि-चोखरि, वाद्ययंत्र, देवी-देवता, नायक-नायिकाक अलौकिकता आदिक सेहो वर्णन भेल अछि। ई गाथाक वर्गीकरण रसात्मकताक आधारपर वीर रसात्मक,शृंगार रसात्मक, अद्‌भुत रसात्मक तथा भक्ति भावात्मक कयलनि अछि जे शास्त्रीय दृष्टिकोणसँ सर्वथा समीचीन बुझना जाइत अछि। क्षेत्रीय कार्य ओ मूल गाथापर आधारित हिनक अनुसन्धान कार्य सर्वथा विश्वसनीय कहल जा सकैछ। हिनका द्वारा संकलित उपरिलिखित मूल लोकगाथा सभक कण्ठ प्रति सेहो **मैथिली-लोक-गाथा** नामक पोथीमे संकलित भेल अछि जे हिनका एहि क्षेत्रमे विशेषज्ञ कहयबाक अधिकारी बनौने रहलनि।

एहि पंक्तिक लेखकक पोथी **लोकजीवन ओ लोकसाहित्य**मे बारह गोट जातीय देवता सभक कथाकेँ अनुस्यूत कयल गेल अछि यथा-श्यामसिंह, लालबन बाबा, गरीबन भुइयाँ, मोतीदाइ, गणिनाथ-गोविन्द, फेकूराम, कारिख, दुलरा दयाल, गाङो देवी, जयसिंह, अमरसिंह तथा केवल महाराज। ई कथा सभ कथ्यपरक एवं गाथागीतक रूपमे लोकजगतसँ संकलित कयल गेल छल। एहिमे कतोक लोकगाथाक रूपमे प्रचलित अछि आ किछु कोनो लोकगाथाक अंश जकाँ बुझना जाइत अछि। एहि सभमे एकर यथाश्रुत भागकेँ संरक्षित करबाक प्रयास भेल अछि आ एकर स्वरूपक परिचय करयबाक प्रयास भेल अछि। हमर दोसर पोथी **लोक, साहित्य ओ शब्द-सम्पदा**मे संकलित लोकगाथा-दीनाभद्री आ **कथा-लोककथा**मे संकलित बेनीराम सेहो दुइ गोट लोकगाथाक क्षेत्रीय कार्यपर आधारित कथाभागक संकलन थिक जाहिसँ एहि लोकगाथा सभक सामान्य परिचय भेटि जाइत अछि। तथापि ई लोकगाथाक संचयनक दिशामे

प्राथमिके कार्य कहल जा सकैछ। प्राप्य सभटा गाथाक हेतु आ सभ क्षेत्रमे प्रचलित गाथाक हेतु ओकर मौलिक स्वरूपक संकलनक बादे विवेचन-विश्लेषणक मार्ग प्रशस्त भऽ सकैत अछि।

मैथिली भाषा, साहित्य, संस्कृति ओ इतिहासक निविष्ट अध्येता डा. शंकरदेवझाक शोध-पुस्तक **मिथिला-संस्कृतिक विविध आयाममे** संकलित 'मिथिलादेशीय लोकगाथा मीरा बालापीर' शीर्षक शोध-आलेखमे पहिल बेर गम्भीर ऐतिहासिक ओ सामाजिक विवेचनक संग मीरा बालापीर लोकगाथाक मूल पाठकेँ प्रस्तुत कयल गेल अछि।

मैथिली लोकगाथाक क्षेत्रमे अनुसन्धाताक रूपमे डा. महेन्द्रनारायणराम एकटा विशिष्ट व्यक्ति छथि। हिनक शोधग्रन्थ **लोकमहागाथा : कारिख पजियारमे** कारिख महागाथाक सम्पूर्ण अध्ययन प्रस्तुत भेल अछि जाहिमे गाथासँ सम्बद्ध स्थल, वस्तुविन्यास, पात्र ओ चरित्र, लोकतात्त्विक वैशिष्ट्य, सामाजिक ओ सांस्कृतिक परिवेश तथा साहित्यशास्त्रीय विवेचन आदिपर गंभीर विमर्श भेल अछि। डा. फूलोपासवान संग कृत हिनक मूल गाथाक सञ्चयन **दीनाभद्री लोकगाथा** ओ **सलहेस लोकगाथा** नामे भेल अछि जाहिमे दुनू लोकगाथा चम्पू शैलीमे मूल गायकसँ प्राप्त कऽ प्रकाशित कयल गेल अछि।

मैथिली लोकगाथाक अनुसन्धानक दृष्टिजे श्रीरामभरोसकापड़ि 'भ्रमर'क नाम सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। ई **मिथिलाक सपूत : राजा सलहेस** आ **लोकनायक सलहेस** नामक दुइ गोट पोथीक प्रणयन-सम्पादन कयने छथि जाहिमे दुसाध जातिक जातीय देवता ओ लोकगाथानायक सलहेस पर गंभीर विचार व्यक्त कयल गेल अछि।

डा. ताराकान्तमिश्र अपन ग्रन्थ 'मैथिली लोकसाहित्य का अध्ययन'मे प्रबन्धात्मक गीत शीर्षक अन्तर्गत मिथिलामे प्रचलित लोकगाथाकेँ प्रचारक दृष्टिजे दू भागमे विभाजित कयलनि अछि (क) मिथिलामे प्रचलित लोकगाथा ओ (ख) मिथिला एवं मिथिलेतर प्रान्तहुमे प्रचलित लोकगाथा। ई प्रथम कोटिमे 27 गोट एवं द्वितीय कोटिमे 9 गोट लोकगाथाक परिगणन कयलनि अछि। विषयक दृष्टिजे ई लोकगाथाकेँ छओ सर्गमे विभाजित कयने छथि यथा—प्रेमगाथा, पराक्रमगाथा, योगगाथा, जादूगाथा, पौराणिकगाथा ओ अन्य गाथा। हिनक विवेचनमे सुमिरन, बन्धन, अलौकिकता, आनुष्ठानिक

महत्त्व, निम्न जातिसँ घनिष्ठ सम्बन्ध, रचयिताक नाम ओ व्यक्तित्वक अभाव, आंचलिकता, संगीतक साहचर्य, दीर्घ कथावस्तु, संदिग्ध ऐतिहासिकता, कलात्मकताक अभाव, मौलिक परम्परा तथा लोकरंजनक क्षमता आदिकेँ लोकगाथाक निजी विशिष्टता कहल गेल अछि। डा. ओम प्रकाश भारती अपन **लोकायन** ग्रन्थमे नटुआ दयाल ओ राजा सलहेस लोकगाथाक कथा भाग प्रस्तुत करैत बिहारमे लोकगाथाक परम्पराक विवेचन कयलनि अछि। हिनक कहब छनि जे एहि सभमे वैदिक कालसँ लऽ कऽ आधुनिक काल धरिक जनसाधारणक उत्सर्ग, अवदान आ संघर्षक इतिहास सुरक्षित छैक।

मैथिली लोकगाथापर किछु विशिष्ट शोधग्रन्थ सभ लिखल जा चुकल अछि जकर प्रकाशन नहि भऽ सकबाक कारणे ओकर अध्ययन जनसामान्यक हेतु दुर्लभे कहल जा सकैछ। एहिमे डा. पूर्णानन्ददास कृत शोधप्रबन्ध **मैथिली लोककाव्य**मे मैथिलीक सोलह गोट गाथाक कथावस्तु, अन्य प्रान्तीय रूपक संग तुलना, गाथाक विभिन्न पाठ वैशिष्ट्य आदिक विद्वतापूर्ण विवेचन कयल गेल सुनल अछि। एहि प्रबन्धमे लोरिक, बिहुला, सलहेस, दीनाभद्री, दयाल सिंह, जयसिंह, अमरसिंह, नाका बनिजारा, लवहरि-कुशहरि, विजयमल, घुघुलिया, वंशीधर बाभन, गांगो आ कारिख पजियारक मूल पाठक संकलन महत्त्वपूर्ण कहल जा सकैत अछि। एतऽ ध्यातव्य थिक जे डा. दास द्वारा संकलित लोकगाथाक मूल पाठहिकेँ गृहीत कऽ कऽ डा. विश्वेश्वरमिश्र अपन पोथी **मैथिली-लोक-गाथा**क प्रणयन कयने छथि, जकर उल्लेख पूर्वमे कयल जा चुकल अछि।

डा. मोतीलाल यादवक शोधप्रबन्ध **लोकगाथा सलहेसक अध्ययन**मे साधन स्रोत, ऐतिहासिकता, सम्बद्ध स्थान, कथावस्तु, पात्र, लोकतात्त्विक वैशिष्ट्य, सामाजिक जीवन, काव्य तत्त्व ओ भाषाक दृष्टिञे एहि गाथाक विवेचन प्रस्तुत कयल गेल अछि।

डा. वीरेन्द्रनाथझाक **मैथिली लोकमहाकाव्यक आलोचनात्मक अध्ययन**, डा. मनोज कुमार मिश्रक **मिथिलाक लोरिक लोकगाथाक आलोचनात्मक अध्ययन**, डा. शैलजा मिश्र कृत **मैथिली कथाकाव्यक आलोचनात्मक अध्ययन**, डा. तेजनारायण पंडितक **मैथिली लोकगाथामे सती बिहुला**, डा. गंगा प्रसाद यादवक **काली, बन्दी, गोरैया गीतक**

अध्ययन आदि एहि क्षेत्रमे कृत किछु महत्त्वपूर्ण मुदा अप्रकाशित प्रबन्ध सभ थिक। मैथिली लोकसाहित्यक एहि उर्वर क्षेत्रमे निरन्तर अनुसंधान-आलोचना होइत रहल अछि।

तथापि मैथिली लोकगाथाक अनुसंधानक क्षेत्रमे जे व्यापकता आइ देखि पड़ैत अछि तकर उत्प्रेरक ओ पथप्रदर्शकक रूपमे जाहि एकमात्र मैथिली उन्नायकक नाम जगजियार अछि, से थिकाह डा. व्रजकिशोर वर्मा 'मणिपद्म'। मणिपद्मजी बहुआयामी लेखक छलाह। ई मैथिली साहित्यकेँ कथा, कविता, उपन्यास, निबन्ध-आलोचना, साक्षात्कार, एकांकी, नाटक आदि विभिन्न विधामे आजीवन समृद्ध करैत रहलाह। तथापि हिनका जाहि एकमात्र विधाक माध्यमे परिचिति भेटल छलनि, से छल उपन्यास जकर आधार स्रोत सामान्यत: विभिन्न लोकगाथाकेँ बनाओल गेल अछि। मणिपद्मजी लोकसाहित्यक एहि विधाक प्रति अत्यन्त संवेदनशील छलाह तथा एहि श्रुत साहित्यक संकलनक हेतु ग्राम-नगर, वन-प्रान्तरक यात्रा करैत रहलाह। श्रुत साहित्य लोकगाथासँ रसग्रहण कऽ ई छओ गोट उपन्यासक रचना ओ प्रकाशन करौलनि आ लोकसाहित्यक एहि जातीय विधाकेँ शिष्ट साहित्यिक परिधान प्रदान कऽ एकरा विद्वत् समाजक मध्य गरिमा प्रदान करौलनि। प्रो. हरिमोहनझाक अभिनन्दन ग्रन्थमे अन्तर्भुक्त हिनक निबन्ध 'मैथिली लोकसाहित्यक सौरभ'मे ई जनौने छथि जे 'जतेक महागाथा एखन धरि हम रेकर्ड कऽ सकलहुँ अछि तकर संख्या आठ अछि। पैघ-छोट क्रमे ओ एना अछि—लोरिकाइन, दुलरा दयाल, राजा सलहेस, नैका बनिजारा, लवहरि-कुशहरि, राय रणपाल आ दीनाभद्री। एकटा आर जे महागाथा उपलब्ध भेल अछि से थिक 'हंसराज-वंशराज'। एहि समस्त लोकगाथामे दीनाभद्री ओ हंसराज-वंशराजकेँ छोड़ि प्रत्येक लोकगाथाकेँ आधार बनाय ई उपन्यासक रचना कऽ प्रकाशित करौलनि जाहिमे नैका-बनिजारा उपन्यासपर हिनका 1973 इ.क साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कयल गेल छलनि।

लोरिक विजय सामन्ती अत्याचार ओ अनाचारक प्रति विद्रोह, प्रेम, रोमांस ओ शौर्यक गाथा थिक। दुलरा दयाल जनजीवी लोक, प्रवहमान नदी आ उत्ताल तरंगित सागरक जीवन्त गाथा थिक। राजा सलहेस जंगल-पहाड़, घाटी-चोटी, रोमांस आ शौर्यसँ परिपूर्ण गाथा थिक। नैका

बनिजारा एकटा महावणिकक भ्रमणगाथा ओ ओकर सती-साध्वी पत्नीक जीवन-संघर्षक गाथा थिक। लवहरि-कुशहरिमे सीताक उत्तरचरितक कथा अछि। रायरणपालमे एकटा क्षत्राणीक शौर्य ओ धैर्यक कथा अनुस्यूत अछि। एकरा सभक अतिरिक्त ओ दीनाभद्री एवं कारू खिरहरि लोकगाथापर सेहो काज कयने छलाह मुदा एकरा सभक मूल किंवा औपन्यासिक स्वरूप प्रकाशमे नहि आबि सकलनि।

लोकगाथाक प्रति समर्पित मणिपद्मजीक मान्यता छलनि जे जाधरि लोकगाथा सभक मूल पाठकेँ जनकंठसँ प्राप्त कऽ ओकर संकलन-सम्पादन ओ प्रकाशन नहि कऽ लेल जायत ताधरि मिथिलाक लोकसंस्कृतिक एहि अमूल्य धरोहरक संरक्षण-अध्ययन नहि कयल जा सकत। तेँ ओ एहि हेतु निरन्तर क्षेत्रानुसन्धानमे लागल रहैत छलाह। अपन अनुसन्धानक फलस्वरूप विगत शताब्दीक पाँचम दशकक लगले बाद जखन डा. जयकान्तमिश्र मैथिली लोकसाहित्यक विवेचनकेँ अंग्रेजीक माध्यमे प्रस्तुत कऽ रहल छलाह, ताहि समयसँ मणिपद्मो लोकगाथापरक निबन्धक प्रणयन द्वारा एकरा विद्वत् समाजक मध्य प्रस्तुत करबामे तल्लीन भेलाह। लोकगाथा सभपर आधारित हिनक निबन्ध सभक एक गोट संकलन सम्प्रति **मैथिली लोकगाथाक इतिहास** नामे डा. प्रेमशंकरसिंहक सम्पादनमे प्रकाशित भेल अछि जाहिमे लोरिक, दुलरा दयाल ओ लवहरि-कुशहरि गाथाक नारीपात्र, भाव, भाषा, परिवेश आदि पर विमर्श भेल अछि। सभटा निबन्ध सम्बद्ध लोकगाथाक खण्डचित्र किंवा विवेचन पर आधारित बुझना जाइत अछि। मुदा ई सभ खण्डचित्र किंवा हिनक लोकगाथापरक उपन्यास सभ मूल गाथाक मौलिकता, प्रकृति, निजता ओ निश्छलतासँ स्वभावतः दूरी बनौने देखि पड़ैछ। अवश्ये एकर सभक प्रस्तुतीकरणमे लेखक जनसंवेद्य ओ यथावाक् भाषाक प्रयोग कयने छथि, लोकवर्तनीक अनुसार।

एतावता मणिपद्मजीकेँ मैथिली लोकगाथाक क्षेत्रमे एहन अनुसन्धानी कहल जा सकैत छनि जे मैथिली लोकगाथामे कतेकोक परत-दर-परतकेँ उघारि सूक्ष्मतम विश्लेषण धरि पहुँचबाक प्रयास करैत रहलाह आ मैथिली लेखक लोकनिक एहन दलक प्रवर्त्तन कयलनि। संभवतः एकटा इहो कारण अछि जे परवर्ती अनुसंधाता लोकनिमे अधिकांश लोकगाथाक वैशिष्ट्य, संक्षिप्त कथावस्तु आ प्रासंगिक उद्धरणे धरि अपनाकेँ सीमांकित

कऽ लेलनि। परिणामतः मूल गाथाक संकलनमे क्षति पहुँचलैक। तथापि ई निःसंकोच कहल जा सकैछ जे मैथिली लोकगाथाकेँ अपन सुवर्णलेखनीक प्रतापेँ ई महिमान्वित करैत रहलाह आ ओकरा सभकेँ विद्वत् समुदायसँ लऽ कऽ जनसामान्य धरिक दृष्टि पर अनलनि। कंठाश्रित ई विधा अक्षर ब्रह्मक संस्पर्शसँ स्थैर्य ओ प्रश्रय पबैत गेल। क्रमशः एहि विधामे नव-नव नायक ओ जातिसँ सम्बद्ध गाथा सभकेँ संरक्षित करबाक दिशामे विद्वानलोकनि आकृष्ट होइत गेलाह। जातीय गाथाकेँ साहित्यिक गरिमा भेटलासँ मिथिलाक जनसामान्यो अपन मातृगिराक प्रति सन्नद्धताक हेतु तत्पर होइत चल गेल।

जन साहित्यक कल्पना प्रसूत ओ मर्यादित लोकगाथाकेँ उपन्यास किंवा निबन्धक गद्यविधाक माध्यमे प्रस्तुतीकरण ओ बीच-बीचमे मूल गाथाक छौंकसँ संबलित मणिपद्मजीक सम्बद्ध रचना सभमे लोकगाथा काव्यक वैभव, ऐश्वर्य ओ विभूतिक अविकल दर्शन संभव नहि भऽ पाओल अछि आ परवर्ती अनुसन्धान सभ सेहो तकरे अनुसरणपरक बुझना जाइत रहल अछि। एहि स्थितिसँ त्राणक संभावना तखने संभव जखन अनुसन्धित्सु लोकनि कोनो लोकगाथाक समस्त क्षेत्रीय ओ व्यक्तिपरक स्वरूपकेँ मूलरूपमे पहिने संकलन-प्रकाशन करथि आ ततःपर ओकर विवेचन-विश्लेषण करथि। स्वयं मणिपद्मक चिन्तन एहि सम्बन्धमे एहि शब्देँ अभिव्यक्त भेलनि अछि–'हमरालोकनि एखन धरि युग-युगसँ कंठे-कंठ चल अबैत अपन अइ ऐश्वर्य कै अक्षर नहि दै सकलिऐक अछि से हमरालोकनिक सांस्कृतिक विपन्नता भेल। मैथिली कतेक प्राचीन भाषा अछि से अइ महागाथा सबसँ सहजहि प्रमाणित भऽ जाइत छैक। जखन ई सब लिखिते नहि छैक तऽ एकरा आधारपर काज कोना सम्भव भऽ सकैत छैक। ई एकटा विस्तृत क्षितिज दिस संकेत करैत छैक। **(मैथिली लोकगाथाक इतिहास, पृ.-223)।**

एहि विस्तृत क्षितिज दिस विद्वानलोकनिक ध्यान गेलनि अछि। डा. महेन्द्र नारायण राम कारिख लोकगाथाक मूल गेय पद्य भाग प्रकाशित कऽ ग्रियर्सनक मौलिक सञ्चयन ओ प्रकाशनक काजकेँ आगू बढ़ौलनि अछि। डा. रमानन्दझा 'रमण' गीत दीनाभद्रीक ओ गीत नेवारक ग्रियर्सन संकलित दुर्लभ पाठकेँ पुनः प्रकाशित कऽ एहिपर अग्रिम विवेचनक

मार्ग सर्वसुलभ कऽ देलनि अछि।

बहुतोक विद्वानक शोधग्रन्थमे कतोक गाथाक मूलपाठ होयबाक सूचना भेटैत अछि मुदा कतोक कारणसँ तकरा सभक प्रकाशन संभव नहि भेल अछि। एहि हेतु संस्थागत प्रयासक आवश्यकता छैक। एहू दिशामे डा. मणिपद्मजीक सुझाव प्रेरणादायक अछि–'मिथिलाक सम्पूर्णताकेँ बिना कोनो साधन-संस्था (इन्स्टीच्यूट) के समेटल नहि जा सकैत अछि। जहिना इन्डोलोजी, इजिस्टोलोजी अथवा जर्मनोलोजीक खोज, अध्ययन, शोध आ प्रकाशनक काज ओकर विभागक द्वारा होइत छैक तहिना आइ मिथिला विश्वविद्यालयक एकटा प्रमुख अंगक रूपमे चाही मिथिला तत्त्व प्रतिष्ठान 'इन्स्टीच्यूट ऑफ मिथिलोलोजी' जकरा द्वारा मिथिलाक तन्त्र, दर्शन, संगीत, चित्र, नृत्य, लोकसाहित्य आ भाषापर विधिवत् काज भऽ सकय। (तत्रैव 223)

मणिपद्मजीक सम्बन्धमे डा. प्रेमशंकरसिंहक ई उक्ति सर्वथा समीचीन प्रतीत होइत अछि जे 'मणिपद्म जतेक गहनता एवं तन्मयताक संग लोकगाथाक अध्ययन-अनुशीलन, चिन्तन-मनन आ संचयन कऽ ओहिमे हेरायल-भुतिआयल मणि-माणिक्यकेँ पाठकक हेतु सर्वसुलभ करौलनि तकर श्रेय ओ प्रेय हुनकहि छनि (तत्रैव पृ.-घ)। अवश्ये मिथिलांचलक लोकइतिहासक रचनाक हेतु जनकंठमे व्याप्त लोकगाथा सभक संकलन, सम्पादन ओ प्रकाशनक पथ प्रशस्त करबाक अछि जाहि दिस विभिन्न संस्था ओ अनुसन्धित्सु लोकनिक सचेष्टता आवश्यक छनि। ई प्रकाशनेक असुविधा रहल जकर कारणे मणिपद्मो द्वारा संकलित गाथाक मूल स्वरूप आइयो अप्राप्ये-दुष्प्राप्येक श्रेणीमे अछि।

मणिपद्मजीक लोकगाथाधारित औपन्यासिक कृति एवं अन्य ललित निबन्ध सभक अध्ययन-अनुशीलनसँ ई स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे ओ लोकगाथा तत्त्वकेँ रसग्रहण कऽ रचनाशील भेलाह। लोकगाथा तत्त्वकेँ ओ आधार-सामग्री जकाँ उपयोग कयलनि आ अपन कल्पना-प्रसूत रंग-टीप दऽ ओकरा सभकेँ शिष्ट साहित्यिक परिधान प्रदान कऽ लोकसाहित्य ओ शिष्ट साहित्यक बीचक दूरीकेँ पाटबाक प्रयास कयलनि। ततबे नहि, ओ अपन शिष्ट साहित्यिक रचनहु मध्य लोकशैलीसँ पूर्ण प्रभावित भेलाह आ भाषा, वाग्भंगिमा ओ वर्तनीक क्षेत्रमे शिष्टो साहित्यलेखनमे

लोकसाहित्यिक प्रयोगक अनुष्ठान कऽ एहि दुनू साहित्यक बीचक दूरीकेँ समाप्त करबाक उद्योग कयलनि। हिनक एहि प्रवृत्तिसँ नहि केवल लोकसाहित्यकेँ आ लोक रचनाशैलीकेँ गरिमा भेटलैक अपितु विद्वत् समुदाय एहि उपेक्षित साहित्य दिस आकृष्ट होइत गेलाह। लोकगाथा साहित्य बहुधा मूलतः जातीय साहित्य होयबाक कारणे तत्तत् जातिक लोक अपन-अपन महानायक ओ जातीय देवताक उत्कर्षसँ प्रभावित भऽ मिथिलाक भाषा-चेतनाक समन्वयीकरणक कारक भेलाह। क्रमशः लोकसाहित्यसँ रसग्रहण कऽ शिष्ट साहित्य रचनाक एकटा परम्परे बनि गेल। प. मतिनाथ मिश्रक राजा सलहेस महाकाव्य, डा. प्रफुल्लकुमारसिंह 'मौन'क लोरिक नाटक, विभिन्न जातीय ओ लोकदेवतापर मौलिक निबन्ध एवं समालोचना साहित्यक पथारे लगैत चल गेल। लोकसाहित्यानुसंधान मैथिली साहित्यानुसंधानक एक गोट प्रिय विषये बनि गेल।

एतावता मणिपद्मजीकेँ मैथिली लोकगाथाक अध्ययन-अनुसंधानक भगीरथ कहल जाइत छनि तँ कोनो अतिशयोक्ति नहि अछि। तथापि एखनो मूल लोकगाथा सभहिक संकलन-प्रकाशन ओ तदुत्तर समालोचना-सम्पादन अनुसन्धित्सु लोकनिक हेतु व्यापक कार्य क्षेत्र छन्हिजे जकरा पूर्ण कयलाक बादे मणिपद्मक दिशानिर्देशक सार्थकता विज्ञापित भऽ सकैछ। तखन एतबा तँ अवश्ये जे जँ मणिपद्मजी लोकसाहित्यक एहि विधाकेँ संस्कारित कऽ शिष्ट साहित्यिक विधामे परिणत नहि कयने रहितथि, उदार वर्तनी ओ मौलिक वाक्भंगिमाक संरक्षापूर्वक शिष्टो साहित्यमे लोकसाहित्यक प्रकृतिक रक्षा कऽ ओकरा लोकरंजक नहि बनौने रहितथि, तँ आइ जकाँ ई साहित्य शिष्ट साहित्ये जकाँ फड़ैत-फुलैत नहि देखि पड़ैत आ ने जातीय देवतालोकनिक प्रक्षेपणपूर्वक मैथिलीभाषी लोकनिक जातीय समीकरणक साहित्यिक आधारे बनि सकैत। वस्तुतः मणिपद्मजी मैथिली लोकगाथा साहित्यकेँ राष्ट्रीय ओ अन्तःराष्ट्रीय स्तरपर प्राप्त प्रतिष्ठाक मूलमे कहल जा सकैत छथि।

●●●

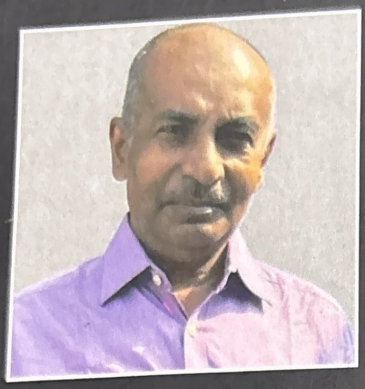

डा. योगानन्दझा

वर्त्तमान मैथिली शोध-समालोचनाक क्षेत्रमे **डा. योगानन्दझा** (11 जनवरी, 1955) एकटा एहेन विशिष्ट-निविष्ट व्यक्तित्व छथि जनिका फराकसँ अपन कोनो परिचय देबाक प्रयोजन नहि रहि गेलनि अछि। अपन अद्‌भुत शोध-दृष्टि ओ सशक्त लेखनीक कारणे मैथिली जगतमे प्रख्यात डा. झा जतबे शिष्ट ओ लोक परम्पराक साहित्यक विश्लेषण-गवेषणमे निपुण छथि ततबे सम्पादन ओ अनुवाद सन कार्यमे पटु छथि आ प्रयोजन पड़लापर रचनात्मक लेखनक क्षेत्रमे सेहो अपन कलमक कमाल देखबैत रहलाह अछि। साहित्य अकादेमीक अनुवाद पुरस्कार (2005) सँ सम्मानित डा. झाक लोकजीवन ओ लोकसाहित्य, मैथिलीक जातीय व्यवसाय सम्बन्धी शब्दावली, आलेख-सञ्चयन, लोक साहित्य ओ शब्द सम्पदा, स्नेहलता, मैथिली पत्रकारिता के सौ वर्ष (शोध समालोचना); कथा-लोककथा, मैथिली लोककथा सञ्चय (कथा-संग्रह); मैथिली शाक्त साहित्य, गहबर गीत, सीतावतरण (सम्पादन); फकीरमोहन सेनापति, बिहारक लोककथा, मंगल प्रभात, पार्थिवक सपना (अनुवाद) प्रभृति अनेकानेक कृति समेत विभिन्न शोध-पत्रिका इत्यादिमे बहुश: शोधपरक आलेख प्रकाशित छनि।

हिनक प्रस्तुत कृति 'चतुर्दश सूत्र'मे अपन नामानुरूप चौदह गोट शोध-समालोचनामूलक आलेख संकलित छनि जे कृति, विधा, व्यक्ति ओ कोनो विशिष्ट साहित्यिक प्रवृत्तिपर आधारित छनि। सूत्र रूपमे कहल जाय तँ खण्ड-समालोचनाक एकटा मानक निदर्शन प्रस्तुत करैत अछि हिनक ई नवीन साहित्यिक कृति।

शशि प्रकाशन

शशि प्रकाशन
गाँव-कालिकापुर, पो. लक्ष्मीनियाँ,
वाया-बलुआ बाजार,
जिला-सुपौल-854339 (बिहार)

मूल्य : ₹ 400/-

ISBN : 978-93-92691-34-8

9 789392 691348